# شاہجہان نامہ اُردو

معہ تصویر

جس مین ابو المظفر شہاب الدین محمد شاہجہان صاحبقران ثانی بادشاہ غازی

کا پورا حال ہے

اور جسکو منشی دیبی پرشاد قوم کایتھ مورخ راجپوتانہ و منصف راج جودھپور نے

بادشاہ نامہ وغیرہ کتب تواریخ سے نفس مطلب اخذ کرکے

اُردو زبان مین بعبارت سلیس و عام فہم مرتب کیا

## मुग़ल सम्राट शाहजहां बादशाह का जीवनचरित्र सचित्र जिसको

मुनशी देवी प्रसाद कायस्थ मुनसिफ़ राज जोधपुर ने बादशाहनामे वग़ैरा की फ़ारसी तवारीख़ की किताबों का सार लेकर हिन्दी में बनाया

جلد اول

पहिला भाग

संबत १९५२

مطبع رضوی دہلی مین سید میر حسن کے

١٨٩٦ع

شبیہ شاہجہان بادشاہ

शाहजहां बादशाह

शाहज़ादे दाराशिकोः

شبیہ شاہزادہ شجاع

शाहज़ादेशुजाअ

| शाहजहाँ नामा पहिला भाग. | | شاہ جہاں نامہ حصہ اول | |
|---|---|---|---|
| पृष्ठांक | विषय | مضمون | نمبر صفحہ |
| ९ | जहाँगीर बादशाह का राजोर में मर जाना नूरजहाँ बेगम का शहरयार को लाहौर से बुलाना मगर उसके भाई आसिफ़ खाँ वज़ीर ख़ुसरो के बेटे बुलाक़ी को तख़्त पर बिठा कर बेगम को क़ैद करना और शाहजहां के पास ख़बर देने के वास्ते बनारसी को भेजना. | جہانگیر بادشاہ کا مقام اجوری میں مرجانا نورجہاں بیگم کا شہریار کو لاہور سے بلانا مگر اوسکے بہائی آصف خاں وزیر خسرو کے بیٹے بلاقی کو تخت پر بیٹھا کر بیگم کو قید کرنا اور شاہجہاں کے پاس خبر دینے کے واسطے بنارسی کو بہیجنا | ۱ |
| २ | लाहौर के पास शहरयार का बुलाक़ी से लड़ना और पकड़ा जाकर क़ैद होना. | لاہور کے پاس شہریار کا بلاقی سے لڑنا اور پکڑا جاکر قید ہونا | ۲ |
| ,, | बनारसी का जुनेर में शाहजहां के पास पहुँचना और शाहजहां का आगरे को रवाना होना. | بنارسی کا جنیر میں شاہجہاں کے پاس پہونچنا اور شاہجہاں کا آگرہ کو کوچ کرنا | ״ |
| ,, | दखन के सूबेदार खानदौरां लोदी का बाला घाट का तमाम मुल्क निज़ामुल मुल्क को देकर मंडू में मालिक बन बैठना. | دکہن کے صوبہ دار خانجہاں لودی کا بالاگہاٹ کا تمام ملک نظام الملک کو دیکر منڈو میں مالک بن بیٹھنا | ״ |
| ३ | शाहजहां को शहरयार की हार के समाचार मिलना शाहजहां का अहमदाबाद पहुंच कर सिंध और | شاہجہاں کو شہریار کی شکست کا حال معلوم ہونا اور احمدآباد پہونچکر سندہ اور | ۳ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | गुजरात के मुल्कों का बंदूबस्त करना | گجرات کے صوبوں کا بندوبست کرنا | |
| ४ | अजमेर में मसजिद बनाने का हुक्म और महाबत ख़ाँ को अजमेर का सूबा मिलना. | اجمیر میں مسجد بنانے کا حکم اور مہابت خاں کو اجمیر کا صوبہ ملنا | ۴ |
| ,, | अनी राय राजा भारत बुंदेला और नूरुद्दीन कुली वग़ैरा का जो जहांगीर बादशाह के हुक्म से महाबत ख़ाँ के ऊपर तईनात हुवे थे अजमेर में शाहजहां से मिलना | انی راے راجہ بھارت بندیلہ اور نورالدین قلی کا جو جہانگیر بادشاہ کے حکم سے مہابت خاں کے اوپر تعینات ہوے تھے اجمیر میں شاہجہاں سے ملنا | ” |
| ,, | राजा जयसिंह और गज सिंह का ख़ानजहां लोदी का साथ छोड़कर गज सिंह का तो जोधपुर जाना और जयसिंह का अजमेर आकर शाहजहां से मिलना. | راجہ جیسنگہ اور گج سنگہ کا خانجہاں لودی کی رفاقت چھوڑکر راجہ گج سنگہ کا تو جودھ پور جانا اور جیسنگہ کا اجمیر آکر شاہ جہاں سے ملنا | ۴ |
| ५ | आसिफ़ ख़ां का शाहजहां के हुक्म से लाहोर में शाहजहां के नाम की आण दुहाई फेरना और शहरयार बुलाकी. बुलाकी के भाई और सुलतान दानयाल के बेटों को मरवाडालना. | آصف خاں کا شاہ جہاں کے حکم سے لاہور میں شاہ جہاں کے نام کا سکہ وخطبہ جاری کرنا اور شہریار- بلاقی- بلاقی کے بھائی- اور سلطان دانیال کے بیٹوں کو مرواڈالنا | ۵ |
| ,, | शाहजहां का आगरे पहुंच कर बादशाह होना और ७२ लाख रु. की बख्शिश और अमीरों को इज़ाफ़े | شاہ جہاں کا آگرہ پہونچکر بادشاہ ہونا ۷۲ لاکھ روپیہ کی بخشش اور امیروں کے اضافہ | ” |
| ७ | राजा विट्ठल दास गौड़. राजा मन रूप कछवाहा. जगमाल राठोर. | راجہ بٹھلداس گوڑ راجہ منروپ کچھواہا جگمان راٹھوڑ | ۷ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | राजा द्वारकादास कछवाहा. हिरदे राम कछवाहा. राजा बीर नारायण. जैतसिंह राठौर. सेवा राम गौड़. स्याम सिंह सीसोदिया. शाहजहां के साथ थे | راجہ دوارکا داس کچھواہا راجہ بیر نراین جیت سنگہ راٹھوڑ سیوا رام گوڑ سیام سنگہ سیسودیہ شاہ جہاں کے ساتہہ تھے | |
| ९ | राजा जयसिंह कछवाहा और सूर भुरटिये बीकानेरी का ४ हजारी होना | راجہ جے سنگہ کچھواہا اور راو سور بھرٹیہ بیکانیری کا چارہزاری ہونا | ۹ |
| " | राजा भारत बुंदेला का ३ हज़ारी होना. | راجہ بھارت بندیلہ کا تین ہزاری ہونا | ۹ |
| " | पहाड़ सिंह बुंदेला का २ हजारी होना. | پہاڑ سنگہ بندیلہ کا دوہزاری ہونا | " |
| " | तारीख इलाही का मौक़ूफ़ होना. | تاریخ الہی کا موقوف ہونا | " |
| १० | राजा गज सिंह का हाज़िर होकर ५ हजारी मनसब झंडा और नक़्क़ारा वग़ैरा पाना. | راجہ گج سنگہ کا حاضر ہوکر پانچہزاری منصب جھنڈا اور نقارہ وغیرہ پانا۔ | ۱۰ |
| " | राणा अमर सिंह के मरने पर जगत सिंह के वास्ते राणा का खिताब ५ हजारी मनसब और खलअत वग़ैरा राजा बीर नारायण के हाथ भेजा जाना. | رانا امر سنگہ کے مرنے پر جگت سنگہ کے واسطے رانا کا خطاب پانچہزاری منصب اور خلعت وغیرہ راجہ بیرنراین کے ہاتہہ بھیجا جانا | " |
| ११ | आसिफ़ खां का लाहौर से पहुंचना | آصف خاں وزیر کا لاہور سے آنا | ۱۱ |
| " | बिहारी दास कछवाहे, राजा रोज़ अफ़ज़ूं. राजा गिरधर. जादों राय कायस्थ. जूझार सिंह बुंदेला. ऊदा जी राम दखनी. राजा जगत सिंह. जसवंत राय दखनी. रावल कल्याण जैसल मेरी. रावल पूंजा शत्रु साल कछवाहा. विक्रमाजीत- | بہاری داس کچھواہا۔ راجہ روز افزوں۔ راجہ گردھر۔ جادون رائے کایتھ۔ جوجہار سنگہ بندیلہ اودا جی رام دکھنی راجہ جگت سنگہ جسونت رائے دکھنی۔ راول کلیان جیسلمیری راول پونجا ستر سال کچھواہا | " |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | बुंदेला. रावल समरसी. बलभद्र शेखावत. किशन सिंह. माधो सिंह हाड़ा. भारमल राठौर. कंवरसेन किश्तवारी. और करमसी राठौर. के मनसब बढ़ना. | بکرماجیت بندیلہ. راول سمرسی بلبھدر شیخاوت کشن سنگھ مادھو سنگھ ہاڑا بھارمل راٹھوڑ کنورسین کشتواری. کرم سی راٹھوڑ کے منصب بڑہنا. | |
| १२ | राव शत्रुसाल हाडा का हाज़िर आना और खलअ़त वग़ैरा पाना. | راؤ ستروسال ہاڑا کا حاضر آنا اور خلعت وغیرہ پانا | ۱۲ |
| १३ | भीम राठौर और पृथ्वी राज राठौर का मनसब. | بھیم راٹھوڑ پرتھی راج راٹھوڑ کا منصب | ۱۳ |
| ,, | राजा भारत बुंदेले को इटावे की फ़ौजदारी. | راجہ بھارت بندیلہ کو اٹاوہ کی فوجداری | ,, |
| ,, | पहिला नौ रोज़ और उसकी धूमधाम | پہلا نوروز اُسکی دہوم دہام | ,, |
| ,, | पठानों का काबुल के सूबेदार को खैबर के घाटे में लड़कर शकस्त देना. और बादशाह का लशकर खाँ को सूबेदार करके भेजना. | پٹھانوں کا کابل کے صوبہ دار کو خیبر کے گہاٹہ میں لڑکر شکست دینا اور بادشاہ کا لشکر خاں کو صوبہ دار کرکے بہیجنا | ,, |
| ,, | तख्त नशीनी से नौ रोज़ तक एक किरोड़ ८० लाख रुपये की बख्शिश | تخت نشینی سے نوروز تک ایک کروڑ ۸۰ لاکھ کی بخشش | ,, |
| १४ | महाराजा भीम सीसोदिया के बेटे राय सिंह को राजा का खिताब और मनसब. | مہاراجہ بھیم سیسودیہ کے بیٹے راے سنگھ کو راجہ کا خطاب اور منصب | ۱۴ |
| ,, | नरहर दास बुंदेले को मनसब. | نرہرداس بندیلہ کا منصب | ,, |
| ,, | दलेर खां और राजा जय सिंह को महावन के फ़सादियों पर भेजना. | دلیرخاں اور راجہ جے سنگھ کو مہابن کے فسادوں پر بہیجنا | ,, |
| १५ | जूझार सिंह बुंदेले का अपने वतन | جوجہار سنگھ بندیلہ کا اپنے | ۱۵ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | से हाज़िर आना. | وطن سے حاضر آنا | |
| ,, | पहाड़ सिंग बुंदेले को हाथी इनायत | پہاڑ سنگھ بندیلہ کو ہاتھی عنایت | ,, |
| ,, | महाबत ख़ां ख़ान ख़ाना को दखन बराड़ और ख़ानदेस की सूबादारी. | مہابتخاں خانخاناں کو دکن برار اور خاندیس کی صوبہ داری | ,, |
| ,, | ख़ानजहां लोदी को मालवे की सूबेदारी. | خان جہاں لودی کو مالوہ کی صوبہ داری | ,, |
| ,, | बुख़ारा के ख़ान इमामकुली के भाई नज़र मुहम्मद ख़ां का काबुल को घेरना. | خاں بخارا امام قلی کے بھائی نذر محمد خاں کا کابل کو گھیرنا | ,, |
| ,, | जुझार सिंह बुंदेले का भागना. | جوجہار سنگھ بندیلہ کا بھاگنا | ,, |
| २६ | राजा जयसिंह और क़ासिम ख़ां का महावन से आना. | راجہ جے سنگھ اور قاسم خاں کا مہابن سے آنا | ۱۶ |
| ,, | चन्द्रमणि और भगवानदास बुंदेले को मनसब. | چندرمن اور بھگوانداس بندیلہ کو منصب | ,, |
| ,, | पहाड़ सिंह और बिहारीदास कछवाहे का इज़ाफ़ा. | پہاڑ سنگھ اور بہاریداس کچھواہا کا اضافہ | ,, |
| ,, | महाबत ख़ां. राव रतन हाड़ा. राजा जयसिंह कछवाहा. और सूर भुरटिया. और मोतमिद ख़ां का नज़र मुहम्मद ख़ां के ऊपर रवाना होना | مہابت خاں راو رتن ہاڈا راجہ جے سنگھ کچھواہا اور راو سور بہورٹیہ اور معتمد خاں کا نذر محمد خاں کے اوپر روانہ ہونا | ۱۶ |
| ,, | प्रताप उज्जैनिया को मनसब और राजा का ख़िताब. | پرتاب اوجینیہ کو منصب و راجہ کا خطاب | ,, |
| २७ | करमसी राठौर का इज़ाफ़ा. | کرمسی راٹھور کا اضافہ | ۱۷ |
| ,, | निज़ामुलमुल्क के अफ़सर ख़ीलजी | نظام الملک کے افسر | ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | भोसलाके वास्ते पांच हज़ारी मन्सब और फ़रमान | کھیلوجی بہوسلہ کے واسطے پانچہزاری منصب اور فرمان | |
| १७ | राजा गज सिंह के बेटे अमर सिंह को हाथी इनायत. | راجہ گج سنگھ کے بیٹے امرسنگھ کو ہاتھی عنایت | ۱۷ |
| ,, | राजा भारत बुंदेले को नक़ारा. | راجہ بہارت بندیلہ کو نقارہ | ,, |
| | **दूसरा बरस ॥** | **دوسرا برس** | |
| १८ | लशकर खाँ सूबेदार काबुल का नज़र मुहम्मद खाँ उज़बक को भगाना और महावतखां का लौट आना | لشکر خاں صوبہ دار کابل کا نذر محمد خاں اورنگ کو بہگانا اور مہابت خاں کا لوٹ آنا | ۱۸ |
| ,, | बादशाह का तूरान को वकील भेजना. | بادشاہ کا توران کو وکیل بہیجنا | ,, |
| ,, | जुझार सिंह के ऊपर महावतखाँ की तइनाती. | جوجہار سنگھ کے اوپر مہابت خاں کی تعیناتی | ,, |
| ,, | राजा रामदास नरवरी. भगवानदास बुंदेला. और जेत सूर वग़ैरा का महावत खां के साथ जाना. | راجہ رام داس نروری بہگوانداس بندیلہ اور جیت سنگھ وغیرہ کا مہابت خاں کے ساتھ جانا | ,, |
| ,, | राजा विट्ठल दास गौड़. अनी राय सिंह दलना. माधो सिंह कछवाहा के बेटे शत्रुसाल बलभद्र सैन शेखावत राजा गिरधर और राजा भारत बुंदेले का मालवे के सूबेदार खान जहां के साथ उरछे पर जाना. | راجہ بٹھلداس گوڑ انی راے سنگھ دلن مادہو سنگھ کچھواہا کے بیٹے سترسال بلبہدر سین شیخاوت راجہ گردہر اور راجہ بہارت بندیلہ کا مالوہ کے صوبہ دار خانجہاں کے ساتھ اورچھہ جانا | ۱۸ |
| १९ | उरछे राजा भारत बुंदेले के दादा से ज़ब्त करके जहांगीर बादशाह ने | اورچھہ کے راجہ بہارت بندیلہ کے دادا سے ضبط کرکے جہانگیر | ۱۹ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | जुझार सिंहके बाप बर सिंहदेव को देदिया था. | بادشاہ نے جوجہار سنگہ کے باپ برسنگہ دیو کو دیا تہا | |
| १९ | अब्दुल्ला खां को भी पूर्व की तरफ़से उरछे पर जानेका हुक्म होना. | عبداللہ خاں کو بہی پورب کیطرف اورچہہ جانیکا حکم ہونا | ,, |
| ,, | बहादर खां रुहेला. रावसूरसुरदिया पहाड़ सिंह बुंदेला. किशनसिंह भदौरिया को उरछे जानेका हुक्म. | بہادر خاں روہیلہ راو سور بہرتیہ پہاڑ سنگہ بندیلہ اور کشن سنگہ بہدوریہ کو اورچہہ جانیکا حکم | ,, |
| २० | बादशाह का आगरे से गवालियर जाना. | بادشاہ کا آگرہ سے گوالیار جانا | ۲۰ |
| ,, | जुझार सिंह का क़सूर माफ़ होना. | جوجہار سنگہ کا قصور معاف ہونا | ,, |
| ,, | बहादुर खां और पहाड़ सिंह बुंदेले को एरच फ़तह करने में नक़्क़ारा मिलना. | بہادر خاں اور پہاڑ سنگہ بندیلہ کو ایرچ فتح کرنے کے انعام میں نقارہ ملنا | ,, |
| ,, | निज़ामुल् मुल्क ने हुक्म पहुंचने पर बाला घाट का मुल्क छोड़ दिया | نظام الملک کا حکم پہونچنے پر بالا گہاٹ کا ملک چہوڑ دینا | ,, |
| २१ | दरया खां रुहेले का साहूजी भोंसले को दौलताबाद के ज़िले से भगाना | دریا خاں روہیلہ کا ساہو جی بہوسلہ کو دولت آباد کے ضلع سے بہگانا | ۲۱ |
| ,, | बादशाह का आगरे से वापस आना. | بادشاہ کا آگرہ سے واپس آنا | ,, |
| ,, | जुझारसिंह का दर्बार में हाज़िर होजाना | جوجہار سنگہ کا دربار میں حاضر ہو جانا | ,, |
| २२ | १ बर्ष में ४ लाख बीघे ज़मीन और १२० गांव की खैरात. | ایک برس میں چار لاکہہ بیگہہ زمین اور ۱۲۰ گانو کی خیرات | ۲۲ |
| ,, | खीलूजी के भाई परसूजी को मनसब मिलना. | کہیلوجی کے بہائی پرسوجی کو منصب ملنا | ,, |
| २३ | २ ब्राह्मणों को इनाम. | دو برہمنوں کو انعام | ۲۳ |
| ,, | खानजहां लोदी का आगरे से भागना. | خانجہاں لودی کا آگرہ سے بہاگنا | ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २३ | राजा जयसिंह. राव सूर भुरटिया. राजा विठ्ठल दास. राजा भारत-बुंदेला. माधो सिंह हाड़ा. भीम राठौर. पृथ्वी राज राठौर. राजा वीर नारायरा. राय हर चन्द पडिहार. और खिदमत परस्त खाँ. का खानजहाँ के ऊपर भेजना. | راجہ جیسنگہ راو سور بہرٹیہ راجہ بٹھلداس راجہ بہارت بندیلہ مادہو سنگہ ہاڈا بہیم راٹھوڑ پرتھی راج راٹھوڑ راجہ بیر نراین ہرچند پڑہار اور خدمت پرست خاں کا خان جہاں کے اوپر بہیجنا | ۲۳ |
| २४ | विठ्ठल दास और पृथ्वी राज राठौर का खानजहां से लड़ना. | بٹھلداس اور پرتھی راج راٹھوڑ کا خان جہاں سے لڑنا | ۲۴ |
| ,, | राजा जय सिंह का खानजहां के पीछे जाना. | راجہ جیسنگہ کا خان جہاں کے تعاقب میں جانا | ,, |
| २५ | विठ्ठल दास और पृथ्वी राज को खलअत और इज़ाफ़ा. | راجہ بٹھلداس اور پرتھی راج کو خلعت و اضافہ | ۲۵ |
| ,, | रावत राव को मनसब. | راوت راو کو منصب | ,, |
| २६ | खानजहां का जुझार सिंह के बेटे विक्रमाजीत की मदद से निकल कर दखन में निज़ामुल्मुल्क के पास पहुंचना. | خان جہاں کا جوجہار سنگہ کے بیٹے بکرماجیت کی مدد سے نکلکر دکہن میں نظام الملک کے پاس پہونچنا | ۲۶ |
| ,, | ज़ेच शाह जहानी के हिन्दी तरजुमे से पंचांग निकालने का हुक्म. | زیچ شاہ جہانی کے ہندی ترجمہ سے پنچانگ نکالنے کا حکم | ,, |
| ,, | बादशाह का कूच दखन को. | بادشاہ کا کوچ دکہن کو | ,, |
| ,, | अमर सिंह राठौर का इज़ाफ़ा. | امر سنگہ راٹہوڑ کا اضافہ | ,, |
| ,, | बादशाह खानदेश में-याकूत हवशी खीलूजी और ऊदाजी को इनाम. | بادشاہ خاندیس میں یاقوت حبشی کہیلوجی اور داوداجی کو انعام | ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २६ | मालूजी का ५ हज़ारी होना. | مالوجی کا پانچہزاری ہونا | ۲۶ |
| ,, | आसेर से बादशाह का ३ फ़ौजें निज़ामुल्मुल्क और खानजहां पर रवाने करना. | آسیر سے بادشاہ کا تین فوجیں نظام الملک اور خان جہاں پر روانہ کرنا | ״ |
| ,, | जुझार सिंह बुंदेला. राव दूदा. चंद्रावत. शत्रुसाल कछवाहा. करम सी राठौर. राजा द्वारका दास कछुवाहा. बलभद्र शेखावत. स्याम सिंह सीसोदिया. राजा गिरधर. मलूक चन्द. राय मनोहर का पोता. रामचन्द्र हाड़ा जगन्नाथ राठौर. मुकंद दास जादों. उदयसिंह राठौर. खीलूजी. मेनाजी और परसूजी भोसला का दखन के सूबेदार इरादत खां के साथ तइनात होना. | جوجہار سنگہ بندیلہ راو دودا چندراوت ستروسال کچھواہا کرم سی راٹھوڑ راجہ دوارکاداس کچھواہہ بلبھدر سیکہاوت سیام سنگہ سیسودیہ راجہ گردہر ملوک چند راے منوہر کا پوتہ رام چندر ہاڈا جگناتھ راٹھوڑ مکند داس جادوں اودے سنگہ راٹھوڑ کہیلوجی میناجی اور پرسوجی بہوسلہ کا دکہن کے صوبہ دار ارادت خاں کے ساتھ تعینات ہونا | ״ |
| २८ | राजा गज सिंह की फ़ौज में राजा विठ्ठलदास. अनी रायबड़ गूजर. राजा मन रूप कछुवाहा. रावल पूंजा. भीम राठौर. राजा वीर नारायण बड़ गूजर. गोकुल दास सीसोदिया. जयराम बड़ गूजर. नरहर दास झाला. राय हर चन्द पड़िहार. ऊदाजीराम. और खीलूजी की तइनाती. | راجہ گج سنگہ کی فوج میں راجہ بیٹھلداس انی راے بڈگوجر راجہ منروپ کچھواہا راول پونجا بہیم راٹھوڑ راجہ بیر نراین بڈگوجر گوکلداس سیسودیہ جیرام بڈگوجر نرہرداس جہالا راے ہرچند پڑہار اوداجی رام اور کہیلوجی کی تعیناتی | ۲۸ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २८ | शायस्ता खांकी फ़ौज में राजाजय सिंह. पहाड़ सिंह. राव भुररिया. माधो सिंह हाड़ा. राजा रोज़अफ़ज़ूं. चन्द्र मणि बुंदेला. राजा किशन सिंह भदोरिया. भगवानदास बुंदेला. नरहर दास बुंदेला. रावत राय. राना जगत सिंह के काका अर्जुन का मुक़र्रर होना | شائستہ خاں کی فوج میں راجہ جے سنگھ پہاڑ سنگھ مادہو سنگھ ہاڈا راجہ روز افزوں چندر من بندیلہ راجہ کشن سنگھ بہادریہ بھگوانداس بندیلہ نرہرداس بندیلہ راوت رائے رانا جگت سنگھ کے کاکا ارجن کا مقرر ہونا | ۲۸ |
| २९ | जुझार सिंह. ऊदाजीराम. राजाजय सिंह और पृथ्वी राज राठौड़ का इज़ाफ़ा | جوجہار سنگھ اوداجیرام راجہ جے سنگھ اور پرتھی راج راٹھوڑ کا اضافہ | ۲۹ |
| ३० | राव रतन हाड़ा का तिलंगाना फ़तह करने को जाना. | راو رتن ہاڈا کا تلنگانہ فتح کرنیکو جانا | ۳۰ |
| ,, | राजा भारत बुंदेला राजा रामदास नरवरी. जैत सिंह राठौड़. इन्द्र साल हाड़ा. ईसरदास सीसोदिया और उदय सिंह का राव रतन के साथ जाना. | راجہ بہارت بندیلہ راجہ رامداس نروری جیت سنگھ راٹھوڑ اندرسال ہاڈا ایسرداس سیسودیہ اور اودے سنگھ کا راو رتن کے ساتھہ جانا | ,, |
| ,, | राव दूदा और रूपचन्द गुलेरी का इज़ाफ़ा | راو دودا اور روپ چند گلیری کا اضافہ | ,, |
| ३१ | अबुल हसन और पृथ्वीराज राठौर का नासिक त्र्यम्बक फ़तह करने को जाना. | ابوالحسن اور پرتھی راج راٹھوڑ کا ناسک ترمبک فتح کرنیکو جانا | ۳۱ |
| ,, | राजा भारत बुंदेले का इज़ाफ़ा. | راجہ بہارت بندیلہ کا اضافہ | ,, |
| ,, | अब्दुल्ला खां फ़ीरोज़जंग का शाय | عبداللہ خاں فیروز جنگ | ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३१ | स्ता खां की जगह अफ़सर होना. | کا شایستہ خاں کی جگہ افسر ہونا | |
| ,, | जुझार सिंह और पहाड़ सिंह बुंदेले को राजा का ख़िताब. | جوجہار سنگھ اور پہاڑ سنگھ بندیلہ کو راجہ کا خطاب | ,, |
| ३२ | ग़नीम की हार. माधो सिंह के बेटे शत्रुसाल कछवाहे शत्रुसाल के बेटों भीम सिंह आनंद सिंह. करमसी राठौड़. बलभद्र शेखावत और मड़तिये जयमल के पोते जगन्नाथ का काम आना. | غنیم کی شکست مادہو سنگھ کے بیٹے ستر سال کچھواہہ ستر سال کے بیٹوں بہیم سنگھ انند سنگھ کرم سی راٹہوڑ بلبہدر سیکہاوت اور میڑتیہ جیمل کے پوتہ جگناتہ کا کام آنا | ۳۲ |
| ३३ | राजा द्वारिका दास का ज़ख्मी होना | راجہ دوارکا داس کا زخمی ہونا | ۳۳ |
| ,, | मुलतफ़त खाँ और राव दूदा का मैदान छोड़ भागना. | ملتفت اور راو دودا کا میدان چہوڑ بہاگنا | ,, |
| ,, | राजा द्वारिका दास और हिरदेराम कछवाहे का इज़ाफ़ा. | راجہ دوارکا داس اور ہردیرام کچھواہا کا اضافہ | ,, |
| ,, | संगूजी दखनी और साबाजी के मनसब. | سنگوجی دکہنی اور ساباجی کے منصب | ,, |
| ,, | साबा जी को हाथी. | ساباجی کو ہاتہی | ,, |
| ३४ | नसीरी खां का राव रतन हाड़ा की जगह तिलंगाना की मुहिम में तईनात होना. | نصیری خاں کا راو رتن ہاڑا کی جگہہ تلنگانہ کی مہم میں تعینات ہونا | ۳۴ |
| ,, | राजा गजसिंह का हाज़िर दर्गाह होना | راجہ گج سنگھ کا حاضر درگاہ ہونا | ,, |
| ,, | जादोंराय का निज़ामुल्मुल्क के पास जाकर अपने दो बेटों अचला राघो राय और पोते यसवंत राय समेत मारा जाना. | جادون راے کا نظام الملک کے پاس جاکر اپنے دو بیٹوں اچلا راگہو راے اور پوتہ یسونت راے کے مارا جانا | ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३५ | बादशाह का याक़ूत खाँ ऊदाजीराम और खीलूजी को भेजकर जादों राय के भाई जगदेव राय यसवन्तराय और बीठूजी को बुलाना. | بادشاہ کا یاقوت خاں اودا بے رام اور کہیلوجی کو بہیجکر جادون راے کے بہائی جگدیو راے بسونت راے اور بٹہوجی کو بلانا | ״ |
| ३६ | खानजहां लोदी के इशारे से अफ़गानों का पिशौर पर आकर वहां के हाकिम से शकिस्त खाना. | خانجہاں لودی کے اشارہ سے افغانوں کا پیشور پر آکر وہاں کے حاکم سے شکست کہانا | ۳۶ |
| | **बरस चौथा.** | **برس چوتھا** | |
| ३७ | राव रतन का बासम से हाज़िर होना | راو رتن کا باسم سے حاضر ہونا | ۳۷ |
| ״ | अनी राय सिंह दलन को राजा का खिताब क्योंकि उसका बाप बीर नारायन मर गया था. | انی راے سنگہہ دلن کو راجہ کا خطاب کیونکہ اوس کا باپ بیرنارائن مرگیا تہا | ״ |
| ״ | रवि राय नारूजी को मनसब | ربی راے نارو کا منصب | ״ |
| ३८ | राजा गज सिंह को खलअत. | راجہ گج سنگہ کو خلعت | ۳۸ |
| ״ | जगजीवन जर्राह का मुज़फ़्फ़र खाँ के इलाज को भेजना, | جگ جیون جراح کا مظفر خاں کے علاج کو بہیجنا | ۳۸ |
| ״ | राजा जय सिंह का आज़म खाँ की फ़ौज में हिरावल होना. | راجہ جے سنگہ کا اعظم خاں کی فوج میں ہراول ہونا | ״ |
| ״ | अबुल हसन का नासक पर निज़ामुल्मुल्क के महलदार और दादा पंडित को शकस्त देना. | ابوالحسن کا ناسک پر نظام الملک کے محلدار اور دادا پنڈت کو شکست دینا | ״ |
| ״ | बगलाने के राजा भरजी का हाज़िर आना. | بگلانہ کے راجہ بہرجی کا حاضر آنا | ״ |
| ३९ | राव रतन हाड़ा का आसिफ़ खाँ के | راو رتن ہاڈا کا آصف خاں | ۳۹ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३९ | साथ बाला घाट काजाना. | کے ساتھہ بالاگھاٹ جانا | |
| ,, | मनरूप का मरना और गोपाल सिंह का इज़ाफ़ा. | منروپ کا مرنا اور گوپال سنگہ کا اضافہ | ,, |
| ,, | सूबे दार उड़ीसा का क़िले मन सूरगढ़ को क़ुतब शाह के आदमि यों से फ़तह करना. | صوبہ دار اوڑیسہ کا قلعہ منصور گڈہ کو قطب شاہ کے آدمیوں سے فتح کرنا | ,, |
| ,, | खान जहां का लड़कर भागना. और राजा पहाड़ सिंह के नौकर परस राम का उस के भतीजे बहादुर खां को मार लैना. | خان جہاں کا لڑکر بھاگنا اور راجہ پہاڑ سنگہ کے نوکر پرسرام کا اوسکے بہتیجے بہادر خاں کو مار لینا | ,, |
| ,, | राजाजयसिंह. विट्ठलदास. अनूप सिंह. नाहर झाला पहाड़सिंह बुंदेला. राव सूर भुरटिया. चन्द्र-मणि बुंदेला की उस लड़ाई में बहादुरी. | راجہ جے سنگہ بیٹھلداس انوپ سنگہ ناہر جہالا پہار سنگہ بندیلہ سور بہورٹیہ چندر مین بندیلہ کی وس لڑائیمیں بہادری | ,, |
| | | جادون رائے کے داماد | ۴۱ |
| ४१ | जादों रायके दामाद साहूजीउस के बेटे साबाजी. और भतीजे मैना जी का बादशाही नौकर होना. | ساہوجی اوسکے بیٹے سابا جی اور بہتیجے مینا جی کا بادشاہی نوکر ہونا۔ | |
| ४२ | रवि राय मालूजी और हापाजी के मनसब | ربی رائے مالوجی اور ہاپاجی کے منصب | ۴۲ |
| ,, | आलम चन्द और गोबिन्द राय पडिहार का अबदुल्लाह खांके साथ दरया खां के ऊपर जाना. | عالم چند اور گوبند رائے پڑہار کا عبد اللہ خاں کے ساتھہ دریا خاں کے اوپر جانا | ,, |
| ,, | साहूजी भोंसला जुनेर और संगमेर के बंदोबस्त पर. | ساہوجی بہوسلہ جنیر اور سنگمیر کے بندوبست پر | ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४२ | खान जहां का जिसका असली नाम पीरा था, मालवे को जाना. | خاں جہاں کا جسکا اصلی نام پیرا تھا مالوہ کو جانا | ۴۲ |
| ४३ | बादशाह का बुरहान पुर से मुज़फ़्फ़र खाँ, राजा द्वारिका दास, नाधो सिंह हाड़ा, स्याम सिंह, और उग्रसैन को पीरा के पीछे भेजना. | بادشاہ کا برہان پور سے مظفر خاں راجہ دوارکا داس ہاڑا دہو سیام سنگہ اور اگرسین کو پیرا کے پیچھے بھیجنا | ۴۳ |
| ४४ | जुझार सिंह के बेटे विक्रमाजीत का दरया खां को मारलैना बादशाह का उसके वास्ते जुगराज का खिताब और खलअत सुन्दर कविराय के हाँथ भेजना. | جوجہار سنگہ کے بیٹے بکرماجیت کا دریا خانکو مار لینا بادشاہ کا اوسکے واسطے جگراج کا خطاب اور خلعت سندر کب راے کے ہاتہ بہیجنا | ۴۴ |
| ४५ | आज़म खाँ का क़िले धारूर को निज़ामुल्मुल्क के आदमियों से फ़तह करना. | اعظم خاں کا قلعہ دہارور کو نظام الملک کے آدمیوں سے فتح کرنا | ۴۵ |
| ,, | जुझार सिंह बुंदेले को इस फ़तह में कोशिश करने से खलअत मिलना. | جوجہار سنگہ بندیلہ کو اس فتح میں کوشش کرنے سے خلعت ملنا | ,, |
| ४६ | आदिल खाँ के सेना पति रणदूल्हा का आज़म खां के पास आना. | عادل خاں کے سپہ سالار رن دولہ کا اعظم خاں کے پاس آنا | ۴۶ |
| ,, | मौज़ा नीमी इलाक़े रीवां में राजा द्वारिका दास का पीरा से जंग करके काम आना. | موضع نیمی علاقہ ریواں میں راجہ دوارکا داس کا پیرا سے جنگ کرکے کام آنا | ,, |
| ,, | रीवां के राजा अमर सिंह का पीरा के हाथी छीन कर बादशाह के पास भेजना. | ریواں کے راجہ امر سنگہ کا پیرا کے ہاتہی چہین کر بادشاہ کے حضور میں بہیجنا | ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४६ | पीरा का माधो सिंह हाड़ा के बरछे से मारा जाना. | پیرا کا مادہو سنگہ ہاڈا کی برچھی سے مارا جانا | ″ |
| ४७ | रण दूल्हा का आज़म ख़ाँ के पास से चला जाना. | رن دولہ کا اعظم خاں کے پاس سے چلا جانا۔ | ۴۷ |
| ,, | आज़म ख़ाँ का क़िले परेंडे पर जाना निज़ामुल्मुल्क और आदिल ख़ां का एक होजाना | اعظم خاں کا قلعہ پرینڈہ پر جانا نظام الملک اور عادلخاں کا ایک ہو جانا | ″ |
| ,, | राजा जय सिंह राजा पहाड़ सिंह और राजा अनूप सिंह का दखनियों को लड़कर भगाना. | راجہ جے سنگہ راجہ پہاڑ سنگہ اور راجہ انوپ سنگہ کا دکہنیوں کو لڑکر بہگانا | ″ |
| ४८ | ईरान के एलची का बुरहानपुर में बादशाह के पास आना | سفیر ایران کا برہان پور میں بادشاہ کے پاس آنا | ۴۸ |
| ,, | गुजरात और दखन में काल का बंदोबस्त | گجرات اور دکہن میں کال کا بندوبست | ″ |
| ४९ | नौरोज़. ईरान के बादशाह की सौग़ात और क़ुतुबुल्मुल्क वग़ैरा की पेशकश. | جشن نوروز۔ ایران کے بادشاہ کی سوغات اور قطب الملک وغیرہ کی پیشکش | ۴۹ |
| ,, | चाँदा के ज़मीदार केबाँ का नज़राना | کیبان زمیندار چاندا کا نذرانہ | ″ |
| ५० | माधो सिंह हाड़ा को इज़ाफ़ा और झंडा. | مادہو سنگہ ہاڈا کو اضافہ اور جہنڈا عنایت | ۵۰ |
| ,, | मेष संक्रांति के दिन २० लाख रुपये के नज़राने. | شرف آفتاب کے دن ۲۰ لاکہہ روپیہ کے نذرانے | ۵۰ |
| ,, | दयानतराय नागरब्राह्मण गुजराती का अफ़सर खालिसे होना. | دیانت رائے ناگر برہمن گجراتی کا افسر خالصہ شریفہ ہونا | ″ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५० | अहदियों का बख़्शी जसवंतराय. | جسونت رائے بخشی احدیاں | ″ |
| ″ | साहूजी का नासिक में छोड़ाजाना. | ساہوجی کا ناسک میں | ″ |
| ″ | मेदना राय का नौकर होना. | میدنی رائے کا بادشاہی نوکر ہونا | ″ |
| ५१ | बैनी दास बुंदेले को मनसब. | بینی داس بندیلہ و راجہ ابے سنگہ دیو کو منصب | ۵۱ |
| ″ | राजा विट्ठल दास को रंथंभोर का क़िला इनायत होना. | راجہ بیٹھلداس کو رنتھمبور کا قلعہ عنایت ہونا | ″ |
| ″ | राव सुरजन हाड़ा. राणा उदयसिंह का मुलाज़िम था. | راو سُرجن ہاڈا رانا اودے سنگہ کا ملازم تہا | ″ |
| ५२ | विहारी दास कछवाहा और चंद्र मणि बुंदेला के इज़ाफ़े. | راجہ بہاری داس اور چندر من بندیلہ کے اضافہ | ۵۲ |
| ″ | तलतम और सतोंड़े के किलों में बादशाही क़ब्ज़ा. | تلتم اور ستونڈرہ کے قلعوں میں بادشاہی عمل | ″ |
| ″ | रण दूल्हा और निज़ाम शाहियों की हार | رن دولہ اور نظام شاہیوں کی شکست | ″ |
| ″ | क़िले क़ंधार में राजा भारत बुंदेले की मारफ़त नसीरी ख़ां का अमल करना. | قلعہ قندہار میں راجہ بہارت بندیلہ کی وساطت سے نصیری خاں کا عمل کرنا۔ | ″ |
| ५३ | निज़ामुलमुल्क का अंबर के बेटे फ़तह ख़ां को अपनी सलतनत का मुख़तार करना और अगले मुख़तार मुकर्रब ख़ां का आकर बादशाही नौकर होजाना. | نظام الملک کا عنبر کے بیٹے فتح خاں کو اپنی سلطنت کا مختار کرنا اور اگلے مختار مُقرب خاں کا آکر بادشاہی نوکر ہو جانا | ۵۳ |
| ″ | रण दूल्हा और निज़ाम शाहियों का बादशाही लशकर के १ हिस्से को हराना. | رن دولہ اور نظام شاہیوں کا بادشاہی لشکر کے ایک حصہ پر غلبہ پانا۔ | ″ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५३ | बादशाह की बेगम मुमताज़ उलज़मानी का मरना उस का हाल और बादशाह को शोक उसके वास्ते. | بادشاہ کی عزیز بیگم ممتاز الزمانی کا مرنا اوسکا حال اور بادشاہ کا رنج وغم اوسکے واسطے | ٥٣ |
| ५४ | बेगम की औलाद का हाल. | بیگم کی اولاد کا حال | ٥٤ |
| ५९ | जहांआरा बेगम का महल के कामों में मुख़तार होना. | جہاں آرا بیگم کا محل کے کاموں میں مختار ہونا | ٥٩ |
| ६० | निज़ामुल्मुल्क को उस के मुख़्तार फ़तह ख़ां का बादशाह के इशारे से मार डालना और हुसैन शाह को दौलताबाद में गद्दी पर बिठाना | نظام الملک کو اوسکے مختار فتح خاں کا بادشاہ کے اشارہ سے مار ڈالنا اور حسین شاہ کو دولت آباد میں گدی پر بٹھانا۔ | ٦٠ |
| " | राजा भारत बुंदेले के मनसब में इज़ाफ़ा. | راجہ بھارت بندیلہ کے منصب میں اضافہ | " |
| " | राव सूर भुरटिया का मरना और उस के बेटे करण का राज पाना और भाई शत्रुसाल को मन्सब मिलना. | راو سور بھرٹیہ کا مرنا اور اوسکے بیٹے کرن کا راج پانا اور بھائی شترو سال کو منصب ملنا | " |
| " | बहादुर जी और जग देव दखनी का हाज़िर आना. | بہادر جی اور جگدیو دکھنی کا حاضر آنا | " |
| ६२ | जादों राय को ख़लअ़त और इनाम. | جادون رائے کو خلعت اور انعام | ٦٢ |
| ६३ | बीठू जी का हज़ूर में आना. | بیٹھو جی کا حضور میں آنا | ٦٣ |
| " | राव रतन हाड़ा का मरना और उस के पोते शत्रुसाल को राज मि० | راو رتن ہاڈا کا مرنا اور اوسکے پوتہ شترو سال کو راج ملنا | " |
| " | माधो सिंह हाड़ा को कोटे और पलायते का राज मिलना | مادہو سنگہ ہاڈا کو کوٹہ اور پلائتہ کا راج ملنا۔ | " |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६३ | राव शत्रुसाल के बाप गोपी नाथ की ताक़त का बयान. | راؤ شترو سال کے باپ گوپی ناتھہ کی طاقت کا بیان | ٦٣ |
| ६४ | ऊदाजी राम दखनी को चालीस हज़ार ४०००० रु० इनायत | اوداجی رام دکھنی کو چالیس ہزار روپیہ عنایت | ٦٤ |
| " | बेगम की लाश का आगरे भेजा जाना और जमना के किनारे राजा महा सिंह के हाते में दफ़न होना और राजा जय सिंग को उस के बदले में दूसरी हवेली मिलना. | بیگم کی لاش کا آگرہ بھیجا جانا اور جمنا کے کنارہ راجہ مہا سنگھ کے احاطہ میں دفن ہونا اور راجہ جے سنگھ کو اُس احاطہ کے بدلے دوسری حویلی ملنا | " |
| ६५ | ताज बीबी का रोज़ा. | تاج بی بی کا روضہ | ٦٥ |
| " | आसिफ़ ख़ाँ वज़ीर, राजा जै सिंह, पहाड़ सिंह, ऊदाजीराम, खीलू जी, मालूजी, और बहादुर जी, का बुरहान पुर से मुहम्मद आदिल शाह बीजा पुर वाले के ऊपर भेजा जाना. | آصف خاں وزیر۔ راجہ جے سنگھ پہاڑ سنگھ اوداجی رام۔ کھیلوجی۔ مالوجی اور بہادر جی کا برہان پور سے محمد عادل شاہ والی بیجاپور کے اوپر بھیجا جانا | " |
| " | अबदुल्लाह ख़ां फ़ीरोज़ जंग, राजा जुझार सिंह बुंदेला, और राजा भारत बुंदेले को तिलंगाने से आसिफ़ ख़ाँ के शामिल होने का हुक्म | عبداللہ خاں فیروز جنگ راجہ جوجھار سنگھ بندیلہ اور راجہ بھارت بندیلہ کو تلنگانہ سے آصف خاں کے شامل ہونے کا حکم | " |
| ६६ | आसिफ़ ख़ां का बीजा पुर के घेरे से उठ आना और बीजा पुर वालों का शोला पुर तक पीछा करना | آصف خاں کا بیجاپور کے محاصرہ سے اوٹھہ آنا اور بیجاپور والوں کا شولاپور کا تعاقب کرنا | ٦٦ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६६ | चन्द्रमरिग बुंदेला, राजा अनूप सिंह, और राव दूदा का उस मुहिम में शामिल होना. | چندرمن بندیلہ راجہ انوپ سنگہ اور راو ددا کا اوس مہم میں شامل ہونا | ٦٦ |
| " | राय काशी नाथ का दीवान सहरन्द होना. | رائے کاشی ناتھہ کا دیوان سہرند ہونا | ٦٦ |
| ६७ | बीकानेर के राव करण का हाज़िर आना. | بیکانیر کے راو کرن کا حاضر آنا | ٦٧ |
| " | शत्रुसाल हाड़ा का हाज़िर आना | شترو سال ہاڈا کا حاضر ہونا | // |
| " | बादशाह का वज़ीर खां. राजा बिट्ठल दास. माधो सिंह. राव करन. और पृथ्वी राज को फ़तह खाँ के ऊपर भेजना. | بادشاہ کا وزیر خاں راجہ بیٹھلداس مادہو سنگہ راو کرن اور پرتہی راج کو فتح خاں کے اوپر بھیجنا | ٦٧ |
| " | शत्रुसाल हाड़ा का हाज़िर आना. | شترو سال ہاڈا کا حاضر آنا | // |
| ६८ | किशन सिंह राठौर का नूरुद्दीन कुली को अपने बाप जसवन्त सिंह के बैर में मार डालना. | کشن سنگہ راٹہور کا نورالدین قلی کو اپنے باپ جسونت سنگہ کے بیر میں مار ڈالنا | ٦٨ |
| " | बगलाने के भरजी का हाज़िर आना | بگلانہ کے بہرجی کا حاضر آنا | ٦٨ |
| " | राजा राय सिंह का इज़ाफ़ा. | راجہ رائے سنگہ کا اضافہ | // |
| ६९ | हरी सिंह राठौड़ का इज़ाफ़ा. | ہری سنگہ راٹہوڑ کا اضافہ | ٦٩ |
| " | बादशाह का बुरहान पुर से आगरे को रवाना होना और महाबत ख़ाँ को दक्खन की सूबेदारी पर छोड़ना. | بادشاہ کا برہان پور سے آگرہ کو روانہ ہونا اور مہابت خاں کو دکہن کی صوبہ داری پر چہوڑنا | // |
| " | काली भीत के ज़मींदार भीमसैन का हाज़िर आना. | کالی بہیت کے زمیندار بہیم سین کا حاضر آنا | // |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७० | राजा जुझारसिंह के बेटे विक्रमाजीत को जुगराज का ख़िताब | راجہ جوجہار سنگہ کے بیٹے بکرماجیت کو جگ راج کا خطاب | ۷۰ |
| ,, | बादशाह आगरे में | بادشاہ آگرہ میں | ,, |
| ,, | दौलताबाद में बादशाह की आण दुहाई | دولت آباد میں بادشاہ کا سکہ اور خطبہ | ,, |
| ,, | बलख़ के वकील का आना. | بلخ کے وکیل کا آنا | ,, |
| ,, | ५ क़िले और पचास लाख का मुल्क निज़ामुल्मुल्क की वलायत से बादशाह को हाथ आना. | پانچ قلعہ اور پچاس لاکھ کا ملک نظام الملک کی ولایت سے بادشاہ کو ہاتھہ آنا۔ | ,, |
| | **बरस छठा ॥** | **برس چھٹا** | |
| ७० | कृपाराम गौड़ को हिसार की क़िलेदारी. | کرپارام گوڑ کو حصار کی قلعداری | ۷۰ |
| ,, | काशीदास का दीवान लाहौर होना | کاشیداس کا دیوان لاہور ہونا | ,, |
| ७१ | साहूजी भोसला का बादशाही नौकरी छोड़कर नासक त्र्यम्बक में अमल करना. | ساہوجی بھوسلہ کا بادشاہی نوکری چھوڑکر ناسک ترنبک میں عمل کرنا | ۷۱ |
| ,, | राय भानीदास. | رائے بھانی داس | ,, |
| ७२ | फ़रंगियों से हुगली बन्दर फ़तह होना. | فرنگیوں سے بندر ہگلی فتح ہونا۔ | ۷۲ |
| ,, | ईरान के वकील को रुख़सत | ایران کے وکیل کو رخصت | ,, |
| ,, | क़िले कालने में क़ब्ज़ा होना | قلعہ کالنہ میں قبضہ | ,, |
| ७३ | भागीरथ भील से काना खेड़ी का क़िला लिया जाना और उसका संग्राम ज़मींदार गुनोर के वसीले से सूबेदार मालवे के पास ५ | بھاگیرتھ بھیل سے کاناکہیڑی کا قلعہ لیاجانا اور اوسکا سنگرام زمیندار گنور کے وسیلہ سے صوبہ دار | ۷۳ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | हाज़िर होना. | مالوہ کے پاس حاضر ہونا | |
| ७४ | बनारस में नये मंदिरों का गिराया जाना | بنارس میں نئے مندروں | ۷۴ |
| ,, | शाहज़ादे दारा शिकोह की शादी | | 〃 |
| ८३ | शाहज़ादे शुजाअ़ की शादी. | شاہزادہ شجاع کی شادی | ۸۳ |
| ८७ | बलख़ को वकील भेजना. | بلخ کو وکیل بھیجنا | ۸۷ |
| ,, | राजा जयसिंह और गज सिंह का अपने २ वतन से हाज़िर आना. | راجہ جے سنگھ اور گج سنگھ کا اپنے وطن سے حاضر آنا | |
| ,, | राजा विट्ठल दास को अजमेर की फ़ौजदारी. | راجہ بیٹھل داس کو اجمیر کی فوجداری | 〃 |
| ८८ | पृथ्वी राज राठौड़ का इज़ाफ़ा. | پرتھی راج راٹھوڑ کا اضافہ | ۸۸ |
| ८९ | ईरान को वकील भेजना. | ایران کو وکیل بھیجنا | ۸۹ |
| ,, | बेगम की क़बर पर सोने का कटेरा | بیگم کی قبر پر سونے کا کٹہرا | 〃 |
| ,, | आगरे में हैज़ा और ज़हरमुहरे से फ़ायदा. | آگرہ میں ہیضہ اور زہر مہرے سے فائدہ | 〃 |
| ,, | औरंगज़ेब का हाथी से लड़ना व राजा जयसिंह का मदद देना. | اورنگ زیب کا ہاتھی سے لڑنا اور راجہ جے سنگھ کا مدد دینا | 〃 |
| ९१ | बादशाह के शेर से लड़ने का हाल जिस में अनूप सिंह बड़गूजर को अनी राय सिंह दलन का ख़िताब मिलना. | بادشاہ کے شیر سے لڑنے کا حال جسمیں انوپ سنگھ بڑگوجر کو انی رائے سنگھ دلن کا خطاب ملنا | ۹۱ |
| ९४ | हिरदे राम को हाथी इनायत. | ہردے رام کو ہاتھی عنایت | ۹۴ |
| ९५ | साहू जी भोंसला का आदिलख़ां से जा मिलना और आदिलख़ां के | ساہو جی بہوسلہ کا عادل خاں سے جا ملنا اور عادل خاں | ۹۵ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९५ | लशकर का दौलताबाद पर आना. | کے لشکر کا دولت آباد پر آنا | ۹۵ |
| ,, | महावत खां का खानज़मां जुगराज और खीलू जी को भेजना और फिर खुद भी मये राव शत्रुसाल हाड़ा के जा कर रण दूला और साहू जी को हराना. | مہابت خاں کا خانزماں جگ راج اور کہیلوجی کو بہیجنا اور پہر خود بہی معہ راو ستروسال ہاڈا کے جا کر رن دولہ اور ساہوجی کو ہرانا | // |
| ९६ | खान ज़मां का खीलू जी और मालू जी और यशवंत राय की मदद से साहू जी को भगा कर दौलताबाद का घेरा देना. | خانزماں کا کہیلوجی اور مالوجی اور یشونت راے کی مدد سے ساہوجی کو بہگا کر دولت آباد کا محاصرہ کرنا | ۹۶ |
| ,, | राजा विक्रमाजीत का मोरचा. | راجہ بکرماجیت کا مورچہ | // |
| ,, | खान खांना पृथ्वीराज राठौड़ और ऊदा जी का दौलताबाद पर आना. | خانخاناں پرتہی راج راٹہوڑ اور اوداجی کا دولت آباد پر آنا | // |
| ,, | दिलेर हिम्मत. उदाजीराम. बहादुर जी. और जुगराज बुंदेले का रण दूल्हा के मुक़ाबिले पर जाना | دلیر ہمت - اوداجی رام بہادر جی اور جگ راج بندیلہ کا رن دولہ کے مقابلہ پر جانا | // |
| ९७ | शत्रुसाल हाड़ा का खानज़मां के डेरे पर दखनियों को लड़ कर भगाना. | ستروسال ہاڈا کا خانزماں کے ڈیرے پر دکہنیوں کو لڑ کر بہگانا۔ | ۹۷ |
| ,, | पृथ्वीराज राठौड़ का एक दखनी यक्के को मारना और महाबत खां के बेटे लोहरास्प का पृथ्वीराज की मदद करना. | پرتہی راج راٹہوڑ کا ایک دکہنی یکہ کو مارنا اور مہابت خاں کے بیٹے لہراسپ کا پرتہی راج کی مدد کرنا | // |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९८ | खानज़मां और शत्रुसाल का साहू और बहलोल वग़ैरा को शकस्त देना. | خان زماں اور ستر وسال کا ساہو اور بہلول وغیرہ کو شکست دینا | ۹۸ |
| " | खीलूजी का दौलताबाद से चले जाना मालूजी और परसूजी को खानखाना का राज़ी करलेना. | کہیلوجی کا دولت آباد سے چلا جانا مالوجی اور پرسوجی کو خانخاناں کا راضی کر لینا | " |
| ९९ | जुगराज बुंदेला का दखनियों की रसद छीन लेना. | جگراج بندیلہ کا دکہنیونکی رسد چہین لینا | ۹۹ |
| १०० | राठोड़ महेस वल्द दलपत के जमाई जगन्नाथ का महाबतखां के पोते शुकरुल्लाह के बचाने में काम आना. | راٹہوڑ مہیس ولد دلپت کے داماد جگناتہہ کا مہابت خاں کے پوتے شکر اللہ کے بچانے میں کام آنا | ۱۰۰ |
| " | ऊदाजीराम दखनी का मरना और उस के बेटे जगजीवन को ३ हज़ारी मनसब मिलना. | اوداجی رام دکہنی کا مرنا اور اوسکے بیٹے جگ جیون کو تین ہزاری منصب ملنا | ۱۰۰ |
| १०१ | नसीरी खां और महेस राठोड़ का दौलताबाद पर हमला. | نصیری خاں و مہیس راٹہوڑ کا دولت آباد پر حملہ | ۱۰۱ |
| " | खानखाना पहाड़सिंह राजा सारंग देव. रावतसिंह बदनसिंह भदोरिया और सगराम का महाकोट को घेरना. | خانخاناں پہاڑ سنگہ راجہ سارنگدیو راوت سنگہ مدن سنگہ بہدوریہ اور سگرام کا مہاکوٹ کو گہیرنا. | " |
| १०२ | मालूजी और जगजीवन का बाहर के मोरचों पर रहना. | مالوجی اور جگ جیون کا باہر کے مورچہ پر رہنا | ۱۰۲ |
| १०३ | राव शत्रुसाल और राव करण का खीलूजी और बहलोल के | راو ستر وسال اور راو کرن کا کہیلوجی اور بہلول | ۱۰۳ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | पीछे बराड़ और तिलंगाने की तरफ़ जाना. | کے تعاقب میں براڑ اور تلنگانہ کی طرف جانا | |
| १०३ | मालूजी राव दूदा पृथ्वी राज और महेस वग़ैरा का रण दूल्हा और साहूजी से लड़ कर रसद छीन लेना. | مالوجی راو دودا پرتھی راج اور مہیس وغیرہ کا رن دولہ اور ساہوجی سے لڑکر رسد چھین لینا | ۱۰۳ |
| ,, | ख़ैरयत ख़ां बीजापुरी और दौलू नाग पंडित का महा कोइ से ख़ान ख़ाना के पास हाज़िर होना और हमी राव मोहनयां का भी. | خیریت خاں بیجاپوری اور دوناگ پنڈٹ کا مہاکو سے حاضر ہونا اور دولو ہوہنیہ کا بھی | ,, |
| ,, | मुरारी पंडित का ख़ान ख़ाना के मोरचे पर आना और राव दूदा का मारा जाना. | مراری پنڈٹ کا خانخاناں کے مورچہ پر آنا اور راو دودا کا مارا جانا | ,, |
| १०५ | ख़ान ख़ाना का दखनियों को हराना. और याक़ूत हबशी का मारा जाना | خانخاناں کا دکھنیوں کو ہرانا اور یاقوت حبشی کا مارا جانا | ۱۰۵ |
| १०६ | फ़तह ख़ां का ख़ान ख़ाना को दौलताबाद का क़िला सौंप देना | فتح خاں کا خانخاناں کو دولت آباد کا قلعہ سونپ دینا | ۱۰۶ |
| ,, | इस मुहिम में राना का भतीजा भोपत राजा पहाड़ सिंह जुगराज बुंदेला वग़ैरा शामिल थे. | اس مہم میں بہوپت برادرزادہ رانا اودے پور راجہ پہاڑ سنگھ وجگراج بندیلہ وغیرہ شامل تھے | ,, |
| ,, | नसीरी ख़ां को ख़ान दौरां का ८ ख़िताब | نصیری خاں کو خاندوراں کا خطاب | ,, |
| १०७ | ख़ान ख़ाना का फ़तह ख़ां और निज़ामुल्मुल्क को बुरहानपुर | راؤ دودا کے بیٹے دیبی سنگھ | ۱۰۷ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | में ले आना. | کو خلعت - خانخاناں کا فتح خاں اور نظام الملک کو برہانپور میں لے آنا - | ۱۰۹ |
| १०८ | बीजापुरवालों का रास्तों में लड़ना और तानाजी डोडिये का माराजाना. | بیجاپوروالوں کا راستوں میں لڑنا اور تاناجی ڈوڈیہ کا مارا جانا - | " |
| " | दौलताबाद के साथ १००० तोपें और ढाई करोड़ रुपये का मुल्क फ़तह होना. | دولت آباد کے ساتھ ایکہزار توپیں اور ڈہائی کروڑ روپیہ کے ملک کا فتح ہونا - | " |
| | **बरस सातवां.** | **ساتواں برس** | |
| १०९ | राजा भारत बुंदेले का क़िले वीकलोर में क़ब्ज़ा करना | راجہ بہارت بندیلہ کا قلعہ ویکلور میں قبضہ کرنا | ۱۰۹ |
| ११० | राजा राय सिंह को हाथी इनायत | راجہ رائے سنگہ کو ہاتہی عنایت | ۱۱۰ |
| " | रण दूल्हा और साहूजी का दौलताबाद को घेरना और महाबत खां के आनेपर नासिक त्रम्बक की तरफ़ चला जाना. | رن دولہ اور ساہوجی کا دولت آباد کو گہیرنا اور مہابت خاں کے آنے پر ناسک ترمبک کیطرف چلا جانا - | " |
| " | फ़रंगी कैदियों का हुज़ूर में आना | فرنگی قیدیوں کا حضور میں آنا | " |
| १११ | महाबत खां की अरज़ी पर शाहज़ादा शुजाअ को दखन भेजना. | مہابت خاں کی عرضی پر شاہزادہ شجاع کو دکہن میں بہیجنا | ۱۱۱ |
| " | राजा जय सिंह. विट्ठलदास. माधो सिंह हाड़ा. चंद्रमणि बुंदेला. राजा रामदास नरवरी. राजा रोज़अफ़ज़ूं और भीम राठौड़ का शाहज़ादे शुजाअ के साथ जाना. | راجہ جے سنگہ بیٹہلداس مادہو سنگہ ہاڈا چندرمن بندیلہ راجہ رام داس نروری راجہ روزافزوں اور بہیم راٹہور کا شاہزادہ کے ساتہہ جانا | " |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १११ | जय सिंह और विट्ठल दास को घोड़ा इनायत. | جے سنگھ اور بیٹھلداس کو خلعت اور گھوڑا عنایت | ۱۱۱ |
| ,, | गुन्नौर के राजा संग्राम का हाज़िर आना. | گنور کے راجہ سنگرام کا حاضر درگاہ ہونا | ,, |
| ,, | राजा राज सिंह कछवाहे के बेटे बख़्तावर का मुसलमान होना | راجہ جے سنگھ کچھواہہ کے بیٹے بختاور کا مسلمان ہونا | ,, |
| ,, | राजा भारत बुंदेले का इज़ाफ़ा. और उस को शाहज़ादे शुजाअ के साथ भेजना. | راجہ بھارت بندیلہ کا اضافہ اور اوسکو شاہزادہ شجاع کے ساتھ بھیجنا | ,, |
| ११२ | राजा राजसिंह कछवाहे के पोते पुरुषोत्तम का मुसलमान होकर सआदत मंद नाम पाना | راجہ راج سنگھ کچھواہہ کے پوتے پرشوتم کا مسلمان ہوکر سعادتمند نام پانا | ۱۱۲ |
| ,, | इसलाम खां का फ़तह खां और निज़ाम शाह समेत हाज़िर होना निज़ाम शाह का गवालियर के किले में क़ैद होना और उस का माल असबाब ज़ब्त होना. | اسلام خاں کا مع فتح خاں اور نظام شاہ کے حاضر ہونا نظام شاہ کا گوالیار کے قلعہ میں قید کیا جانا اور اوسکا مال اسباب ضبط ہونا | ,, |
| ११३ | फ़तह खां के क़सूर माफ़ होकर दो लाख रुपये सालाना मुक़र्रर हो जाना. | فتح خاں کے قصور معاف ہوکر دو لاکھ روپیہ سالیانہ مقرر ہونا | ۱۱۳ |
| ,, | निज़ाम शाहियों की सलतनत अहमद नगर का ख़ातमा. | نظام شاہیوں کی سلطنت احمدنگر کا خاتمہ۔ | ,, |
| ,, | शाहज़ादे दारा शिकोह को मनसब और लाल डेरा इनायत. | شاہزادہ دارا شکوہ کو منصب اور لال ڈیرہ عنایت | ,, |
| ११४ | कल्यान झाला का राना जी की | کلیان جھالا کا راناجی | ۱۱۴ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | अरजी ले कर आना और उसका पिछला हाल. | کی عرضی لیکر آنا اور اوسکا پچھلا حال | |
| ११४ | राय बन माली दास का बेटा नित्यानन्द | راے بنمالی داس کا بیٹا نیتانند | ۱۱۴ |
| ११५ | बादशाह का कूंच पंजाब को और रैयत की खेती का नुक़सान न होने देने और होतो उस का हुक्म. | بادشاہ کا کوچ پنجاب کو اور رعیت کی زراعت کا نقصان نہونے دینے اور جو ہو تو اوسکا معاوضہ دینے کا حکم | ۱۱۵ |
| ,, | मथुरा से कल्यान झाला को रुखसत और राना जगतसिंह के वास्ते खलअत. | متھرا سے کلیان جھالا کو رخصت اور رانا جگت سنگہ کیواسطے خلعت | ,, |
| ११६ | बादशाह दिल्ली में | بادشاہ دلّی میں | ۱۱۶ |
| ,, | राजा जगत सिंह का कांगडे से आना | راجہ جگت سنگہ کا کانگڑہ سے آنا | ,, |
| ,, | बाद शाह लाहौर में. | بادشاہ لاہور میں | ,, |
| ११७ | राजा भारत बुंदेले के मरनेपर उस के बेटे देवी सिंह को मन्सब और राजा का खिताब | راجہ بھارت بندیلہ کے مرنے پر اوسکے بیٹے دیبی سنگہ کو منصب اور راجہ کا خطاب | ۱۱۷ |
| ,, | बादशाह का कश्मीर जाना. | بادشاہ کا کشمیر جانا | ,, |
| ,, | शाहज़ादे शुजाअ का बुरहानपुर से परेंडे के क़िले पर जाना और खान ज़मां को बीजापुर का मुल्क लूट लेने को भेजना. | شاہزادہ شجاع کا برہانپور سے قلعہ پرینڈہ پر جانا اور خانزماں کو بیجاپور کا ملک لوٹنے کے لیے بھیجنا | ,, |
| ,, | राजा जय सिंह. राव शत्रुसाल राजा पहाड सिंह जुगराज बुंदेला | راجہ جیسنگہ راو سترو سال راجہ پہاڑ سنگہ جگ راج بندیلہ | ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | राजा रोज़अफ़ज़ूं और जम्बू के ज़मींदार संग्राम का खानज़माँ के साथ जाना | راجہ روزافزوں اور جموں کے زمیندار سنگرام کا خان زماں کے ہمراہ جانا | |
| ११७ | साहूजी का एक शख्स को निज़ाम बनाकर अहमदनगर और दौलताबाद के लेने की तजवीज़ करना और आदिल खाँ का किसना दत्तू. मुरारी पंडित और रण दूल्हा को उस की मदद पर भेजना | ساہوجی کا ایک شخص کو نظام بنا کر احمدنگر اور دولت آباد لینے کا ارادہ کرنا اور عادلخاں کا کشناجی دتو مُراری پنڈت اور رن دولہ کو اوس کی مدد پر بھیجنا | ۱۱۷ |
| ११८ | खानज़माँ का परेंडे के क़िले को घेरना और राजा विट्ठल दास का उस के पास आना. | خان زماں کا قلعہ پرینڈہ کو گھیرنا اور راجہ بیٹھلداس کا اوسکے پاس آنا | ۱۱۸ |
| " | साहूजी और रण दूल्हा का खानखाना से मुक़ाबिला. महेस राठौड़ और भारी रघनाथ का ज़ख्मी होना. मालवे के सूबेदार खान दौराँ का खानखाना की मदद करना. | ساہوجی اور رندولہ کا خانخاناں سے مقابلہ۔ مہیس راٹھوڑ اور بہائی رگھناتھہ کا زخمی ہونا مالوہ کے صوبہ دار خاندوراں کا خانخاناں کی مدد کرنا | " |
| ११९ | राजा पहाड़ सिंह के ऊपर ग़नीम का हमला | راجہ پہاڑسنگہ کے اوپر غلیم کا حملہ | ۱۱۹ |
| १२० | रसद लाने पर दखनियों से कई मुक़ाबिले होना. . | رسد لانے پر دکھنیوں سے کئی مقابلے ہونا۔ | ۱۲۰ |
| १२४ | खानखाना की बद सलूकी से बादशाही अमीरों की नाराजी | خانخاناں کی بدسلوکی سے بادشاہی امیروں | ۲۴ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | और खान खाना के शाहज़ादे को लेकर बुरहान पुरसे वापस आना. | کی ناراضی اور خانخاناں کا شاہزادہ کو لیکر برہان پور میں واپس آنا | |
| १२४ | दखनियों का बादशाही फ़ौज के पीछे आना और खानज़मां राव शत्रुसाल. जुग राज बुंदेले राव करण. और राजा जय सिंह का उनको भगाना. | دکہنیوں کا بادشاہی فوج کے تعاقب میں آنا خانزماں راو ستروسال جگ راج بندیلہ راؤ کرن اور راجہ جیسنگہ کا اونکو بہگانا۔ | ۱۲۴ |
| | **आठवां बरस** | **اٹھواں برس** | |
| १२५ | बादशाह का महाबत खां और खान खाना से नाराज़ होकर शाहज़ादे को अपने पास बुला लेना. | بادشاہ کا مہابت خاں خانخاناں سے ناراض ہوکر شاہزادہ کو اپنے پاس بلا لینا | ۱۲۵ |
| १२६ | पृथ्वी राज राठौड़ का इज़ाफ़ा | پرتہی راج راٹہوڑ کا اضافہ | ۱۲۶ |
| ,, | बादशाह का कशमीर से लाहौर को रवाना होना. | بادشاہ کا کشمیر سے لاہور کو روانہ ہونا | ۱۱ |
| ,, | भंबर में जगन्नाथ कविराय को रुपयों में तोलना. | بہمبر میں جگناتہہ کب رائے کو روپیوں میں تولنا | ۱۱ |
| १२७ | भंबर के हिन्दू मुसलमानों के आपस में नाता करने को बंद करना और वहां के ज़मींदार जोकू का मुसलमान हो कर राजा दौलत मन्द नाम पाना | بہمبر کے ہندو مسلمانوں کے آپسمیں رشتہ داری کرنے کو موقوف کرنا اور وہاں کے زمیندار جوکو کا مسلمان ہوکر راجہ دولتمند نام پانا | ۱۲۷ |
| १२८ | गुजरात इलाक़े पंजाब के मुसलमानों की फरयाद परसत्तर | گجرات علاقہ پنجاب کے نو مسلماں کی فریاد پر ستر | ۱۲۸ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ७० मुसलमान औरतें हिन्दुवों से छीनी जाना और बाज़ हिन्दुवों का अपनी मुसलमान औरतों के लिये मुसलमान होना | مسلمان عورتیں ہندوؤں سے چھینی جانا اور بعض ہندوؤں کا اپنی مسلمان عورتوں کے واسطے مسلمان ہو جانا | |
| १२८ | राजा जगत सिंह का कांगडे से हाज़िर आना | راجہ جگت سنگھ کا کانگڑہ سے حاضر آنا | ۱۲۸ |
| १२९ | बादशाह का लाहौर पहुंचना | بادشاہ کا لاہور پہونچنا | ۱۲۹ |
| | महाबत खां का मरना और बादशाह का दखन के दो सूबे बाला घाट और पाईन घाट कर के खानज़मां और खानदौरां को देना. जयसिंह कछवाहा. जुगराज और शत्रुसाल को दौलताबाद में और राजा पहाड़ सिंह बुंदेला व माधोसिंह हाड़ा को बुरहानपुर में रहने का हुक्म लिखना. | مہابت خاں خانخاناں کا مرنا اور بادشاہ کا دکن کے دو صوبہ بالاگھاٹ اور پائیں گھاٹ کرکے خانزماں اور خاندوراں کو دینا۔ جے سنگھ کچھواہہ جگ راج اور ستروسال کو دولت آباد میں اور راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ و مادہو سنگھ ہاڑا کو برہان پور میں رہنے کا حکم لکھنا | |
| १३१ | राजा जगत सिंह को बंगश की सूबेदारी और खरक पठानों की सज़ा दही पर भेजा जाना. | راجہ جگت سنگھ کو بنگش کی صوبہ داری اور خٹک پٹھانوں سزادہی پر بہیجا | ۱۳۱ |
| " | अमर सिंह राठौड़ को इज़ाफ़ा और झंडा इनायत. | امر سنگھ راٹھوڑ کو اضافہ اور نشان | " |
| " | औरंगज़ेब को मन्सब | اورنگ زیب کو منصب | " |
| १३२ | महेस दास राठौड़ का बादशाही नौकर होना. | مہیش داس راٹھوڑ کا ملازم شاہی ہونا | ۱۳۲ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १३२ | साहू जी का दौलताबाद के क़िले को घेरना. खान दौरां और राजा जयसिंह वहां पहुंचकर उस को भगाना. | ساہوجی کا دولت آباد کے قلعہ کو گہیرنا خاندوران اور راجہ جےسنگھ کا وہاں پہونچکر اوسکو بھگانا۔ | ۱۳۲ |
| ” | जुग राज. मालूजी और परसूजी खान दौरां के साथ अहमद नगर में और माधो सिंह बुरहान पुर में | جگ راج مالوجی اور پرسوجی خاندوران کے ساتھ احمدنگر میں اور مادھو سنگھ برہانپور میں | ” |
| १३३ | चम्बे के ज़मींदार पृथ्वी चन्द को खलअत और कांगड़े की फ़ौजदारी. | پرتھی سنگھ زمیندار جمبو کو خلعت اور کانگڑہ کی فوجداری | ۱۳۳ |
| ” | राजा देवी सिंह का इज़ाफ़ा. | راجہ دیوی سنگھ کا اضافہ | ” |
| ” | बादशाह का दिल्ली में आना. | بادشاہ کا دلی میں داخل ہونا | ” |
| ” | अबदुल्लाह खां फ़ीरोज़ जंग का रतन पुर के राजा बाबू लछमन वग़ैरा को लेकर बिहार से आना. | عبداللہ خاں فیروز جنگ کا رتن پور کے راجہ بابو لچھمن وغیرہ کو لیکر بہار سے آنا | ” |
| १३४ | रतन पुर की मुहिम का कुछ हाल और बाबू लछमन का राजा अमर सिंह ज़मींदार बांधोगढ के साथ खान के पास हाज़िर हो जाना. | رتن پور کی مہم کا کچھ حال اور وہاں کے زمیندار بابو لچھمن کا باندہون گڈہ کے راجہ امرسنگھ کے ہمراہ خان کے پاس حاضر ہوجانا | ۱۳۴ |
| १३५ | दारा शिकोह के बेटे सिपहर शिकोह का पैदा होना. | داراشکوہ کے بیٹے سپہر شکوہ کا پیدا ہونا | ۱۳۵ |
| १३६ | बादशाह का तख्त ताऊस | بادشاہ کا تخت طاؤس | ۱۳۶ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | के ऊपर बैठकर बड़ी बड़ी बख़शिशें करना. | کے اوپر بیٹھکر بڑی بڑی بخششیں کرنا | |
| १३६ | राजा रामदास नरवरी का इज़ाफ़ा | راجہ رامداس نروری کا اضافہ | ۱۳۶ |
| १३७ | राजा जय सिंह का इजाफ़ा. | راجہ جے سنگہ کا اضافہ | ۱۳۷ |
| | **श्री नगर की मुहिम** | **سری نگر کی مہم** | |
| १३७ | निज़ाबत खां का ज़मींदार सरमौर के साथ शेर गढ़ को फ़तह करना. और कालपी व विराट के क़िले लेकर सरमोर के ज़मींदार को देना. और सांतूर का क़िला लेकर लखनपुर के ज़मींदार जगत सिंह को वहां रखना. और ज़मीं दार श्री नगर का निलाव के घाट को बन्द कर देना. | نجابت خاں کا ہمراہی زمیندار سرمور شیر گڈہ کو فتح کرنا اور کالپی و یراٹ کے قلعہ لے کر سرمور کے زمیندار کو دینا اور ساتنور کا قلعہ لے کر لکھن پور کے زمیندار جگت سنگہ کو وہاں رکہنا اور زمیندار سری نگر کا گہاٹہ نلاو کو بند کر دینا | ۱۳۷ |
| १३८ | निज़ाबत खां का गूजर गुलेरी और उदय सिंह राठौड़ को लशकर में छोड़ कर घाटा फ़तह करना | نجابت خاں کا گوجر گلیری اور اودے سنگہ راٹہوڑ کو لشکر میں چھوڑ کر گھاٹہ فتح کرنا۔ | ۱۳۸ |
| १३९ | श्री नगर के राजा का वकील भेजकर ११ लाख रुपये देने का क़ौल करना मगर लशकर की तंगी का हाल सुन कर रास्ता और रसद बंद कर देना | سری نگر کے راجہ کا وکیل بہیجکر گیارہ لاکھہ روپیہ دینے کا قول کرنا مگر لشکر کی پریشانی کا حال سُنکر راستہ اور رسد بند کر دینا | ۱۳۹ |
| १४० | गूजर गुलेरी और रूप चन्द | گوجر گلیری اور روپ چند | ۱۴۰ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | गुलेरी का श्री नगर वालों से लड़कर काम आना और बादशाही लश्कर का शकिस्त खाकर वापस होना. | گلیری کا سرینگر والون سے لڑکر کام آنا اور بادشاہی لشکر کا شکست کھا کر واپس ہونا | |
| १४१ | बादशाह की खफ़गी निजावतखां पर और अबदुलरहीम खान खाना के पोते मिरज़ाखां को कांगड़े की फ़ौजदारी पर भेजना | بادشاہ کی خفگی نجابت خان پر اور عبدالرحیم خانخانان کے پوتے مرزا خان کو کانگڑے کی فوجداری پر بھیجنا | ۱۴۱ |
| | **जुझार सिंह बुंदेले का बाग़ी होना ॥** | **جوجہار سنگہ بندیلہ کا باغی ہونا** | |
| १४२ | जुझार सिंह का गढ़े के ज़मींदार पेम नारायण को मार कर जोरा गढ़ का क़िला लेना और पेम नारायण के बेटे की अर्ज़ पर बादशाह का सुन्दर कवि को जुझार सिंह के पास भेजना और जुझार सिंह का अपने बेटे विक्रमाजीत को दखन से बुला लेना. | جوجہار سنگہ کا گڈہ کے زمیندار پیم نراین کو مار کر جورا گڈہ کا قلعہ لینا اور پیم نراین کے بیٹے کی عرض پر بادشاہ کا سندر کبی کو جوجہار سنگہ کے پاس بھیجنا اور جوجہار سنگہ کو اپنے بیٹے بکرماجیت کو دکھن سے بلا لینا | ۱۱ |
| १४३ | खान दौरां. माधो सिंह हाड़ा. राव करन. नेजर बहादुर राजा पहाड़ सिंह. और चन्द्र मणि बुंदेले का पीछा कर के आसटे में विक्रमाजीत को ज़ख्मी करना. | خاندوران مادہو سنگہ ہاڈا راو کرن راجہ پہاڑ سنگہ اور چندر مین بندیلہ کا تعاقب کر کے اشٹہ میں بکرماجیت کو زخمی کرنا | ۱۴۳ |
| १४४ | बादशाह का अबदुल्लाखां. सैयद खानजहां. और खान दौरां को जुझार सिंह के ऊपर भेजना. | بادشاہ کا عبداللہ خان سید خان جہان اور خاندوران کو جوجہار سنگہ کے اوپر جانے کا حکم دینا | ۱۴۴ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २४४ | ख़ानजहां की फ़ौज में राजा गज सिंह किशन सिंह भदोरिया ⁂ कृपाराम गौड़ जयराम बड़गूजर. इन्द्रसाल हाड़ा और जगन्नाथ कछवाहे के पोते रूप सिंह का तइनात होना | خانجہان کی فوج مین راجہ گجسنگہہ کشن سنگہہ بہدوریہ کرپارام گوڑ جی رام بڑگوجر اندرسال ہاڑا اور جگناتہہ کچھواہہ کے پوتے روپ سنگہ کا تعینات ہونا۔ | ۱۴۴ |
| २४५ | राजा अमर सिंह ज़मींदार बांधों गढ़. चन्द्रमणि बुंदेला. और राजा सारंग देव का अब्दुल्लाह खां के साथ तइनात होना. | راجہ امرسنگہہ زمیندار باندہون گڈہ چندرمن بندیلہ اور راجہ سارنگدیو کا عبداللہ خان کے ساتھہ تعینات ہونا | ۱۴۵ |
| " | माधो सिंह हाड़ा और राजा देवी सिंह को ख़ानदौरां के साथ जाने का हुक्म होना. | مادہوسنگہ ہاڈا اور راجہ دیوی سنگہ کو خاندران کے ساتہہ جانے کا حکم ہونا | " |
| २४६ | जुझार सिंह की अर्ज़ पर बादशाह का सुन्दर कविराय को जुझार सिंह के पास भेजना. | جوجہارسنگہ کی عرض پر پہر بادشاہ کا سندر کبی راے کو جوجہارسنگہ کے پاس بہیجنا | ۱۴۶ |
| " | जुझार सिंह से उरछा फ़तह कर के राजा देवी सिंह को देने का हुक्म. जिसके बाप दादों से ये रयासत जहांगीर बादशाह ने अबुल फ़ज़ल को क़त्ल करने के इनाम में वर सिंह देव को देदी थी ॥ | جوجہارسنگہ سے اورچہہ فتح کرکے راجہ دیوی سنگہ کو دینے کا حکم جسکے باپ دادوان سے یہ ریاست جہانگیر بادشاہ نے ابوالفضل کو قتل کرنے کے انعام مین برسنگدیو کو دیدی تہی | " |
| २४७ | शाहज़ादे औरंगज़ेब की अफ़सरी कुल फ़ौज पर जो मुहिम- | شاہزادہ اورنگ زیب کی افسری کل فوج پر جو مہم | ۱۴۷ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | बुंदेले के वास्ते तैयार हुई थी। | بندیلہ کیواسطے تیار ہوئی تھی | |
| १४७ | राजा विट्ठलदास. राजा रामसिंह. गोकुलदास सिसोदिया व महेस राठौड़ का शहज़ादे औरंगज़ेब के पास तइनात होना। | راجہ بیٹھلداس راجہ رام سنگھ گوکلداس سیسودیہ اور مہیس راٹھور کا شاہزادہ اورنگزیب کے پاس تعینات ہونا | ۱۴۷ |
| | **नवां बर्ष** | **نوان برس** | |
| १४७ | जगन्नाथ कावरराय को हाथी इनायत। | جگناتھ کوی رای کو ہاتھی عنایت | ۱۴۷ |
| १४८ | राजा देवी सिंह को नक़्क़ारा इनायत। | راجہ دیوی سنگھ کو نقارہ عنایت | ۱۴۸ |
| ,, | बलख़ के वकील को रुख़सत। | وکیل بلخ کو رخصت | // |
| ,, | राजा जय सिंह का दखन से हाज़िर होना। | راجہ جیسنگھ کا دکن سے حاضر ہونا | // |
| ,, | बादशाह का दौलताबाद के देखने को रवाना होना। | بادشاہ کا دولت آباد کے دیکھنے کو روانہ ہونا | // |
| | **उरछे की फ़तह ॥** | **اورچھہ کی فتح** | |
| १४९ | ख़ान दौरां और राजा देवी सिंह का उरछा फ़तह करना. और ख़ान दौरां का राजा देवी सिंह को उरछे के क़िले में छोड़ना। | خاندوران اور راجہ دیوی سنگھ کا اورچھہ فتح کرنا اور خاندوران کا راجہ دیوی سنگھ کو اورچھہ کے قلعہ مین چھوڑنا | ۱۴۹ |
| ,, | जुझार सिंह का जोरा गढ़ के क़िले में चला जाना। | جوجہار سنگھ کا جوراگڈھ کے قلعہ مین چلا جانا | // |
| १५० | क़िले धामूनी के फ़तह करने में अमर सिंह राठौड़ के बहुत से राजपूतों का काम आना। | قلعہ دہامونی کے فتح کرنے مین امر سنگھ راٹھوڑ کے بہت سے راجپوت کام آنا | ۱۵۰ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १५२ | जुझार सिंह का ज़मींदार देवगढ़ के पास आदमी भेजना और जोरागढ़ की इमारतों को गिरा कर ज़मींदार देवगढ़ के मुल्क में जाना | جوجہار سنگہ کا زمیندار ڈیوگڈہ کے پاس آدمی بہیجنا اور جوراگڈہ کی عمارتون کو گراکر زمیندار دیوگڈہ کے ملک مین جانا | ۱۵۲ |
| १५३ | जोरागढ़ में बादशाही अमल होना और खान दौरां का संग्राम ज़मींदार, गुन्नौर के बड़े बेटे वग़ैरा को उस क़िले में छोड़ना. | جوراگڈہ مین بادشاہی عمل ہونا اور خاندوران کا سنگرام زمیندار گنور کے بڑے بیٹے وغیرہ کو اوس قلعہ مین چھوڑنا | ۱۵۳ |
| १५४ | करेली के चौधरी राघो के पता देने से खान दौरां का जुझारसिंह के पीछे जाना | کریلی کے چودہری راگہو کے پتہ دینے سے خاندوران کا جوجہار سنگہ کے تعاقب مین جانا | ۱۵۴ |
| १५५ | गोविन्द गौड़ | گوبند گوڑ | ۱۵۵ |
| " | जुझार सिंह और बिक्रमाजीत का बादशाही लशकर से लड़कर अबदुल्ला खां के चचा नेकनाम को मारना. | جوجہار سنگہ اور بکرماجیت کا بادشاہی لشکر سے لڑکر عبداللہ خان کے چچا نیکنام کو مارنا | " |
| " | माधो सिंह हाड़ा का बुंदेलों को भगाना | مادہو سنگہ ہاڈا کا بندیلون کو بہگانا | ۱۵۶ |
| १५६ | जुझार सिंह का गोलकुंडे की तरफ़ जाना | جوجہار سنگہ کا گولکنڈہ کی طرف جانا | " |
| १५७ | माधो सिंह हाड़ा और सय्यद मुहम्मद का राजा बरसिंहदेव की बड़ी रानी पारबती और दूसरी औरतों को जोहर यानी आत्मघात से बचाना. | مادہو سنگہ ہاڈا اور سید محمد کا راجہ برسنگدیو کی بڑی رانی پاربتی اور دوسری عورتون کو جوہر یعنے خودکشی سے بچانا | ۱۵۷ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १५९ | जुझार सिंह और विक्रमाजीत का जंगल में गोंडों के हाथ से मारा जाना और उन के सर सीहोर में बादशाह के पास पहुंचना. | جوجہارسنگہ اور بکرماجیت کا جنگل مین گونڈون کے ہاتھ سے مارا جانا اور اُنکے سر سیہور مین بادشاہ کے پہونچنا۔ | ۱۵۹ |
| १६० | राजा वर सिंह देव और जुझार सिंह के खज़ाने | راجہ برسنگدیو اور جوجہارسنگہ کے خزانہ | ۱۶۰ |
| ,, | उर्छा राजा देवी सिंह को दिया जाना. | اورچھہ راجہ دیبی سنگہہ کو دیا جانا | ″ |
| ,, | गोंडवारे के ज़मींदार केबाँ का ज़मींदार चांदा के साथ बुंदेलों का अस्बाब लेकर बादशाही लश्कर में हाज़िर होजाना. | گونڈوانہ کے زمیندار کیبان کا زمیندار چاندا کے ساتھہ بندیلون کا مال اسباب لیکر بادشاہی لشکر مین حاضر ہونا | ″ |
| १६१ | बादशाह का उरछा देखने को जाना और आदिल खां की पेशकश बीजापुर से आना | بادشاہ کا واسطے سیر اورچھہ کے جانا | ۱۶۱ |
| ,, | | عادلخان کی پیشکش بجاپور سے آنا | ″ |
| ,, | जुझार सिंह के नौकर बसन्त का क़िला झांसी सौंप देना और बादशाह का गिरधरदास गौड़ का वहां की क़िलेदारी देना. | جوجہارسنگہ کے نوکر بسنت کا قلعہ جہانسی سپرد کرنا اور بادشاہ کا گردہرداس گوڑکو وہان کی قلعہ داری دینا۔ | |
| १६३ | बादशाह दतया में और वहां की इमारतों की तारीफ़ | بادشاہ دیتا مین اور وہان کی عمارتون کی تعریف | ۱۶۳ |
| ,, | तानाजी दखनी को मनसब. | تاناجی دکہنی کو منصب | ″ |
| १६४ | बादशाह का उरछे पहुंच कर मंदिर गिराना. और राजा देवी सिंह का हाज़िर होकर नज़र करना. | بادشاہ کا اورچھہ پہنچکر مندر گرانا اور راجہ دیوی سنگہ کا حاضر ہوکر نذر کرنا | ۱۶۴ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १६४ | वर सिंह देवके बनाये हुये तालाबों की तारीफ़. | برسنگدیو کے بنائے ہوئے تالابون کی تعریف | ۱۶۴ |
| „ | परगने छत्रे का जब्त होकर इसलामाबाद नाम रखा जाना. | پرگنہ چھترہ کا ضبط ہوکر اسلام آباد نام رکہا جانا | „ |
| „ | झाँसी और धामूणी के कुओं के खज़ानों का आगरे भेजा जाना. | جہانسی اور دہامونی کے چاہات سے خزانہ برآمد ہوکر آگرہ کو بہیجا جانا | „ |
| १६५ | हरी सिंह राठौड़ का इज़ाफ़ा. | ہری سنگہ راٹہور کا اضافہ | ۱۶۵ |
| „ | औरंगज़ेब का धामूणी से छत्रे में बादशाह के पास हाज़िर होना. | اورنگزیب کا دہامونی سے چہترہ مین بادشاہ کے پاس حاضر ہونا | „ |
| „ | बादशाह का दखन को रवाना होना | بادشاہ کا دکہن کو روانہ ہونا | „ |
| „ | राजा गज सिंह का इज़ाफ़ा. | راجہ گجسنگہ کا اضافہ | „ |
| १६६ | बादशाह का साहूजी के निकालने के वास्ते आदिल खां के पास वकील भेजना और शोला पुर का क़िला उसको देना करके ज़ियादा पेश कश मांगना. | بادشاہ کا ساہوجی کے نکالنے کے واسطے عادل خان کے پاس وکیل بہیجنا اور شولاپور کا قلعہ اسکو دینا کرکے زیادہ پیشکش مانگنا | ۱۶۶ |
| १६७ | क़ुतबुल्मुल्क के पास शाह ईरान के नाम का ख़ुत्बा बन्द करने के वास्ते वकील भेजा जाना. | قطب الملک کے پاس شاہ ایران کے نام کا خطبہ بند کرنے کے واسطے وکیل بہیجا جانا | ۱۶۷ |
| १६७ | ख़ान दौरां का जुझार सिंह की रानियों और उसके बेटे दुर्गभान और पोते दुर्जन साल को लेकर हाज़िर होना. | خاندوران کا جوجہار سنگہ کی رانیون اور اُسکے بیٹے دُرگ بہان اور پوتے دُرجن سال کو لیکر حاضر ہونا | ۱۶۸ |
| १६८ | माधो सिंह हाड़ा का इज़ाफ़ा. | مادہو سنگہ ہاڈا کا اضافہ | „ |
| | बादशाह का दौलताबाद पर | بادشاہ کا دولت آباد | „ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | पहुंचना और ख़ानज़मां. रव शत्रुसाल पृथ्वी राज राठौड़. राव हटी सिंह. मालूजी भोंसला और परसूजी का पेशवाई में हाज़िर होना | پہونچنا اور خانزمان راو ستروسال پرتھی راج راٹھور راو ہٹی سنگہ مالوجی بہوسلہ اور پرسوجی کا پیشوائی مین حاضر ہونا۔ | |
| १६९ | ख़ान दौरां ख़ानज़मां और शाइस्ता ख़ां. का साहोजी भोंसला के ऊपर तइनात होना. | خاندران خانزمان اور شایستہ خان کا ساہوجی بہوسلہ کے اوپر تعینات ہونا | ۱۶۹ |
| ,, | राजा जयसिंह राजा विट्ठलदास गौड़. माधोसिंह हाड़ा. अमरसिंह राठौड़. गोकुल दास सीसोदिया महेसदास राठौड़ और जगजीवन दखनी ख़ान दौरां की फ़ौज में. | راجہ جیسنگہ راجہ بٹہلداس گوڑ مادہوسنگہ ہاڈا امرسنگہ راٹہوڑ گوکلداس سیسودیہ مہیس داس راٹہوڑ اور جگ جیون خاندران کی فوج مین | ,, |
| १७० | राव शत्रुसाल हाड़ा. पहाड़ सिंह बुंदेला. पृथ्वीराज राठौड़. भगवान दास बुंदेला. राव तिलोकचंद. स्याम सिंह राठौड़. जगन्नाथ राठौड़. रावदयालदास झाला. जादौं राय विट्ठूजी. दत्ताजी. रुस्तम राव. हापाजी. परमलराव और एक हज़ार सवार राणा जगत सिंह के ख़ान ज़मां की तइनाती में- | راو ستروسال ہاڈا پہاڑ سنگہ بندیلہ پرتہی راج راٹہوڑ بہگوانداس بندیلہ راو تلوک چند سیام سنگہ راٹہوڑ وجگناتہ راٹہوڑ راو دیالداس جہالا جادون راے بٹہوجی وتاجی رستم راو ہاپاجی پرمل راو اور ایکہزار سوار رانا جگت سنگہ کے خانزمان کی تعیناتی مین۔ | ۱۷۰ |
| १७१ | राजा संग्राम और मेदनी राय शायस्ता ख़ां की फ़ौज में. | راجہ سنگرام اور میدنی راے شایستہ خان کی فوج مین | ۱۷۱ |
| ,, | भाम राठौड़ और गुन्नौर के राजा संग्राम का इज़ाफ़ा. | بہیم راٹہوڑ اور گنور کے راجہ سنگرام کا اضافہ | ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १७२ | बादशाह दौलताबादके क़िलेमें | بادشاہ دولت آباد کے قلعہ میں | ۱۷۲ |
| ” | क़ुतबुल्मुल्क काजुझारसिंह के छोटे बेटे उदयभान और शामद्दा को पकड़ कर बादशाहके पास भेजना और उनका मुसलमान होना क़बूल न करके माराजाना | قطب الملک جو جہار سنگہ کے چھوٹے بیٹے اودے بہان او شیام دوا کو پکڑ کر بادشاہ کے پاس بہیجنا اور انکا مسلمان ہونا قبول نہ کرکے مارا جانا | ” |
| ” | भुरजी का बगलाने से बादशाह के पास हाज़िर होना. | بہرجی کا بگلانے سے بادشاہ کے پاس حاضر ہونا | ” |
| १७३ | आदिलखां का उदगिर और ऊडसे के क़िलेदारों को मददेना और ररा दूल्हा को साहूजी की मदद पर भेजना. और बादशाहका ख़ानजहां को भी आदिल खां के ऊपर भेजना. | عادل خان کا اودگر اور اڈسہ کے قلعہ دارون کو مدد دینا اور رن ودلہ کو ساہوجی کی مدد پر بہیجنا اور بادشاہ کا خان جہان کو بہی عادلخان کے اوپر بہیجنا۔ | ۱۷۳ |
| ” | रावकररम. हरीसिंह राठौड़. राजा बहरोज़. जयराम बड़गूजर. इन्द्रसाल हाड़ा. मंगूजी. शिरज़ाराव कृष्णा जी. और जसवंत राय का ख़ानजहां के साथ तइनात होना | راو کرن ہری سنگہ راٹہوڑ راجہ بہروز۔ جیرام بڈگوجر۔ اندرسال ہاڈا۔ منگوجی۔ شرزہ راو۔ کرشناجی اور جسونت راے کا خانجہان کے ساتھہ تعینات ہونا | ” |
| ” | खेतर दुरग के क़िलेदार सालह बेग का वो क़िला साहूजी के आदमियों समेत शायस्ता खां को सौंप देना | کہتر ڈرگ کے قلعدار صالح بیگ کا وہ قلعہ ساہوجی کے آدمیون سمیت شایستہ خان کو سونپ دینا۔ | ” |
| १७४ | क़ुतबुल्मुल्क की पेशकश आना. | قطب الملک کی پیشکش | ۱۷۴ |
| ” | राजा राय सिंह का इज़ाफ़ा. | راجہ راے سنگہ کا اضافہ | ” |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २७४ | चांदा के ज़मींदार केबां का हाज़िर होना और ख़लअ़त पाना. | چاندا کے زمیندار کیبان کا حاضر ہونا اور خلعت پانا | ۱۷۴ |
| ” | आदिल खां की अरज़ी | عادل خان کی عرضی | ” |
| २७५ | आदिल खां का मुल्क ख़राब करने का हुक्म | عادل خان کا ملک خراب کرنے کا حکم | ۱۷۵ |
| ” | कुतबुल्मुल्क का बादशाह के नाम का सिक्का चलाना. | قطب الملک کا بادشاہ کے نام کا سکہ چلانا | ” |
| ” | भुरजी का क़िले धोप के ऊपर भेजा जाना. | برجی کا قلعہ دہوپ کے اوپر بہیجا جانا | ” |
| २७६ | राजा देवी सिंह का उरछे से हाज़िर आना. | راجہ دیوی سنگہ کا اورچھے سے حاضر آنا | ۱۷۶ |
| ” | बिक्रमाजीत बुंदेले के बड़े बेटे नरसिंह देव को मुसलमान करना | بکرماجیت بندیلہ کے بڑے بیٹے نرسنگہ دیو کا مسلمان کیا جانا | ” |
| ” | चांदा के ज़मींदार केबां को घर जाने की रुख़सत | کیبان زمیندار چاندا کو گھر جانے کی رخصت۔ | ” |
| २७७ | संगमेर और जुनेर के क़िलों का मये २७ परगनों के साहू जी से फ़तह होना जिन की जमा दो किरोड़ साठ लाख दाम की थी. | سنگمیر اور جنیر کے قلعوں کا مع ۲۷ پرگنوں کے ساہوجی سے فتح ہونا جن کی جمع دو کروڑ ۶۰ لاکھ دام کی تہی | ۱۷۷ |
| २७८ | ख़ानदौरां से बीजापुर के रणदूल्हा और बहलोल का मुक़ाबिला और राजा जय सिंह का उन को भगाना. | خاندوران سے بیجاپور کے رندولہ اور بہلول کا مقابلہ اور راجہ جیسنگہ کا اُن کو بہگانا | ۱۷۹ |
| ” | ख़ानदौरां का बीजापुर के १२ कोस तक इधर उधर कुतबुल- | خاندوران کا بیجاپور کے ۱۲ کوس تک ادھر اُدھر تا | ” |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | मुल्क की सरहद तक लूटमार करना | سرحد قطب الملک لوٹ مار کرنا | |
| १८० | बादशाह का हुक्म ऊदगिर व उड़सा के क़िले फ़तह करने का | بادشاہ کا حکم اودگر اور اڑسہ کے قلعون کو فتح کرنے کا | ١٨٠ |
| " | किशनाजी, सामाजी और शिरज़ा राव का खानजहां के हुक्मसे सराधन और धारासियों का क़िला फ़तह करना. | کشناجی ساماجی اور شرزہ راو کا خان جہان کے حکم سے سراوہن اور دہاراسیون کے قلعہ فتح کرنا۔ | " |
| १८१ | खानजहां का क़िले कान्ती को फ़तह करना और रण दूल्हा का लड़ाई में शकस्त खाना | خانجہان کا قلعہ کانتی کو فتح کرنا اور رن دولہ کا لڑائی مین شکست کھانا | ١٨١ |
| १८२ | बीजापुर वालों और खीलूजी का बादशाही लशकर पर हमला करके सिपहदार खां और राजा देवी सिंह से लड़ना. | بیجاپور والون اور کہیلوجی کا بادشاہی لشکر پہ حملہ کرکے سپہدار خان اور راجہ دیوی سنگہ سے لڑنا | ١٨٢ |
| " | खान ज़मां का अहमद नगर से साहूजी के ऊपर कूच करना. और साहूजी का भामड़ा नदी से उतर कर आदिल खां की अमलदारी में चला जाना. | خانزمان کا احمدنگر سے ساہوجی کے اوپر کوچ کرنا اور ساہوجی کا بہٹمراندی سے اوترکر عادل خان کی عملداری مین چلا جانا | " |
| १८३ | चमारकूंडे के क़िले में बादशाही अमल होना. | چمارکونڈہ کے قلعہ مین بادشاہی عمل | ١٨٣ |
| १८४ | खानज़मां का बादशाह के हुक्मसे आदिल खां की अमलदारी में दाखिल होना. | خانزمان کا بادشاہ کے حکم سے عادل خان کی عملداری مین داخل ہونا | ١٨٤ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १८४ | राव शत्रुसाल हाड़ापर ग़नीम का हमला और राव की फ़तह. | راو ستر و سال ہاڈا پر غنیم کا حملہ اور راو کی فتح | ۱۸۴ |
| " | खानजमां का कोला पुर फ़तह करना और साहू जी को ३ रोज़ तक किशन बाग़ पर लड़कर मिरच की तरफ़ भगाना. और राय बाग़ को लूटना | خان زمان کا کولا پور فتح کرنا اور ساہوجی کو تین روز تک کشن باغ پر لڑکر مرچ کی طرف بھاگنا اور راے باغ کو لوٹنا | ″ |
| १८५ | आदिल खां का ३ तर्फ़ के हमले से तंग होकर २० लाख रुपये बादशाही वकील मुकर्रमत खां के हाथ भेजना और साहू जी की बाबत शरतें ठहरना. | عادل خان کا تین طرف کے حملے سے تنگ ہوکر ۲۰ لاکھ روپیہ بادشاہی وکیل مکرمت خان کے ہاتھ بھیجنا اور ساہوجی کی بابت شرطیں ٹھہرنا | ۱۸۵ |
| " | बादशाह का अहद नामा मये तस्वीर पंजे के आदिल खां के वास्ते. | بادشاہ کا عہدنامہ مع تصویر پنجہ کے عادل خان کے واسطے | ″ |
| | **दसवां वर्ष ॥** | **دسواں برس** | |
| १८६ | बीदर का क़िला फ़तह होकर निज़ामुल्मुल्क के रिशते दारों का क़ैद होना. | بیدر کا قلعہ فتح ہوکر نظام الملک کے رشتہ داروں کا قید ہونا | |
| " | धरूप का क़िला भोजबल से लिया जाना. और भोजबल को मनसब | دہروپ کا قلعہ بھوج بل سے لیا جانا اور بھوج بل کو منصب | ″ |
| " | शायस्ता खां. खानजहां और खानज़मां का आदिल खां के मुल्क से वापस आना. | شائستہ خان خانزمان اور خان جہان کا عادلخان کے ملک سے واپس آنا | ″ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १८९ | बादशाह का खानज़मां को साहू जी के ऊपर भेजना | بادشاہ کا خانزمان کو ساہوجی کے اوپر بھیجنا | ۱۸۹ |
| १९० | कुतबुलमुल्क की पेशकश और उसका अहदनामा | قطب الملک کی پیشکش اور اُس کا عہدنامہ | ۱۹۰ |
| १९२ | बादशाह का दौलताबाद से मंडू की तरफ़ लौटना | بادشاہ کا دولت آباد سے منڈو کیطرف لوٹنا | ۱۹۲ |
| | इस सफ़र में दो करोड़ रुपया १ करोड़ का मुल्क चालीस क़िले हाथ आना जिनमें से २० साहू जी के पास थे | اِس سفر مین دو کروڑ روپیہ ایک کروڑ کا ملک اور چالیس قلعہ ہاتھہ آنا جنمین سے بیس ساہوجی کے پاس تھے | ۱۹۳ |
| " | परेंडे का क़िला और कोंकन का आधा मुल्क आदिल खां को दिया जाना और सोने की तख़्ती पे अहदनामा खुदाकर उसके पास भेजा जाना | پریںڈہ کا قلعہ اور کوکن کا آدھا ملک عادل خان کو دیا جانا اور سونے کی تختی پر عہدنامہ کھُدا کر اُسکے پاس بھیجا جانا | // |
| १९३ | दखन का कुल मुल्क जिस में ४ सूबे अहमदनगर, तिलंगाना खानदेस और बराड़ के थे शाहज़ादे औरंगज़ेब को इनायत होना और उसको साहूजी के पास से क़िले छुड़ाने का हुक्म दियाजाना | دکھن کا ملک جسمین چار صوبہ احمدنگر۔ تلنگانہ۔ خاندیس اور براڑ کے تھے شاہزادہ اورنگزیب کو عنایت ہونا اور اُسکو ساہوجی کے پاس سے قلعہ چھڑانیکا حکم دیا جانا | // |
| १९३ | राव शत्रुसाल का इज़ाफ़ा | راو ستروسال کا اضافہ | // |
| १९४ | बादशाह का मंडू में पहुंचना और अपनी तस्वीर अहदनामे के साथ कुतबुलमुल्क के पास भेजना। | بادشاہ کا منڈو مین پہونچنا اور اپنی تصویر عہدنامہ کے ساتھہ قطب الملک کے | ۱۹۴ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | پاس بھیجنا | ۱۹۴ |
| १९४ | दत्ताजी के मनसब का इज़ाफ़ा | دتاجی کے منصب کا اضافہ | // |
| ,, | कल्यान झाला का राना जगतसिंह की अर्ज़ी लेकर हाज़िर आना. | کلیان جہالا کا رانا جگت سنگہ کی عرضی لیکر حاضر آنا | // |
| ,, | जैत पुर के जमींदार का हाज़िर आना | زمیندار جیت پور کا حاضر آنا | // |
| १९५ | ख़ान दौरां का क़िले ऊदगिर को फ़तह करना. | خاندوران کا قلعہ اودگر کو فتح کرنا | ۱۹۵ |
| ,, | बादशाह का घाटी चांदा और उज्जैन के रस्ते से आगरे को रवाना होना. | بادشاہ کا گھاٹی چاندا اور اوجین کے راستہ سے آگرہ کو روانہ ہونا | // |
| ,, | राणा जगतसिंह के वास्ते जड़ाउ सर पेच और तलवार भेजना. | راجہ جگت سنگہ کیواسطے جڑاو سرپیچ اور تلوار بھیجنا | // |
| ,, | ख़ान दौरां का ऊद गिर के क़िले को फ़तह करना | خاندوران کا اودگر کے قلعہ کو فتح کرنا | // |
| ,, | राव हट्ठी सिंह का मौज़े खिजूरी में हाज़िर होकर हाथी नज़र करना | راو ہٹی سنگہ کا موضع کھجوری مین حاضر ہوکر ہاتھی نذر کرنا | // |
| १९६ | बादशाही लशकर का पलासते में होकर गुज़रना और माधो सिंह हाड़ा के बेटे मोहन सिंह और जुझार सिंह का हाज़िर होना. | بادشاہی لشکر کا پلاسیہ مین ہوکر گزرنا اور مادہو سنگہ ہاڈا کے بیٹے موہن سنگہ اور جوجہار سنگہ کا حاضر ہونا | ۱۹۶ |
| ,, | गांव मंडावर में शत्रु साल हाड़ा के बेटे भाव सिंह का हाज़िर होकर हाथी नज़र करना. | موضع منڈاور مین ستروسال ہاڈا کے بیٹے بہاوسنگہ کا حاضر ہوکر ہاتھی نذر کرنا | // |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १९६ | धंधेड़े के पुराने ज़मींदार इन्द्र मरािका धंधेड़े से सेवा राम गौड़ को निकालदेना और बादशाह का राजा विट्ठल दासगौड़ मौतमिदखां. जैराम बड़गूजर हरी सिंह हाड़ा और शिताबखां वग़ैरा को इन्द्र मरािके ऊपर भेजना. | دندہیرے کے پرانے زمیندار اندرمن کا دندہیرے سے سیواراام گوڑ کا نکال دینا اور بادشاہ کا راجہ بیٹھلداس گوڑ معتمد خان جی رام بڈگوجر ہری سنگہ ہاڑا اور ستاب خان وغیرہ کو اندرمن کے اوپر بہیجنا | ۱۹۶ |
| १९८ | राजा विट्ठलदास और मौतमिद खां वग़ैरा को खलअ़त | راجہ بیٹھلداس اور معتمد خان وغیرہ کو خلعت | ۱۹۸ |
| ,, | बादशाह का अजमेर पहुंचकर आना सागर के ऊपर दौलत-खाने में ठहरना. जो ३ लाख रुपये में तैय्यार हुवा था. | بادشاہ کا اجمیر پہونچکر آنا ساگر کے اوپر دولت خانہ مین ٹہرنا جو ۳ لاکہہ روپیہ مین تیار ہوا تہا | // |
| १९९ | बादशाह का ख्वाजा साहिब की दरगाह में जाकर अपनी बनाई हुई मसजिद में नमाज़ पढ़ना | بادشاہ کا خواجہ صاحب کی درگاہ مین جاکر اپنی بنائی ہوئی مسجد مین نماز پڑہنا | ۱۹۹ |
| ,, | रानाजगत सिंह के टीकाई बेटे राज कंवर का हाज़िर आना. | رانا جگت سنگہ کے ولیعہد راج کنور کا حاضر آنا | // |
| ,, | इधर से खानज़मां का और उधर से आदिल खां के सिपहसालार रणदूल्हा का साहूजी के ऊपर हमला करना. | ادہر سے خان زمان کا اور اُدہر سے عادلخان کے سپہ سالار رندولہ کا ساہوجی کے اوپر حملہ کرنا | // |
| ,, | खान ज़मां का कार तलब खां और राव हरी सिंह को जुनेर का | خانزمان کا کارطلب خان اور راؤ ہری سنگہ کا قلعہ جنیر کی | // |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | क़िला फ़तह करनेको भेजना. | فتح کرنے کو بھیجا | ۱۹۹ |
| १९९ | ख़ानज़मां का पूने पर जाना राव शत्रुसाल हाड़ा और पृथ्वी राज राठौड़ का अपनी दूसरी और तीसरी फ़ौज का अफ़सर करना. | خانزمان کا پونہ پر جانا راو سترو سال ہاڑا اور پرتھی راج راٹھور کا اپنی دوسری اور تیسری فوج کا افسر کرنا | // |
| " | साहूजी का पूने से कोंकन जाना और पनाह न मिलने से वापस आना. | ساہوجی کا پونہ سے کوکن جانا اور وہان پناہ نہ ملنے سے واپس آنا | // |
| २०२ | ख़ानज़मां का साहूजी का पीछा करके उसका डेरा डांडा और निज़ाम के निशान लूट लेना. | خانزمان کا ساہوجی کا تعاقب کر کے اس کا ڈیرہ ڈانڈا اور نظام کے نشان لوٹ لینا | ۲۰۲ |
| २०३ | ख़ान दौरां और रणदूल्हा का साहूजी को माहूली के क़िले में घेरना. | خاندوران اور رندولہ کا ساہوجی کو قلعہ ماھولی مین گھیرنا | ۲۰۳ |
| २०४ | साहूजी का निज़ाम को रणदूल्हा के हवाले करके आदिल ख़ां की नौकरी क़बूल करना. और जुनेर वग़ैरा के क़िले ख़ानज़मां को सौंप देना. | ساہوجی کا نظام کو رندولہ کے حوالہ کر کے عادل خان کی نوکری قبول کرنا اور جنیر وغیرہ کے قلعہ خانزمان کو سپرد کر دینا | ۲۰۴ |
| २०५ | रणदूल्हा का निज़ाम को जो अस्ल में अगले निज़ाम का दामाद था ख़ानज़मां के हवाले करना. और ख़ानज़मां का दौलताबाद में औरंगज़ेब के पास हाज़िर होना. | رندولہ کا نظام کو جو در اصل نظام سابق کا داماد تھا خانزمان کے حوالہ کرنا اور خان زمان کا دولت آباد مین اورنگ زیب کے پاس حاضر ہونا | ۲۰۵ |

| | गाडवाने की फ़तह. | گونڈوانہ کی فتح | |
|---|---|---|---|
| २०६ | खान दौरां का बाद फ़तह ऊद गिर और अड़से के देव गढ़ के इलाक़े में आ कर कतल कर और आसटे के क़िले फ़तह करना. | خان دوران کا بعد فتح اودگر اور اڑیسہ کے علاقہ دیوگڈہ ہین آکر کتلعہ اور آشٹہ کے قلعہ فتح کرنا | ۲۰۶ |
| ,, | सकतसिंह बेस का खानदौरां के हुक्म से देव गढ़ के ज़मीं दार कोकियां के पास जाना. | سکت سنگہ بیس کا خاندوران کے حکم سے دیوگڈہ کے زمیندار کوکیان کے پاس جانا | ″ |
| ,, | खान दौरां का नाग पुर के क़िले को घेरना | خان دوران کا قلعہ ناگپور کو گھیرنا | ″ |
| ,, | चांदा के ज़मीं दार केबां और गुन्तोर के राजा संग्राम का खान दौरां के पास हाज़िर होना. | چاندا کے زمیندار کیبان اور گنتور کے راجہ سنگرام کا خان دوران کے پاس حاضر ہونا | ″ |
| २०७ | खान दौरां और राजा जयसिंह का सुरंग उड़ाकर नागपुर का क़िला फ़तह करना. | خان دوران اور راجہ جیسنگہ کا سرنگ اڑاکر قلعہ ناگپور کو فتح کرنا | ۲۰۷ |
| २०८ | कोकियां का देव गढ़ से खान दौरां के पास हाज़िर होकर ४ लाख रुपये सालाना देना क़बूल करना और खान दौरां का नाग पुर का क़िला उसको | کوکیان کا دیوگڈہ سے خان دوران کے پاس حاضر ہوکر چار لاکھ روپیہ سالانہ دینا قبول کرنا اور خاندوران کا قلعہ ناگپور اُس کو | ۲۰۸ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | वापस देकर काली भींत के ज़मींदार भीम सेन से पेश कश लेना | واپس دیکر کالی بہیت کے زمیندار بہیم سین سے پیشکش لینا | ۲۰۸ |
| २०६ | राजा गज सिंह को खलअत खास और घोड़ा इनायत | راجہ گجسنگہ کو خلعت خاصہ اور گھوڑا عنایت | ۲۰۹ |
| ,, | राज कँवर को खलअत और रुखसत और उसके साथ बल्लू चौहान और रावत मान सिंह वगैरा को खलअत इनायत और राना के वास्ते हाथी | راجہ کنور کو خلعت اور رخصت اور اُس کے ہمراہ بلو چوہان اور راوت مان سنگہ وغیرہ کو خلعت عنایت اور رانا کیواسطے ہاتھی | // |
| २१० | मोअज़्ज़माबाद में राजा जयसिंह की तरफ़ से बादशाह की नज़र | معظم آباد مین راجہ جیسنگہ کی طرف سے بادشاہ کی نذر | ۲۱۰ |
| ,, | बाड़ी के तालाब पर डेरे. | باڑی کے تالاب پر ڈیرہ | ۲۱۰ |
| ,, | बादशाह का आगरे में पहुंच कर क़िले के लिये महलों में दाखिल होना. | بادشاہ کا آگرہ کے قلعہ مین پہونچکر قلعہ کے نئے محلون مین داخل ہونا | // |
| २११ | राजा विट्ठलदास और मौतमिद खां का धंधेड़े के ज़मींदार को ले कर हाज़िर होना बादशाह का उस को क़ैद रख ने के लिये जुनेर के क़िले में भेज देना | راجہ بیٹھلداس اور معتمدخان کا دندہیڑہ کے زمیندار کو لیکر حاضر ہونا اور بادشاہ کا اُسکو قلعہ جنیر مین قید رکہنے کے واسطے بہیجنا | ۲۱۱ |
| ,, | राजा विट्ठलदास का इज़ाफ़ा और उसको धंधेड़ा इनायत | راجہ بیٹھلداس کا اضافہ اور اُسکو دندہیرہ عنایت | // |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २११ | राजा जगत सिंह से बंगश की क़िलेदारी उतर जाना. | راجہ جگت سنگھ سے بنگش کی قلعداری اُتر جانا | ۲۱۱ |
| २१२ | खान दौरां. राजा जय सिंह. अमर सिंह राठौड़ और माधो सिंह हाड़ा का हज़ूर में हाज़िर होना. | خان دوران راجہ جیسنگھ امر سنگھ راٹھوڑ اور مادہو سنگھ ہاڈا کا حضور میں حاضر ہونا | ۲۱۲ |
| ,, | खान दौरां को ६ हज़ारी मनसब. राजा जय सिंह को ५ हज़ारी मनसब और चार सू का परगना इनायत | خان دوران کو چھ ہزاری منصب راجہ جیسنگھ کو پانچ ہزاری منصب اور چارسو کا پرگنہ عنایت | // |
| ,, | अमर सिंह राठौड़ और माधो सिंह के इज़ाफ़े | امر سنگھ راٹھوڑ اور ماہو سنگھ کے اضافے | // |
| २१३ | राजा देवी सिंह को नक़ारा और झंडा इनायत. | راجہ دیوی سنگھ کو نقارہ اور جھنڈا عنایت | ۲۱۳ |
| ,, | राजा विठ्ठलदास को खलअत और धंधेड़े जाने की रुखसत | راجہ بیٹھلداس کو خلعت اور دھندھیڑہ جانے کی رخصت | // |
| ,, | जम्बू के ज़मींदार संग्राम के बेटे भोपत का कांगड़े के फ़ौजदार शाह कुली से लड़कर मारा जाना. | سنگرام زمیندار جمو کے بیٹے بھوپت کا کانگڑہ کے فوجدار شاہ قلیخان سے لڑکر مارا جانا | // |
| २१४ | औरंगज़ेब का दखन से आना | اورنگزیب کا دکن سے آنا | ۲۱۴ |
| ,, | राजा जय सिंह को घर जाने की रुखसत और उसके इलाके के क़ीमती घोड़े. | راجہ جیسنگھ کو گھر جانے کی رخصت اور اُس کے علاقہ کے قیمتی گھوڑے | // |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २१४ | संग्राम ज़मींदार गुन्नोर का इज़ाफ़ा | سنگرام زمیندار گنو کا اضافہ | ۲۱۴ |
| ,, | ईरान के बादशाह को ख़त | ایران کے بادشاہ کو خط | ,, |
| २१५ | बुंदेलों का जुझार सिंह के बेटे पृथ्वी राज को रईस बनाकर मुल्क दबाना और बादशाह का मालवे के सूबेदार ख़ानदौरां को ख़लअत देकर उसके ऊपर भेजना | بندیلون کا جوجہار سنگہ کے بیٹے پرتہی راج کو رئیس بناکر ملک دبانا اور بادشاہ کا مالوہ کے صوبہ دار خاندوران کو خلعت دیکر اسکے اوپر بہیجنا۔ | ۲۱۵ |
| | परताप उज्जेनिया का मारा जाना। | پرتاپ اوجینیہ کا مارا جانا | |
| २१५ | परताप का बादशाह की बंदगी से अपने मुल्क की हकूमत पाना और फिर अदूलहुक्मी करना। | پرتاپ کا بادشاہ کی بندگی سے اپنے ملک کی حکومت پانا اور پہر عدول حکمی کرنا | ۲۱۵ |
| २१६ | अबदुल्ला ख़ां फ़ीरोज़जंग का भोजपुर के क़िले को घेरना। | عبداللہ خان فیروزجنگ کا بہوجپور کے قلعہ کو گہیرنا | ۲۱۶ |
| ,, | परताप का लड़ना और भोजपुर फ़तह होने पर अबदुल्ला ख़ां के पास हाज़िर होजाना। | پرتاپ کا لڑنا اور بہوجپور فتح ہوجانے پر عبداللہ کے پاس حاضر ہوجانا | ,, |
| | दसवां बरस ॥ | | |
| २१८ | अबदुल्लाह ख़ां का बादशाह | عبداللہ خان کا بادشاہ | ۲۱۸ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | के हुक्म से परताप को मार डालना और उसकी औरत का निकाह अपने पोते से कर देना | کے حکم سے پرتاپ کو مار ڈالنا اور اسکی عورت کا نکاح اپنے پوتے سے کردینا | ۲۱۸ |
| २१८ | पृथ्वी राज राठौड़ का इज़ाफ़ा. | پرتھی راج راٹھوڑ کا اضافہ | " |
| " | समुद्र के बढ़ने से ठट्ठे के सूबे में नुकसान | دریا کی طغیانی سے صوبہ ٹھٹھہ مین نقصان | " |
| २१९ | औरंगज़ेब को दखन की रुखसत और बगलाना फ़तह करने की इजाज़त. | اورنگ زیب کو رخصت دکن اور بگلانہ فتح کرنے کی اجازت | ۲۱۹ |
| २२० | सूबेदार कशमीर का अबदाल से तिब्बत छीनना. | صوبہ دار کشمیر کا ابدال سے تبت چھین لینا | ۲۲۰ |
| " | नोट और खातमा. | نوٹ اور خاتمہ | " |

इतिश्री संपूर्णम्

تمام شد

## शाहजहांबादशाह

जबमितिकोकातिकबदी १४ सबत १६०४ इतवारकेदिन मुकाम रानोर में जहांगीर बादशाह का इन्तकाल ऊआ तो नूरजहां बेगम ने शहरयारको लाहोर से बुलाया मगर उस का भाई यमीनुद्दौला आसिफ़खां वज़ीर जो खुर्रम का सुसरा था और उस को बादशाह बनाया चाहता था मसलेहत वक़्त से खुसरो के बेटे बुलाकी को जिस का दूसरा नाम दावरबख्श भी था तख़्त पर बैठा कर कई अमीरों और राजा बासू के बेटे राजा जगत सिंह के साथ लाहोर की तरफ़ रवाने ऊआ और नूरजहां को नज़र बंद करके बनारसी नाम १ हिन्दू को जो बऊत तेज़ चलता था खुर्रम यानी शाहजहां के पास दकुवनकी

## شاہجہان بادشاہ

روزیکشنبہ تاریخ ۲۸ ماہ صفر سنہ ۱۰۳۷ ہجری کو مقام راجور میں جہانگیرشاہ کا انتقال ہوا تو نورجہان بیگم نے شہریار کو لاہور سے بُلایا مگر اسکا بھائی یمین الدولہ آصف خان وزیر جو خورم کا سُسرا تھا اور اُس کو بادشاہ بنایا چاہتا تھا مصلحت وقت سے خسرو کے بیٹے بلاقی کو جسکا دوسرا نام داوربخش بھی تھا تخت پر بٹھاکر کئی امیروں اور راجہ باسو کے بیٹے راجہ جگت سنگھ کے ساتھ لاہور کی طرف روانہ ہوا اور نورجہاں کو نظربند کرکے بنارسی نام ایک ہندو کو جو بہت تیز چلتا تھا خرم یعنی شاہجہان کے پاس دکھن کی

की तरफ़ रवाने किया और कहलाया कि जलदी आगरे में पहुंचें ॥

जब बुलाकी लाहोर के पास पहुंचा, तो शहरयार मिति काबिकमुद्दी की १३ इतवार के दिन ३ कोस पर आकर लड़ा और हार खाकर किले को भागा आसिफ़ खां ने शहर में कबज़ा करके शहरयार को पकड़ा और अंधा करके कैद कर दिया ॥

मिति मंगसिर बदी ४ इतवार को बनारसी दास जुनेर में पहुंचा और महाबत खां की मारफ़त शाहजहां से मिल कर आसिफ़ खां की अंगूठी दी और सब हाल कहा शाहजहां बृहसपति वार को जुनेर से रवाने हुआ और दकखन के सूबेदार खांनजहां लोधी को बहुत सी खातिर तसल्ली लिखी तो भी उसने निज़ाम उल्मुल्क से मिला बट करके तमाम मुलक बाला घाट का उस को दे दिया और उस तरफ़ के कुल बादशाही अमीर और जागीर

کی طرف روانہ کیا اور کہلایا کہ جلد آگرہ میں پہونچیں +

جب بلاقی لاہور کے پاس پہنچا تو شہریار روز یکشنبہ ۱۱ ربیع الاول کو - تین کوس پر آ کر لڑا اور شکست کھا کر قلعہ کو بھاگا آصف خاں نے شہر میں قبضہ کر کے شہریار کو پکڑا اور اندھا کر کے قید کر دیا -

روز یکشنبہ ۱۹ ربیع الاول کو بنارسی داس جونیر میں پہنچا اور مہابت خان کی معرفت شاہجہان سے مل کر آصف خان کی انگوٹھی دی اور سب حال کہا شاہجہان پنجشنبہ - کو جونیر سے روانہ ہوا اور دکھن کے صوبہ دار خان جہاں لودھی کو بہت سی خاطر و تسلی لکھی تو بھی اوس نے نظام الملک سے سازش کر کے تمام ملک بالاگھاٹ کا اس کو دیدیا اور اس طرف کے کل بادشاہی امیر اور جاگیردار

दार भी सिवाय अहमदनगर के कि
लेदार सिपहदार खां के कि जिस ने
खान जहां का हुक्म न्हीं माना उस
के लिखने से अपने परगने थाने और
जागीरें छोड २ कर बुरहानपुर मे
आगये और खान जहां अपने बेटों
और साथियों को बुरहानपुर में छोड
कर राजा जै सिंघ और गजसिंघ स
मेत जो लाचारी से उस के साथ
थे मेंडु में गया और वहां के सूबे
दार मुजफ्फरखां को निकाल कर
खुद मालिक बन बैठा ॥
शाहजहां मंगसिरसुदी १ को नर
बदा से उतरकर गांव सेनूर में ठेरे थे
वहां उन को शहरयार की हार की
खबर अहमदाबाद के सूबे दार
नाहरखां की अरजी से मिली. नाहर
खां को उस लड़ाई का हाल गुजरा
त के हिन्दुओं की लिखा वट से मा
लूम हुआ था जो लार में रहते थे ॥
पोस बदी ३ को शाहजहां अह

بجی سوائے احمد نگر کے قلعہ دار
سپہدار خان کے کہ جس نے
خان جہاں کا حکم نہیں مانا اس کے
لکھنے سے اپنے پرگنے تھانے اور
جاگیریں چھوڑ چھوڑ کر برہانپور میں
آگئے اور خان جہاں اپنے بیٹوں
اور ساتھیوں کو برہانپور میں چھوڑ کر
راجہ جے سنگھ اور گج سنگھ کے جو
لاچاری بضرورت اُس کے ساتھ تھے
منڈو میں گیا اور وہاں کے صوبہ دار
مظفر خان کو نکال کر کے خود مالک
بن بیٹھا -
شاہجہاں اسلخ ربیع الاول کو
نربدا سے اُتر کر موضع سینور میں ٹھیرے
- وہاں اُنکو شہریار کی شکست کی
خبر احمدآباد کے صوبہ دار ناہر خاں کی
عرضی سے ملی ناہر خاں کو اُس
لڑائی کا حال گجرات کے ہندوؤں
کی لکھاوٹ سے معلوم ہوا تھا
جو لار میں رہتے تھے -
۱۷ ربیع الثانی کو شاہجہان

मल्हार में पहुंचे जहां सवा महीने तक रहकर गुजरात और सिंध का इन्तज़ाम करने के पीछे रवाने हुए

पोस सुदी ५ को गांव गोगूंदे में राणां करण सिंघ ने हाज़िर होकर सलाम किया शाहजहां ने उन का मुल्क और पांच हज़ारी मन सब बहाल रक्खा

माह बदी ३ को अजमेर पहुंचकर आनासागर के ऊपर बादशाही महलों में मुकाम किया और पैदल जाकर ज़ियारत की और वहां नई मसजिद बनाने का हुकम देकर महाबतखां को अजमेर का सूबेदार किया अनीराय राजा भारत सिंघ बुंदेला, सैयद भवा और नूरुद्दीन कुली, जो जहांगीर बादशाह के हुक्म से महाबतखां के ऊपर तईनात होकर अजमेर में ठैरे हुए थे शाहजहां की खिदमत में हाजिर हुए राजा जैसिंघ और गजसिंघ भी शाहजहां का अजमेर में पहुंचना सुन कर खानजहां के पास से चल दिये

احمد آباد میں پہنچے جہاں سوا مہینے تک رہکر بعد انتظام ممالک سندہ او گجرات کے آگرہ کی طرف انتظام کرنیکو روانہ ہوئے +

۵ جمادی الاول کو موضع گوگھونده میں رانا کرن سنگھ نے حاضر ہوکر سلام کیا شاہجہاں نے انکا ملک اور پانچ ہزاری منصب بحال رکھا +

۱۷ جمادی الاول کو اجمیر پہنچکر آنا ساگر کے اوپر بادشاہی محلوں میں مقام کیا اور پیدل جاکر زیارت کی اور وہاں نئی مسجد بنانے کا حکم دیکر مہابت خاں کو اجمیر کا صوبہ دار کیا انی راے راجہ بھارت سنگھ بندیلا۔ سید بھوا اور نورالدین قلی جو جہانگیر بادشاہ کے حکم سے مہابت خان کے اوپر تعینات ہوکر اجمیر میں ٹھیرے ہوئے تھے - شاہجہاں کی خدمت میں حاضر ہوئے راجہ جے سنگھ اور گج سنگھ بھی شاہجہان کا اجمیر میں پہنچنا سن کر خان جہان کے پاس سے چلدیئے +

दिये गजसिंघ तो अपने वतन को गये और
जयसिंघ अजमेर में शाह जहां से आ मिले

माह बदि ८ इतवार को खिदमतपर
स्त खां शाह जहां का खास रुक्का लेकर
लाहोर में आसिफ़ खां के पास पहुंचा
आसिफ खां ने उसी दिन शाहजहां के
नाम की आन दुहाई फेर कर बुलाक़ी को
क़ैद कर दिया और तीसरे दिन रात के
वक़्त उसी रुक्के की लिखावट के मुआफ़िक़
शहरयार, बुलाक़ी, बुलाक़ी के भाई और
सुलतान दानयाल के बेटों, तहमुरस और
होशंग को, जो शहरयार के शामिल
थे मरवाडाला -

माह बदि १२ जुमेरात को शाहजहां
आगरे में पहुंचे और माह सुद ६ सोम
वार को तखत पर बैठ कर अबुल मुज़फ़्फ़
र शहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब क़िरां
सानी शाहजहां बादशाह गाज़ी, के ना
मसे मशहूर हुए सिजदा (शाशटांगदं
डवत) मौक़ूफ़ होकर आदाबु जमीं बो
स बहाल रहा यानी बादशाह के हुज़ूर में

گجسنگھ تو اپنے وطن جودھپور کو گئے
اور جیسنگھ اجمیر میں شاہجہاں سے آ ملے
۲۲ جمادی الاول کو خدمت پرست خاں
شاہجہاں کا رقعہ خاص لیکر لاہور میں
آصف خاں کے پاس پہنچا آصف خاں
نے اسی دن شاہجہاں کے نام کا خطبہ پڑھ کر
بلاقی کو قید کر دیا اور شب چہارشنبہ
۲۵ ماہ مذکور کو بموجب مضمون اسی رقعہ کے
شہریار بلاقی بلاقی کے بھائی اور سلطان
دانیال کے بیٹوں طہمورث اور ہوشنگ
کو مروا ڈالا -

روز پنجشنبہ ۱ ماہ جمادی الثانی
مطابق ۲۵ بہمن ماہ الٰہی کو شاہجہاں
آگرہ میں پہنچے اور روز دوشنبہ ۸ ماہ
جمادی الثانی کو تخت نشین ہو کر ابو المظفر
شہاب الدین محمد صاحب قران ثانی
شاہجہاں بادشاہ غازی کے نام سے
مشہور ہوئے سجدہ موقوف ہوا اور
آداب زمین بوس بحال رہا کہ حضرت
بادشاہ کے دونوں ہاتھ زمین پر
لگا کر چوم لیں

हाजिर होवें जब दोनों हाथ ज़मीन से ल
गाकर चूम लें -

जिलूस के दिन बादशाह ने ६० लाख
रुपे तो अपनी बेगमों बेटों बेटियों को
और १२ लाख रुपे सैयदों और शेखों
वगैरा को बख़्शे और अमीरों के मनस
ब में इस मूजब इज़ाफ़ा किया जैसे

१ आसिफ़ खां का मनसब सात ह
जारी से आठ हज़ारी ८ हजार सवार
दो अस्पा ति अस्पा, चचा की ख़िताब सल्तनत
का कुल्ल अख़्तियार और बंदर ला
हरी जागीर में बख़्शा

२ महाबत खां को सात हजारी सात
हजार सवार का मनसब खानखाना
का ख़िताब और नक्कारा निशान तु
मान और तोग़ और ४ लाख इनाम -

३ वज़ीर खां पांच हजारी ३ हजार स
वार १ लाख इनाम

४ सैयद मुज़फ़्फ़र खां चार हजारी ३ ह
जार सवार

५ दिलावर खां बड़ेच चार हजारी
२५०० सवार

جلوس کے دن بادشاہ نے ساٹھ لاکھ
روپیہ تو اپنی بیگموں اور بیٹیوں اور بیٹوں
کو اور بارہ لاکھ سادات اور مشائخ
وغیرہ کو بطور انعام کے بخشے اور امیروں
کے مناصب میں حسب ذیل اضافہ
فرمایا۔

(۱) یمین الدولہ آصف خاں کو چھ
ہزاریسے ہشت ہزاری ذات اور ہشت
ہزار سوار دو اسپہ اور سہ اسپہ کا منصب
خلعت خاصہ عمو کا خطاب اور بندر
لاہری جاگیر میں۔

۲ ۔ مہابت خاں کو ہفت ہزاری
ذات ہفت ہزار سوار کا منصب اور
خانخاناں سپہ سالار کا خطاب خلعت
فاخرہ معہ اسپ فیل اور اسلحہ مرصع کے
چار لاکھ روپیہ انعام اور علم نقارہ طومان
اور طوغ

(۳) وزیر خاں پنجہزاری تین ہزار سوار وزارت کا
عہدہ خلعت فاخرہ ایک لاکھ روپیہ انعام علم نقارہ

۴ ۔ سید مظفر خان بارہہ چار ہزاری
تین ہزار سوار خلعت فاخرہ ایک لاکھ
انعام علم اور نقارہ ۔

६ बहादुरखां रुहेला चार हज़ारी २००० सवार

७ सरदारखां तीन हज़ारी २००० सवार

८ राजा विठ्ठलदास राजा गोपालदास गोड़ का बेटा तीन हज़ारी १५०० सवार झंडा खासा घोड़ा हाथी और ३०००० रुपै इनाम

९ मुज़फ़्फ़र किरमानी ३ हज़ारी १२०० सवार

१० राजा मनरूप जगनाथ कछवाहे का बेटा ३ हज़ारी १००० सवार झंडा घोड़ा और २५०००/ इनाम

११ कुलीचखां २५०० हज़ारी २००० सवार

१२ ख़्वाजा कासिम २५०० हज़ारी २००० सवार

१३ रज़ा बहादुर खिदमत परस्तखां २००० हज़ारी १२०० सवार

१४ युसुफ मुहम्मदखां २००० हज़ारी १००० सवार

१५ जांनिसारखां २००० हज़ारी २००० सवार

१६ जहरास्प महाबतखां का बेटा २००० हज़ारी १००० सवार

۶ - بہادر خاں روہیلہ چار ہزاری دو ہزار سوار خلعت اسپ خنجر مرصع پچاس ہزار روپیہ انعام

(۷) سردار خاں تین ہزاری دو ہزار سوار خلعت اسپ اور ۳۰ ہزار روپیہ انعام علم و نقارہ -

۸ - راجہ بیٹھل داس گوڑ ولد راجہ گوپال داس تین ہزاری ڈیڑھ ہزار سوار خلعت مع فیل ۳۰ ہزار روپیہ انعام علم اور اسپ

۹ - مرزا مظفر کرمانی تین ہزاری بارہ سو سوار خلعت و خنجر مرصع اور ۳۰ ہزار انعام

۱۰ - راجہ منروپ ولد راجہ جگناتھ کچھواہہ سہ ہزاری ہزار سوار خلعت جمدھر مرصع پچیس ہزار انعام علم اور گھوڑا -

۱۱ - قلیج خاں دو ہزار سوار ہاتھی اور پچیس ہزار روپیہ انعام علم و اسپ -

۱۲ خواجہ قاسم ڈھائی ہزاری بارہ سو سوار فیل و اسپ اور پچیس ہزار روپیہ انعام

۱۳ رضا بہادر خدمت پرست خاں دو ہزاری بارہ سو سوار میر تزک عصائے مرصع اسپ فیل بیس ہزار انعام

۱۴ یوسف محمد خاں دو ہزاری ہزار سوار -

۱۵ جان نثار خاں دو ہزاری ہزار سوار

१७ दयानतखां २००० हजारी ८०० सवार २ हजारी से कम के नाम छोड़ दिये गये और उनमें हिन्दू इतने थे-

१ जगमाल किशन सिंघ राठोड़ का बेटा १५०० हजारी ७०० सवार और खिलअत

२ राजा द्वारिकादास कछवाहा हजारी ८०० सवार और खिलअत

३ हिरदे राम कछवाहा हजारी ६५० सवार

४ राजा बीर नारायण हजारी ६०० सवार

५ जैतसिंघ राठोड़ हजारी ५०० सवार और ६०००) इनाम

६ सेवाराम गोड़ हजारी ५०० सवार

७ साम सिंघ सीसोदिया ऐजन

ये लोग खास शाहजहां के साथी थे और जहांगीर बादशाह के अमीरों में से जो इस दिन हाजिर थे उनके मनसब बहाल रहे और बाजों का इज़ाफ़ा हुआ जैसे

१ खान आलम ६०००री ५००० सवार

२ कासमखां ५०००री ५००० सवार

३ लशकरखां ५०००री ५००० सवार

۱۷۔ دیانت خاں ہزاری آٹھ سو سوار اور ۲۰۰۰ ہزار روپیہ انعام

دو ہزاری سے کم کے نام بخوف طوالت نہیں لکھے اور اُن میں ہندو اتنے تھے۔

(۱) جگمال ولد کشن سنگھ راٹھوڑ ڈیڑھ ہزاری سات سو سوار اور خلعت۔

(۲) راجہ دوارکاداس کچھواہہ ہزاری آٹھ سو سوار اور خلعت۔

(۳) ہردے رام کچھواہا ہزاری ذات اور ساڑھے چھ سو سوار۔

(۴) راجہ بیر نرائن ہزاری چھ سو سوار

(۵) جیت سنگھ راٹھوڑ ہزاری پانسو سوار اور چھ ہزار روپیہ انعام۔

(۶) سیوا رام گوڑ ہزاری پانسو سوار۔

(۷) شام سنگھ سیسودیہ ایضاً

یہ لوگ تو خاص شاہجہاں کی ہمراہی و رفیق تھے اور جہانگیر بادشاہ کے امیروں میں سے جو بروز جلوس حاضر تھے کچھ تو اپنے مناصب پر بحال رہے اور بعض کا اضافہ بھی ہوا جیسے۔

(۱) خانعالم چھ ہزاری پانچ ہزار سوار خلعت خاصہ اسپ فیل علم اور نقارہ۔

(۲) قاسم خاں پنجہزاری پنجہزار سوار ...

४ राजाजयसिंघ राजामानसिंघका
पोता ४०००री ३००० सवार
५ सैयददलेर खां ४०००री २५०० सवार
६ राव सूरजुरटिया बीकानेरी ३०००री
से ४०००री और २००० से २५०० सवार
हाथी घोड़ा नक्कारा निशान
७ राजाभारतबुंदेला ३०००री २००० सवार
खिलतजड़ाऊ जमधर घोड़ा और
झंडा
८ मिरजा खां शाहनवाजखां का बेटा
और अबदुलरहीम खानखांनाका
पोता ३०००री २५०० सवार
९ मुस्तफा बेग ३०००री ५०० सवार
१० बाबूखां किरानी २०००री २००० सवार
११ सैयद बहवा २०००री १२०० सवार
१२ अलीकुली खां ऐजन
१३ पहाड़सिंघ बुंदेला ऐजन
१४ नूरुद्दीन कुली २०००री ७०० सवार
इलाही बरस और महीने जो अकब
र के वक्त से जारी हुए थे बादशाह ने उ
नको मोकूफ करके हिजरी बरस औ
र महीने फिर जारी किये और अपने

۴- راجہ جے سنگہ راجہ مان سنگہ کا پوتا چار
ہزاری تین ہزار سوار-
۵- سید دلیر خاں چار ہزاری ۲۵۰۰ سوار
۶- راو سور بھورٹیہ بیکانیری تین ہزاری سے
چار ہزاری اور دو ہزار سے تین ہزار سوار
۷- راجہ بھارت بندیلہ تین ہزاری دو ہزار سوار
خلعت جمدھر مرصع گھوڑا اور نشان-
۸- مرزا خاں شاہ نواز خاں کا بیٹا اور عبدالرحیم
خانخاناں کا پوتا تین ہزاری ڈھائی ہزار سوار
۹- مصطفی بیگ تین ہزاری پانسو سوار
(۱۰) بابو خاں کررانی دو ہزاری
دو ہزار سوار-
۱۱- سید بہوا دو ہزاری بارہ سو
سوار-
۱۲- علیقلی خاں ایضاً
۱۳- پہاڑ سنگہ بندیلہ ایضاً
۱۴- نورالدین قلی دو ہزاری سات
سو سوار بادشاہ نے تاریخ الٰہی جو
اکبر بادشاہ کے وقت سے جاری
ہوئی تھی موقوف کرکے بجائے
اُسکے

जलूसीबरसोंकाहिसाब ता: १ जमा
दुस्सानी सन १०३७ हिजरी मुताबिक
माहसुद ३ संबत १६८४ से रखा

फागणबदि ४ को रजागजसिंघ
अपनेवतनजोधपुरसे बादशाह केपा
स हाजिरहुए बादशाह नेरवासाखि
लतजड़ाऊ रवंजर फूल कटारे स
मेत जड़ाऊ तलवार रवासाघोड़ा सु
नहरी जीनका रवासाहाथी औरनक्का
रा निशान इनायत करके पांचहजारी
पांचहजारसवार का मनसब जो ज
हांगीर बादशाह केवक्त से था सोब
हालरक्खा—

इन्हीदिनोंमें राणा के मर नेकीरव
बर पहुंची बादशाहनेउसके बेटे ज
गतसिंघ को पांचहजारी पांचहजार
सवार का मनसब राणा का खिताब
रवासा खिलत जड़ाऊ रवपवा फूल
कटारे समेत जडाऊ तलवार रवासा
घोड़ा रवासाहाथी सोने और चांदीके
सामान से और फरमान दिलासाका
राजाबीरनारायणके हाथ नेजा और जो

تاریخ جلوسی کا آغاز یکم ماہ جمادی الثانی
سنہ ۱۰۳۷ ہجری مطابق ماہ سودی ۳ سمت ۱۶۸۴
سے سال و ماہ قمری کے حساب پر رکھا
۱۷ جمادی الثانی کو راجہ گجسنگہ ولد راجہ
سورج سنگہ اپنے وطن جودہ پور سے
بادشاہ کے پاس حاضر ہوئے بادشاہ
نے خلعت خاصہ خنجر مرصع معہ پہول
کٹارہ و شمشیر مرصع منصب پنجہزاری
ذات اور پنجہزار سوار جو جہانگیر بادشاہ
کے عہد میں تہا علم اور نقارہ اور
طویلہ خاصہ سے سونہری زین کا
گہوڑا اور خاصہ ہاتھی عنایت فرمایا
انہیں دنوں میں رانا امرسنگہ والئی
اودیپور کے انتقال کی خبر پہنچی بادشاہ
نے اُسکے بیٹے جگت سنگہ کو پنجہزاری
پانچہزار سوار کا منصب رانا کا
خطاب خلعت خاصہ کہپوہ مرصع معہ
پہول کٹارہ شمشیر مرصع خاصہ گہوڑا
اور ہاتہی چاندی اور سونے کے
سامانوں سے اور فرماں استمالت
راجہ بیرنارائن کے ہاتہ
بہیجا۔

कुछ मुल्क कि उसके वतन से उसके बापकी जागीर पांच हजारी जात और ५ हजार सवार की तनख्वाह के माफिक दिया गया था वह उसको इनायत हुआ।

फागुण सुद ३ को आसिफखां शाहजादों और बादशाही लशकर के साथ लाहोर से बादशाह के पास पहुंचा उस दिन बादशाह ने बड़ी खुशी की और अमीरों के मनसब बढ़ाये उनमें राजपूतों के यह मनसब हुए-

१ बिहारीदास कछवाहा खिलत और डेढ़ हजारी ७०० सवार-

२ राजा रोज़ अफ़ज़ूं खिलत और डेढ हजारी ६०० सवार

३ राजा गिरधर खिलत हजारी ५०० सवार

४ जादों राय कायथ ५ हजारी ५०० सवार

५ जुझार सिंघ राजा बरसिंघदेव बुंदेले का बेटा ४ हजारी ४००० सवार

६ ऊदाजी राम दखनी ४ हजारी ४००० सवार

७ राजा जगत सिंह राजा बासू का बेटा ३ हजारी ५०० सवार

८ यसवंत राय दखनी २ हजारी १००० सवार

اور جو کچھ ملک کہ اُسکے وطن سے اُسکے باپ کی جاگیر میں پانچہزاری ذات اور پانچہزار سوار کی تنخواہ کے موافق دیا گیا تھا وہ بھی اسکو عنایت ہوا غرہ رجب کو آصف خاں معہ شہزادوں اور خدم وحشم کے لاہور سے بادشاہ کے پاس پہونچا اُس دن بادشاہ نے بڑی خوشی کی اور امیروں کے منصب بڑہائے اُنمیں راجپوتوں کے یہہ منصب ہوئے۔

۱- بہاری داس کچھواہہ خلعت ڈیڑہ ہزاری اور سات سو سوار۔

۲- راجہ روزافزوں خلعت ڈیڑہ ہزاری چہ سو سوار

۳- راجہ گردہر خلعت ہزاری ذات اور پانسو سوار

۴- جادوں راۓ کاتیھ پانچہزاری پانسو سوار

۵- ججہار سنگہ بن راجہ برسنگ دیو بندیلہ چارہزاری چار ہزار سوار۔

۶- اوداجی رام دکہنی چارہزاری چار ہزار سوار

۷- راجہ جگت سنگہ راجہ باسو کا بیٹا۔ تین ہزاری پانسو سوار۔

۸- جسونت راۓ دکہنی دوہزاری ایکہزار سوار

९ रावलकल्याणजेसलमेरी २ हजारी
१००० सवार
१० रावलपूंजा १ हजारी ५०० सवार
११ सत्रुसालमाधोसिंघकछवाहे का
बेटा १ हजारी ५०० सवार
१२ विक्रमाजीत जुझारसिंघबुंदेले
का बेटा हजारी हजार सवार
१३ रावल समरसी हजारी हजार सवार
१४ बलभद्र सेखावत हजारी ६०० सवार
१५ किशनसिंघ हजारी ६०० सवार
१६ माधोसिंघ राव रतन हाडा का बेटा-
हजारी ६०० सवार
१७ भारमल किशनसिंघ राठोड़ का
बेटा हजारी ५०० सवार
१८ गुरसेन किस्तवार का राजा हजारी
२०० सवार
१९ करमसी राठोड़ हजारी ५०० सवार

फागुण सुद १० को राव रतन हाडा
अपने वतन से हाजिर आया बादशा
हने उसका ५ हजारी ५ हजार सवार
का मनसब बहाल रखा और खि
लत जड़ाऊ जमधर नक्कारा निशा
न और सोने के साज़ का घोड़ा इना
यत फरमाया।

راول کلیان جیسلمیری دو ہزاری ہزار
سوار۔
۱۰۔ راول پونجا ایکہزاری پانسو سوار
۱۱استروسال ولد ماوہوسنگہ کچہواہہ
ہزاری ذات اور پانسو سوار۔
۱۲۔ بکرماجیت جوجہار سنگہ بندیلہ کا بیٹا
ہزاری سوار
۱۳۔ راول سمرسی ہزاری ہزار سوار
۱۴ بلبہدر شیخاوت ہزاری چہہ سو سوار
۱۵۔ کشن سنگہ ہزاری چہہ سو سوار۔
۱۶۔ ماوہوسنگہ ولد راو رتن ہاڈا ہزاری
پانسو سوار۔
۱۷ بہارمل ولد کشن سنگہ راٹہور ہزاری پانسو سوار
۱۸۔ گورسین راجہ کشتوارہ ہزاری دوسو سوار
۱۹۔ کرم سی راٹہوڑ ہزاری پانسو سوار
۸۔ رجب کو راؤ رتن ہاڈا اپنے وطن
سے حاضر آیا بادشاہ نے اسکا پانچہزاری
پانچہزار سوار کا منصب بحال رکہا اور خلعت
خاصہ جمدہر مرصع علم اور نقارہ اور
اسپ معہ زین طلا وونری کے
مرحمت فرمایا۔

इसीदिन भीम राठोड़ का मनसब डेड़हजारी ७०० सवार और पृथ्वीराज राठोड़ का डेड़ हजारी ६०० सवार का होगया ——

राजा भारत बुंदेले को परगने इटावा की फोजदारी का खिलत मिला

पठानों ने काबुल के सूबेदार जफरखां को खैबर के घाटे में लड़कर हरादिया इसलिये बादशाह ने लशकरखां को काबुल का सूबेदार करके १५००० फोज सेरवाने किया

फागुण सुद १४ को सूरज मेख में आया यह पहिला नोरोज़ था इसलिये इसका उच्छब बड़ी धूमधामसे हुआ जिसमें बड़ी २ बख्शिशें और नवाजिशें की गईं जिनकी बाबत बादशाहनामे में लिखा है कि बादशाह ने तख्त पर बैठने के दिन से नोरोज तक १ करोड़ ८० लाख रुपैका रोकड़ गहना और दूसरा सामान बख्शा था उनमें से १ करोड़

اسی دن بہیم راٹھوڑ کا منصب ڈیڑھ ہزاری سات سو سوار اور پرتھی راج راٹھوڑ کا منصب ڈیڑھ ہزاری چھ سو سوار کا ہوگیا

راجہ بھارت بندیلہ کو پرگنہ اٹاوا کی فوجداری کا خلعت ملا ۔

پٹھانوں نے کابل کے صوبہ دار ظفرخاں کو خیبر کی گہاٹی میں لڑکر شکست دی اسلئے بادشاہ نے لشکرخاں کو کابل کا صوبہ دار کرکے پندرہ ہزار فوج سے روانہ کیا

۱۲ رجب کو آفتاب برج حمل میں آیا یہ پہلا نوروز تھا اسلئے اُسکا جشن بڑی دہوم دہام سے ہوا جسمیں بڑی بڑی بخششیں اور نوازشیں کیگئیں جنکی بابت بادشاہ نامہ میں لکھا ہے کہ بادشاہ نے تخت نشینی کے دن سے جشن نوروز تک ایک کروڑ اسی لاکھ روپے کا نقد وجنس زیور اور اسلحہ وغیرہ بخشا تھا اُن میں سے ایک کروڑ ساٹھ لاکھ

| | |
|---|---|
| ६० लाख तो ख़ुमताज़ज़मानी बेगम और शाहज़ादों को पहुंचा और २० लाख तमाम नौकरों को। | تو ممتاز زمانی بیگم اور شاہزادوں کو پہونچا اور بیس لاکھ تمام نوکروں کو |
| नौरोज़ के दिन महाराजा भीमसिंघ सीसोदिये का बेटा और राणा अमर सिंघ का पोता राय सिंघ हाज़िर हुआ बादशाह ने उसके बाप की ख़िदमतों पर नज़र करके वह छोटा था तो भी उसको बड़ा भारी ख़िलत जड़ाऊ सरपेच जड़ाऊ जमधर दो हज़ारी हज़ार सवार का मनसब राजा का ख़िताब हाथी घोड़ा और २०००० रुपया रोकड़ इनायत फरमाया - | نوروز کے دن مہاراجہ بہیم سینگھ کا بیٹا اور رانا امر سنگھ کا پوتا رائے سنگھ حاضر ہوا بادشاہ نے اُس کے باپ کی حُسن خدمات پر نظر کرکے اُسکو باوجود خورد سالی خلعت فاخرہ سرپیچ مرصع جمدہر مرصع دو ہزاری ہزار سوار کا منصب راجہ کا خطاب ہاتھی گھوڑا اور بیس ہزار روپیہ عنایت فرمایا۔ |
| चैत बदि ११ संबत १६८५ को बादशाह ने बरसिंघदेव बुंदेले के बेटे नरहरदास को पांचसदी २०० सवार का मनसब दिया - | ۲۴ رجب کو بادشاہ نے برسنگدیو بندیلے کے بیٹے نرہرداس کو پانچ صدی دو سو سوار کا منصب عطا کیا۔ |
| बैसाख बद ५ को बादशाह ने दिलेरखां और राजा जयसिंघ को ख़िलत वगैरा देकर महाबन के फसादियों के ऊपर भेजा यह शायद जाट थे | ۱۸ شعبان کو بادشاہ نے دلیر خاں اور راجہ جے سنگھ کچھواہہ کو خلعت وغیرہ دیکر مفسدان مہابن کے اوپر روانہ کیا یہ شاید جاٹ تھے۔ |

| | |
|---|---|
| जुझारसिंघ बुंदेला राजा बरसिंघदेवके बेटे ने अपने वतन से हाजिर आकर हजार मुहर और १ हाथी नज़र किया बादशाह ने उसको जड़ाऊ जमधर फूलकटारे समेत और नक्कारा निशान इनायत फरमाया- | جوجہار سنگھ بندیلہ راجہ برسنگدیو کا بیٹا اپنے وطن سے حاضر آیا ہزار مہریں اور ایک ہاتھی نذر کیا بادشاہ نے اُسکو جمدہر مرصع مع پھول کٹارہ اور نقارہ ونشان کے عنایت فرمایا۔ |
| पहाड़सिंघ राजा बरसिंघदेव के दूसरे बेटे को हाथी इनायत हुआ- | پہاڑسنگھ راجہ برسنگدیو کے دوسرے بیٹے کو ہاتھی عنایت ہوا۔ |
| जेठ बदि २ को महाबतखां खानखानां दकवन बराड़ और खानदेश का सूबेदार हुआ और अगले सूबेदार खानजहां को मालवे की सूबेदारी दी गई- | ۱۵ رمضان کو مہابت خاں خانخاناں کو دکن برار اور خاندیس کی صوبہ داری مرحمت ہوئی اور صوبہ دار سابق خانجہاں کو مالوہ کا صوبہ دیا گیا۔ |
| बुखारे के खान इमामकुली के भाई नज़र मुहम्मद खां ने काबुल के ऊपर चढाई की रास्ते में जुहाक के किलेदार खंजरखां ने लड़कर उसको शिकिस्त दी तो भी उसने जेठ बद २ को काबुल को घेर लिया- | امام قلیخاں خان بخارا کے بہائی خان نے کابل کے اوپر فوجکشی کی راستہ میں خنجر خاں قلعدار ضحاک نے مقابلہ کرکے اسکو شکست دی تو بھی اُسنے تاریخ ۱۵ شوال کو کابل کا محاصرہ کرلیا۔ |
| दूसरे जेठ की बद ४ की रात को जुझारसिंघ बुंदेला अपने वतन | شب ہژدہم شوال کو جوجہار سنگھ بندیلہ اپنے وطن |

कीतरफ भागगया-

दूसरे जेठ सुदि १ को कासिमखां और राजा जयसिंघ महाबन के फसादियों को सज़ा देकर हाज़िर हुए

जेठ सुद ६ को चंद्रमन भगवानदास राजा बरसिंघदेव बुंदेले के बेटे को हज़ारी जात और छः छः सौ सवारों के मनसब मिले-

पहाड़ सिंघ का मनसब साढे तीन हज़ारी २५०० सवार का होगया

बिहारीदास कछवाहा का मनसब असल और इज़ाफ़े से डेढ हज़ारी हज़ार सवार का होगया-

बादशाह ने महाबतखां खानखानां राव रतन हाडा राजा जयसिंघ राव सूरज चुरटिया और मौतमिद खां को २०००० सवार से नजर मुहम्मद खां के मुकाबिले पर रवाने किया-

सावन सुद ६ को प्रताप उज्जैनिया को डेढ हज़ारी हज़ार सवार का

کی طرف بھاگ گیا۔

۲ ماہ ذیقعد کو قاسم خاں اور راجہ جے سنگھ کچھواہہ مفسدان مہابن کو سزا دیکر حاضر ہوگئے

۶ کو چندرمن و بھگوانداس راجہ برسنگدیو کے بیٹوں کو ہزاری ذات اور چھ چھ سو سواروں کے منصب ملے۔

پہاڑ سنگھ کا منصب ساڑھے تین ہزاری ڈہائی سو سوار کا ہو گیا

بہاری داس کچھواہہ کا منصب اصل اور اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ہزار سوار کا ہوگیا

بادشاہ نے مہابت خان خانخانان راو رتن ہاڈا راجہ جے سنگھ کچھواہہ راو سور بہورسیہ معتقد خان کو بیس ہزار سوار سے نذر محمد خان کے مقابلہ پر روانہ کیا۔

۶ ذی الحجہ کو پرتاپ اوجینیہ کو ڈیڑہ ہزاری ہزار سوار کا۔

मनसब राजा का ख़िताब और हाथी इना
यत हुआ ॥

सावन सुदी १० को करमसी राठोड़
पांच सदी ज़ात और ३०० सवार के
इज़ाफ़े डेढ़ हज़ारी ८०० सवार का
मनसबदार होगया ॥

खीलूजी भोंसला निज़ामुल्मुल्क
का सरदार खानखानां के बेटे खा
नज़मां के पास दक्खन में हाज़िर होक
र बादशाही नौकर होगया बादशाह
ने उसके वास्ते पांच हज़ार ज़ात और पां
चहज़ार सवार के मनसब खातरदारी का
ख़िलत जड़ाऊ जमधर नक्कारा निशा
न हाथी और घोड़ा सुनहरी सामान का
भेजा ॥

राजा गजसिंघ के बेटे अमर सिंघ को
हाथी इनायत हुआ ॥

राजा भारत बुंदेले को नक्कारा मिला

बरस २

भादों बदी २ सम्बत् १६८५ से
भादों बदी २ सम्बत् १६८६ तक

منصب راجہ کا خطاب اور ہاتھی
عنایت ہوا۔

۷ ذی الحجہ کرمسی راٹھوڑ پانچ
صدی ذات اور تین سو سواروں
کے اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ذات اور
آٹھ سو سوار کا منصب دار ہوگیا۔

کھیلوجی بھونسلا جو نظام الملک کا
سردار تھا خانخانان کے بیٹے خان
زمان خان کے پاس دکھن میں حاضر ہوکر
بادشاہی نوکر ہوگیا بادشاہ نے اوس
کے واسطے پانچہزاری ذات اور
پانچ ہزار سوار کا منصب استمالت کا
فرمان اور خلعت فاخرہ معہ جمدہر
مرصع نقارہ نشان ہاتھی اور گھوڑے
سنہری ساز کے بھیجا۔

راجہ گجسنگھ کے بیٹے امرسنگھ
کو ہاتھی عنایت ہوا۔

راجہ بھارت بندیلہ کو نقارہ ملا۔

سال دوئم

۱۰۳۸ سنہ

۲۲ اگست سنہ ۱۶۲۸ سے ۱۲ اگست سنہ ۱۶۲۹ تک

भादों सुदी ११ शुक्रवार के दिन का
बुल के सूबेदार लशकर खां ने ह
मला करके नज़र मोहम्मद खां उज़ब
क को भगा दिया इस खबर के पहुंच
ने पर बादशाह ने खानखानां को लौट
आने का हुकम लिखा सो वह मुकाम
सहरद से लौट कर कातिक सुदी ८ को
बादशाह के पास हाज़िर हुआ

बादशाह ने दोस्ती का खत और
डेढ़ लाख रुपैये की सौग़ात तूरान के
मालिक इमामकुलीखां के पास हकी
म हमाम के बेटे हकीम हाज़िक़ के
हाथ भेजी ॥

झुझार सिंघ बुंदेले ने उरछा में
पहुंचकर लड़ाई की तैयारी की बा
दशाह ने महाबत खां खानखानां को
१०००० सवार २००० बंदूकची और
५०० बेलदार देकर उसके ऊपर भेजा
सैयद मुज़फ़्फ़र खां दिलावरखां राजा
रामदास नरवरी भगवानदास बुंदे
ला जैतसूर वग़ैरा को उसके साथ किया

جمعہ ۹- محرم کو لشکر خان صوبہدار
کابل نے پشاور سے حملہ کرکے -
نذر محمد خان اُوزبک والی بلخ کو
بھگا دیا اس خبر کے پہنچنے پر بادشاہ
نے خانخانان کو لوٹ آنے کا
حکم لکھا چنانچہ وہ مقام سرہند
سے مراجعت کرکے تاریخ ۱۶ ربیع الاول
کو بادشاہ کے حضور مین حاضر ہوا-
بادشاہ نے ڈیڑہ لاکھ روپیہ کی
سوغات معہ خط دوستی کے
امام قلیخان خان توران کے
پاس حکیم ہمام کے بیٹے حکیم
حاذق کے ساتھ روانہ کی-
جوجہار سنگھ بندیلہ نے اُرچھا
مین پہونچکر لڑائی کی تیاری کی-
بادشاہ نے مہابت خان خانخانان
کو دس ہزار سوار دو ہزار بندوقچی
اور پانسو بیلدار دیکر اُسکے اوپر
روانہ کیا سید مظفر خان دلاورخان
راجہ رامداس نروری بھگوان داس
بندیلہ جیت سور وغیرہ کو اُسکے ساتھ بھیجا

और मालवे के सूबेदार खानजहां लो
धी को लिखा कि उस सूबे के लशक
र और राजा बिट्ठलदास गोड़ अनी
राय सिंघ दलण माधो सिंघ कछवा
हे के बेटे शत्रु साल बलभद्र सैन शेखा
वत राजा गिरधर और राजा भारत
बुंदेले के साथ कि जिसके दादा से
जहांगीर बादशाह ने उरछे का राज
ज़ब्त करके बर सिंघ देव को देदिय
था। चंदेरी के रास्ते से उरछे के ऊपर
जावे इस फ़ौज में ८००० सवार २०००
पैदल और ५००० बेलदार थे कन्नो
ज के जागीरदार अबदुल्ला खां बहादु
र के ऊपर भी पूरब की तरफ़ से ७०००
सवार २००० पैदल और ५०० बेल
दार के साथ उरछे के ऊपर जाने का
हुक्म पहुंचा बहादर खां रुहेला रा
वसूर भुरटिया पहाड़ सिंघ बुंदेला
और किशन सिंघ भदोरिया और
२००० सवार आसिफ़ खां के इस फ़ौ
ज में तईनात हुए इसतरह कुल

اور مالوہ کے صوبہ دار خانجہان
لودہی کو حکم لکھا کہ اس صوبہ کے
لشکر اور راجہ بٹھیل داس گوڑ انی رای سنگھ
دلن مادہو سنگھ کچھواہہ کے بیٹے
سترو سال بلبھدرسین شیخاوت راجہ
گردہر اور راجہ بہارت بندیلہ کے
ساتھ کہ جس کے دادا سے جہانگیر
بادشاہ نے اورچھ کا راج ضبط کرکے
برسنگھ دیو کو دیدیا تہا چندیری
کے راستہ سے اورچھ کے اوپر جاوے
اس فوج میں ۸ہزار سوار دوہزار
پیدل اور پانسو بیلدار تھے قنوج
کے جاگیردار عبداللہ خان بہادر فیروز
جنگ کے نام بھی پورب کی طرف
سے ۷ ہزار سوار دوہزار پیدل
اور پانسو بیلداروں کے ساتھ اورچھ
کے اوپر جانے کا حکم پہنچا بہادرخان
روہیلہ راؤ سور بھرٹیہ پہاڑ سنگھ بندیلہ
کشن سنگھ بھدوریہ اور دوہزار سوار
آصف خان کے اس فوج میں
متعین ہوئے اس طرح کل

२७००० सबार ६०० पैदल बंदूकची और ५०० बेलदार ३ तरफ़ से उरछे के ऊपर रवाना हुवे ॥

नब खानखानां ग्वालियर से चलकर उरछे से १६ कोस और खानजहां लोधी नरवर से गांव कंडारतक जो उरछे से ३ कोस है पहुंचा और अबदुल्ला खांने कालपी से जाकर एरज का किला जोके १६ कोस उरछे से है फतेह कर लिया तो जुझार सिंघ ने तंग हो कर महाबत खां को लिखा कि मेरे कसूर माफ़ करादो मैं अबउमर भर दरगाह में हाज़िर रह कर बंदगी करूंगा महाबत खांने बादशाह को अरज़ी लिखी और दूसरे अमीरों और वज़ीरों ने भी सिफ़ारिश की तो बादशाह ने जुझारसिंघ के कसूर माफ़ कर दिये बहादुर खां और पहाड़ सिंघ बुंदेले को एरज फ़तह करने के इनाम में नक्कारे बख़्शे ॥

निज़ामुलमुल्क ने बादशाह को

۲۷ ہزار سوار چھ ہزار پیدل بندوقچی اور ڈیڑھ ہزار بیلدار تین طرف سے اُرچھ کے اوپر روانہ ہوے۔

دوشنبہ ۲۳ ربیع الاول کو بادشاہ آگرہ سے گوالیار کیطرف روانہ ہوے

جب خانخانان گوالیار سے روانہ ہوکر اُورچھ سے ۱۶ کوس اور جانجہان لودہی نرور سے موضع کنڈار تک جو اُرچھ سے تین کوس ہے پہونچا اور عبداللہ خاں نے کالپی سے جاکر ایرچ کا قلعہ جو اُرچھ سے ۱۶ کوس ہے فتح کرلیا تو جوجہار سنگھ نے عاجز آکر مہابت خان کو لکھا کہ میرا قصور معاف کرادو تو میں عمر بھر درگاہ میں حاضر رہکر بندگی کرونگا مہابت خان نے بادشاہ کو عرضی لکھی اور دوسرے امیرون و وزیرون نے بھی سفارش لکھی تو بادشاہ نے جوجہار سنگھ کی قصور معاف کردیئے بہادر خان اور پہاڑ سنگھ بندیلہ کو ایرچ فتح کرنیکی صلہ میں نقارے عنایت کیے

نظام الملک نے بادشاہ کو

हुक्म पहुंचने पर बालाघाट का मुल्क छोड़ दिया मगर बियर का किला उस के किलेदार सैयद कमालने नहीं छोड़ा तब खान ज़मां ने बुरहानपुरसे जाकर उसको निकाल दिया॥

साहूजी भोंसलेने निज़ामुलमुल्क के कहने से ६००० सवारों के साथ देवगढ़ के इलाके में आकर लूट मार की मगर दरियाखां नेशाज़ादे से जाकर उसको भगा दिया॥

बादशाह फ़ागुनबदी १० को गुवालियर से कूच करके फ़ागुनसुदी ३ को आगरे में पहुंचे इसी दिन महाबत खां जुझार सिंघ को गले में रुमाल डालकर हाज़िर लाया उसने १००० मोहरें और ३५००००० रुपै जुरमाने के दाखिल किये उसको ये भी हुक्म हुआ था के अपने तमाम हाथी हाज़िर करे इसलिये उसने ४० हाथी नज़र से गुज़राने बादशाह ने दीवानों को हुक्म दिया कि इस के पास जो मुल्क है उसने मनसब ४ हज़ारी

حکم پہونچنے پر بالا گھاٹ کا علاقہ چھوڑ دیا مگر اوسکے قلعہ دار سید کمال نے بیر کا قلعہ نہیں چھوڑا تب خان زمان برہان پور سے گیا اور سید کو قلعہ سے نکالکر قابض ہوا۔

ساہوجی بہونسلہ نے نظام الملک کے اشارہ سے چھہزار سواروں کے ساتھ دولت آباد کے ضلع میں آکر لوٹ مار کی لیکن دریاخاں روہیلہ نے شاہزادہ سے جاکر اُسکو بھگا دیا۔

۲۳ جمادی الثانی کو بادشاہ نے گوالیار سے کوچ کیا اور یکم رجب کو آگرہ میں پہونچے اُسی دن مہابت خان جوجہار سنگھ کو گلے میں رومال ڈالکر حاضر لایا اُس نے ایکہزار مہریں اور پندرہ لاکھ روپیہ جرمانہ کے داخل کئے اُسکو یہ بھی حکم ہوا تھا کہ اپنے تمام ہاتھی پیش کرے اسلئے چالیس ہاتھی نذر سے گزرانے بادشاہ نے دیوانوں کو حکم دیا کہ اسکے پاس جو ملک ہے اُسمیں

४ हज़ार सवार की तनख़्वाह के बराबरतो बहाल रक्खे और बाकी ख़ानजहां लोधी अबदुल्ला खां बहादुर सेयद मुज़फ़्फ़र खां और पहाड़ सिंघ बुंदेले की तलब में लिख देवें और जुझारसिंघ को हुकम हुआ कि २००० सवार और २००० पैदल बुंदेले से दकखन में बंदगी करे और जो मुलक पड़ोसियों का ज़ुलम से दबा लिया है उसको छोड़ दे और फिर कभी उसकी तरफ़ न देखे ॥

फागुन सुदी २ को दूसरा जलूसी सन शुरु हुआ पहिले बरस में बादशाह ने ४ लाख बीगे ज़मीन और १२० गांव खैरात किये थे

चैत बदी ३ को खेलूजी का भाई परसूजी तीन हज़ारी ज़ात और डेड़ हज़ारी सवार के मनसब से सरफ़राज़ हुआ ॥

## बरस तीसरा

भादों सुदी ३ सम्बत १६८६ से ॥
भादों सुदी २ सम्बत १६८७ तक

سے چارہزاری چارہزار سوار کی تنخواہ کے منصب کے برابر تو بحال رکھیں اور باقی خانجہان لودی عبداللہ خان بہادر سید مظفر خان اور پہاڑسنگھ بندیلہ کی تنخواہ میں لکھدیں اور جوجہارسنگھ کو حکم ہوا کہ دوہزار سوار اور دو ہزار پیدل قوم بندیلہ سے دکھن میں خدمت کرے اور جو ملک پڑوسیوں کا ظلم سے دبالیا ہے اُسکو چھوڑدے اور پھر کبھی اُسکی طرف نہ دیکھے

یکم رجب کو دوسرا جلوسی سنہ شروع ہوا پہلے سنہ میں بادشاہ نے چارلاکھ بیگہہ زمین اور ایکسوبیس گانو خیرات کئے تھے۔

۱۴ رجب کو کھیلوجی کا بھائی پرسوجی تین ہزاری ذات اور ڈیڑھ ہزار سواروں کے منصب سے سرفراز ہوا۔

## سال سویم

۳۹ سنہ ہجری

۱۳-اگست ۱۶۲۹ع سے ۲-اگست ۱۶۳۰ع تک

आसोज सुदी ६ को आसिफ़ खां तिरहुत के २ ब्राह्मणों को दरबार में हाज़िर लाया और अरज़ की के दोनों १० श्लोक जो १० कबियोंने नये बनाये हों और किसी को भी सुनाये नहीं एक दफ़े के सुन लेने से याद कर लेते हैं और फिर उनको उसी अनुक्रम से जैसे कि उन कबियोंने पढ़े हों सुना कर १० श्लोक और अपनी तरफ़ से उसी जाति और उसी आशय के कहदेते हैं बादशाह ने जो उनका इमतिहान लिया तो जैसा सुना था वैसा ही पाया और दोनों को ख़िलत और १०००) इनाम देकर रुख़सत किया ॥

कातिक बदी १२ सनीचर ज़ार की रात को ख़ानेजहां लोधी आगरे से भाग गया बादशाह ने उसके पीछे बहुत सी फ़ौज से ख़्वाजा अबुलहसन को भेजा उसमें राजपूत सरदार इतने थे ॥

राजा जैसिंघ राव सूर भुरटिया राजा

پانچوین صفر کو آصف خان وزیر نے ترہت کے دو برہمن درگاہ مین حاضر کرکے عرض کیا کہ دونو دس ہندی شعرون کو جو تازہ کہے گئے ہون اور کسی کے کانون تک نہ پہونچے ہون ایک دفعہ کے سننے سے یاد کر لیتے ہیں اور پہر انکو اسی ترتیب سے جیسے کہ اونکے مصنفون نے پڑہے ہون سناکر اس شعر اور اسی وزن اور مضمون کے فی البدیہ کہدیتے ہین بادشاہ نے جو اونکے اس کار شگرف کا امتحان لیا تو جیسا سنا تہا ویسا ہی پایا اسلئے دونونکو خلعت اور ایکہزار روپیہ انعام دیکر رخصت کیا ۔

۲۶ صفر کی رات کو خانجہان لودی آگرہ سے بہاگ گیا بادشاہ نے اُسکے تعاقب مین بہت سی فوج خواجہ ابوالحسن کے ساتھ بہیجی اس مین راجپوت سردار حسب ذیل تھے

۱- راجہ جے سنگھ ۲- راوُ سور بہرٹیہ

बिठ्ठलदास गौड़ राजा भारत बुंदे
ला माधो सिंघ हाडा भीम राठौड़ पृ
थ्वी राज राठोड़ राजा वीर नारायण
राय हरचंद पड़िहार ॥

सबसे पहिले सैयद मुज़फ़्फ़र खां
राजा बिठ्ठलदास गौड़ खिदमतपर
स्त खां पृथ्वी राज राठोड़ धावा करके
धोलपुर में उसके पास पहुंचे खिदम
तपरस्त खां तो मारा गया राजा बिठ्ठ
लदास गौड़ पृथ्वीराज राठोड़ राजा बि
ठ्ठलदास गौड़ का भाई गिरधरदास
और दूसरे लोग राजपूतों के प्याद
हो कर लड़ने को खड़े हुए दुश्म
नों को मारा और खुद भी ज़खमी हु
ए २ भाई राजा बिठ्ठलदास के और
१०० के करीब मुग़ल और रजपूत का
म आये ठीक लड़ाई के वक्त पृथ्वी
राज से जो पयादा था और खान जहां
से जो सवार था मुठभेड़ हो गई दोनों ब
रछों से लड़े और ज़खमी हुये आख़ी
र में खान ज़हां भाग गया राजा जयसिंघ

۴-راجہ بیٹھلداس گوڑ ۴ راجہ بہارت
بندیلہ ۵ مادہو سنگھ ہاڈا ۶ بہیم
راٹھوڑ ۷ پرتھی راج راٹھوڑ ۸ راجہ
بیرنراین ۹ راے ہرچند پڑہار-
سب سے پہلے سید مظفر خان راجہ
بٹھلداس گوڑ خدمت پرست خان
پرتھی راج راٹھوڑ یلغار کرکے دہولپور
میں اُس کے قریب پہونچے خدمت
پرست خان تو مارا گیا اور راجہ بٹھلداس
گوڑ پرتھی راج راٹھوڑ گردہرداس
برادر راجہ بٹھلداس اور دوسرے سپاہی
حسب قاعدہ راجپوتون کے پیادہ
ہوکر لڑنے کو کھڑے ہوے دشمن کو
مارا اور خود بھی زخمی ہوئے دو بہائی
راجہ بٹھلداس کے اور قریب ایکسو
کے مغل اور راجپوت کام آئے
عین لڑائی کے وقت پرتھی راج
سے جو پیادہ تہا اور خانجہان سے
جو سوار تہا مٹھبھیڑ ہوئی دونون
برچھون سے لڑے اور زخمی ہوے
آخر خان جہان بہاگ گیا راجہ جیسنگھ

और ख़ान ज़मां वग़ैरा उसके पीछे होगये ॥

बादशाह का हुकम ज़खमियों के नाम लोट आने का पहुंचा जब वे हाज़िर हुये तो राजा बिट्ठलदास को खिलत जड़ाऊ जमधर और धोप नक्कारा घोड़ा चांदी के सामान से और हाथी इनायत होकर ५०० सवार का इज़ाफ़ा हुआ जिस से अब कुल मनसब ३ हज़ारी २ हज़ार सवार का होगया ॥

पृथ्वी राज को खिलत हाथी घोड़ा ५०० ज़ात और ८०० सवार का इज़ाफ़ा हुआ ॥

रावत राव दखनी दखन के सूबेदार इरादत खां की अर्ज़ से २ हज़ारी ज़ात और १५०० सवार का मनसब दार हुआ ॥

खान जहां चम्बल नदी से उतर कर जुझार सिंह बुंदेले के मुलक में गया और उसके बड़े बेटे

اور خان زماں وغیرہ اُس کے تعاقب میں گئے*

بادشاہ کا حکم زخمیوں کے نام لوٹ آنے کا پہونچا اور جب وہ حاضر ہوئے تو راجہ بیٹھل داس کو خلعت جمدہر مرصع دھوپ مرصع نقارہ، گھوڑا روپہری زین کا اور ہاتھی عنایت ہوا منصب میں پانسو سوار بڑہے جس سے وہ تین ہزاری دو ہزار سوار کا منصب دار ہوگیا*

پرتھی راج راٹھوڑ کو خلعت ہاتھی گھوڑا پانصدی ذات اور آٹھسو سواروں کا اضافہ ہوا*

راوت دکھنی ارادت خان صوبہ دار دکھن کی عرض سے دو ہزاری ذات اور پندرہ سو سوارون کا منصب دار ہوگیا*

خان جہان چنبل ندی سے اُتر کر جوجہار سنگھ بندیلہ کے ملک میں گیا اُس کے بیٹے بکرماجیت

बिक्रमाजीत ने उस को गैर मशहूर र
स्तों से अपने मुल्क से निकाल दिया

मुल्ला फ़रीद दिल्लीवालेने कि
ताब ज़ेच शाहजहांनी तैयार की बाद
शाह ने उसका हिन्दी में तरजुमा
करा कर हुक्म दिया के इससे पंचां
ग निकाला करें इससे पहिले फार
सी पंचांग ज़ेच अलग बेगी से निका
ले जाते थे ॥

सं० १६८७

बादशाह खान जहां के बुंदेल
खंड गोंड़वाने और बाला घाट होक
र निज़ामुल मुल्क के पास पहुंचने की
खबर सुन कर पोस सुदी १० सोम
वार को आगरे से दखन की तरफ़ र
वाने हुये तब अमर सिंघ का मनस
ब २ हज़ारी ज़ात और १३०० सवारों
का होगया ॥

फागन बदी ६ को बादशाह ने
खानदेस में पहुंच कर याकूत हब
शी को १ लाख खीलजी को ५० हज़ा
र और उदाजीराम को ४० हज़ार रुपै

نے خانجہان کو غیر مشہور راستوں
میں ہوکر اپنے ملک سے نکال دیا
ملا فرید دہلوی نے کتاب زیچ
شاہجہانی تیار کی بادشاہ نے اسکا
ترجمہ ہندی میں کراکر اوس کے
جاری کرنے کا حکم دیا اس سے
پہلے کتاب زیچ الغ بیگی سے تقویم
نکالے جاتے تھے +

بادشاہ ۸- جمادی الاول -
دوشنبہ کو آگرہ سے دکھن کی
طرف روانہ ہوے کیونکہ خانجہان
بندیل کھنڈ گونڈوانہ اور بالاگہاٹ
میں ہوکر نظام الملک کے پاس
جا پہونچا تھا -

امرسنگھ راٹھوڑ کا منصب دو
ہزاری ذات اور تیرہ سو سوار وں کا
ہوگیا +

۲۰- جمادی الثانی کو بادشاہ
نے خاندیس میں پہونچکر یاقوت
حبشی کو ایک لاکھ کہیلو جی کو

(इ)नायत किये और मालूजी को ५ हज़ारी
(५)००० सवार का मनसब दिया॥
चेत बदी ६ को बादशाह ने आसे
(र) से ३ फ़ौजें ३ बड़े २ सरदारों की स
(र)दारी में निज़ामुल्मुल्क और ख़ान
(ज)हां लोधी के ऊपर रवाने कीं॥
पहली फ़ौज की अफ़सरी दख
(न) के सूबेदार इरादत ख़ां को दी गई
और उसमें हिन्दू अमीर इतने थे॥
(१) जुझार सिंह बुंदेला २ राव दूदा चंद्रा
(व)त ३ माधो सिंह कछवाहे का बेटा
(छ)त्रू साल ४ करमसी राठौड़ ५ राजा
(द्वा)रका दास कछवाहा ६ बल भद्र
(शे)ख़ावत ७ स्याम सिंह सीसोदिया ८
(रा)ना गिरधर ९ मलूक सिंह राय म
(नो)हर का पोता १० राम चंदर हाड़ा
(११) जगन नाथ राठौड़ १२ मुकंद दा
(स) जादों १३ उदय सिंह राठौड़ १४
(खे)लूजी १५ मनहा जी मालूजी भोंस
(ले) का भाई १६ परसूजी भोंसला कु
(ल) फ़ौज २० हज़ार सवार॥

پچاس ہزار اور اودا جی کو چالیس
ہزار روپیہ عنایت کیئے اور مالوجی کو
پانچہزاری ذات اور پانچہزار سوار کا منصب دیا
۶ رجب کو بادشاہ نے آسیر سے
تین فوجیں تین بڑے سرداروں کی
افسری میں نظام الملک اور خان جہان
لودی کے استیصال کو روانہ کیں +
اول فوج زیر حکم ارادت خان
ناظم صوبہ جات دکھن کے کیگئی اُسمین
ہندو امیر اتنے تھے - ۱- جوجہار سنگھ
بندیلہ ۲- راؤ دودا چندراوت ۳ مادھو سنگھ
کچھواہا کا بیٹا سترو سال ۴- کرمسی
راٹھوڑ ۵- راجہ دوارکا داس کچھواہہ
۶ بلبھدر سیکہاوت ۷ شام سنگھ -
سیسودیہ ۸ راجہ گردہر ۹ ملوک سنگھ
رائے منوہر کا پوتا ۱۰ رامچندر ہاڈا ۱۱-
جگناتھ راٹھوڑ ۱۲ مکند داس جادون
۱۳- اودے سنگھ راٹھوڑ ۱۴ کھیلوجی
۱۵ منہاجی برادر مالوجی بہوسلہ
۱۶- پرسوجی بہوسلہ کل فوج
بیس ہزار سوار تھے -

दूसरी फ़ौज महाराज गजसिं
घजी की अफ़सरी में थी, इसमें इ
तने हिन्दू मुसलमान अमीर थे ॥
१ नुसरतखां रुहेला २ बहादुरखां रु
हेला ३ राजा बिट्ठलदास ४ अनीरा
य बड़गूजर ५ राजा मनरूप कछवा
हा ६ जान निसार खां ७ रावल पूंजा
८ शरीफ़ ९ भीम राठोड़ १० राजा बी
रनरायन बड़गूजर ११ अहदाद मह
मंद १२ ख्वाजा जहां काकड़ १३ खंज
रखां १४ उसमान रुहेला बहादुरखां
का चचा १५ हबीब सूर १६ मीरफैजु
ल्ला १७ गोकलदास सीसोदिया १८
नूर मोहम्मद अरब १९ मोहम्मद शरी
फ़ हुसैनी २० करीम दाद बेग क़ाक़
शाल २१ जैराम अनीराय का बेटा
२२ नरहर दास झाला २३ रायहरचं
द पड़िहार २४ मोहम्मद शाह २५ ऊदा
जीराम २६ बेलाजी उसका भाई कुल
करीब १५००० सवार ॥

तीसरी फ़ौज शाइस्तखां की मा



دوسری فوج کی افسری
مہاراج گجسنگھ راٹھوڑ کو ملی اس میں
اتنے ہندو مسلمان سردار تھے +
۱ نصرت خان ۲ بہادر خان
روہیلہ ۳ راجہ بٹھل داس ۴ انی رائے
بڑگوجر ۵ راجہ منروپ کچھواہہ
۶ جان نثار خان ۷ راول پونجا
۸ شریف ۹ بھیم راٹھوڑ ۱۰ راجہ
بیرنراین بڑگوجر ۱۱ احداد محمد ۱۲
خواجہ جہان کاکڑ ۱۳ خنجر خان ۱۴
عثمان روہیلہ عم بہادر خان -
۱۵ حبیب سور ۱۶ میر فیض اللہ
۱۷ گوکلداس سیسودیہ ۱۸ نور محمد
عرب ۱۹ محمد شریف حسینی ۲۰
کریم داد بیگ قاقشال ۲۱ جے رام
ولد انی رائے ۲۲ نرہرداس -
جھالا ۲۳ رائے ہرچند پڑھیار ۲۴
محمد شاہ ۲۵ اوداجی رام ۲۶ بیلاجی
برادر اوداجی رام کل سوار پندرہ
ہزار کے قریب تھے +

تیسری فوج شائستہ خان

की
तहती में जिसमें हिन्दू इतने थे ॥
१ राजा जैसिंघ २ राव सूर सुरटया ३
पहाड़ सिंघ ४ माधो सिंघ राव रतन
का बेटा ५ राजा रोज़ अफ़्ज़ूं ६ चंदर
मणि बुंदेला ७ राजा किशन सिंघ भ
दौरिया ८ भगवान दास बुंदेला ९ नर
हर दास बुंदेला १० रावत राव ११ राना
जगत सिंघ का चचा अरजन सिंघ ५००
सवारों से कुल १५००० सवार ॥

बिदा होते वक़्त बादशाह ने सब
सरदारों को बज़्तसी नसीहतें कीं
जुझार सिंघ और ऊदा जी राम का
हज़ारी ज़ात और हज़ार २ सवार का
इज़ाफ़ा करके दोनों का पांच २ हज़ा
री ज़ात और पांच २ हज़ार सवारों का
मनसब कर दिया ॥

राजा जय सिंघ के मनसब में १०००
सवारों का इज़ाफ़ा ज़आ ॥

पृथ्वी राज राठौड़ असल और
इज़ाफ़े से २ हज़ारी २ हज़ार सवार का
मनसब दार होगया ॥

کی ماتحتی میں تھی اور اسمیں اسقدر ہندو
امیر تھے ۔
١ راجہ جے سنگھ ٢ راو سور سرٹیہ
٣ پہاڑ سنگھ ٤ مادہو سنگھ راو رتن
کا بیٹا ٥ راجہ روز افزون ٦ چندرمن
بندیلہ ٧ راجہ کشن سنگھ بہدوریہ
٨ بھگوانداس بندیلہ ٩ نرہرداس
بندیلہ ١٠ راوت راو ١١ رانا جگت سنگھ
کا چچا ارجن سنگھ پانسو سواروں سے
یہ بھی کل پندرہ ہزار سوار تھے
رخصت کے وقت بادشاہ
نے سب سرداروں کو بہت سی
نصیحتیں کی جوجہار سنگھ اور اوداجی رام
کا ہزاری ذات اور ہزار ہزار سوار
کا اضافہ کرکے دونوں کا منصب
پانچ پانچ ہزاری ذات اور پانچ پانچ
ہزار سواروں کا کردیا۔
راجہ جے سنگھ کے منصب میں
ایکہزار سواروں کا اضافہ ہوا جواب چار
ہزاری تین ہزار سوار کا ہوگیا*
پرتھی راج راٹھوڑ اصل و اضافہ
سے دوہزاری ذات و ایکہزار سوار کا منصب دار ہوگیا ۔

चैत सुदी १४ को राव रतन हाडा को मनसबदारों अहदियों तीर अंदाज़ों और बर्कंदाज़ों के १०००० सवारों के साथ तिलंगाने की तरफ़ इस ग़रज़ से रवाने किया, कि पायीन घाट के परगने बासम इलाके बराड़ में रह कर दुशमनों का रस्ता बंद कर देवे और मौक़ा देख कर तिलंगाने को भी फ़तेह करे इस लशकर में इतने अमीर थे ॥

वज़ीर खां राना भारत बुंदेला सफ़दर खां शहबाज़ खां अफ़ग़ान फरहान खां राजा रामदास नरवरी जैत सिंघ राठोड़ मुबारक खां न्याज़ी अबदुल रहमान रुहेला अमान बेग इन्द्र साल राव रतन का पोता काज़िम बेग शमसुद्दीन ईसरदास सीसोदिया उदय सिंघ ॥

बैसाख बदी १२ को राव दूदा असल और इजाफ़े से २ हज़ारी डेढ़ हज़ार सवार का मनसबदार होगया और

۱۲ شعبان کو بادشاہ نے راؤ رتن ہاڈا کو منصب داروں احدیوں تیراندازوں اور برقندازوں کے دس ہزار سواروں کے ساتھ تلنگانہ کی طرف اس غرض سے روانہ کیا کہ پائیں گھاٹ کے پرگنہ باسم علاقہ برار میں مقیم ہوکر دشمنوں کے راستہ بند کردے اور موقع دیکھکر تلنگانہ کو بھی فتح کرے اس لشکر میں اتنے امیر تھے

وزیر خان راجہ بھارت بندیلہ صفدر خان شہباز خان افغان فرحان خان راجہ رام داس نروری جیت سنگھ راٹھوڑ مبارک خان نیازی عبدالرحمن روہیلہ امان بیگ - اندرسال نبیرہ راؤ رتن کاظم بیگ شمس الدین ایسرداس سیسودیہ اودے سنگھ۔

۲۲ شعبان کو راؤ دودا - پانصدی ذات اور پانسو سوار کے اضافہ سے دو ہزاری ذات اور

उसको झंडा भी इनायत हुआ॥

रूपचंद गवालियरी का मनसब हजारी जात और ६०० सवारों का होगया॥

पहिले जेठ बदी ७ को बादशाह ने ख़्वाजा अबुल हसन को ८००० सवारों से नासिक त्रांम्बक और संगमेर फ़तेह करने को भेजा पृथ्वीराज राठोड़ उसके साथ गया॥

पहले जेठ सुदी १३ को राजा भारत बुंदेले के ५०० सवार इज़ाफ़ा हुए और अब उसका मनसब पूरा ३ हज़ारी ३ हज़ार सवार का होगया॥

जेठ बदी १४ को शाइस्ता खां की जगह अबदुल्ला खां बहादुर बाला घाट का अफ़सर मुकर्रर होकर गया और शाइस्ता खां आज़म खां की नाइत्तफ़ाक़ी से पीछा बुलाया गया॥

दूसरे जेठ बदी १० को जुझार सिंघ और पहाड़ सिंघ बुंदेले को राजा का खिताब मिला॥

ग़नीम बादशाही फ़ौज से लड़ा

ڈیڑھ ہزار سواروں کے منصب کو پہنچا اور نشان بھی عنایت ہوا۔

روپچند گوالیاری کا منصب ہزاری ذات اور ۶۰۰ سواروں کا ہوا

۲۱ رمضان بادشاہ نے خواجہ ابوالحسن کو آٹھ ہزار سواروں سے ناسک ترنبک فتح کرنیکے واسطے بھیجا اور پرتھی راج راٹھوڑ کو اُسکے ساتھ دیا۔

۱۱ شوال کو راجہ بھارت بندیلہ پانسو سواروں کے اضافہ سے تین ہزاری ذات اور تین ہزار سواروں کے منصب کو پہنچا +

۱۲ شوال کو عبداللہ خان بہادر بجائے شایستہ خاں کے بالاگھاٹ کی فوج کا افسر مقرر ہو کر گیا اور شایستہ خان اعظم خان کی نااتفاقی سے واپس بلایا گیا +

۲۳ شوال کو جوجہار سنگھ اور پہاڑ سنگھ بندیلہ کو راجگی کا خطاب عنایت ہوا +

غنیم بادشاہی فوج سے لڑا

और भागा उस दिन मुलतफितखां
राव दूदा शत्रु साल कछवाहा कर
मसी बलभद्र शेखावत और राजा गि
रधर वग़ैरा राजपूत सरदार चंदाव
लथे वो कौल याने बिचली फौज से २
कोस दूर जा पड़े वहां खानजहां बाग़ी
दरया खां बहलोल और मुकर्रब
खां १२००० सवारों से घात में खड़े थे
इनको ग़ाफ़िल देखकर टूट पड़े मग
र कुछ मुगल और राजपूत उनसे खू
ब लड़े मुगलों में से जाँसुपारखां का
बेटा इमामकुली और शुजाअतखां अ
रब का बेटा रहमानुल्ला और राजपूतों
में से माधो सिंघ कछवाहे का बेटा
और राजा मानसिंघ का भतीजा शत्रु
साल दो बेटों भीम सिंघ अनंद सिंघ
समेत और राव मालदेव के बेटे चंद्र
सैन राठोड़ का पोता करमसी बलभ
द्र शेखावत और राजा गिरधर और
जगन नाथ के शोदास का बेटा और ज
यमल मेड़तिया का पोता याबहादुरी

اور بہاگا اوسدن ملتفت خان
راؤ دودا ستروسال کچھواہہ کرم سی
بلبہدر شیخاوت اور راجہ گردہر وغیرہ
راجپوت سردار چنداول تھے وہ
قول یعنی درمیان کی فوج سے دو
کوس دور جا پڑے وہاں خانجہان
باغی دریاخان بہلول اور مقرب خان
بارہ ہزار سواروں سے گہات میں
کھڑے تھے اُنکو غافل دیکھکر ایکدم
سے ٹوٹ پڑے مگر کچھ مغل اور
راجپوت اُنسے خوب لڑے مغلوں میں سے
جانسپار خان کا بیٹا امام قلی اور شجاعت خان
عرب کا بیٹا رحمان اللہ راجپوتوں
میں مادہو سنگھ کچھواہہ کا بیٹا اور
راجہ مان سنگھ کا بھتیجا ستروسال
دو بیٹوں بھیم سنگھ اور انند سنگھ سے
اور راؤ مالدیو کے بیٹے چندرسین کا
پوتا کرم سی راٹھوڑ بلبہدر شیخاوت
اور راجہ گردہر اور جگناتھ جو کیشوداس
کا بیٹا اور چیتوڑ کے شجاع جےمل
راٹھوڑ میڑتیہ کا پوتا تہا بہادری

के साथ काम आये राजा गिरधर शे
खावत का पोता राज द्वारकादास
ज़खमी हुआ मुलतफ़ित खां राव दू
दाजी जो राव चांदा का पोता था और कु
छ और भी अमीर मैदान छोड़ भागे ॥

जो काम आये थे बादशाह ने उ
नको वतन जागीर में दिये और राजा
द्वारकादास का मनसब बढ़ाकर
डेढ़ हजारी हज़ार सवार का कर
दिया ॥

असाढ़ बदी १० को हिरदे रामक
छवाहे का मनसब असल और इ
जाफ़े से हजारी जात और ५०० सवा
र का होगया ॥

असाढ बदी १३ को संगूजी द
खनी ३ हज़ारी डेढ हज़ार सवार बा
बाजी २ हज़ारी ८०० सवार और
सत्रूसाल ६ सदी ३०० सवार के
मनसबदार हुये

साबाजी को हाथी इनायत हु
आ यह दखनी सिपाहियों में बड़ा बहादुर था

کے ساتھ کام آئے راجہ گردہر
شیخاوت کا پوتا راجہ دوارکاداس
زخمی ہوا ملتفت خاں راؤ دودا
جو راؤ چاندا کا پوتا تہا اور کچھ
اور بہی امیر میدان چھوڑ بہاگے۔

جو کام آئے تہے بادشاہ
نے اُنکے وارثوں کو منصب
اور اُنکے وطن جاگیر میں دیئے
اور راجہ دوارکا داس کا منصب
بڑھاکر ڈیڑہ ہزاری ہزار سوار کا کردیا۔

۲۳ ذیقعدہ کو ہردے رام کچھواہہ
کا منصب اصل اور اضافہ سے
ہزاری ذات اور پانسو سوار کا
ہوگیا +

۲۶ کو سنگوجی دکہنی تین ہزاری
ڈیڑہ ہزار سوار باباجی دو ہزاری آٹھ
سو، اور ستروسال چھ صدی تین سو
سوار کے منصب دار ہوئے
ساباجی کو ہاتھی عنایت ہوا
یہ دکہنی سپاہیوں میں بڑا
بہادر تہا +

सावन बदी १३ को बादसा
ह ने नसीरीखां को जो पहिले गजसिं
घ के साथ तईनात हआया ४ हज़ारी
३ हज़ार सवार का मनसब और खि
लत देकर राव रतन हाडा की जग
ह मुलक तिलंगाना लेने और कंधार
का किला फतेह करने के लिये भेजा
राजा गजसिंघ बमूजिब हुक्म
के दरगाह में हाज़िर हुआ ॥
जादोंराय दखनी अपने भाई
बेटों पोतों और रिशतेदारों के साथ
बादशाही दरगाह में २४ हज़ारी ज़ा
त और १५ हज़ार सवारों का मनस
बदार था और दखन में उमदा २ जा
गीरें पाकर बड़े आराम से रहता था
मगर इस वक्त अपने कदीमी मालि
क निज़ामुलमुलक के ऊपर बादशा
ही फोजों की चढाई यों से तकलीफ़
देख कर अपने सब भाई बंदों के सा
थ निज़ाम के पास चला गया निज़ा
म ने कुछ आदमियों को छुपा कर उसे

۲۶ ذی الحجہ کو بادشاہ نے
نصیری خان کو جو پہلے راجہ
گجسنگھ کے ساتھ تعینات ہوا
تہا چار ہزاری ذات اور تین
ہزار سوار کا منصب اور خلعت
دیکر راؤ رتن ہاڈا کی جگہہ ملک
تلنگانہ اور قندہار کا قلعہ فتح کرنے
کے واسطے بہیجا
راجہ گجسنگھ حسب الطلب
حاضر درگاہ ہوا
جادون رائے دکھنی معہ
اپنے بھائی بیٹون پوتون اور
رشتہ دارون کے بادشاہی
درگاہ میں ۲۴ ہزاری ذات اور
پندرہ ہزار سوارون کا منصب دا
تہا اور دکہن میں عمدہ عمدہ جاگیرین
پاکر بڑے آرام سے رہتا تہا مگر
اسوقت اپنے قدیمی آقا نظام الملک
کے اوپر بادشاہی فوجون کی چڑہائیو ان
سے تکلیف دیکھ کر اپنے سب
بھائی بندون سمیت اُس کے

बुलाया यह सब खान दान के सा
थ गया उन आदमियों से लड़ाई हुई
जादों राय अपने २ बेटे अचला राघो
राव और पोते यसवंत राव समेत
मारा गया उसका भाई जगदेव राय
बेटा बहादुर जी और उसकी औरत
गिरजा बाई ये सब दौलताबाद से भा
ग कर जालने के पास कि जहां उनका
वतन था और जादों राय ने किला ब
नाया था चले गये और बादशाह को
अरज़ी भेजी बादशाह ने आज़म खां
को लिखा कि इन को बादशाही बं
दों में दाखिल करलो और इन के वा
स्ते जो दरख्वास्त करोगे वह मंजूर होगी
आज़म खां ने याकूत खां और ऊदाजी
राम को उस हुकम की नकल देकर
जादों राय के मुख़तार कुतबी के
साथ भेज कर उन लोगों को बुलाया
जब वे हाज़िर आये तो याकूत खां ऊ
दाजी राम और खीलूजी भोंसला को
पेशवाई के लिये भेजा वह उन को ल

پاس چلا گیا نظام الملک نے کچھ
آدمیوں کو گہات میں لگا کر اوسے
بلایا وہ معہ تمام خاندان کے گیا
اُن آدمیون سے لڑائی ہوئی -
جادون رائے معہ اپنے دو بیٹے
اچلا راگہو رائے اور پوتے لبسونت راو
کے مارا گیا اور اُسکا بہائی جگدیو رائے
بیٹا بہادر جی اور اُسکی عورت گرجا بائی
دولت آباد سے بہاگ کر جالنہ کے
پاس کہ جہان اُسکا وطن تہا اور
جادو رائے نے قلعہ بنایا تہا
چلےگئے وہاں بادشاہ کو عرضی بہیجی
بادشاہ نے اعظم خان کو نام حکم لکہا کہ
انکو بادشاہی بندوں مین داخل کرلو
اور ان کے واسطے جو درخواست کروگے
وہ منظور ہوگی اعظم خان نے یاقوت
خان اور اوداجی رام کو اوس
حکم کی نقل دیکر جادو رائے کے مختار قطبی
کیساتھ بہیجکر ان لوگوں کو بلایا جب وہ
حاضر آئے تو یاقوت خان اوداجی رام
اور کہیلوجی بہوسلا کو پیشوائی کیلئے بہیجا

| | |
|---|---|
| शाकर में ले आये बादशाह ने आज़म रवां की दरख़्वास्त पर ४ हज़ारी ज़ात और ३ हज़ार सवार का मनसब जगदेवराय को और ३ हज़ारी डेढ़ हज़ार सवार का मनसब जो यसवन्त राव का था वह उसके भाई तिलंगराय को बख़्शा और उस का नाम जादों राय दादा के नाम पर रक्खे और अचला जी का मनसब २ हज़ारी हज़ार सवार का उसके बेटे बीठू जी को दिया और १ लाख ३० हज़ार रुपये मदद ख़र्च के इनायत करके दखन बराड़ और खानदेस में अच्छी २ जागीरें दीं और जादोराय की ज़मींदारी भी बहाल रखी कि जिससे इन की जमैय्यत बिखरने न पावे ॥ | جو انکو لشکر میں لے آئی بادشاہ نے اعظم خان کی درخواست پر چارہزاری ذات اور تین ہزار سوار کا منصب جگدیو رائے کو اور تین ہزاری ڈیڑھ ہزار سوار کا منصب جو لیسونت راؤ کا تہا اوسکے بہائی تلنگ راؤ کو بخشا اور اُسکا نام جادون رائے دادا کے نام پر رکہا اور اچلاجی کا منصب دوہزاری ہزار سوار کا اُسکے بیٹے بیٹھوجی کو دیا اور ایک لاکھ تیس ہزار روپیہ مدد خرچ کے دے کر۔ دکھن براڑ اور خاندیس میں اچہی اچہی جاگیرین عنایت کین اور جادون رائے کی زمینداری بہی بحال رکہی کہ جس سے اُنکی جمعیت بکھرنے نہ پاوے |
| जमाल रवां रुहेला ख़ानजहां लोधी के लिखने से बहुत से पठाण बंगश तिराह यूसुफ़ज़ई और तारीकी वग़ैरा जमा करके असाढ़ सुदी ४ को पिशोर के ऊपर चढ़ आया लेकिन पिशो | جمال خان روہیلہ خانجہان لودی کے لکھنے سے بہت سے پٹہان بنگش تراہ یوسف زئی اور تاریکی وغیرہ سے فراہم کرکے ۱۲ ماہ ذی الحجہ کو پیشاور کے اوپر |

र और कोहाटकेहाकिमसईदखां
नेउनकोशिकस्तदेकरभगादिया-

## बरसचौथा

सावंण सुदी ३ संम्बत १६८७
से
सावंण सुदी २ सम्बत् १६८८ तक

सावंण सुदी ६ को राव रतन
बासम से लौट कर हाज़िर हुआ-
सावन सुदी ९ को राजा का खिताब अ
नीराय को इनायत हुआ क्योंकि इ
सका बाप राजा हरनारायण मर ग
या था अनीराय का असली नाम अनू
प सिंघ था उस को अनीराय सिंघ दल
न की पदवी जहांगीर बादशाह ने दी
थी जब के उस ने शेर को बड़ी बहादुरी
से मारा था ॥

निज़ाम का नौकर रबीराय ना
रू जी तिलंगाने के लशकर में आकर
शामिल हुआ बादशाह ने नसीरी खां
की अरज़ से २ हज़ारी ज़ात हज़ार स
वार का मनसब दिया ॥

چڑہ آیا لیکن سعید خان حاکم بنگاش
وکوہاٹ نے انکو شکست دیکر بہگادیا

## سال چہارم

سنہ ۱۰۴۰ ہجری
یکم ماہ اگست سنہ ۱۶۳۰ عیسوی سے
۲۰- جولائی سنہ ۱۶۳۱ع تک

۴- صفر کو راؤ رتن باسم سے لوٹ
کر بادشاہ کے حضور میں حاضر ہوا
۷ ماہ مذکور کو راجہ کا خطاب انی رائے
کو عنایت ہوا کیونکہ اسکا باپ راجہ
ہرنراین مرگیا تہا انی رائے کا
اصلی نام انوپ سنگھ تہا اسکو انی رائے
سنگھ دلن کا خطاب جہانگیر بادشاہ
نے عنایت فرمایا تہا جب کہ اوس نے
ایک شیر کو بڑی بہادری سے مارا
تہا جو بادشاہ کے اوپر حملہ آور ہوا تہا-

ربی رائے نارو جی
کہ جو نظام کے معتبر نوکروں میں سے
تہا کچھ آدمیوں سے تلنگانہ کے
لشکر میں داخل ہوا بادشاہ نے
نصیری خان کی سفارش سے اسکو دو ہزاری ذات اور ہزار سوار کا منصب دیا

आसोजसुदी ६ को बादशाहने राजागजसिंघको खास खिलतखासा तलवार जड़ाऊ इनायत करके लशकरमें भेजा ॥

आज़मखां मुज़फ़्फ़रखां की फ़ौजकाहिरावलथा मगर वे पेटसूजजाने से घोड़े पर सवार न्ही होसकता था बादशाह ने उसके इलाज के लिये जगजीवन जर्राह को भेजा और हुकम लिखा के आराम होने पर दरगाह में हाज़िर होवे उसकी जगह राजा जयसिंघ मुज़फ़्फ़र की फ़ौज का हिरावल हुआ ॥

जो कि अब बरसात का मौसिम गुज़र गया था इसलिये ख़्वाजा अबुलहसन ने क़िले अलंगके पास से नासिक के ऊपर हल्ला करके निज़ामुल्मुल्क के महलदार और दादा पंडित को शिकस्त दी बगलाने का राजा भेरजी भी बगलाने से ४०० सवारों से लशकर के साथ होगया था ॥

ربیع الاول کو بادشاہ نے راجہ گج سنگھ کو خلعت فاخرہ شمشیر خاصہ اور یراق مرصع عنایت کرکے لشکر مین بہیجدیا ✦

منظفر خان اعظم خان کی فوج کا ہراول تہا مگر بسبب ورم ناف کے سوار نہیں ہوسکتا تہا بادشاہ نے جگ جیون جراح کو اُس کے معالجہ کے لئے بہیجا اور حکم دیا کہ بعد تخفیف درد کے درگاہ میں حاضر ہوا اور منظفر خاں کی جگہ راجہ جیسنگھ اعظم خاں کی فوج کا ہراول ہوا ✦

جوکہ اب برسات کا موسم گزر گیا تہا اسلئے خواجہ ابوالحسن نے حوالی قلعہ النگ سے ناسک کے اوپر چڑہائی کرکے نظام الملک کے محلدار اور دادا پنڈت کو شکست دی بگلانہ کا راجہ بہرجی بہی بگلانہ سے معہ چار سو سواروں کے ہمراہ لشکر گیا تہا ✦

आसोज सुदी ११ को बादशा
ह ने यमीनुद्दौला आसिफ़ खां को
कुल मुख़्तार फ़ौज बालाघाट का
करके भेजा उस के साथ राव रतन
हाडा की भी तईनाती हुई॥

मंगसर बदि ११ को मनरूप के
मर जाने से उस का बेटा गोपाल सिं
घ ८ सदी जात और ४०० सवारों का
मनसबदार हुआ॥

पोस के महीने में उड़ीसे के सू
बेदार बाकर खां नज्म सानी ने मन
सूर गढ़ का किला जो तिलंगाने औ
र उड़ीसे की सरहद पर था कुतब
शाह के आदमीयों से छीन लिया॥

मुकाम राजोरी के क़रीब ख़ा
न जहां बाग़ी से जिसका असली ना
म पीरा था लड़ाई हुई उस दिन बाद
शाही फ़ौज का हिरावल राजा जयसिं
घ था राजा बिठ्ठलदास अनूपसिंघ
और दूसरे राजपूत अमीर उसके साथ
थे पीरा हारा और भामा दूसरे लोग तो

۹ ربیع الاول کو بادشاہ
نے یمین الدولہ آصف خان
کو مختار کل لشکر بالاگھاٹ کا مقرر
کرکے بہیجا اوس کے ساتھ
راو رتن ہاڈا کی بہی تعیناتی ہوئی

۲۴ ربیع الثانی کو منروپ
کے مرجانے پر اوس کے بیٹے
گوپال سنگھ کو آٹھ صدی ذات
اور چارسو سواروں کا منصب مرحمت ہوا

ماہ جمادی الاول میں -
باقر خان نجم ثانی صوبہ دار اوڑیسہ
نے قلعہ منصورگڈھ کو جو تلنگانہ اور
اوڑیسہ کی سرحد میں واقع تہا -
قطب شاہ کے آدمیوں سے
فتح کرلیا +

مقام راجوری کے قریب خانجہان
باغی سے کہ جسکا اصلی نام پیرا
تہا لڑائی ہوئی اس دن بادشاہی
فوج کا ہراول راجہ جے سنگھ تہا
راجہ بیٹھل داس کوڑ انوپ سنگھ اور
دوسرے راجپوت سردار اوس کے ساتھ تہے

लूट में पड़गये मगर बहादुर खां रुहेला
अहतमास खां और नरहर दास झा
ला पीराके पीछे पहाड़ पर चढ़गये व
हां पीरा पलटकर लड़ा नरहर दास
प्यादा होकर बहादुरी के साथ काम
आया राजा पहाड़ सिंघ बुंदेले ने दह
ने हाथ की फ़ौज से पडुंचकर बहा
दुर खां की मदद की इसझगड़े में उ
सके कई आदमी मारेगये राजा जय
सिंघ राजा बिठ्ठलदास राजा अनूप
सिंघ वगैरा भी जो पहाड़ के दूसरी
तरफ़ थे एक वक्त में जापहुंचे रायसू
रभुरटिया और चंद्रमणि बुंदेला भी इस
लड़ाई में हाज़िर थे पीरा भागा उसका
भतीजा बहादुर मारागया पहिले उ
सके १ गोली लगी फिर राजा पहाड़सिं
घ बुंदेले का नोकर परसराम उसके
ऊपर गया बहादुर ने उससे लिपटक
र जमधर मारा वो रान पर लगा मगर प
रसराम ने गले पर जमधर बहादुर को
मारडाला और उसका सिर घोड़ा ढाल

پیرا نے شکست کھائی اور راہ فرار
اختیار کی اوسوقت اور تو سب لوگ
لوٹ میں پڑگئے لیکن بہادر خان
روہیلہ اہتمام خان اور نرہر داس جہالا
اُنکی تعاقب میں روانہ ہوے اور پہاڑ کے
اوپر جاچڑھے وہاں پیرا پلٹ کر لڑا جب
قافیہ تنگ ہوا تو یہ لوگ گھوڑوں سے
اُتر کر پیدل ہوگئے نرہرداس معہ کچھ
راجپوتوں کے بہادری سے جنگ
کرکے کام آیا راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ نے دہنے
ہاتھ کی فوج سے آکر بہادر خاں کی مدد
لی اس چپقلش میں اُس کے کئی آدمی مارے گئے
راجہ جیسنگھ بیٹھلداس راجہ انوپ سنگھ وغیرہ بھی
جو پہاڑ کی دوسری طرف تھے عین وقت پر جا پہنچے
راؤ سور بہرٹیا اور چندرمن بندیلہ بھی اُس لڑائی میں
موجود تھے پیرا بھاگا اور اُسکا بھتیجہ بہادر
خان مارا گیا پہلی اُسکی ایک گولی لگی پھر راجہ پہاڑ سنگھ
بندیلہ کا نوکر پرسرام اُسکے اوپر گیا تھا بہادر لپٹ کر اُسکی
جمدھر مارا وہ ران پر لگا مگر پرسرام نے گلے پر
جمدھر مار کر بہادر کو مار ڈالا اور اُس
کا سر معہ گھوڑے ڈھال

अंगूठी और २ तलवारों के समेत
जो १ घोड़े पर थी और दूसरी कमर
में राजा पहाड़ सिंघ को लाकर दि
या पहाड़ सिंघ आज़म खां के पास
ले गया उसने वह घोड़ा और हथिया
र परसराम को बख़्श दिये ॥

जादों राये का दामाद साहूजी
भोसला जो निज़ाम के हिन्दू लशक
र का सरदार था जादों राये के मारे जा
ने पर निज़ाम की नोकरी छोड़ कर
परगने पूने और जालने में जा बैठा
था अब उसने बादशाही लशकर में
हाज़िर होने के वास्ते आज़म खां से
अहद नामा मांगा आज़म खां ने बा
दशाह से मंजूरी मंगवा कर उस को
बुलवाया वह २००० सवारों से आ
कर लशकर के शामिल हुवा बाद
शाह ने आज़म खां की अर्ज़ से सा
हूजी को खिलत ५ हज़ारी ज़ात और
५ हज़ारी का मनसब जड़ाऊ जमध
र नक्कारा निशान हाथी घोड़ा और २

انگوٹھی اور دو تلواروں کے
جو ایک تو گھوڑے پر تھی اور
دوسری کمر میں راجہ پہاڑسنگھ کو
لاکر دیا پہاڑسنگھ اعظم خان
کے پاس لے گیا اوسنے وہ گھوڑا
اور ہتھیار پرسرام کو بخش دیا۔

جادون راے کا داماد ساہوجی
جو نظام کے ہندو لشکر کا سردار
تھا جادون راے کے مارے جانے
پر نظام کی نوکری چھوڑکر پرگنہ
پونہ اور جالنہ مین جا بیٹھا
تھا اب اوس نے بادشاہی لشکر
میں حاضر ہونے کے واسطے
اعظم خان سے عہدنامہ طلب کیا
اعظم خان نے بادشاہ سے منظوری
منگواکر اسکو بلوایا وہ دوہزار سواروں
سے آکر لشکر کے شامل ہوا بادشاہ نے
اعظم خان کی عرض سے ساہوجی
کو خلعت ۵ ہزاری ذات اور
۵ ہزار سوار کا منصب جڑاو جمدھر
نقارہ نشان ہاتھی گھوڑا اور دو لاکھ

लाख रुपया इनाम दिया उसके
भतीजे मेनाजी को ३ हज़ारी ज़ात
डेढ़ हज़ार सवार का मनसब खिल
त जड़ाऊ जमधर घोड़ा और साहू
जी के बेटे सामा जी को खिलत २
हज़ारी ज़ात हज़ार सवार का मनस
ब और घोड़ा बख़्शा इसी तरह हर
बीराय मालूजी हापाजी को उन
के लायक मनसब देकर ८००००
रुपये इनायत किये

पीरा के इशारे से दरया खां
रुहेला १००० सवारों से बादशाही
मुलक लूटने को रवाना हुआ अ
बदुल्ला खां बहादुर उसके ऊपर
गया आलमचंद और गोबिंद राय
पड़ीहार उसके साथ थे ॥

आज़म खांने दूर के डेरे से
साहू जी भोंसला को जुनेर और संग
मेर के बंदोबसत पर भेजा ॥

इस तरह निज़ाम के मुलक में
बादशाही फौजों का जमाव हो जाने

روپیہ انعام مین دیا اوس کے
بھتیجے میناجی کو تین ہزاری ذات
اور ڈیڑھ ہزار سوار کا منصب۔
خلعت جڑاؤ جمدھر اور گھوڑا اور
ساہوجی کے بیٹے ساماجی کو خلعت
دوہزاری ذات ہزار سوار کا منصب
اور گھوڑا بخشا اسی طرح ربی رائے
مالوجی اور ہاپاجی کو علی قدر مراتب
عطاے مناصب سے سرفراز کرکے
اسی ہزار روپیہ عنایت کیے۔

پیرا کے اشارہ سے دریا خان
روہیلہ ایکہزار سواروں کے ساتھ
بادشاہی ملک لوٹنے کو روانہ ہوا۔
عبداللہ خان بہادر اوسکے اوپر گیا
عالم چند اور گوبند رائے پڑہار اوسکے
ساتھہ تعیناتی میں تھے۔

اعظم خان نے منزل دور سے
ساہوجی بہوسلہ کو واسطے بندوبست
ضلع جونیر اور سنگمیر کے بہیجا+

اسطرح نظام الملک کے علاقہ
میں بادشاہی فوجوں کا تسلط ہوجانے

से पीरा वहां रहने की मजाल न देख
कर मालवे की तरफ़ रवाना ऊआ बा
दशाह ने पोस बदी ११ को बुरहानपुर से
सैयद मुज़फ़्फ़र खां को उसके पी
छे भेजा राजा द्वारका दास राव रतन
हाडा का बेटा माधो सिंघ सियाम
सिंघ और ऊग्रसेन उसके साथ गये॥

पीरा उज्जैन औ सिरोंज होकर
बुंदेलों के मुलक में कालपी तक
पऊंचा अबदुल्ला खां और मुज़फ़्फ़
र खां उस के पीछे थे पहिले ये पीरा
जब आगरे से भागा था तो जुझार सिं
घ के बेटे बिक्रमाजीत ने उसको अ
पने मुलक में होकर रस्ता दे दियाथा
जिससे वह दकखन पऊंच गयाथा
और इस सबब से जुझार सिंघ के ऊ
पर बादशाह की बड़ी ख़फ़गी ऊई
थी अब जो पीरा फिर इधर आया तो
बिक्रमाजीत ने वह पिछली शरमिं
दगी मिटाने के लिये मंगसिर बदी
३ को उसका पीछा किया और उस

پیرا وہان رہنے کی مجال نہ دیکھکر مالوہ
کی طرف روانہ ہوا بادشاہ نے
۲۴ جمادی الاول کو برہان پور سے
مظفر خان بارہہ راجہ دوارکا داس
مادہو سنگھ ولد راو رتن سیام سنگھ
اور اوگرسین کو اوس کے
تعاقب مین بہیجا ۞

پیرا اوجین اور سرونج
ہوکر بندیلون کے ملک مین کالپی
تک پہونچا عبد اللہ خان بہادر اور
مظفر خان اوس کے تعاقب میں تہے
پہلے جب یہ آگرہ سے بہاگا تہا تو
جوجہار سنگھ کے بیٹے بکرماجیت نے
اوسکو اپنے ملک میں ہوکر رستہ دیدیا
تہا جس سے یہ دکن میں پہونچ گیا
تہا اور اس سبب سے جوجہار سنگھ
کے اوپر بادشاہ کی بڑی خفگی ہوئی
تہی اب جو پیرا پہر ادہر آیا تو بکرماجیت
نے پچھلی شرمندگی مٹانے کے لئے
۱۷ ربیع الثانی کو اوس کا پیچھا
کیا اور اوس نی چنداول یعنی

के चंदावल याने पिछले लशकर
केसरदार दरयाखां को जा मिलाया
दरयाखां को तो बड़ा ग़रूर था के ह
कब बुंदेलों को ख्याल में लाता था
फ़ौरन बाग मोड़ कर बिक्रमा जीत के
ऊपर आया मगर १ गोली ने उसका
काम तमाम कर दिया और उसका
बेटा भी उसी जगह मारा गया बुंदे
ले दरया को पीरा समझ कर सब
उसी के ऊपर टूट पड़े और पीरा फ़ु
रसत पाकर निकल गया बिक्र
माजीत ने दरया का सिर बादशा
ह के पास भेजा इस लड़ाई में ४००
पठान और २०० बुंदेले मारे गये बा
दशाह ने बिक्रमाजीत को जुगरा
ज पदवी देकर एक दम से हज़ारी
ज़ात और १००० सवारों का इज़ाफ़ा
कर दिया जिससे उसका मनस
ब दूना होगा और सुन्दर ब्राह्मण
क बिराये के हाथ उसके वास्ते खि
लत तलवार जड़ाऊ झंडा और न

پچھلی فوج کے افسر دریاخان
کو جا لیا دریا خان کو تو بڑا غرور
تہا وہ کب بندیلوں کو
خیال میں لاتا تہا فوراً عطف
عنان کرکے بکرماجیت کے
اوپر آیا لیکن ایک گولی نے
اوسکا کام تمام کر دیا جو بکرماجیت
کی طرف سے چلے تھے اور
اوسکا بیٹا بہی اوسی جگہہ مارا گیا۔
بندیلے دریا کو پیرا سمجھکر سب اوسی
کے اوپر ٹوٹ پڑے اور پیرا
فرصت پاکر نکل گیا بکرماجیت
نے دریا کا سر بادشاہ کے حضور
میں روانہ کیا اس لڑائی میں
چارسو پٹہان اور دوسو بندیلے مارگئے
بادشاہ نے بکرماجیت کو جگ راج
کا خطاب دے کر ایک دم سے
ہزاری ذات اور ہزار سواروں کا
اضافہ اوس کے منصب مین کر دیا
جس سے اوسکا منصب دوچند ہوگیا
اور سندر برہمن کب رائے کے ہاتھ اسکے واسطے

क़ारा भेजा ॥

आज़म खां ने घाटी से उत्तर कर सुलतफ़ित खां और मानूजी भोसला को धारूर का किला फ़तेह करने को भेजा और फिर खाई के पास पहुंच कर राजा जुझार सिंघ के बुंदेलों को हाथियों के पकड़ने के वास्ते भेजा जो खाई में दिखाई दिये थे ये वहां पहुंच कर ४ हाथी घोड़े ऊंट- बैल और बहुत सा असबाब लूट लाये इसी तरह दूसरी दफ़े भी कुछ हाथी और बहुत से घोड़े इन लोगों के हाथ लगे आज़म खां ने हाथी तो बादशाही सरकार के वास्ते रख लिये और घोड़े वग़ैरा उनही के पास रहने दिये ॥

माहबादी १० को आज़म खां ने धारूर का किला निज़ाम के आदमियों से फ़तह किया इसके इनाम में राजा जुझार सिंघ को भी घोड़ा और खिलत मिला ॥

आदिल खां ने बादशाह के इशारे

خلعت جڑاؤ تلوار نشان اور نقارہ روانہ فرمایا-

اعظم خان نے گھاٹ سے اُتر کر ملتفت خان اور مالوجی بھوسلا کو دہارور کا قلعہ فتح کرنے کے واسطے روانہ کیا اور پھر خود بھی خندق کے قریب پہونچکر راجہ جوجہار سنگھ کے بندیلوں کو ہاتھیوں کے پکڑنے کے واسطے بھیجا جو خندق میں دکھائی دئے تھے یہ وہان پہنچکر بہادری سے چار ہاتھی- گھوڑے اونٹ بیل و رہبت سا اسباب لوٹ لائے اسی طرح دوسری دفعہ بھی کچھ ہاتھی اور بہت سے گھوڑے ان لوگون کے ہاتھ لگے اعظم خان نے ہاتھی تو بادشاہی سرکار کے واسطے رکھلئے اور گھوڑے وغیرہ اُنہیں کے پاس رہنے دئے +

۲۳ جمادی الثانی کو اعظم خان نے دہارور کا قلعہ نظام الملک کے آدمیون سے فتح کیا جسکے صلہ میں راجہ جوجہار سنگھ کو بھی گھوڑا اور خلعت ملا-

عادل خان نے بادشاہ کی

से अपने सेना पति रण दूला को निज़ाम के मुल्कों में जो उसकी सरहद्द से मिले हुये थे अमल करने के वास्ते भेजा और वह आकर आज़मखां से मिला॥

माह बदी ५ को गांव नौसीइला के रीवा में बादशाही फौज का पीरा से मुकाबिला हुआ उसमें राजा द्वारका दास बड़ी मरदुमी से काम आया पीरा के हाथियों में से २० बांधों के राजा अमर सिंघ के हाथ लगे और उसने बादशाह के पास भेज दिये॥

माह सुदी २ को बादशाह ने द्वारकादास के बेटे नरसिंघदास को पंच सदी ज़ात और ४०० सवार का मनसब दिया॥

इसी दिन मुज़फ़्फ़र खांने कालंजर के इलाके में सिंध नदी के किनारे पर पीरा को जालिया माधोसिंघ हिरावल था मुकाबिले के व़क्त पीरा माधो सिंघ के बरछे से मारा गया॥

ست سے اپنے سپہ سالار رن دولہ کو نظام الملک کے علاقون مین جو اسکی سرحد سے ملے ہوئے تھے قبضہ کرنے کے واسطے بھیجا اور وہ آکر اعظم خان سے ملا ✤

۲۰ جمادی الثانی کو موضع نیمی علاقہ ریواں مین بادشاہی فوج کا پیرا سے مقابلہ ہوا اسمین راجہ دوارکاداس جنگ مردانہ کرکے کام آیا پیرا کے ہاتھیون مین سے بیس ہاتھی باندہوں گڑھ کے راجہ امر سنگھ کے ہاتھ لگے جو اُسنے بادشاہ کے پاس بھیجدیے ✤

یکم رجب کو بادشاہ نے دوارکاداس کے بیٹے نرسنگھداس کو پانچ صدی ذات اور چار سو سوار کا منصب عنایت کیا ✤

اسی دن مظفر خاں نے ضلع کالنجر مین سندہ ندی کے کنارہ پر پیرا کو جا دبایا لڑائی ہوئی اسمیں پیرا مادہو سنگھ ہاڈا کے برچھے سے مارا گیا جو مظفر خاں کی فوج کا ہراول تھا ✤

نوٹ) سلہ طالبا کلیم این رباعی در افسردن شعلہ حیات دریا و فرو نشستن حباب زندگانی پیرا منظوم ساختہ بمسامع لبتا پیر جامعہ رسانید (بادشاہ نامہ) این فردہ فتح از لبے ہم زیبا بود این کیفت و بالاجہ نشاط افزا بود آزرفتن دریا سر پیرا ہم رفت گر باسر او حباب این دریا بود ✤

निज़ाम ने रणदूला को शोला पुर का किला देना करके बादशाही फ़ौज से लड़ने को तैयार किया और वह आज़म खां का साथ छोड़ कर चला गया आज़म खां बादशाह से और फ़ौज मंगा कर परेंडे को रवाना हुआ॥

आज़म खां जब परेंडे के पास पहुंचा तो १ कोस से राजा जयसिंघ को आगे भेजा उसने गांव तलीते को जो किले परेंडे के बाईं तरफ़ था फ़तह करके लूट लिया इस गांव के गिर्द ३ गज़ गहरी खाई ५ गज़ ऊंची और ३ गज़ चौड़ी दीवार थी राजा हाथी से दीवार तुड़ा कर अंदर दाख़िल हुआ और बंदूकची जो पहरा देते थे भाग कर खाई में जा छुपे पीछे से आज़म खां भी आ पहुंचा राजा जयसिंघ और अहतमाम खां ने सलामत कूचे बनाकर परेंडे को घेर लिया नाज चारा न मिलने और मुकाबिले के वास्ते निज़ाम शाह और आदिल

نظام الملک نے رن دولہ کو شولاپور کا قلعہ دینا کرکے بادشاہی فوج سے لڑنے کے واسطے مستعد کیا اور وہ اعظم خان کا ساتھ چھوڑ کر چلا گیا اعظم خان بادشاہ کے پاس سے اور زیادہ فوج منگوا کر پرینڈہ کی طرف روانہ ہوا۔

اعظم خان جب پرینڈہ کے پاس پہونچا تو ایک کوس سے راجہ جیسنگھ کو آگے بھیجا اوس نے گاؤں تلیتہ کو جو پرینڈہ کے بائین طرف ایک کوس پر تھا فتح کرکے لوٹ لیا اس گاؤں کے گرد تین گز گہری کھائی پانچ گز اونچی اور تین گز چوڑی دیوار تھی راجہ ہاتھی سے دیوار میں رخنہ ڈلوا کر اندر گیا بندوقچی جو پہرا دیتے تھے بھاگ کر کھائی مین جا چھپے پیچھے سے اعظم خان بھی آپہونچا راجہ جے سنگھ اور اہتمام خان میر آتش نے سلامت کوچہ بنا کر قلعہ کا محاصرہ کیا مگر غلّہ اور چارہ کے نہ ملنے اور نظام شاہ و عادل شاہ کے ایک

शाह के एकहोजाने से आज़मखां घेराछोड़कर धारूरकीतरफ़रवानेहुआ दुश्मन नेघाटपानसीसेउतरकर रस्ता रोक लिया आज़मखांने राजाजयसिंघ राजा पहाड़सिंघ राजा अनूपसिंघऔरदूसरे राजपूतोंको जोहिरोल थे मुकाबिलेके वास्ते भेजा फिर मुलतफ़ितखां को भी चंदोलसे २००० सवारों के साथइनकी मदद पररवाना कियाइन्होंने लड़करग़नीमको भगा दिया॥

फागणशुदी १४ कोईरानका वकील बुरहानपुरमें बादशाह के पास पहुंचा॥

इसवक्त गुजरात औरदक्खन मेंबहुतसख़्त काल था जिससेबहुत दिनों तक कुत्तों का मास बकरी के मासके नामसे औरहड्डियों का आटा आटेकेसाथ बिकतारहा बादशाह ने जगह २ लंगर जारी करके हरेक सोमवारको ५०००) रुपै खैरात करने

ہو جانے سے اعظم خان محاصرہ چھوڑ کر دہارور کی طرف روانہ ہوا تب تو غنیم نے بانسی گہاٹ سے اُتر کر رستہ روک لیا اعظم خاں نے راجہ جے سنگھ راجہ پہاڑ سنگھ راجہ انوپ سنگھ اور دوسرے راجپوت سرداروں کو جو کہ مقدمتہ الجیش تھے اونکے مقابلہ کے واسطے بہیجا پھر ملتفت خان کو بہی صف چنداول سے دو ہزار سواروں کے ساتھ اُنکی مدد کے لئے روانہ کیا انہوں نے لڑکر غنیم کو بہگا دیا ٭

۱۲۔ شعبان کو ایران کا ایلچی برہان پور مین بادشاہ کے پاس پہونچا ٭

اسوقت گجرات اور دکہن مین بہت سخت کال پڑ رہا تہا جس سے بہت دنون تک کتّوں کا گوشت بکرے کے گوشت کے نام سے اور ہڈیوں کا آٹا آٹے کے ساتھ بکتا تہا بادشاہ نے جگہہ جگہہ لنگر خانے جاری کرکے ہر ایک سوموار کو

का हुक्म दिया और ५०००० अहम
दा बाद के गरीबों के वास्ते नाज खरी
दने को दिये और ७० लाख रुपै खाल
से की आमदनी २ करोड़ में से रैय्यत
को माफ़ किये इस वक़्त कुल बादशा
ही मुलकों की आमदनी २२ किरोड़
रुपै की थी और जो कमी हासिल की
असीरों और सरदारों की जागीरों में
से रैय्यत के वास्ते हुई वह इस के सि
वाय थी ॥

चेत बदी ४ को नेरोज़ के दिन ३
लाख की सोग़ात ईरान के बादशाह की
३ लाख की पेशकश आसिफ खां व
ज़ीर की १४ लाख की कुतुबुल्मुलक
की १ लाख की शेख मुहीउद्दीन की (जो
पेश कश लेने के वास्ते कुतुबुल्मुलक
के पास गया था और कुतुबुल्मुलक
ने ४ लाख रुपै उसको दिये थे) २ ला
ख की पेशकश चांदा के ज़िमींदार रखि
या की बादशाह की नज़र से गुज़री ॥

इसी दिन राव रतन हाडा के

پانچ ہزار روپیہ خیرات کرنے کا حکم دیا
اور پچاس ہزار روپیہ احمد آباد کے
غریبوں کے واسطے غلہ خریدنے
کو دیئے اور خالصہ کی آمدنی دو کروڑ
روپیہ مین سے ستر لاکھ روپیہ رعایا
کو معاف کیا اسوقت کل بادشاہی
ملک کی آمدنی بتیس کروڑ روپیہ کی
تھی اور جو تخفیف حاصل کی امیرون
اور سردارون کی جاگیرات مین سے
رعیت کے واسطے کیگئی تھی وہ اسکے
سوائے تھی

۱۷ شعبان کو نوروز کے دن تین
لاکھ کی سوغات شاہ ایران کی اور
تین لاکھ کی پیشکش آصف خاں کی
چودہ لاکھ کی قطب الملک کی
اور ایک لاکھ کی شیخ محی الدین کی
(جو پیشکش لینے کے واسطے گولکنڈہ
گیا تھا اور قطب الملک نے چار
لاکھ روپیہ اوسکو دئے تھے) بادشاہ
عالیجاہ کی نظر سے گزرے اور دو
لاکھ روپیہ کی پیشکش کیا زمیندار
چاندا کی بہی تھی۔

बेटे माधो सिंघ को मनसब पांच सदीज़ात और २०० सवारों का इज़ाफ़ा हो कर २ हज़ारी २००० सवार का होगया और उसको झंडा भी मिला ॥

चेत सुदी ७ को मेरव संक्रांत के दिन २० लाख रुपे की पेशकश बेगमों शाहज़ादों और अमीरों की पेश हुई ॥

बादशाह ने दयानंत राये गुजराती को कि जो नागर ब्राह्मण था और हिसाब और पुरानी हिन्दी किताबों से खूब वाकिफ था इज़ाफ़े मनसब के साथ ख़ालसे के दफ़तर का अफ़सर मुकर्रर किया और जसवंत राये को अहदियों की बख़्शी गरी दी ॥

ख़्वाजा अबुल हसन साहूजी को बादशाह के हुक्म से नासिक में छोड़ कर शाहगढ़ को चलागया॥

मेदनी राये निज़ाम की नोकरी छोड़ कर बादशाही मनसबदार

اوسیدن مادہو سنگھ ولد راؤ رتن ہاڈا کا منصب پانصدی ذات اور دو سو سواروں کے اضافہ سے دو ہزاری ہزار سواروں کا ہوگیا اور اوسکو علم بہی عنایت ہوا

۵- رمضان کو شرف آفتاب کے دن ۲۰ لاکہہ روپیہ کی پیشکش بیگموں شاہزادوں اور امیروں کی پیش ہوئی

بادشاہ نے دیانت رائے گجراتی کو کہ جو ناگر برہمن تہا حساب اور ہندی کی پرانی کتابوں سے خوب واقف تہا اضافہ منصب کے ساتھ دفتر خالصہ شریف کا افسر مقرر کیا اور جسونت رائے کو احدیوں کی بخشی گری کا کام عنایت فرمایا

خواجہ ابوالحسن بادشاہ کے حکم سے ساہوجی کو ناسک میں چہوڑ کر شاہ گڈہ کی طرف چلا گیا۔

میدنی رائے نظام کی نوکری چہوڑ کر بادشاہی منصب دار

होगया॥

राजा बरसिंघदेव बुंदेले के बेटे बेनीदास को पांच सदी ज़ात और २५० सवारों का मनसब मिला॥

राजा बिट्ठलदास गौड़ के बाप और भाई लड़ाई में काम आये थे और खुद उसने भी धोलपुर के पास पीरा से बड़ी लड़ाई की थी इससे उसको राजा का खिताब मिला था और वह हमेशह किलेदार होने की अर्ज़ किया करता था क्योंके राजपूतों में बग़ैर किले के राजा के ख़िताब की कुछ इज़्ज़त न्हीं होती इस लिये बादशाह ने रणथंभोर का मशहूर किला कि जिसकी हिफ़ाज़त किलेदार खां करता था बैशाख बदी ६ को राजा मज़कूर को इनायत फ़रमाया और ख़ासा खिलत देकर रुख़सत किया राणा उदयसिंघ ने उस किले की किलेदारी राव सुरजन हाड़ा के जो उसका भरोसाबंद नोकर था सोंपी थी उसके

ہوگیا٭

راجہ برسنگھہ دیو بندیلہ کے بیٹے بینی داس کو پانچ صدی ذات اور ڈہائی سو سواروں کا منصب عنایت ہوا۔

راجہ بٹھل داس گوڑ کے باپ اور بہائی لڑائی میں کام آئے تہے اور اُسنے بہی دہولپور کے پاس پیرا سے بڑی لڑائی کی تہی جس سے اوسکو راجہ کا خطاب ملا تہا اور وہ ہمیشہ قلعدار ہونے کی آرزو کیا کرتا تہا کیونکہ راجپوتانہ میں بغیر قلعہ کے راجہ کے خطاب کی کچھ عزت نہیں ہوتی ہے اس لئے بادشاہ نے رنتھنبور کا قلعہ کہ جس کی حفاظت قلعدار خان کرتا تہا ۲۲ رمضان کو راجہ مذکور کو عنایت فرمایا اور خلعت خاصہ دے کر رخصت کیا پہلے اس قلعہ کی قلعداری رانا اودے سنگھہ نے راؤ سرجن ہاڈا کو جو اوسکا ملازم معتبر تہا سپرد کی تہی اوسکے اوپر خود اکبر بادشاہ نے فوج کشی کی اور

ऊपर खुद अकबर बादशाह ने चढ़ाई करके तोप और बंदूक की मार से राव मज़कूर को तंग किया तब उसने किला सौंप दिया था

बैशाख सुदी ३ को इज़ाफ़ा होकर बिहारी दास कछवाहा २ हज़ारी २००० सवार का और बरसिंघ देव बुंदेले का बेटा चंद्र मणि डेढ़ हज़ारी ७०० सवार का मनसबदार होगया ये दोनों सूबे काबुल में तईनात थे ॥

किले तलतम में बादशाही अमलहुवा सतोंडे का किला भी निज़ाम के आदमियों ने सौंप दिया ॥

ख़ानबेग ने रणदूला और निज़ाम की फ़ौज को शिकस्त दी ॥

नसीर खां कंधार के किले को १ अरसे से घेरे हुये था अब वहां के किलेदार सादिक़ खां ने राजा भारत सिंघ बुंदेले की मारफ़त सुलेह करके जेठ बदी १ को किला सौंपदिया और राजा के साथ जाकर नसीरी खां

اور قلعہ کو گھیر کر ضربات توپ و تفنگ سے راؤ مذکور کو تنگ کیا تب اوس نے قلعہ سونپ دیا۔

غرہ شوال کو بہاری داس کچھواہہ اصل و اضافہ سے دوہزاری دوہزار سوار اور راجہ برسنگدیو بندیلہ کا بیٹا چندرمن اصل و اضافہ سے ڈیڑھ ہزاری ذات اور سات سو سوار کا منصب دار ہوگیا یہ دونو صوبہ کابل کی کمکیون سے تھے

قلعہ تلتم میں بادشاہی عمل ہوا

ستونڈہ کا قلعہ بھی نظام کے آدمیون نے سونپ دیا۔

خان بیگ نے رنڈولہ اور نظام شاہیوں کو شکست دی۔

نصیری خان قندہار کے قلعہ کو ایک عرصہ سے گھیرے ہوئے تھا اب وہاں کے قلعدار نے راجہ بہارت بندیلہ کی معرفت صلح کرکے ۱۵ شوال کو قلعہ سونپ دیا اور راجہ کے ساتھ جاکر نصیری خان

से मुलाकात की इस किले में ९६ तोपें मिलीं ॥

अब निज़ाम ने अंबर के बेटे फ़तह खां को कैद से छोड़ कर फिर मुख्तार किया इस पर मुकर्रबखां जो अबतक बादशाही फ़ौज से लड़ता रहा था बुरा मानकर तामाजी डोडिये की मारफ़त आज़मखां से आ मिला और बादशाह ने उसको पांचहज़ारी मनसब दिया मगर रणदूला और निज़ाम के दूसरे सरदार बादशाही फ़ौज के १ हिस्से को हराकर बहादरखां और यूसुफ़ मोहम्मदखां को पकड़ लेगये आज़मखां ने उनको १ लड़ाई में हराया लेकिन बरसात होजाने से कंधार को पीछा लौट आया ॥

आसाढ़ बदी ३ मंगल की रात को बादशाह की प्यारी बेगम मुमताज़ुल ज़मानी का इन्तकाल होगया जिसको ताज बीबी कहते हैं ॥

سے ملاقات کی اس قلعہ میں ۱۶ توپین ملین ؛

اب نظام نے عنبر کے بیٹے فتح خاں کو قید سے رہا کر کے پہر اپنے ملک کا مختار کیا اسپر مقرب خان نے جو اب تک بادشاہی لشکر سے لڑتا تہا ڈر امان کر اعظم خان کو اطاعت کا پیغام بہیجا اور تاماجی ڈوڈیہ کی معرفت شرائط طمانیت ٹہرا کر اس سے ملاقات کی اور بادشاہ کی پیشگاہ سے پانچ ہزاری منصب پایا۔ مگر رن دولہ اور نظام کے دوسرے سردار بادشاہی فوج کے ایک حصہ کو شکست دیکر بہادر خان اور یوسف محمد خان کو پکڑ لیگئے اعظم خان نے انکو ایک لڑائی مین شکست دی لیکن بارش ہوجانیسے قلعہ قندہار کو لوٹ آیا

شب چہارشنبہ ۱۷ ذی قعدہ کو ملکہ ممتاز الزمانی بیگم کا انتقال ہوگیا اس کے ساتھ بادشاہ کی شادی شب جمعہ ۹ ربیع الاول سنہ ۱۰۲۱ کو ہوئی

इस के साथ बैसाख सुदी १० सं० १६६६ बृहसपत की रात को बादशाह की शादी हुई थी उमर कुछ कम ४० बरस की थी इस मुद्दत में ८ बेटे और ६ लड़कियां नीचे लिखे मुआफ़िक हुईं जिन में से ४ बेटे और ३ बेटियां उस के मरने पर जिंदा थीं बेटियों में जहां आरा बेगम जो बेगम साहब कहलाती थी बहुत मशहूर रहे ॥

१ नूरनिसा बेगम चेत सुदी १० संबत १६७० को सनीचर के दिन आगरे में पैदा हुई और ३ बरस की होकर जेठ बदी १० संबत १६७३ को बुध के दिन अजमेर में मरगई ॥

(२) जहां आरा बेगम चेत बदी ८ सं० १६७० को सनीचर के दिन पैदा हुई ।

(३) शाहज़ादा दारा शिकोह चेत बदी १५ सं० १६७२ इतवार की रात को पैदा हुवा ॥

(४) शाहज़ादा शुजाअ सावन बदी ४ संबत १६७३ सनीचर की रात को

تھی عمر کچھ کم چالیس برس کی تھی اس عرصہ میں بیگم سے آٹھ لڑکے اور چھ لڑکیاں حسب مندرجہ ذیل پیدا ہوئیں اُنمیں سے سات زندہ تھے چار شہزادہ اور تین شہزادیاں جنمیں جہان آرا بیگم عرف بیگم صاحبہ بہت مشہور ہے ❊

(۱) حور النسا بیگم روز شنبہ ۲۲ صفر سنہ ۱۰۲۲ کو آگرہ مین پیدا ہوئی اور تین برس کی ہوکر روز چہار شنبہ ۲۴ ربیع الثانی سنہ ۱۰۲۵ کو اجمیر میں مرگئی ❊

(۲) جہان آرا بیگم عرف بیگم صاحبہ روز شنبہ ۲۱ صفر سنہ ۱۰۲۳ کو پیدا ہوئی

(۳) شاہزادہ محمد دارا شکوہ شب دوشنبہ ۲۹ ماہ صفر سنہ ۱۰۲۴ کو پیدا ہوا ❊

(۴) شاہزادہ محمد شجاع شب یکشنبہ ۱۸ جمادی الاخری سنہ ۱۰۲۵

पैदाहुआ ॥

(५) रोशन रायबेगम भादों सुदी ४ संबत १६७४ कोबुरहानपुर से पैदाहुई ॥

(६) शाहज़ादा औरंगज़ेब कातक सुदी १५ सं० १६७५ सनीचरकी रात को पैदाहुआ ॥

(७) उम्मेद बख़्श मंगसिर सुदी १३ सं० १६७६ को बुधके दिन पैदाहुआ।

(८) सुरैय्या बानो बेगम असाढ़ बदी ६ सं० १६७० की रात को पैदाहुई ॥

(९) एक लड़का सं० में सं० १६७६ में होकर मर गया سات برس کی ہو کر مر گئی

(१०) शाहजादा मुराद बख़्श आसोजबदी १० सं० १६८१ मंगल की रात को रुहतास में पैदाहुआ ॥

(११) लुत्फुल्ला कातक सुदी १४ संबत १६८३ को मंगलकी रात पैदाहुआ और बैसाख सुदी १० सं० १६८४ को मरगया ॥

(१२) दौलत अफ़ज़ा जेठ सुदी ४ सं० १६८५ को मंगलकी रात पैदाहुआ और

کو پیدا ہوا۔

(۵) روشن رائے بیگم ۲ رمضان سنہ ۱۰۲۶ کو برہانپور میں پیدا ہوئی ۔۔

(۶) شاہزادہ اورنگزیب شب یکشنبہ ۱۵ ذیقعدہ سنہ ۱۰۲۷ کو پیدا ہوا ۔

(۷) امید بخش روز چہارشنبہ ۱۱ محرم سنہ ۱۰۲۹ کو سہرند میں پیدا ہوا اور ربیع الثانی سنہ ۱۰۳۱ میں بمقام برہانپور مر گیا۔

(۸) ثریا بانو بیگم ۲ رجب سنہ ۱۰۳۰ کی راتکو پیدا ہوئی اور ۲۳ شعبان سنہ ۱۰۳۷ کو

(۹) ایک لڑکا سنہ ۱۰۳۲ میں بمقام سنڈو پیدا ہو کر مر گیا۔

(۱۰) شاہزادہ مراد بخش شب چارشنبہ ۲۵ ذی الحجہ سنہ ۱۰۳۳ کو قلعہ رہتاس میں پیدا ہوا

(۱۱) لطف اللہ شب چارشنبہ ۱۴ صفر سنہ ۱۰۳۶ کو پیدا ہوا اور ۹ رمضان سنہ ۱۰۳۷ کو قضا کر گیا۔

(۱۲) دولت افزا شب چہارشنبہ ۴ رمضان سنہ ۱۰۳۷ کو پیدا ہوا اور

जेठबदी ७ संबत १६८६ को मरगया"
(१३) एक लड़की बैसाख सुदी ११
संबत १६८७ को पैदाहोकर मरगई
(१४) गोहर आरा बेगम आसाढ़
बदी ३ सं० १६८८ मंगल की रात
को बुरहानपुर में पैदा हुई॥

बादशाह की २ बेगमें और भी
थीं १ तो ईरान के शाह ज़ादे मुज़फ़्फ़
रहसैन मिरज़ा के बेटी जिसके सा
थ २० महीने पहिले मुमताज़मह
ल की शादी से शादी हुई थी और दू
सरी अबदुल रहीम खानखानां की
पोती कि जिससे ५॥ बरस पीछे
१ मसलेहत से शादी हुई थी मगर मु
मताज़महल से बादशाह को बहुत
मुहब्बत थी और हमेशा उसको अप
ने पास रखते थे और मुमताज़महल
भी बहुत नेक और बादशाह की मर
ज़ी दान थी उस की सिफ़ारिश से वह
काम हो जाते थे कि जो किसी की
अरज़ मारूज़ से भी न्हीं होसकते थे

۲۰ رمضان ۱۰۳۹ سنہ کو مرگیا۔
(۱۳) ایک لڑکی ۱۰ رمضان ۱۰۳۹ سنہ
کو پیدا ہوکر مرگئی۔
(۱۴) گوہر آرا بیگم شب چہارشنبہ
۱۷ ذیقعد ۱۰۴۰ سنہ کو برہان پور میں
پیدا ہوئی۔

بادشاہ کی دو بیگمیں اور بہی
تہیں ایک تو مظفر حسین مرزا
شاہ ایران کی بیٹی جس سے ۲۰
مہینے قبل از شادی ممتاز محل
کے شادی ہوئی تہی دوسرے
عبد الرحیم خان خانان کی پوتی
اور شاہ نواز خان کی بیٹی کہ جس کے
ساتھ پانچ برس اور پونے چھ
مہینے بعد ایک مصلحت سے
شادی ہوئی تھی لیکن ممتاز محل
سے بادشاہ کو بہت محبت تہی
ہمیشہ اوسکو سفر اور حضر میں
پاس رکہتے تھے اور ممتاز محل
ہی بہی بہت نیکذات اور بادشاہ کی
مرضی شناس مزاجدان اوسکی خاطر

पूरे २ बरस तक एकदा न कभी अतर लगाया न रंगीन कपड़ा और जवाहर पहना न गाना सुना ईद और खुशी के दिनों में जब के बेगमें महल में इकट्ठी होती थीं तो बेगम की याद में बादशाह की आंखों से आंसू बहने लगते थे॥ डाढ़ी में पहिले २० से ज़्यादा सफ़ेद बाल नये मगर फ़िर बहुत जलदी फ़िक्र और ग़म के मारे तमाम बाल सफ़ेद होगये बेगम १ करोड़ से ज़ियादा का जवाहर सोना चांदी ज़ेवर जड़ाऊ और रुपैया अशरफ़ी छोड़ मरी थी बादशाह ने उसमें से आधा तो जहांआरा बेगम को बख़्शा और आधा दूसरे शाहज़ादों और शाहज़ादियों को दिया जहांआरा बेगम को बेगम साहब का ख़िताब और कुल ख़ानगी कामों का अख़्तियार सौंपा और उस का सालियाना ६ लाख से बढ़ाकर १० लाख का कर दिया

نہ کبھی عطر لگایا نہ رنگین کپڑا اور جواہر پہنا نہ گانا سُنا عید اور خوشی کے دنوں میں جبکہ بیگمیں دولتسرا میں جمع ہوتی تھیں تو بیگم کی یاد میں بادشاہ کی آنکھوں سے بے اختیار آنسو نکلنے لگتے تھے ڈاڑھی میں پہلے ۲۰ سے زیادہ سفید بال نہیں تھے مگر بہت جلدی مارے فکر و غم کے تمام بال سفید ہو گئے۔

بیگم کے متروکات روپیہ اشرفی جواہرات اور مرصع آلات ایک کروڑ روپیہ سے زیادہ تھے بادشاہ نے آدھے تو جہاں آرا بیگم کو بخشے اور آدھے دوسرے شاہزادوں اور شاہزادیوں کو دیئے۔

جہاں آرا بیگم کو بیگم صاحب کا خطاب اور کل خانگی امور کا اختیار دیا اُوسکا سالیانہ بھی چھ لاکھ سے بڑھاکر دس لاکھ کا کر دیا اور کچھ

फ़िर कुछ दिनों बाद अपनी बड़ी मोहर थी जो पहले उसकी मां और पीछे उसके मामूं आसिफ़ खां व ज़ीरके पास रहा करती थी उसको सोंपदी और जबसे वह पट्टों और फ़रमानों के ऊपर मोहर करने लगी

## बरस पांचवां

सावन बदी ३ संबत १६८८ से
सावन सुदी २ संबत १६८९ तक

फ़तेहखां ने अपने बाप अंबर चम्पू के माफ़िक निज़ामुल्मुल्क को कैद कर के कुछ दिनों पीछे बादशाह के हुक्म से मारडाला और उसके बेटे हुसेन निज़ामशाह को जो १० बरस का था दौलताबाद में गद्दी पर बैठाया॥

माह सुदी ६ को ख़्वाजा अब्बुल हसन के लशकर से २००० आदमी तोशक खां समेत नद्दी के रेले में बह गये॥



دنوں کے بعد اپنی بڑی مُہر بھی جو پہلے اوس کی ماں اور بعد اوس کے ماموں آصف خان وزیر کل کے پاس رہا کرتی تھی اوس کے حوالہ کی اور وہ اوس دن سے فرمانوں کے اوپر مُہر کرنے لگی۔

## برس پانچوان

سنہ ۱۰۴۱ ہجری
۲۱-جولائی سنہ ۱۶۳۱ء سے
۹ جولائی سنہ ۱۶۳۲ء تک

فتح خاں نے نظام الملک کو مثل اپنے باپ عنبر کے کچھ دنوں بعد بادشاہ کے حکم سے بطور خفیہ مار ڈالا اور اوس کے بیٹے حسین شاہ کو جو دس برس کا تھا دولت آباد میں گدّی پر بٹھایا۔

۴ صفر کو خواجہ ابو الحسن کے لشکر سے دو ہزار آدمی مع توشک خانہ سیلاب دریا میں بہہ گئے۔

बहुत से ऐसे आदमी कि जिनको
गलदने का हुक्म होता था वे भी उ
सके कहने से बच जाते थे बेग
म की मौत गोहर आरा बेगम के
पैदा होने की तकलीफ़ से हुई
जो पेट में ही रोने लगी थी मरते
वक़्त उसने शाहज़ादी जहांआरा
बेगम को भेजकर बादशाह को
अपने पास बुलाया और कहा के
कुल बच्चे मां के पेट से निकल
कर रोते हैं और यह लड़की पेट
में से ही रोती हुई पैदा हुई इससे
मेरी जान की खैर न्ही है और य
ह अब आपका आखिरी दीदार
है आप मेरे बच्चों और मेरी मां
का पूरा ख़याल रखना बेगम का
यह आखिरी बोल था बादशाह
को बेगम के मरने का निहायत
रंज हुआ उसके सोग में बादशा
हने सफ़ेद शाहजादों और अमीरों
ने काले कपड़े पहिने बेगम की

اور سفارش سے وہ کام ہو جاتے
تھے جو کیسی عرض معروض سے
نہین ہو سکتی تھی بہت سے
خونی اور قابل القصاص گناہگار
اوسکی شفاعت سے جانبر ہو گئی تھی
بیگم کی موت گوہر آرا بیگم کے پیدا
ہونیکی تکلیف سے واقع ہوئی جو پیٹ
مین ہی رونے لگی تھی مرتے وقت
اُس نے شاہزادی جہاں آرا بیگم کو
بھیجکر بادشاہ کو اپنے پاس بلایا
اور کہا کل بچہ ماں کے پیٹ سے
نکلکر روتے ہیں اور یہ لڑکی پیٹ
میں سے ہی روتی ہوئی پیدا ہوئی
اِس سے میری جان کی خیر نہیں ہے
اور اب یہ آپ کا آخری دیدار ہے
میری بچوں اور میری ماں کا پورا خیال
رکھنا بیگم کا یہ آخری کلام تھا بادشاہ
کو بیگم کے مرنیکا نہایت رنج و الم ہوا
اوسکے ماتم مین انھوں نے سفید اور
سب شاہزادوں و امیرن نے
سیاہ کپڑے پہنے بیگم کی لاش۔

लाश बुरहानपुर के पास बाग़ जैन
आबाद में जो तापतीनदी के किना
रे पर था दफ़न कीगई बादशाह
मारे ग़म के १ हफ़्ते तक दौलत
ख़ाने ख़ास और आम के झरोके
दरशन में नहीं आये और न कोई
काम राज का किया कि जिस
की कभी नाग़ा नहीं होती थी और
यह कहते रहे के जो सलतनत
और रैयत की हिफ़ाज़त का बो
झ मेरी गरदन पर नहोता तो कुल
मुलक हिन्दुस्तान का जो मेरा और
मेरे बाप दादों का फ़तह कियाहुआ
है अपने बेटों को तकसीम करके बे
गम की कबर पर जा बैठता और
बाकी उमर खुदा की बंदगी में पूरी
करता आखिर नवें दिन जुमेरात
को बाहर निकले और नदी से उत
रकर बेगम की कबर पर गये और
जब तक बुरहानपुर में रहे हर जुमे
रात को जाया करते थे बेगम का सोग

برہان پور کے پاس باغ زین آباد
میں جو تاپتی ندی کے کنارہ پر تھا
دفن کی گئی بادشاہ مارے غم
کے ایک ہفتہ تک دولتخانہ
عام وخاص کے جھروکہ درشن
میں نہیں آئے اور نہ کوئی کام
ملک اور مال کا کیا کہ جس کی کبھی
ناغہ نہیں ہوتی تھی اور یہ کہتے
رہے کہ اگر سلطنت اور رعیت
کی حفاظت کا بار میری گردن
پر نہ ہوتا تو یہ کل ملک ہندوستان کا
جو میرا اور میرے بزرگون کا
فتح کیا ہوا ہے اپنے بیٹون کو
تقسیم کرکے بیگم کی قبر پر جا
بیٹھتا اور باقی عمر یاد الٰہی میں
ختم کرتا آخر نویں دن جمعرات
کو باہر نکلے اور ندی سے اتر کر
بیگم کے مزار پر گئے اور جب تک
برہان پور میں مقام رہا ہر جمعرات
کو جایا کرتے تھے بیگم کا ماتم
پورے دو برس رکھا

राव का ख़िताब बख़्शा बूंदीख
टखड़ और दूसरे परगने जोरा
वरतन के वतन थे वे सब उसकी
जागीर में बहाल करके उसके ना
म हाज़िर होने के वास्ते फ़रमान
भेजा और उसके चचा माधोसिंघ
को ५ सदी ज़ात औ ५०० सवारों के
इज़ाफ़े से २॥ हज़ारी ज़ात और १५००
सवारों के मनसब से सरफ़राज़ क
रके कोटे और पलायते का परगना
जागीर में दिया॥

राव शत्रू साल का बाप गोपी
नाथ दुबला पतला था तो भी इत
नी ताक़त रखता था कि दरख़्त
की २ डालियों के बीच में बैठ कर
पीठ और पाँव के ज़ोर से दोनों को
चीर डालता था और ये डालियें भी
इतनी मोटी होती थीं जितनी कि
शासियाने की चोब होती है और वह
ऐसे ऐसे ही बेजा ज़ोर करने से बी
मार होकर बाप की ज़िंदगी में मर

منصب اور راؤ کا خطاب بوندی
کہٹ کڑ اور دوسرے پرگنہ جو
راؤ رتن کے وطن تھے وہ سب
اوسکی جاگیر مین بحال کرکے اوسکے
نام حاضر ہونے کا فرمان بھیجا اور
اوسکے چچا مادہوسنگھ کو پانصدی
ذات اور پانسو سواروں کے
اضافہ سے ڈہائی ہزاری ذات
اور ڈیڑہ ہزار سوار کا منصبدار
کرکے کوٹہ اور پلائیتہ کا جاگیردار
بنایا ؛

راؤ ستروسال کا باپ
گوپی ناتھ باوجود ضعیف الجثہ
ہونیکے اسقدر زور رکھتا
تہا کہ درخت کی دو شاخوں
کے درمیان بیٹھکر پشت
اور پاؤن کے زور سے دونوں
کو چیر ڈالتا تہا اور یہ شاخیں اتنی
موٹی ہوتی ہیں جتنی کہ شامیانے
کی متوسط چوب ہوتی ہے
اور وہ ایسی ہی بیجا زور آزمائیوں

گیا था ॥

ऊदाजी राम दरवनी को ४० हज़ार रुपये बादशाह ने इनायत किये ॥

पोस बदी ४ शुक्रवार को बादशाह ने बेगम की लाश बुरहानपुर से बड़े जलूस के साथ आगरे को रवाना की शाहज़ादे शुजाअ को साथ मे जा रस्ते मेंरोज़ बहुत सा खाना और रुपैया अशरफ़ी ग़रीबों औरफकीरों को बटना जाता था वहाँ वह माह बदी १ को पहुंची और शहर से दकवन को १ बहुत ऊंची ज़मीन में जहां पहले राजा मान सिंघ रहता था दफ़न हुई उसके बदले बादशाह ने दूसरी उमदा जगह अपने खालिसे में से राजा के पोते जयसिंघ को दे दी ॥

बेगम की कबर पर निहायत उमदा और ऊंचा मकबरा ४० लाख रुपे की लागत से तैयार हुआ जिसको अब ताज बीबी का

سے بیمار ہوکر کچھ عرصہ بعد اپنے باپ کی زندگی میں مرگیا تہا۔

اوداجی رام دکہنی کو ۴۰ ہزار روپیہ عنایت ہوئے۔

روز جمعہ ۱۷ جمادی الاول کو بادشاہ نے بیگم کی لاش برہانپور سے شاہزادہ محمد شجاع کے ساتھ آگرہ کو بکمال تزک و احتشام روانہ کی راستہ میں ہر روز بہت سا کہانا اور روپیہ اشرفی غریبوں اور فقیروں کو تقسیم ہوتا جاتا تہا۔ آگرہ میں دکہن کی طرف ایک اونچا اور پرفضا قطعہ زمین قبر کے واسطے تجویز کیا گیا تہا جہان ۱۵ جمادی الثانی کو لاش پہنچی اور دفن کی گئی اس زمین میں پہلے راجہ مان سنگہہ رہا کرتا تہا اور اسکا پوتہ جے سنگہہ خوشی سے نذر کرنے کو تیار تہا لیکن بادشاہ نے مذہبی احتیاط سے اوس کے بدلہ دوسری عمدہ حویلی خالصہ کی راجہ کو دیدی۔

| | |
|---|---|
| असोज बदी ११ को नसीरी खां कंधार से हाजिर हुवा बादशाह ने राजा भारत सिंघ बुंदेले को पांच सदी ज़ात का इज़ाफ़ा किया जिससे उसका मनसब ३॥ हज़ारी ज़ात और ३००० सवारों का होगया ॥ | ۲۴ر صفر کو نصیری خان بعد فتح قلعہ قندہار کے حاضر ہوا راجہ بہارت بندیلا اوسکے ساتھ تھا بادشاہ نے اوسکے منصب مین پانصدی ذات کا اضافہ کیا جس سے اوسکا منصب ساڑہے تین ہزاری ذات اور تین ہزار سوار کا ہوگیا |
| असोज सुदी ६ को बादशाह ने राव सूर सुरटिया के मरने की ख़बर सुनकर उसके बेटे करण को २ हज़ारी ज़ात और ५०० सवारों का मन सब राव का ख़िताब और बीकानेर का राज दिया और उसके भाई शत्रूशाल को पांच सदी ज़ात और २०० सवार का मनसब इनायत किया ॥ | ۵ ربیع الاول کو بادشاہ نے راؤ سور بہورٹیہ کے مرنیکی خبر سنکر اوسکے بیٹے کرن کو دو ہزاری ذات اور پانسو سوار کا منصب راؤ کا خطاب اور بیکانیر کا راج دیا اوسکے بہائی سترو سال کو پانصدی ذات اور دوسو سواروں کا منصب عنایت فرمایا۔ |
| मंगसिर बदी २ को जादोंराये के बेटे बहादुरजी ने हाज़िर होकर १० घोड़े और १ हाथी नज़र किया और जादों राये का भाई जगदेव राये भी हाज़िर हुवा बादशाह ने बहादुरजी को खिलअत जड़ाऊ खपवा | ۱۵ ربیع الثانی کو جادوں رائے کے بیٹے بہادرجی نے حاضر ہوکر دس گہوڑے ایک ہاتہی نظر کیا اور جادوں رائے کا بہائی جگدیو بہی حاضر ہوا بادشاہ نے بہادرجی کو خلعت جڑاؤ |

सब सोने की ज़ीन का घोड़ा
पांच हज़ारी ५ हज़ार सवार का म
और हाथी बख्शा और जादोंरा
ये के पोते जादोंराय को जिस का
असली नाम तोपनंगराय था मग
र बादशाह ने दादे के नाम पर उस
का नाम रखवाथा खिलत और ज
ड़ाऊ खंजर देकर ५०-५० हज़ार रु
पैये नकद भी हरेक को दिये ॥

मंगसिर सुदी ६ को बीठू जी
अपने भाई बंदों समेत खीलू जी
और मालू जी के साथ हाज़िर हुआ
बादशाह ने उसको भी खिलत ज
ड़ाऊ खंजर और हाथी घोड़ा इनाय
त किया ॥

पोस बदी ३ को बादशाह ने
लशकर बाला घाट के खबर देने
वालों की रपोट से राव रतन हाडा
का मरना मालूम करके उसके पा
टवी पोते शत्रुशाल को ३ हज़ारी ज़ा
त ३ हज़ार सवार का मनसब और

پنجہزاری پانچہزار سوار کا
منصب سونے کی زین کا گہوڑا
اور ہاتھی عنایت کیا اور جادوں رائے
کے پوتے پتنگ رائے کو کہ جس کا
نام بادشاہ نے جادوں رائے
رکہا تہا خلعت اور جڑاؤ خنجر دیکر
پچاس پچاس ہزار نقد بہی ہر ایک
کو دئے۔

۳ جمادی الاول کو بیٹہو جی
مع اپنے بہائیوں اور رشتہ داروں
کے کہیلوجی اور مالوجی کے ساتہہ
حاضر آیا بادشاہ نے اوسکو بہی
خلعت جڑاؤ خنجر ہاتہی اور گہوڑا
عنایت کیا۔

۱۶ - جمادی الاول کو بادشاہ
نے لشکر بالاگہاٹ کے مخبرون
کی عرضی سے راؤ رتن ہاڈا کے
مرنے کا حال معلوم کرکے۔
اوسکے جانشین پوتے ستروسال
کو تین ہزاری ذات و ۳ ہزار سوار کا

राजा कहेते हैं

बादशाह ने आदिल खां को सज़ा देने के वास्ते आसिफ़ खां को मिति फोसवरी ६ को बुरहान पुर से बीजा पुर की तरफ़ रवाने किया जिसको साथ राजा गज सिंघ राजा जय सिंघ राजा पहाड़ सिंघ ऊदाजी राम खील्जी मालूजी भोंसला और बहादुरजी गये और अबदुल्ला खां बहादुर को भी तिलंगाने के लशकर समेत कि जिसमें राजा जुझार सिंघ बुंदेला और राजा भारत सिंघ बुंदेला भी थे आसिफ़ खां के शामिल होने का हुकम भेजा॥

आसिफ़ खां गुलबरगे होकर बीजा पुर पहुंचा। राजा गज सिंघ राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला और चंद्रमणि बुंदेले को हिरोल राजा भारत राजा अनोप सिंघ और राव दूदा को दहनी और राजा जय सिंघ को

بیگم کی قبر پر نہایت اونچا اور عمدہ گنبد اور مقبرہ سنگ مرمر کا چالیس لاکھ روپیہ کی لاگت سے تیار ہوا جسکو تاج بی بی کا روضہ کہتے ہیں جو خوبی اور سنگتراشی کی صنعت میں اپنا جواب نہیں رکھتا۔

۱۹ جمادی الاول کو بادشاہ نے محمد عادلشاہ کو سزا دینے کے واسطے برہانپور سے یمین الدولہ آصف خانکو بیجاپور کی طرف روانہ فرمایا اوسکے ساتھ راجہ گج سنگھ راجہ جے سنگھ راجہ پہاڑ سنگھ اوداجی رام کھیلوجی مالوجی بہونسلا اور بہادر جی تعینات ہوے اور عبد اللہ خان بہادر فیروز جنگ کو بھی حکم بھیجا کہ مع لشکر تلنگانہ کے کہ جس میں راجہ جوجہار سنگھ بندیلہ اور راجہ بہارت بندیلہ بھی تھے کوچ کرکے آصف خاں کے شامل ہو جاوے +

آصف خان گلبرگہ ہوکر بیجاپور پہونچا اور اسنے بادشاہ کی تجویز کی موافق لشکر کی ترتیب اسطور سے کرکے بیجاپور کا محاصرہ کیا ہراول راجہ گج سنگھ راجہ پہاڑ سنگھ اور چندر من بندیلہ اللہ وردی خان و سید عالم وغیرہ منتقل لشکر راجہ بہارت بندیلہ و

बाईं अनी और राजा जुझारसिंघ बुंदेले को चंदोल में रख करबीजा पुरको घेरा और कई दिन तक लड़ाई की मगर बीजापुर वालों ने अपना इलाका वीरान करदिया था जिस से सेर भर नाज (१) में आता था इस लिये बरसात शुरू होने पर आसिफ़ खां घेरा छोड कर किले शोला पुर के नीचे होता हुआ बादशाही इलाके में लौट आया और बीजापुर वालों के १५००० सवार शोलापुर तक उसके पीछे आये॥

माह सुदी ५ को राय कांसी नाथ कसबे शहरंद की खिदमत दीवानी और अमीनी के ऊपर इज़ाफ़े मनसब के साथ मुकर्रर हुआ॥

माह सुदी १४ को राव सूर के बेटे राव करण ने अपने वतन बीकानेर से हाज़िर आकर १ हाथी नज़र किया॥

نصیری خان خداوندخان وغیرہ معہ
... منصبداروں کے خان جہان اور
بارہ و امروہہ کے سید التمش -
برانغار - اعظم خان راجہ انوپ سنگھ
اور راؤ دودا -
جرانغار ابوالحسن خان زمان اور ظفرخان
طرح دست راست - عبداللہ خان راجہ
روز افزون وغیرہ - طرح دست چپ راجہ
جے سنگھ چنداول - راجہ جوجہار سنگھ بندیلہ
بیجاپور والون نے اپنا علاقہ ایسا ویران
کردیا تہا کہ سیر بہر غلہ بمشکل ایک (۱) روپیہ مین
بادشاہی لشکر کو ملتا تہا اسلیئے برسات
شروع ہونے پر آصف خان محاصرہ چہوڑکر قلعہ
شولاپور کے نیچے ہوتا ہوا بادشاہی علاقہ
مین لوٹ آیا بیجاپور والون کے پندرہ ہزار
سوار شولاپور تک اوسکے پیچہے آئے -

۳ رجب کو رائے کاشی ناتھ دیوانی
و امینی کی خدمت قصبہ سہرند و اضافہ -
منصب سے سرفراز ہوا +

۱۲ رجب کو بیکانیر کے راؤ سور کا
بیٹا کرن اپنے وطن سے درگاہ مین حاضر ہوکر ا داب

फागण बदी १० को बाद
शाह ने वज़ीरखां को फ़तह खां
हबशी को सज़ा देने और दौल
ताबाद फ़तेह करने के वास्ते
भेजा राजा बिट्ठल दास माधो
सिंघ राव करण और पृथीराज
को घोड़े और सिरो पाव देकर
उसके साथ तईनात किया म
गर फ़तह खां ने नज़राना भेजदि
या और यह फ़ौज पीछी बुला ली
गई ॥

फागुण सुदी १० को राव शत्रु
साल हाडा ने बादशाह की खि
दमत में हाज़िर होकर ४० हाथी
जो उसके दादा के रहे हुए थे नज़
र किये बादशाह ने १८ जो ढाई
लाख की कीमत के थे और जिन
में से ८ ख़ासा हाथियों में दाखि
ल होने के लायक थे पसंद करके
बाक़ी उसको बख़्श दिये और
ख़िलत चांदी की ज़ीन का घोड़ा

بجالایا اور ایک ہاتھی پیشکش کیا ✤
۲۳ رجب کو بادشاہ نے
دولت آباد کی فتح اور عنبر کے بیٹے
فتح خان کو سزا دینے کے واسطے
وزیر خان کو روانہ کیا - راجہ بیٹھلداس
مادہو سنگھ - راؤ کرن اور پرتھی راج کو
خلعت اور گھوڑے دیکر اوس کے
ساتھ بھیجا لیکن فتح خان نے پیشکش
بھیجدی اور بادشاہ کے حکم سے یہ
فوج راستہ سے واپس آگئی

۸ شعبان کو راو رتن ہاڈا کا
پوتہ راو سترو سال اپنے وطن سے
حاضر آیا چالیس ہاتھی جو اوس کے
باپ اور دادے سے باقی رہے
تھے بطور پیشکش کے حضور مین
حاضر لایا اُن میں سے ۱۸ ہاتھی
جن کی قیمت ڈہائی لاکھ روپیہ
کی ہوئی قبول کئے گئے جن میں آٹھ
تو قابل داخل ہونے خاصہ فیلون
کے تھے اور باقی اوسی کو بخش دیئے گئے

नक्कारा निशान उसको इनायत किया ॥

चेत बदी ११ मंगल की रात और मुसलमानी हिसाब से बुध की रात को जसवंत सिंघ राठोड़ का बेटा किशन सिंघ नूरुद्दीन कुली को जबकि वह दौलत खाने खास से निकलकर अपने डेरे पर जाता था मारकर चला गया क्योंकि इस के बाप को नूरुद्दीन के आदमियों ने जहांगीर बादशाह के ज़माने में मारडाला था ॥

चेत बदी १२ को नौरोज़ के दिन बगलाने के राजा भूरजी ने अपने बेटे और भाईयों के साथ हाज़िर होकर ३ हाथी ९ घोड़े और कुछ जड़ाऊ सामान नज़र किया ॥

बैसाख बदी ३ को मेख संक्रांत के उच्छब में महाराजा भीम के बेटे राय सिंघ का इज़ाफ़ा हज़ारी ज़ात और २०० सवारों का

اور خلعت گہوڑا سعہ چاندیکی زین
کے اور نقارہ نشان بہی اوسکو عنایت فرمایا +

شب چارشنبہ ۲۵ شعبان
کو جسونت سنگھ کے بیٹے کشن سنگھ
راٹہوڑ نے نورالدین قلی کو جبکہ وہ
دولت خانہ خاص سے نکلکر اپنے
ڈیرہ کو جاتا تہا اس کینہ سے
کہ جہانگیر بادشاہ کے عہد مین
اوس کے باپ کو نورالدین
کے آدمیوں نے مار ڈالا تہا -
کئی کاری زخم مارکر مار ڈالا اور
خود نکل کر چلا گیا -

۲۵ شعبان کو روز نوروز
تہا - بہرجی زمیندار بگلانہ معہ اپنے
بیٹے اور بہائیوں کے بادشاہ
کے حضور مین حاضر ہوا تین ہاتہی
نو گہوڑے اور کچھ جڑاؤ زیور نذر کئے -

۱۶ رمضان کو کہ شرف آفتاب
کا دن تہا مہاراجہ بہیم کا بیٹا راے سنگھ
ہزاری ذات اور دوسو سوار
کے اضافہ سے تین ہزاری

हुआ जिस से उसका मनसब ३ हज़ारी ज़ात और १२०० सवारों का होगया ॥

ذات اور بارہ سو سواروں کا منصب دار ہوگیا +

राजा किशनसिंघ राठोड़ के बेटे हरी सिंघ को हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का मनसब इनायत हुआ ॥

راجہ کشن سنگھ راٹھوڑ کا بیٹا ہری سنگھ ہزاری ذات اور چھہ سو سواروں کے منصب سے سرفراز ہوا +

बैसाख बदी ११ पंजसम्बा (?) को बादशाह बुरहानपुर से आगरे की तरफ़ रवाने हुए आज़मखां को बदल कर महाबतखां को सूबेदार दकन और खानदेस का कर गये ॥

روز پنجشنبہ ۲۴ رمضان کو بادشاہ برہانپور سے آگرہ کیطرف روانہ ہوئے اور اعظم خاں کو تغیر کر کے مہابت خانکو دکھن اور خاندیس کا صوبہ دار کر گئے۔

बैसाख सुदी ६ को कालीभीत में जो दरमियान बुरहानपुर और परेंदे के हैं डेरे हुए वहां भीमसेन ज़मींदार उस तरफ़ का हाज़िर हुआ और १००० मोहरें हाथी पेश किये खिलअत इनायत हुआ

۵ شوال کو کالی بہیت کی جوالی مین جو درمیان برہانپور اور پرینڈہ کے ہی بادشاہ کے ڈیرے ہوئے وہاں بہیم سین زمیندار اوس نواحی نے حاضر ہو کر آستان بوسی کی ہزار مہرین نذر اور دو ہاتھی پیشکش کئے بادشاہ نے خلعت عنایت کیا۔

जब बुंदेलों के मुलक में पहुंचे तो राजा जुझारसिंघ के बेटे जुगराज बिक्रमाजीत ने हाज़िर होकर १००० मोहरें और हाथी नज़र किये ॥

جب بادشاہ کی سواری بندیلون

आसाढ़ सुदी २ को बादशाह

आगरे में दाखिल हुए ॥

फ़तह खां ने दौलताबाद में बादशाह के नाम का सिक्का जारी किया ॥

सांवण बदी २ को नज़र मोहम्मद खां का वकील वक्कास हाजी बलख़ से आया ॥

बादशाह को दकन के इस सफ़र में ५ किले और ५० लाख का मुलक निजामुल्मुल्क की अमलदारी में से हाथ आया ॥

बरस छटा

सावण सुदी ३ संवत १६८९ से सावण सुदी २ संवत १६९० तक

भादों बदी ९ को कृपा राम गौड़ को चकले हिसार की फ़ौजदारी इज़ाफ़े मनसब के साथ इनायत हुई ॥

प्रथम आसोज सुदी ५ को बादशाह ने राय कांसी दास को सहरंद की फौजदारी से बदल कर सूबे

کے ملک مین پہونچی تو راجہ جوجہار سنگھ کا بیٹا بکرماجیت جو جگراج کی خطاب سے مخاطب تھا حاضر ہوا ہزار مہرین نذر کین اور دو ہاتھی پیشکش کیے

غرہ ذی الحجہ کو بادشاہ آگرہ مین داخل ہوئے۔

فتح خاں نے دولت آباد مین بادشاہ کی نام کا سکہ اور خطبہ جاری کیا۔

۳۰ ذی الحجہ کو نذر محمد خان کا ایلچی وقاص حاجی بلخ سی آکر حاضر درگاہ ہوا۔

بادشاہ کو اس سفر دکہن مین پانچ قلعہ اور پچاس لاکھ کا ملک نظام الملک کے ولایت سے ہاتھ آیا۔

برس چھٹا

سنہ ۱۰۴۲ ہجری

۱۰ جولائی سنہ ۱۶۳۲ع سے ۲۸ جون سنہ ۱۶۳۳ع تک

۲۲ محرم کو کرپا رام گوڑ فوجدار چکلہ حصار کی خدمت عطا ہونے اور نیز اضافہ منصب سے مشمول نوازش ہوا

۳ ربیع الاول کو رای کاشی داس فوجداری سرکار سہرند سے تغیر ہو کر صوبہ لاہور کا دیوان ہوا۔

लाहोर का दीवान बनाया ॥

साहजी भोंसला ने बादशाही बंदगी छोड़ कर नासिक त्र्म्बक और संगमेर से कोकन की सरहद तक अमल कर लिया और फ़तह खां के बरखिलाफ़ निज़ाम के खानदान में से १ शख़्स को अपने पास रख कर खुद मुखतारी का झंडा खड़ा किया ॥

राय भानी दास बूढ़ा होगया था इस लिये उसकी जगह मीर अबदुललतीफ़ दफ़तर तन में मुकर्रर हुआ यह ओहदा दीवान कुल के नीचे था जिसको २ नायब दिये जाते थे १ तो यही दफ़तर तन वाला कि जिसके पास नोकरों की तलब और तनखाह का काम था और *खालिसे का काम करता था ॥

राय भानी दास का मनसब हजारी ज़ात और १५० सवार का था

दोयम आसोज बदी ११ को

ساہوجی بہونسلہ نے بادشاہی
بندگی چہوڑکر ولایت ناسک تربک
اور سنگمیر مین کوکن کی سرحد تک
قبضہ کر لیا اور فتح خاں کے خلاف
ایک شخص کو خاندان نظام شاہیہ
سے اپنے قبضہ مین لاکر خودسری
کا علم بلند کیا۔

راے بہانی داس بوڑہا
ہوگیا تہا اس لئے بادشاہ نے
اوس کی جگہہ میر عبدالّطیف کو
مقرر کیا یہ عہدہ دیوان کل کے
نیچے تہا جسکو دو نائب دیے جاتے
تھے ایک تو یہ ہی دفتر تن والا
کہ جس کے متعلق طلب اور
تنخواہ کا کام تہا اور دوسرا
دفتر خالصہ شریفہ کے کاموں
کو انجام دیتا تہا

راے بہانی داس کا منصب
ہزاری ذات اور ڈیرہ سو سواروں کا تہا

۲۴ ربیع الاول کو قاسم خان

*दूसरे दफ़तर

कासमखां सूबेदार बंगाले के बेटे इनायतुल्ला ने ६ महीने घेरा रख कर फ़रंगियों को बंदर हुगली से निकाल दिया बंदर मज़कूर जो १ अरसे से उनके कबज़े में था और उनहीं का बसाया हुआ था. फ़तह कर लिया १० हज़ार फ़रंगी मारे गये और ४ हज़ार कैद हुए॥

दोयम आसोज सुदी ७ को शाह ईरान के वकील मोहम्मद अली को सीख हुई जिस दिन से आया था। अब तक उसको ३ लाख ६ हज़ार रुपया नक़द और १ लाख का सामान इनायत हुआ था शाह को जो ख़लीता लिखा गया उसमें दख्खन की फ़तह का हाल था॥

निज़ाम के किलेदार महमूद खां ने फ़तह खां की अदावत से कालने का किला और ८ परगने ६ लाख रुपय की जमा के बादशाही आदमियों को सोंप दिये

صوبہ دار بنگالہ کے بیٹے عنایت اللہ نے بعد محاصرہ ششماہہ کے فرنگیوں کو بندر ہگلی سے نکال دیا بندر مذکور جو ایک عرصہ سے اون کے قبضہ میں تہا اور اُن ہی کا آباد کیا ہوا تہا فتح کر لیا دس ہزار فرنگی اس لڑائی میں مارے گئے اور چار ہزار قید ہوئے ۔

۸ ربیع الثانی کو شاہ ایران کے سفیر محمد علی کو رخصت ہوئی روز ورود سے ابتک ۳ لاکہہ چہہ ہزار روپیہ نقد اور ایک لاکہہ روپیہ کی جنس اوسکو عنایت ہوئی تہی - شاہ کو جو خریطہ لکہا گیا اوسمیں دکہن کے فتوحات کا ذکر تہا -

نظام شاہ کے قلعدار محمود خاں نے بہ سبب مخالفت فتح خاں کے قلعہ کالنہ معہ آٹھ پرگنوں کے کہ جنکی جمع ۶ لاکہہ روپیہ کی تہی مردمان بادشاہی کے حوالہ کر دیا ۔

भागीरथ भील सूबे माल्वे
में अपने किले का नारवेड़ी की म
जबूती से सूबेदारों का हुक्म न
हीं उठाता उसके पास आदमी भी
बहुत थे जिससे लूटमार किया
करता था अब नसीरी खां की सू
बेदारी में भी उसने फसाद किया
तो नसीरी खां सारंगपुर से उसके
ऊपर चढ़ कर गया उस की धाक
ऐसे लुटेरों के ऊपर बहुत कुछ
बैठी हुई थी जिससे भागीरथ डर
कर गन्नोर के ज़मींदार सग्राम के
साथ ख़ान के पास हाजिर होगया
और अपना किला छोड़ दिया जि
समें बहुत मुद्दत से उसको और उ
सके बाप दादों को पनाह मिल
ती रही थी ख़ान ने पोसवदी दसो
म वार को किले में दाख़िल होक
र मूरतें तोड़ डालीं और मंदिर ख़
राब कर दिये ॥

बादशाह ने पहिले यह सुन

بہاگیرتھ بھیل صوبہ
مالوہ میں اپنے قلعہ کا ناکھیڑی کی
مضبوطی اور کثرت جمعیت کے
غرور سے صوبہ دارون کا حکم نہیں
مانتا تہا اور فساد کیا کرتا تہا اب
نصیری خان کی صوبہ داری میں
بہی اوسنے فساد کیا نصیری خان
کو کہاں تاب تہی فوراً سارنگپور
سے چڑھ کر اوسکے اوپر گیا جو کہ اوسکی
دہاک ملک میں بیٹھی ہوئی تھی ۔
اس لئے بہاگیرتھ ڈر کر گنور کے
زمیندار سگرام کے ساتھ نصیرخان
کے پاس حاضر ہوگیا اور قلعہ
چھوڑ دیا جو عرصہ دراز سے
جاے پناہ اوسکا اور اوس کے
بزرگون کا رہا تھا خان نے روز
دوشنبہ ۱۲ ماہ جمادی الثانی
کو قلعہ میں داخل ہوکر مورتین
توڑیں اور مندر خراب
کردیئے ۔

بادشاہ نے پہلے یہ سنکر

कर कि जहांगीर बादशाह के ज़माने
में बनारस में बहुत से मंदर बनते
बनते रहगये थे और अब आसूदा हि
न्दू उन को तमाम करना चाहते हैं हु
क्म दिया था कि क्या बनारस में औ
र क्या बादशाही दूसरे परगनों में ज
हां कहीं नये मंदर बने हों गिरादिये
जावें अब सूबे इलाहाबाद के वाक़ा
ये निगार (ख़बर नवीस) की अरज़ी
से मालूम हुआ कि ७६ मंदिर बनार
स में गिराये गये।

### शाहज़ादे दारा शिकोह की शादी

मुमताज़ बेगम की ज़िंदगी में
शाहज़ादे दारा शिकोह की शादी
सुलतान परवेज़ की बेटी से जो अ
कबर बादशाह के शाहज़ादे मुरा
द की नवासी थी और शाहज़ादे शु
जाअ की शादी ईरान के शाहज़ादे
मिरज़ा रुस्तम सफ़वी की लड़की
से ठहर चुकी थी और बेगम ने इन

جہانگیر بادشاہ کے عہد مین
بنارس میں بہت سے مندر
بنتے بنتے ناتمام رہ گئے تھے اور
اب آسودہ ہندو انکو تیار کرانا
چاہتے ہین حکم دیا تھا کہ کیا بنارس
میں اور کیا دوسرے ممالک محروسہ
میں جہاں کہیں کہ نئے مندر بنے
ہوں گرا دیے جاویں چنانچہ اب
صوبہ الہ آباد کے وقائع نگار
کی عرضی سے معروض ہوا کہ ۷۶ مندر
خطہ بنارس میں گرا دیے گئے ہیں۔

### بادشاہزادے دارا شکوہ کی شادی

ممتاز الزمانی بیگم کی زندگی مین
شاہزادہ دارا شکوہ کی شادی
سلطان پرویز کی بیٹی سے جو
شاہزادہ مراد خلف اکبر بادشاہ
کی نواسی تھی اور شاہزادہ شجاع
کی شادی مرزا رستم صفوی
شاہزادہ ایران کی لڑکی سے قرار
پا چکی تھی اور بیگم نے ان شادیون

शादियों का सामान अहमदाबा
द वग़ैरा में तैय्यार कराना शुरू क
रादिया था लेकिन उसके मरजाने
से ये काम ढीला पड़गया था अबकि
उस बात को २० महीने गुज़र चुके
थे इसलिये बादशाह ने पहिले दा
रा शिकोह की शादी करने को ऊ
क्त देकर कातक सुदी ६ सेनवार
को ११ घड़ी दिन चढ़े पीछे १ लाख रु
पया रोकड़ औ ५ लाख में आधेका
जवाहर और आधेका जेवर और
कपड़ा "साचक़" (बरी) के दस्तू
र से अफ़ज़ल खां दीवान कुल औ
र सादिक खां मीर बख़शी वग़ैरा उ
मीरों और मुमताज़ बेगम की मां ब
हन और चची वग़ैरा बेगमों के सा
थ बड़ी धूम धाम से शाहज़ादे पर
वेज़ की बीबी जहां बानू बेगम के मका
न पर जो शाहजादे मुराद की बेटी औ
र अकबर बादशाह की पोती थी बड़ी
धूम धाम से भेजी उसने ज़नाने और

کی زیب وزینت کا سامان
احمد آباد وغیرہ میں تیار کرانا شروع کر دیا
تھا لیکن اوس کے دفعتہً انتقال
کر جانے سے یہ کام ملتوی رہ گئے
تھے اب کہ اس واقعہ کو بیس
مہینے گذر چکے تھے اس لئے بادشاہ
نے پہلے شاہزادہ داراشکوہ
کی شادی کا سرانجام واجب
سمجھ کر روز یکشنبہ ۹ جمادی الاول
سنہ ۴۲ کو گیارہ گھڑی دن چڑھنے
کے بعد ایک لاکھ روپیہ نقد اور ایک
لاکھ میں آدہی کا جواہر اور آدہی کا زیور
وکپڑا برسم ساچق غلامی افضل خان
دیوان کل وصادق خان میر بخشی
وغیرہ امرا اور ممتاز زمانی بیگم
کی ماں بہن اور چچی وغیرہ بیگموں کے
ساتھ بڑی دہوم دہام سے جہان
بانو بیگم زوجہ شاہزادہ پرویز کے
مکان پر کہ جو شاہزادے مراد
کی بیٹی تھی بھیجا اوسنے زنانہ اور
مردانہ محفل ترتیب دے کر

मरदाने में खुशी की मेहफिलों करके बाहर और भीतर के आदमियों जो बरी के साथ गये थे बिना सिये कपडों के तोरे जैसे जिस के लायक थे दिये ॥

शाह बदी १० जुमे को बेगम साहेब यानी शाहज़ादी जहां आरा बेगम ने जो अपनी मां की जगह इस शादी की ज़िम्मेवार हुई थी उस बाद शाही महल में जो झरोके दरशन के आगे था परदा कराके वह तमाम सामान और असबाब कि जो उसकी मां और खुद उस ने शाहजादे के वास्ते तैयार कराया था सुबह से तीसरे पहर तक बादशाह को दिखाने के वास्ते बहुत अच्छी तरह से सजाया जो कुल १६ लाख रुपे का था ७ लाख के तो जवाहरात और जडाऊ रकमें थी और ४ लाख की सोने चांदी की चीज़ें और ४ लाख के ही हिन्दुस्तान ई

باہراور بھیتر کے آدمیون کو جو بری کے ساتھ گئے تھے بغیر سلے ہوے کپڑون کے تورے جیسے جس کے لایق تھے دیئے*

روز جمعہ ۲۴ رجب کو بادشاہزادی جہان آرا بیگم عرف بیگم صاحبہ نے جو اس شادی کی ذمہ وار ہوئی تھی ایوان شاہی میں پیش جھروکہ عام وخاص پردہ کراکر وہ تمام سازوسامان کہ جو اس شادی کے واسطے اوس کی مان اور خود اوس نے تیار کیا تھا صبح سے تیسرے پہر تک بادشاہ کے ملاحظہ کے لیے نہایت عمدہ ترتیب اور قرینے سے سجایا یہہ کل سولہ لاکھہ روپیہ کی مالیت کا تھا - جس میں سے سات لاکھہ روپیہ کے تو جواہرات اور جڑاو اشیاء تھے اور چار لاکھہ کے ہی ہندوستان

रान रूम और चीन और फरंगिस
तान के कीमती कपड़े और रंग २ के
मख़मली बिछौने और ज़री के प
रदे वग़ैरा थे और कई हाथी और
घोड़े मुलक २ के जिन की चांदी सो
ने के जड़ाऊ और ज़री की झूलें थीं
और १ लाख रुपया नक़द था =

जब बादशाह देखने को आये
तो बेगम साहिब ने डेढ लाख की ज
वाहरात पेशकश और जड़ाऊ चीज़ों
की नज़र की जो बादशाह ने कबूल
करके बेगम साहब की ऐसे उमदा
और कीमती सामानों के तैयार कर
ने की शाबाशी दी और बादशाह ज़ा
दियों और बेगमों और अमीरों की
औरतों व लड़कियों को १०० "तोरे"
जो बहुत तो ८ पारचे और थोड़े ७
पारचे के थे जिन में से अकसर के ऊ
पर कुछ २ जड़ाऊ चीज़ें रखी हुई थीं इ
नायत किये फिर शाम के वक़्त बेग
मों को तो महल में जाने की रुख़सत

ایران رُوم چین اور فرنگ کے
قیمتی کپڑے اور رنگ برنگ کے
مخملی فرش فروش اور سائبان -
زردوزی وغیرہ تھے اور کئی ہاتھی
اور کئی گھوڑے ملک ملک کے جنکے
چاندی سونے کے جڑاؤ زین اور دوسرے
سازوسامان تھے اور ایک لاکھ روپیہ نقد تھا
جب بادشاہ اوس کے دیکھنے کو
آئے تو بیگم صاحبہ نے ڈیڈھ لاکھ
روپیہ کی پیشکش جواہر اور مرصع آلات
سے گذرانی بادشاہ نے قبول کرکے
بیگم صاحبہ کو ایسے نفیس و نادر سامانوں
کے تیار کرانے پر بہت کچھ تحسین و آفرین
کی اور بادشاہ زادیوں بیگموں اور
امیروں کی عورتوں و لڑکیوں کے
واسطے سو تورے کہ اکثر نو پارچہ کے اور
کم سات پارچہ کے تھے اور بہتوں کے
اوپر کچھ نہ کچھ چیز مرصع آلات سے رکھی
ہوئی تھی عنایت فرمائی پھر شام کے
وقت بیگموں کو محل مقدس میں روانہ
کرکے امیروں کو بار عام دیا - اور

दी और अमीरों को हाज़री का आम
ऊक्म देकर ख़ास २ अमीरों को भारी
२ ख़िलत दिये जिनमें से यमीनुद्दौ
ला आसिफ ख़ां का ख़िलअत ६ पा
रचे, ४ कुब्ब, सुनहरी, जड़ाऊ, तलवा
र और ख़ंजर का था बाक़ी कुछ चार
कुब्ब सुनहरी, के कुछ फर्जी के और
कुछ जड़ाऊ ख़ंजर के औ बाज़े सादा
ख़िलअत ही थे इसी तरह गवैयों वग़ै
रा को सिर पांव और ईनाम मिले यह
सब ढाई लाख रुपै की कीमत के थे॥

दूसरे दिन यह तमाम कीमती
सामान शाहज़ादे दाराशिकोह के म
कान पर बड़े जलूस से बेगमों के सा
थ भेजा गया इसके पीछे जहेज़ का
वह सामान भी कि जो जहांबानू बे
गम ने अपनी बेटी के वास्ते तैयार
कराया था उसकी अर्ज़ से दौलत
ख़ाने ख़ास और आम में चुना गया
यह उस सामान के मुकाबिले में तो
कि जो बेगम साहब ने तैयार कराया

خاص خاص امیروں کو خلاع
فاخرہ عطا فرمائے ازانجملہ یمین الدولہ
آصف خاں کا خلعت نو پارچہ کا
معہ چار قب طلادوزی اور شمشیر و
خنجر مرصع کے تھا باقی کچھ معہ چار
قب طلادوزی و کچھ معہ فرجی کے
اور کچھ معہ خنجر مرصع کے تھے اور
بعضوں کو صرف خلعت ہی ملے
تھے اور ارباب نشاط کو سروپا
والنعام اور یہ سب ڈہائی لاکھ روپیہ
قیمت کے تھے ۔

دوسرے دن یہ تمام قیمتی
سامان شاہزادہ داراشکوہ کے
مکان پر بڑے جلوس سے بعض
بیگموں کے ساتھ بھیجا گیا اس کے
بعد وہ جہیز کا سامان بھی کہ جو
جہان بانو بیگم نے اپنی بیٹی کے
واسطے تیار کرایا تھا اوسکی عرض
سے دولتخانہ خاص و عام میں چُنا
گیا وہ اگرچہ اوس سامان کے
مقابلہ میں جو بیگم صاحبہ نے تیار

था कुछ न था तो भी बादशाह उसको
देख कर बेगम पर बड़त मेहरबान
ड़ए क्योंकि उसने जो कुछ खुदबर
सों से जोड़ा था और जो कुछ कि शाह
ज़ादे परवेज़ के घर में था वह सब उ
स में लगा दिया था॥

माह सुदी १ को दौलत खांने
खासमें मेहदी की मजलिस जुड़ी ज
हां बड़त सी बत्तियां जड़ाऊ लगनों
में रोशन की गई थी बादशाह ने पधा
रकर बख़शियोंको ड़क्म दिया कि स
ब अमीरों और वज़ीरों को दरजेबदर
जे बैठावें और गवैयों को भी गाना
गाने का ड़क्म दिया जो बेगम के म
रे पीछे अरसे करीब २ साल से बंद
था फिर औरतों ने कायदे के माफ़ि
क़ सब लोगों की उंगलियों पर मेह
दी लगाकर ऊपर ज़री के रुमाल
लपेटे और ज़र कशी के पटके बांटे
खिदमतगारों ने पान फूल अतर
नुक़ल और मेवे तरह २ के सजा ये

کرایا تھا کچھ نہ تھا تو بھی بادشاہ
اسکو دیکھ کر بیگم پر بہت مہربان
ہوئے کیونکہ اوس نے جو کچھ
خود برسون سے جمع کیا تھا اور جو
کچھ شاہزادہ پرویز کے گھر میں تھا
وہ سب اسمیں لگا دیا تھا

غرۂ شعبان کو دولت خانہ
خاص کے شاہ محل مین مجلس
حنابندان آراستہ ہوئی جہان
بہت سی شمعین جڑاؤ لگنون مین
روشن کی گئین تھین بادشاہ نے
تشریف فرما ہو کر بخشیوں کو حکم
دیا کہ سب امیرون اور وزیرونکو درجہ بدرجہ
بٹھاوین اور ارباب نشاط کو گانا گانے
کا حکم ہوا جو عرصہ قریب دو سال
سے بوجہ ماتم مہد علیا ممتاز الزمانی بیگم
کے بند تھا ۔ اور کدبانوان قاعدہ
دان،، نے رسم کے موافق اہل
مجلس کی انگلیوں پر مہدی لگا کر
اوپر زرین رومال لپیٹے اور زرتار کمربند
تقسیم کئے خدمتگاران بارگاہ جلال

फिरंग २ की आतिश बाज़ी जो दु
लहन की तरफ़ से जमना के किना
रे पर गडा थी छोड़ी गई॥

दूसरे दिन बादशाह के हुक्म
से शाहज़ादा शुजाअ, औरंगज़ेब, औ
र मुराद बख़्श, यमीनुद्दौला आसि
फ़ ख़ां, और बड़े २ अमीरों के साथ शा
हज़ादे दाराशिकोह के मकान पर
गये वहां मजलिस जुड़ी और सब
अमीरों ने अपने २ रुतबे के लाय
क़ शाहज़ादे को शादी की पेशकशें
दीं फिर शाहज़ादे को घोड़े पर सवा
र करके दौलतख़ाने ख़ास में बाद
शाह के पास लाये और सलाम क
राया बादशाह ने ख़ास ख़िलअत ज
ड़ाऊ जम धर जड़ाऊ तलवार, कि
जिसका परदला भी जडाऊ था औ
र मोतियों की माला जिसमें लाल भी
पिरोये थे और २ घोड़े सोने चांदी की
ज़ीन के ख़ासे तवेले से और १ ख़ास
हाथी हथनी समेत कि कुलकीं की

پان پہول طرح طرح کے میوے
نقل اور عطرخوانوں میں سجا کر لائے
پہر قسم قسم کی آتش بازی جو دولہن
کیطرفسے گاڑہی گیی تہی جمنا کے کنارے پر چہوڑی
دوسرے دن بادشاہ کے حکم سے
شاہزادہ شجاع اورنگ زیب اور مراد بخش
نے معہ یمین الدولہ وغیرہ بڑے بڑے
امیروں کے شاہزادہ داراشکوہ کے
مکان پر جاکر مجلس آراستہ کی جس
مین سب امیروں نے اپنے اپنے
رتبہ کے موافق بطور مبارکباد شادی
کے شاہزادہ کو پیشکشین دین پہر شاہزادہ
کو گھوڑے پر سوار کرکے دولتخانہ خاص
عام مین بادشاہ کا سلام کرانے کو لائے
بادشاہ نے خلعت خاصہ جمدہر مرصع
شمشیر مرصع کہ جسکا پردلا بہی مرصع
تہا اور موتیوں کی مالا جسمین قیمتی لعل
بہی پروئے ہوئے تہے اور دو گہوڑے
سونے اور چاندی کی زین کے طویلہ
خاصے سے اور ایک خاصہ ہاتہی
معہ چاندی کے ہودے اور ہتہنی

कीमत ४ लाख रुपै की थी शाहज़ा
दे को इनायत फरमा कर हिन्दु
स्तानी रस्म के माफ़िक वह जडाऊ
सेहरा भी उसके सिर पर बांधा कि
जब बादशाह की शादी हुई थी तो
जहांगीर बादशाह ने सिर पर बां
धा था जिस में बढ़िया कीमत के प
न्ने और लाल लटके हुये थे बाद
शाह ज़ादा आदाब बजा लाया इ
सी मजलिस में यमीनुद्दौला और
दूसरे बड़े २ अमीरों को भी दरजे
वार कीमती ख़िलअत और गवै
यों को इनाम और सिरो पाव इ
नायत हुए रात को दौलत ख़ाने
ख़ास के पाईं बाग़ और झरोके द
रशन के नीचे मैदान में रोशनी हु
ई और रोशनी की बहुत सी नावें
जमना में भी छोड़ी गईं और आति
शबाज़ी भी जो बादशाह की तरफ़
से जमना के किनारे गाड़ी गई थी
छोड़ी गई इस तरह जब ४ पहर

کے کہ کل کی قیمت چار لاکھ روپیہ
تھی عنایت فرماکر وہ جڑاو سہرا
بھی کہ جو جہانگیر بادشاہ نے بروقت
شادی بادشاہ کے سر پر باندھا تھا
اپنے ہاتھ سے شاہزادہ کے سر
پر بموجب رسم ہندوستان کے
باندھا شاہزادہ آداب بجا لایا
اس مجلس میں یمین الدولہ اور دوسرے
روشناس امیروں کو علے قدر مراتب
خلعت فاخرہ اور ارباب نشاط
کو انعام اور سروپا مرحمت ہوئے
رات کو پائین باغ دولت خانہ
خاص اور میدان زیر جھروکہ
درشن مین روشنی ہوئی
جمنا میں بھی بہت سی کشتیان
روشنی کی چھوڑی گئین پھر
آتش بازی جو بادشاہ کی طرف
سے دریا کے کنارے پر
گاڑی گئی تھی سر ہوئی اسی
طرح دو پہر اور چھ گھڑی رات
گذرنے پر جب شادی کی

और ६ घड़ी रात के गुज़रने पर ब्याह का महूरत आया जो यूनानी और हिन्दी ज्योतिष्यों ने निकाला था तो बादशाह ने क़ाज़ी मुहम्मद असलम को शाह बुरज में बुलाया उसने बादशाह के हज़ूर में निकाह पढ़ाया और ५ लाख रुपये का मिहर बांधा जो मुमताज़ बेगम का भी बांधा गया था

माह सुदी ६ को बादशाहज़ादे दारा शिकोह ने अपने मकान से बादशाही दौलत ख़ाने तक ज़री के और सादे मख़मल और दरयाई के थान बिछाकर बादशाह को बुलाया और उन के ऊपर सोना चांदी और जवाहरात निछावर करके १ लाख रुपै की पेशकश नज़र से गुज़रानी जिस में सरफ़राज़ नाम १ इराकी घोड़ा (जड़ाऊ ज़ीन) से काबिल सवारी बादशाह के था और बड़े २

ساعت آئی جو یونانی اور ہندوستانی منجموں نے اختیار کی تھی تو بادشاہ نے قاضی محمد اسلم کو شاہ برج میں بلایا اوس نے حضور میں نکاح کا خطبہ پڑھا پانچ لاکھ روپیہ کا مہر جو نواب ممتاز زمانی بیگم کا باندھا گیا تھا وہی اب بھی مقرر رہوا۔

۹ ماہ شعبان کو شاہزادہ داراشکوہ نے اپنے مکان سے بادشاہی دولت خانہ تک زرین اور سادہ مخمل اور دارائی کے پانداز بچھا کر بادشاہ کو بلایا سونے چاندی اور جواہرات نثار کر کے ایک لاکھ روپیہ کی پیشکش نظر سے گذرانی جس میں سرفراز نام ایک عراقی گھوڑا مع زین مرصع کے قابل سواری بادشاہ کے تھا پھر بڑے بڑے امیروں

अमीरों और हज़ूरी नोकरों के
ख़िलअत बादशाह कमुलाह
ज़े में पेश किये जो बादशाह के
हुक्म से हरेक को दिये गये य
मीनुद्दोला आसिफ़ खां का ख़ि
लअत २ पारचे का मय जड़ाऊ
तलवार के था और बाकी में से
कुछ तो मय ४ सोने के "कुब्बे" के
थे कुछ मय "फ़रज़ी" के थे और बा
की सादे थे अमीर पहले बादशा
ह के हज़ूर में आदाब बजा लाये
और फिर शाहज़ादे की ख़िदम
त में ॥

इस ब्याह से ३२ लाख रुप
ये ख़र्च हुये ६ लाख बादशाही
सरकार से १६ लाख बेगमसाह
बकी सरकार से और १० लाख
दुलहन की मां की तरफ़ से।

शाहज़ादे मुहम्मद
शुजाअ की शादी

फिर बादशाह ने ज्योतिशियों

اور روشناس ملازموں کے
واسطے خلعت بادشاہ کے ملاحظہ
میں پیش کیے جو بادشاہ کے حکم
سے ہر ایک کو دیے گئے یمین الدولہ
کے واسطے دو تقوز پارچہ معہ شمشیر
مرصع کے تھے اور کچھ عمدہ ہای
دولت کے لئے خلعت فاخرہ
معہ چارقب طلا دوزی کے اور
بعضے امرا کے خلعت معہ فرجی
کے اور باقی کے سادے تھے
امرا پہلے بادشاہ کے حضور
میں آداب بجالائے اور
پھر شاہزادہ کی خدمت میں -

اس شادی میں ۳۲
لاکھ روپیہ صرف ہوے انمیں سے
۶ لاکھ سرکار خالصہ سے ۱۶ لاکھ
بیگم صاحبہ کی سرکار سے اور دس
لاکھ دولہن کی طرف سے -

شادی شاہزادہ محمد شجاع

پھر بادشاہ نے نجومیوں کے افسر
حکیمت خان کو جو خود بھی علم نجوم

के अफ़सर मुकर्रमत खां को जो खु
द भी जोतिश बिद्या जानता था शा
हज़ादे शुजाअ की शादी का महूर
त निकालने के वास्ते हुक्म दिया
उसने यूनानी और हिन्दुस्तानी
ज्योतिषियों की सम्मति से फागुण
बदी ८ की रात का प्यारा भा पंकर
अर्ज़ की बादशाह ने बेगम साहेब
को हुक्म दिया उसने बहुत जल
दी सब सामान तैयार कर लिया
माह सुदी १० को १६०००० रुपये रो
कड़ और १ लाख की जिनस सादि
क खां मीर बख़्शी वग़ैरा अमीरों
और कुछ बेगमों के हाथ मिरज़ा रु
सतम के मकान पर भेजी गई॥

फागुण बदी ७ की रात को मिर
ज़ा के यहां से म्हेंदी आई और शाह
बुरज में उस की रसम अदा हुई मि
र्ज़ा की तरफ़ से तरह २ की आति
श बाज़ी छोड़ी गई इस मजलिस में
आसिफ़ खां वज़ीर तमाम बड़े २ अमीरों

سے بہرہ رکھتا تھا شاہزادہ شجاع
کی ساعت شادی مقرر کرنے کے
واسطے حکم دیا اوس نے ہندی
اور یونانی نجومون کے اتفاق سے
شب جمعہ ۲۳ شعبان مقرر
کرکے حضور میں عرض کی
بادشاہ نے بیگم صاحبہ کو حکم دیا
اونے بہت جلدی سب سامان
تیار کرلیا ۹ شعبان کو ایک
لاکھ ساٹھ ہزار نقد اور ایک
لاکھ روپیہ کی جنس برسم ساچق
صادق خان میر بخشی وغیرہ امرا
اور کچھ بیگموں کے ساتھ مرزا رستم صفوی
کے مکان پر بھیجی گئی۔ شب
پنجشنبہ ۲۲ شعبان کو مرزا
کے یہان سے مہندی آئی
اور شاہ برج مین اوسکی رسم ادا
ہوئی مرزا کی طرف سے طرح طرح
کی آتشبازی چھوڑی گئی اس
مجلس مین یمین الدولہ آصف خا
مع تمام بڑے بڑے امیرون

के साथ बैठा था सुबह को दौलत
ख़ाने ख़ास में परदाहो कर शादी
कासामान जो कुछ नो बेगम नेया
रकर मरी थी और बाक़ी बेगमसा
हिबने बनाया था बेगम साहिब
के हुक्म से सजाया गया यह १० ला
ख रुपये की कीमत का था हाथी
और घोड़े दौलत ख़ाने ख़ास और
आम में खड़े किये गये थे बादशाह
ने २ पहर के पीछे आमख़ास के झ
रोकों से उस तमाम सामान को दे
खा और बेगम साहिब की अरज़ प
र उसमें से १ लाख रुपये के जवाह
र और जड़ाऊ रक़में क़बूल फ़रमा
कर बेगमों को तोरे और अमीरों को
जोड़े पहिले के माफ़िक़ दिये फि
र वह सब सामान शाहज़ादे के म
कान पर पहुंचा दिया गया बादशा
ह पिछले दिन से फिर झरोके द
रशन में आये शाम को रोशनी की
गई शाहज़ादा औरंगज़ेब मुराद

کے بیٹھا تھا صبح کو دولت خانہ
خاص میں خلوت ہوکر اسباب بیاہ
جو کچھ تو ممتاز الزمانی بیگم تیار کر رہی
تھی اور باقی بیگم صاحب نے مہیا
کیا تھا بیگم صاحب کے حکم سے چنا
گیا یہ دس لاکھ روپیہ کی قیمت
کا تھا گھوڑے اور ہاتھی دولت خانہ
خاص وعام میں حاضر کئے گئے تھے
بادشاہ نے دوپہر کے بعد دولتخانہ
خاص وعام سے اوس سب سامان
کو دیکھا اور بیگم صاحبہ کی عرض سے
ایک لاکھ روپیہ کے جواہرات
اور مرصع آلات اوس میں سے
قبول فرمائے بیگموں کو تورے
اور امیروں کو خلعت بدستور
سابق عنایت کئے پھر وہ سامان
شاہزادہ کے مکان پر پہنچایا گیا
بادشاہ پچھلے دن سے پھر جھروکہ
درشن میں آئے شام کو روشنی
کی گئی شاہزادہ اورنگ زیب
مراد بخش اور یمین الدولہ وغیرہ

| | |
|---|---|
| बख़्श और आसिफ़ ख़ां वग़ैरा जा<br>कर शाहज़ादे शुजाअ को उसके म<br>हल से जहां बादशाह कंवर पदे में<br>रहा करते थे और जो जमना के ऊप<br>र बना था दरया किनारे के रस्ते से<br>हज़ूर में लाये बादशाह ने २ लाख<br>का ख़िलअत ख़ासा जड़ाऊ हथिया<br>र २ ख़ासा घोड़े और १ जोड़ा हाथी<br>का इनायत करके वुही सहरा जो<br>दारा शिकोह के बांधा गया था उस<br>के सिर पर अपने हाथ से बांधा उस<br>वक्त आतिश बाज़ी छोड़ी गई जब<br>लगन का समय आया तो काज़ी मु<br>हम्मद असलम ने शाह बुरज में बा<br>द शाह के सामने निकाह पढ़ा औ<br>र ४ लाख रुपये का मिहर बांधा फा<br>गुण सुदी १ को बादशाह शाहज़ा<br>दे के मकान पर गये शाहज़ादे ने<br>पा अंदाज़ और नज़र निछावर क<br>रके बहुत जवाहरात और जड़ाऊ<br>सामान नज़र किये और आसिफ़ | جا کر شاہزادہ کو اوسکے مکان<br>سے کہ جس مین بادشاہ بھی<br>ایام شہزادگی رہا کرتے تھے<br>اور جو جمنا کے کنارے پر واقع<br>تھا - براہ ساحل دریا بادشاہ کے<br>حضور میں لائے بادشاہ نے<br>دو لاکھ روپیہ کا خلعت خاصہ<br>مع اسلحہ مرصع دو گھوڑے خاصہ<br>اور ایک ایک ہاتھی و ہتھنی کے<br>مرحمت کرکے وہی سہرا - جو<br>دارا شکوہ کے سر پر باندھا گیا<br>تھا شجاع کے سر پر بھی اپنے ہاتھ<br>سے باندھا اوسوقت آتش بازی<br>چھوڑی گئی جب وہ ساعت<br>مختار آئی تو قاضی محمد اسلم نے<br>شاہ برج مین بادشاہ کے روبرو<br>نکاح کا خطبہ پڑھا اور چار لاکھ روپیہ<br>کا مہر باندھا -<br>سلخ شعبان کو بادشاہ شاہزادہ<br>کے مکان پر تشریف لے گئے شاہزادہ<br>نے پا انداز اور نثار کی رسم ادا کرکے |

खां वग़ैरा को भी खिलअत बाद
शाह के हुक्म के माफ़िक़ दिये
बादशाह ने खाना वहीं खाया और
पिछले दिन से दौलत खाने को पी
छे पधारे =

बादशाह ने तरबियत खां
को १ लाख रुपय की सौग़ात देक
र नज़र मुहम्मद ख़ां हाकिम बल
ख़ के पास भेजा ॥

चेत बदी १ को राजा जय सिं
घ अपने वतन से आया =

चेत बदी ८ को राजा गज सिं
घ ने वतन से हाज़िर होकर १ हाथी
और कुछ जड़ाऊ रकमें नज़र कीं =

चेत बदी ३ को राजा बिट्ठल
दास खिलअत ख़ासा पाकर अ
जमेर का फौजदार मिरज़ा मुज़
फ़्फ़र किरमानी की जगह हुआ

चेत सुदी १० को पृथ्वीराज
राठोड़ का मनसब जो दक्खन
में तइनात था असल और इज़ाफ़े

بہت سے جواہرات اور
مرصع آلات نذر کیے اور یمین الدولہ
وغیرہ کو بھی خلعت بموجب حکم
بادشاہ کے دیے بادشاہ نے طعام
خاصہ بھی وہیں تناول فرمایا اور پچھلے پہر
دن سے اپنے دولتخانہ میں مراجعت فرمائی
بادشاہ نے تربیت خاں کو
ایک لاکھ روپیہ کی سوغات دیکر
حاکم بلخ کے پاس روانہ فرمایا۔
۱۴- رمضان کو راجہ جیسنگھ
وطن سے معاودت کرکے حاضر
درگاہ ہوا۔
۲۲- رمضان کو راجہ گجسنگھ
نے اپنے وطن سے آکر ایک
ہاتھی اور کچھ جڑاؤ چیزیں پیشکش کیں
غرہ شوال راجہ بٹھلداس
کو خلعت خاصہ عنایت ہوکر خطہ
اجمیر کی فوجداری مرزا مظفر کرمانی
کے تغیر سے ملی۔
۲- شوال کو پرتھی راج راٹھور
کا منصب جو صوبہ دکن میں

से २हज़ारी ज़ात और ५०० सवार का होगया ॥

बैसाख बदी १२ को बादशाह ने सफ़दर ख़ां को ४ लाख की सोग़ात देकर ईरान के बादशाह शाह सफ़ी के पास भेजा ॥

जेठ बदी ३ को नवाब मुमतानुल ज़मानी बेगम के "उर्स के" दिन १ सोने का कटहरा ४० हज़ार तोले का जो ५ लाख रुपये की मत का था कबर पर चढ़ाया ॥

आगरे में हैज़ा शुरू हुआ उस में बादशाह की तजवीज़ से ज़हर मोहरे ख़ताई के देने से बीमारों को फ़ायेदा पहुंचा ॥

जेठ बदी १५ मंगल के दिन बादशाह ने झरोके दरशन के नीचे सूरत सुन्दर और सिधकर नाम २ जंगी हाथियों को लड़ाया शाहज़ादे दारा शिकोह शुजा और औरंगज़ेब तीनों भाई घोड़ों पर स

تعینات تھا اصل اور اضافہ سے دو ہزاری ذات و پانسو سوار کا ہو گیا

۲۵- شوال بادشاہ نے صفدر خان کو چار لاکھ روپیہ کی سوغات دیکر ایران کے بادشاہ شاہ صفی کے پاس روانہ کیا

۱۷- ذیقعدہ کو بروز عُرس نواب ممتاز الزمانی بیگم کے بادشاہ نے ایک سونے کا محجر وزنی ۴۰ ہزار تولہ قیمتی ۵ لاکھ روپیہ کا بیگم کے مزار پر چڑہایا

آگرہ میں ہیضہ شروع ہوا اوسکے معالجہ میں بادشاہ کی تجویز سے زہر مہرہ خطائی کا استعمال بہت مفید پڑا

روز سہ شنبہ ۲۹ ذیقعدہ کو بادشاہ نے جھروکہ درشن کے نیچے صورت سندر اور سدھکر نام دو ہاتھیوں کی لڑائی کرائی - شاہزادہ داراشکوہ شجاع اور اورنگ زیب تینون بھائی -

वार बादशाह की सवारी से कुछ
आगे बढ़ कर तमाशा देख रहे थे।
कि हाथी सिढ़कर अपनी जोड़ से
लड़ता २ एका एकी औरंगज़ेब के
ऊपर झपटा औरंगज़ेब की उस व
क्त सिर्फ़ १५ बरस की थी तौभी
उसके मसतक पर भाला मारा हा
थी ने अब उसके घोड़े के १ टक्क
र मारी घोड़ा लुढ़का तो औरंगज़ेब
गिर पड़ा उस वक्त बड़ी गड़बड़ हुई
शुजाअ घोड़ा दौड़ा कर गया लेकि
न घोड़े के गिर पड़ने से वह भी गि
र पड़ा तब राजा जय सिंघ उस हाथी
की तरफ़ दौड़ा मगर उसका घोड़ा
डरता था और हाथी के सामने न्हीं
आता था इस लिये उसने दाहिनी
तरफ़ से आकर उस पर बरछा मारा
इतने में सूरत सुनदर हाथी सिढ़
करके ऊपर दौड़ करके आया सिढ़
कर लौट कर उससे म्होरा करने की
फ़ुरसत न पाकर भागा और शाहज़ादे

گھوڑوں پر سوار بادشاہ کی سواری
سے کچھ آگے بڑھکر تماشا دیکھ رہے
تھے کہ سدھکر ہاتھی اپنے حریف
سے لڑتے لڑتے دفعتہً اورنگ
زیب کے اوپر جھپٹا اورنگ زیب
نے باوجودیکہ ابھی اس کی عمر
صرف پندرہ برس کی تھی اوسکی
پیشانی پر برچھا مارا ہاتھی نے بھی
اوسکے گھوڑے کے ٹکر ماری۔
گھوڑا لڑھکا تو اورنگ زیب گرپڑا
اوسوقت عجب ہنگامہ برپا ہوا شجاع
گھوڑا دوڑاکر آیا لیکن گھوڑے کے
گر پڑنے سے وہ بھی گر اب راجہ
جیسنگھ ولد مہا سنگھ بن جگت سنگھ
خلف راجہ مان سنگھہ جو معتمد خانہ زادوا
بادشاہی سے تھا اور راجہ مانسنگھ کا
جانشین اوس ہاتھی کے اوپر
دوڑا مگر اوسکا گھوڑا ڈرتا تھا اور ہاتھی
کے سامنے نہیں جاتا تھا اسلیئے اسنے
داہنی طرف سے آکر برچھا مارا اتنے میں
صورت سُندر بھی سدھکر کے اوپر

बचगया बादशाह ने अपनी सवा
री बढ़ाई और दोनों शाहज़ादों को
पोंछ पुचकार कर बहुत शाबाशी दी
जेठ सुदी ४ को जुमे के दिन १५
वीं सालगिरह शाहज़ादे औरंगज़ेब
की थी बादशाह ने दौलतखाने ख़ा
स में सोने से तोला ५००० अशरफियां
जो उसके बराबर चढ़ीं थीं हक़दारों को
तकसीम करदेने के वास्ते उसको इ
नायत फ़रमाई और ख़ासा खिल
अत जड़ाऊ जीगे समेत मोतियों की
माला जिसमें लाल और पन्ने लगेथे
जड़ाऊ कड़े हीरे के भुजबंद लाल या
कूत हीरे और मोती की अंगूठियां ज
ड़ाऊ ख़ंजर फूल कटारे समेत जड़ा
ऊ तलवार जड़ाऊ ढाल जड़ाऊ बर
छी २ तुरकी घोड़े जिनमें १ का तो ज़ी
न जड़ाऊ और दूसरे का सुनहरी मी
ना कार था सिङ्कर हाथी हथनी
समेत दिया कीमत इन सबकी ७
लाख रुपया थी हिन्दी और फारसी

उसको

دوڑ کر آیا اسد بکر لوٹ کر اوس سے
مہرہ کرنے کی مجال نہ پاکر بھاگا
شاہزادہ بچگیا بادشاہ نے اپنی
سواری بڑھائی پہلے شاہزادہ
اورنگ کو اور پھر شجاع کو چھاڑ چوم
کر گلے لگایا اور اُنکی جُرأت و ثابت
قدمی کی بہت تحسین اور آفرین کی۔
روز جمعہ ۲ ذی الحجہ کو کہ پندرہوین
سالگرہ بادشاہزادہ اورنگ زیب
کی تھی بادشاہ نے اوسکو دولتخانہ
خاص میں سونے سے تولا پانچہزار اشرفیان
جو اوسکے ہموزن ہوئین حقدارونکو
تقسیم کرنیکے واسطے اوسکو عنایت فرماکر
خلعت خاصہ معہ جیغہ مرصع اور موتیونکی
مالا کی جسمین لال و زمرد لگے تھے جڑاو
کڑے ہیرے کے بازوبند لعل
یاقوت ہیرے اور موتی کے انگوٹھیان
خنجر مرصع معہ پھولکٹارہ کے شمشیر
مرصع ڈہال مرصع برچھی مرصع دو
قبچاق گھوڑے کہ جسمین ایک کی
زین مرصع اور دوسرے کی سنہری

शायरों ने शाहज़ादे के हाथी से लड़ने की दास्तान को नज़्म और नसर में लिख कर इनाम पाये सईदा य गीलानी को किजिस का खिताब बेबदल खां था। इसी मज़मून पर १ उमदा मसनवी (काव्य) तयार करने के इनाम में बादशाह ने चांदी में तोला और ५००० जो उस की बराबर चढ़े थे उस को बख़शे॥

बादशाह नामे में लिखा है कि जब बादशाह ने शाहज़ादगी में शेर के तलवार मारी होतो शाहज़ादों से ऐसे काम होने का क्या अचंभा है॥

यह जहांगीर बादशाह के वक़्त की बात है कि १ दिन परगने बाड़ी में चीते का शिकार होता था और अनूपबड़ गूजर जो अकबर बादशाह के वक़्त से ख़ासे ख़िदमतगारों का अफ़सर था

مینا کارتھی اور سدہکر ہاتھی معہ ہتھنی کے کہ کل کی قیمت دو لاکھہ روپیہ کی تھی عطا فرمایا ہندی اور فارسی - شاعرون نے شاہزادہ کے ہاتھی سے لڑنے کی داستان کو نظم و نثر مین لکھہ کر انعام و اکرام پائے سعیدا ے گیلانی مخاطب بہ بے بدل خان اسی مضمون پر ایک مثنوی لکھنے کے انعام مین بادشاہ کے حکم سے چاندی مین تولا گیا پانچہزار روپیہ جو اوسکے برابر چڑھے تھے اوسکو بخشے گئے -

مصنف بادشاہ نامہ لکھتا ہی کہ جب بادشاہ نے شروع جوانی مین ایک بڑے شیر کو طعمہ شمشیر کیا ہو تو شاہزادون سے ایسے کارنمایان ہونیکا کیا تعجب ہے ع بود زادہ شیر هم شیر نر -

یہ جہانگیر بادشاہ کے وقت کی بات ہے کہ ایکدن پرگنہ باڑی مین چیتے کا شکار ہو رہا تھا اور انوپ بڈگوجر جو اکبر بادشاہ کے وقت سے خاص

"बाड़ा" यानी उन लोगों को जो शिकार में बादशाह के पास हाज़िर रहते थे लारहा था कि उसने शेर की हाल सुनी और वहां जाकर बाड़े वालों की मदद से उस को घेरा। और जहांगीर बादशाह को ख़बर भेजी उस वक्त दिन अस्त होचुका था और शिकारी हाथी भी साथ न थे तो भी बादशाह शिकार के शौक़ से घोड़े पर सवार होकर गये और शेर को देखकर घोड़े से उतरे - गोलियां मारीं मगर शेर के पूरा घाव नहीं लगा और वह जाकर १ नीची जगह में बैठ गया उस वक़्त सूरज डूब चुका था और बादशाह के पास सिवाये इन बादशाह (शाहजहां) राजा रामदास कछवाहा, अनूप बड़गूजर, एतमाद खां, हयात खां दरोगा आबदार ख़ाने, और कमाल किरावल के और कोई न था तो भी कई कदम आगे जाकर

خدمتگاروں کا افسر تھا باڑہ یعنی ان لوگوں کو جو شکار میں بادشاہ کے پاس حاضر رہتے تھے لا رہا تھا اُسنے شیر کی خبر سُنی اور وہاں جاکر باڑہ والوں کی مدد سے اوسکو گھیرا اور جہانگیر بادشاہ کو خبر بھیجی اوسوقت دن آخر ہوچکا تھا اور شکاری ہاتھی ساتھ نہ تھے تو بھی بادشاہ شکار کے شوق سے گھوڑے پر سوار ہوکر گئے اور شیر کو دیکھ کر گھوڑے سے اُترے اور دو گولیاں ماریں مگر شیر کے زیادہ کاری زخم نہ لگا اور وہ جاکر ایک نیچی جگہہ میں بیٹھ گیا اوسوقت سورج غروب ہوگیا تھا اور بادشاہ کے پاس سوائے ان بادشاہ (شاہجہان) راجہ رام داس کچھواہہ انوپ اعتماد رائے حیات خان داروغہ آبدار خانہ اور کمال قراول کے اور کوئی نہ تھا تو بھی چند قدم آگے جاکر پھر ایک بندوق ماری شیر

फिर १ बंदूक मारी शेर गोली खा
तेही बादशाह के ऊपर दौड़ा बाद
शाह ने फ़ौरन कमान खेंच कर १
तीर मारा मगर वह भी कारी न्हीं ल
गा और शेर गुस्से से अनूपबेड़गूजर से
आ भूमा जो उस वक्त बादशाह की
बंदूक लिये खड़ा था और उसको
गिरा दिया अनूप ने अपना १ हाथ
तो उसके मुंह में देदिया और दूस
रे से उसका गला पकड़ा बादशाह
(शाह जहां) ने जो शेर के दाहने त
रफ़ कुछ बढ़े हुये खड़े थे तलवा
र निकाल कर शेर की गरदन पर
मारनी चाही मगर वहां अनूप के
हाथ को देख कर कमर पर मारी
और इस फुरती से मियान में कर
ली कि सिवाये हयात खां के जो ।
एतमाद राये के साथ जहांगीर बाद
शाह की दहनी तरफ़ खड़ा था औ
र कोई खबरदार न हुआ बांई तर
फ़ राना रामदास खड़ा था उसने भी

گولی کہاتے ہی بادشاہ کے اوپر
دوڑا بادشاہ نے کمان کہنچکر ایک
تیر مارا مگر وہ بہی کاری نہین لگا شیر
غصے سے انوپ سے جو اوسوقت
بادشاہ کی بندوق لئے کہڑا تہا آ
جہوما اور اوسکو گرا دیا انوپ نے
اپنا ایک ہاتہ تو شیر کے منہ میں
دیدیا اور دوسرا اوسکے شانہ میں
حائل کیا بادشاہ (شاہجہان) نے
جو شیر کے دہنی طرف بڑہے ہوئے
کہڑے تہے یہ حال دیکھ کر تلوار
نکالی اور شانہ پر مارنا چاہی مگر پہر
انوپ کا ہاتھ دیکھ کر شیر کی کمر
میں ماری اور اس پہرتی سے
میان میں کر لی کہ سوائے
حیات خان کے جو اعتماد رائے
کے ساتہ جہانگیر بادشاہ کے
دہنی طرف کہڑا تہا اور کوئی مطلع
نہوا آپ کے بائیں طرف راجہ
رام داس کہڑا تہا اوس نے
بہی شیر کے ایک تلوار ماری

शेर के ३ तलवार मारी और कई ला
लियां हयात खां ने भी जडीं तब
वह अनूप को छोड़ कर चल नि
कला फिर तो लोगों ने घेर कर मा
र लिया हयात खां ने बादशाह
(शाहजहां) की फुरती और बहादु
री की अर्ज़ जहांगीर बादशाह से
की उन्हों ने अपने हाथ से वह खू
न भरी तलवार निकाल कर दे
खी और बहुत शाबाशी दी अनूप
को अनिराय सिंघ दलन का खि
ताब बख़शा और उसका मनसब
भी बढ़ाया ॥

जेठ सुदी १२ को ईद के दिन
बादशाह ने हिरदेराम के बेटे ज
गराम को हाथी इनायत किया

फतह खां के ताबे होजाने से
बादशाह ने वह किले और पर
गने जो साहू जी को दिलाये थे
फिर उससे ले कर फतह खां को
देदिये इस बात से साहू जी नाराज़

اور کئی لاٹھیاں حیات خان
نے بھی جڑین تب وہ انوپ
کو چھوڑکر چلا پھر تو لوگوں نے
ہجوم کرکے مار لیا حیات خان
نے بادشاہ (شاہجہان) کی
پھرتی اور بہادری کی جہانگیر
بادشاہ سے عرض کی انہون نے
اپنے ہاتھ سے وہ خون بھری
تلوار غلاف سے نکالکر دیکھی
اور بہت تحسین آفرین کی انوپ
کو انی راے سنگھ دلن کا خطاب
بخشا اور اوس کے منصب
میں بھی اضافہ فرمایا۔

عید کے دن ہردے رام
کا بیٹا جگ رام عنایت فیل سے
سرفراز ہوا۔

فتح خان کے مطیع ہوجانے
سے بادشاہ نے وہ قلعے اور
پرگنے اوسکے جو ساہوجی کو دلائے
تھے پھر ساہو سے تغیر کرکے اوسکو
دیدیے اسپر ساہوجی ناراض

होकर आदिल ख़ां से जा मिला
आदिल खां ने उसके साथ १ लश
कर दौलताबाद फतह करने को
भेजा फ़तह ख़ां ने उसका आना
सुन कर ख़ान ख़ानां (महाबत
ख़ां) से कह लाया कि मैं किला
तुम को देदूंगा खान ख़ानां ने अ
पने बेटे ख़ान ज़मां को जुग राज
और खीलू जी के साथ भेजा घाटे
में आदिल खां की फौज रस्ता रोके
हुये थी मगर मुक़ाबिले के वक्त
रणदूला तो जो आदिल खां की फौ
ज का अफ़सर था टल गया और
साहू जी लड़ा तब ख़ान ख़ानां ने
खुद राव शत्रु साल के साथ जाक
र उसको हराया फ़िर रणदूला
और साहू जी ने फ़तह खां से यह
कौल किया कि हम किला तेरे
ही पास रहने देंगे बल्कि रसद
और रुपया भी पहुंचावेंगे इस प
र फतह खां उनसे मिल गया ख़ान

ہوکر عادل خاں سے جا ملا۔
عادل خاں نے اوسکے ساتھ
ایک لشکر دولت آباد فتح کرنیکو
واسطے بھیجا فتح خان نے اوسکی
آمد سنکر خان خانان سے
کہلایا کہ میں قلعہ تمکو دیدونگا
خان خاناں نے اپنے بیٹے
خان زماں کو بھیجا جگراج اور
کھیلوجی اوسکے ساتھ گئے گھاٹ
مین عادل خاں کی فوج راستہ
روکے ہوئے تھی مگر مقابلہ جنگ
میں رندولہ توٹل گیا اور ساہو
جی لڑا خانخانان خود معہ راو
سترو سال کے اوسکے مقابلہ
کو آیا اور شکست دی ۔ اب
رن دولہ اور ساہوجی نے فتح خاں
سے عہد کر لیا کہ قلعہ تیرے
پاس ہی رہنے دینگے اور رسد
و روپیہ بھی تجھکو پہونچاوینگے۔
فتح خان ان سے مل گیا خان
خانان نے اوس کے نقض

खानां ने उसके बदल जानेसे ख़
फ़ा होकर अपने बेटे खानज़मां को
किला फ़तह करने का हुकम दि
या उसने हमला करके पहले तो
खीलूजी मालूजी भी क़ाजी और य
सवंतराव की मदद से साहू जी को
निज़ामपुर से भगाया फिर दौल
ताबाद को घेर कर मोरचे लगाये"
बना कचहरी का मोरचा जो किले
के पीछे था राजा बिक्रमाजीत जु
गराज के ज़िम्मे हुआ॥

घेरे की खबर सुन कर खान
खानां भी वहां गया पिरथवी राज रा
ठोड़ और ऊदाजी राम उस के साथ थे

चेत बदी १ को रज़ा दूला वग़ैरा
अपने आदमियों को रसद पहुंचा
ने के वास्ते जो किले में थे आये खा
न खानां ने अपने बेटे दिलेर हि
म्मत को ऊदाजी राम बहादुरजी
और जुगराज बुंदेले के साथ उनके
मुकाबिले को भेजा यह उनसे लड़े

عہد سے خفا ہو کر خان زمان نے
اپنے بیٹے کو دولت آباد فتح
کرنیکا حکم دیا اوسنے حملہ کرکے
اول تو نظام پور سے بمدد کہیلا
جی مالوجی اور یسونت راؤ کہونکی
ساہوجی کو بہگایا اور پہیر دولت آباد
کو گھیرا ایک مورچہ بنا کچہری
کا جو قلعہ کے پیچہے ہے
راجہ بکرماجیت کے حوالہ
ہوا یہ سن کر خانخانان
بھی آیا پرتھی راج راٹھوڑ اوسکے
غولمین اور اوداجی رام معہ اپنے بھائی
بندونکے چنداول میں تہا۔

۱۴- رمضانکو رن دولہ
وغیرہ اپنے آدمیون کو رسد
پہونچانے کے واسطے جو
قلعے میں تھے لشکر کے
پاس آئے خانخانان نے
اپنے بیٹے دلیر ہمت کو معہ
اوداجی رام بہادرجی اور
جگراج بندیلہ کے اونکے مقابلہ پر بہیجا

तो भी आधी रात को रण दूला, फ़रहाद, बहलोल, साहू जी और अंकस ५००० सवारों से ख़ान ज़मां के डेरे पर आ पड़े ख़ान ज़मां तो मोरचों पर गया हुआ था और राव शत्रूसाल को डेरे की हिफ़ाज़त पर छोड़ा गया था सो राव शत्रूसाल और उसके राजपूतों ने बहादुरी के साथ मुकाबिला करके बहलोल और बहुत से दखनियों को मार डाला और बाकी को भगा दिया

तीसरे दिन फिर दखनी याकूत हबशी के साथ २ पहर के वक्त दिलेर हिम्मत के डेरे पर चढ आये दिलेर हिम्मत भी उन के सामने हुआ उस वक्त १ सवार ने कि जिसको बड़ा घमंड था दुशमन की फ़ौज से निकल कर पृथ्वीराज राठौड़ को लड़ने के वास्ते बुलाया पृथ्वी राज भी दिलेर हिम्मत की दहनी अनी

یہ اُن سے لڑے آدھی رات کو رن دولہ فرہاد بہلول ساہوجی اور انکس چار ہزار سواروں سے خان زمان کے ڈیرے پر آئے خان زمان تو ستروسال ہاڈہ کو ڈیرہ کی محافظت پر چھوڑ کر مورچوں میں گیا ہوا تھا اور ستروسال وہاں موجود تھا اوس نے معہ اپنے راجپوتوں اور خاں زمان کی سپاہیوں کے جنگ کر کے بہلول کے بھتیجے اور بہت سے دکھنیوں کو مار ڈالا جو باقی بچے وہ بھاگ کر چھوٹے۔

تیسرے دن پھر دکھنی یاقوت حبشی کے ساتھ دوپہر کے وقت خانخان کے بیٹے دلیرہمت کے ڈیرے پر چڑہ آئے دلیرہمت بھی اُنکے مقابل ہوا اس اثنا میں ایک سوار فوج غنیم سے باہر نکلا اور اُسنے پرتھی راج کو لڑنے کے واسطے بُلایا پرتھی راج کہ جو دلیرہمت کے دہنی ہاتھ کی فوج میں تھا نکل کر

से निकल कर उसके रूबरू गया जब लड़ाई शुरू हुई तो पृथ्वी राज ने तलवार से उसको मार डाला इस पर रणदूला वग़ैरा पृथ्वी राज के ऊपर चढ़ आये तब ख़ान ख़ानां के तीसरे बेटे लहरास्प ने अपनी फौज के साथ पृथ्वी राज के शामिल होकर दुशमनों को मार भगाया॥

ख़ान ख़ानां ने ज़फ़र नगर से रसद लाने के वास्ते राव दूदा को मुबारिज़ खां के साथ भेजा और फ़िर दखनियों का उसतरफ़ जाना सुनकर ख़ान ज़मां को भी राव शत्रुसाल समेत रवाने किया वह खिड़की में पहुंच कर साहू और बहलोल वग़ैरा से लड़ा और उनको हटा कर रसद लशकर में लेआया॥

चैत बदी १० को खीलोजी जो पांच हज़ारी ज़ात और ५ हज़ार

اوس کے مقابل ہوا جب لڑائی شروع ہوئی تو پرتھی راج نے اوسکو تلوار کے ایک ہی ہاتھ مین مارڈالا اس پر رندولہ وغیرہ نے پرتھی راج کے اوپر حملہ کیا تب خانخانان کا تیسرا بیٹا لہراسپ اپنی فوج کے ساتھ جاکر پرتھی راج کے شامل ہوگیا اور بالاتفاق جنگ کرکے دشمنوںکو بہگا دیا۔

خانخانان نے ظفرنگر سے رسد لانے کے واسطے راؤ دودا کو مبارزخان کے ساتھ بہیجا۔ اور پہر دکھنیوں کا ادہر جانا سنکر خان زماں کو بہی معہ راؤ ستروسال کے روانہ کیا اوسنے کھڑکی میں پہونچکر ساہو و بہلول وغیرہ کو بعد جنگ شکست دی اور رسد لشکر میں لے آیا۔

۲۳۔ رمضان کو کہیلوجی جو پانچہزاری پانچہزار سوار کا منصب رکھتا تہا اس خیال سے کہ نظام شاہ

सवार का मनसब रखता था इस
ख्याल से कि निज़ाम शाह के लो
ग डोलता बाद के फतह होजाने
से तबाह हो जावेंगे याकूत हबशी
के माफ़िक भाग कर उधर चला
गया लेकिन उसका भाई मालूजी
और परसूजी खानखानां के पास
मोजूद रहे और खान खानां ने उ
न को खिलअत हाथी और खर
च वगैरा देकर राज़ी रखा ॥

चैत बदी १४ को फिर दख
नी किले तक आपहुंचे थे कि प
हाड़ सिंघ वगैरा कई मोरचे वा
लों की मदद पर जाकर उन को
भगा दिया वे भागते हुये नाज
की पोटें मुर्तिज़ा खां और जुगराज
के मोरचों में इस नज़र से डालगये
कि अंदर वाले आसानी से उठाले
जावें खान खानां ने जुगराज से क
हिलाया कि मोरचे को मज़बूत
करके ऐसा बंदोबसत करें कि -

بعد فتح ہوجانے دولت آباد
کے برباد ہوجاوینگے مثل یاقوت
حبشی کے بھاگ کر اودھر چلا گیا
لیکن اوس کے بہائی مالوجی
اور پرسوجی بدستور خان
خانان کے پاس موجود
رہے اور خانخانان نے
انکو خلعت اسپ ہاتھی
اور مدد خرچ دے کر راضی
رکھا +

۱۴- کو پہر دکھنی ظاہر ہوکر
قلعہ دولت آباد تک پہونچ
گئے پہاڑ سنگھ بندیلہ اور کئی
امیروں نے مورچوں کی
مدد پر جا کر انکو بہگا دیا مگر وہ
غلہ کی گونین مرتضی خان
اور جگ راج کے مورچوں
میں ڈال گئے کہ اندر والے
آسانی سے اوٹھالیجاوین -
خان خانان نے جگراج
سے کہلایا کہ مورچوں کو مضبوط

रसद भीतर न जा सके जुगराज ने ऐसा ही किया कि जब अंदर वाले रसद ले जाने लगे तो उनको किले में भगा कर रसद छीन ली दखनियों ने पीछे जाते हुए खान खानां के पोते खान ज़मां के बेटे शुकुरुल्ला से फ़िर १ मुठभेड़ की उसमें दलपत राये राठोड़ के बेटे महेश का जमाई जगन्नाथ जो खान खानां के इज़्ज़तदार राजपूतों से था बहादुरी के साथ लड़कर काम आया =

ऊदाजी राम दखनी जो ५ हज़ारी ५ हज़ार सवार का मनसबदार था मरगया उसका बेटा जगजीवन छोटा था तोभी खान खानां ने उसको ३ हज़ारी ज़ात और २ हज़ार सवार का मनसब दिलाया कि जिसमें ऊदाजी राम का लशकर बिखरने न पावे =

चैत सुदी ७ को खान खानां ने खान ज़मां को राव शत्रु साल हाडा

اور قلعہ میں نہ پہنچنے دے جگراج نے مورچوں کا بندوبست کرکے دشمنوں کو تیر اور تلوار کی ضرب سے قلعہ کے اندر کر دیا اور غلہ پر اپنا قبضہ کر لیا۔

دکھنیوں نے واپس جاتے ہوئے خان خاناں کے پوتے خان زمان کے بیٹے شکر اللہ سے پھر ایک مقابلہ کیا اوس میں دلپت راٹھوڑ کے بیٹے مہیش کا داماد جگناتھ جو خان خانان کے معتبر راجپوتوں سے تھا بہادری سے لڑ کر کام آیا۔

اوداجی رام دکھنی جو پانچہزاری ذات اور پانچہزار سواروں کا منصب رکھتا تھا مر گیا اوس کا بیٹا جگ جیون بچہ تھا تو بھی خان خانان نے اوسکے واسطے تین ہزاری ذات اور دو ہزار سوار کا منصب تجویز کیا تاکہ اوداجی رام کا لشکر متفرق نہو۔

۸ شوال کو خانخانان نے

और राव करन के साथ दुशमनों
के डेरे लूटने को भेजा वह लड़क
र बहुत सी लूट ले आया

चेत सुदी ११ को सुरंग से २६
गज़ दीवार किले दौलताबाद की
उड़ाई गई नसीरी खां किले में जा
ने को रुखसत हुआ खान खानां
ने महेशराठोड़ को भी अपने नौक
रों के साथ भेजा किले वाले उस
टूटी हुई दीवार पर आकर खूब
लड़े नसीरी खां ज़खमी हुआ उस
वक्त बादशाही अमीरों ने बायें हा
थ की तरफ से हल्ला करके कि
ला ले लिया खैरयत खां बीजापु
री भाग कर महा कोट की खाई
में जा छुपा ॥

खानखानां ने अंबरकोट
में आकर महा कोट के घेरने को
फ़ौज भेजी उस में राजा पहाड़सिं
घ बुंदेला और संग्राम भी था खा
न खानां ने मालूजी और जगजीवन

خان زمان کو دشمنوں کی بنگاہ
لوٹنے کے واسطے بھیجا اور وہ
موضع اہل اور اہل میں سے
بہت کچھ لوٹ لے کر آیا وہان
کچھ لڑائی بھی ہوئی تھی۔

۹۔ شوال کو سرنگ سے ۲۶
گز دیوار قلعہ کی اوڑائی گئی نصیری
خان اپنے آدمیوں کے ساتھ
قلعہ میں جانے کو رخصت ہوا
خان خانان نے مہیش راٹھوڑ
کو بھی اپنے نوکروں کے ساتھ
بھیجا قلعہ والے اوس ٹوٹی ہوئی
دیوار پر آکر خوب لڑے نصیری
خان زخمی ہوا اوس وقت بادشاہی
امیروں نے راست و چپ سے
حملہ کرکے قلعہ لے لیا خیریت خان
بیجاپوری مع دوسرے قلعہ والونکے
بھاگ کر مہاکوٹ کی خندق مین جا چھپا۔
خانخانان نے عنبرکوٹ میں جاکر
مہاکوٹ کی گھیرنے کو فوج بھیجی اسمین
پہاڑ سنگھ راجہ سارنگ دیو کشن سنگھ

न को बाहर के मोरचों पर छोड़ा
या राव शत्रू साल और राव करण
को अंबर कोट के बाहर उनके
मोरचों में रक्खा था मगर जब सुना
कि खीलू जी और बहलोल वग़ैरा
बराड और तिलंगाने की तरफ़
फ़साद करने के इरादे से जाया
चाहते हैं तो ख़ान ज़मां ने राव श
त्रूसाल और राव करण को उ
न्हें सज़ा देने और लशकर में र
सद पहुंचाने के वास्ते भेजा ॥

बैशाख बदी १ को रणदूला
और साहू जी ३००० पोटें नाज की
किले वालों के वास्ते लेकर आ
ये मगर मालूजी, राव दूदा, पृथ्वी
राज और महेसदास, वग़ैरा बादशा
ही अमीरों ने लड़ कर उससे वह
नाज छीन लिया

बैशाख बदी १४ को खैर
यत ख़ां और दोलू नाग पंडित
रात के वक़्त मालू जी की मारफ़त

مدن سنگھ بہدوریہ اور سنگرام
بائیں ہاتھ کی صف میں تھے
خانخانان نے مالوجی اور جگ
جیون کو باہر کے مورچوں پر
چھوڑا تھا اور شترو سال اور راؤ کرن
کو عنبر کوٹ کے باہر انکے مورچوں میں
رکھا تھا مگر جب سنا کہ کھیلوجی اور
بہلول وغیرہ براڑ اور تلنگانہ کیطرف
فساد کرنیکے ارادہ سے جایا چاہتے
ہیں تو خانزمان نے راؤ شترو سال اور
راؤ کرن کو اونکی سزادہی اور رسد
رسانی کے واسطے بھیجا۔

۱۷ کو رن دولہ اور ساہوجی
تین ہزار پوٹیں اناج کی قلعہ
والوں کے واسطے لیکر آئے مگر
امرائے بادشاہی نے کہ جنمیں
مالوجی راؤ دودا پرتھی راج اور مہیش
داس بھی تھے لڑکر اونسے غلہ چھین لیا

۲۷ کو خیریت خان و دو لو
ناگ پنڈت رات کے وقت
معرفت مالوجی کے خانخانان

खान खानां से कौल नामा लेकर महाकोट से उतर आये और खान खानां ने खिलअत देकर बादशाह का फ़रमान दिखाया जिसमें लिखाथा कि जलदी उधर कूंच होगा और उनको आदिल खां की तसल्ली करने के वास्ते भेजा किले में फ़क़त फ़तह खां और तानाजी रहगये थे हमीरराव मोहनया दुशमन के लशकरसे बादशाही लशकर में हाजिरहोगया ॥

जेठ बदी १० को आदिल खां के वज़ीर मुरारी पंडित ने रणदूला और साहू जी को तो खान ज़मां के मुकाबिले पर भेजा और आप याकूत के साथ खान खानां के मोरचे पर आया खान खानां ने राव दूदा और पृथ्वी राज से कहा कि अपने मोरचों से बाहर निकलकर सवार खड़े रहें और दिलेर हिम्मत

سے امان نامہ لے کر مہاکوٹ سے اتر آئے اور خانخانان نے خلعت دیکر بادشاہی فرمان دکھلایا جس میں لکھا تھا کہ عنقریب ادودھر کوچ ہوگا اور انکو واسطے استمالت عادل خاں کے بھیجا قلعہ میں فقط فتح خان اور تاناجی دوڈیہ رہگئے تھے ہمیراو موہنیہ غنیم کے لشکر سے بادشاہی لشکر میں حاضر ہوگیا -

۲۴ - ذیقعدہ کو مراری پنڈت وزیر عادل خان نے رن دولہ اور ساہوجی کو تو خان زمان کے مقابلہ پر بھیجا اور آپ معہ یاقوت کے خانخانان کے مورچہ پر آیا خانخانان نے راؤ دودا اور پرتھی راج کو کہا کہ اپنے مورچوں سے باہر نکل کر سوار کھڑے رہیں اور دلیر ہمت کو معہ چند رہبان

को चंद्र भान के साथ भीतर के मो
रचे में छोड़ा और आप किले से बा
हर आकर जहां राव दूदा खड़ा
हुआ था अथा इतने में उदय पुर
राणां जी के आदमी भी जिनको
खान ख़ानां ने भोपत के साथ मद
द के वास्ते भेजा था आपहुंचे ग़नी
मने राव दूदा के पास लड़ाई शुरू
की खान ख़ानां उसके ऊपर गया
मालूजी, परसूजी, राव दूदा, औ
र राणाजी के आदमी भी गये औ
र ग़नीम को हटा दिया अब मुबा
ज़र खां पहाड़ सिंघ और जुग राज
भी पहुंच गये थे खान ख़ानां ने मु
बाज़र खां और पहाड़ सिंघ को ग़
नीम के पास भेजा और आप ल
ह रास्प के ऊपर मुरारी पंडित के
हल्ला करने का हाल सुन कर
जुगराज और राणाजी के आदमि
यों के साथ लहरास्प की मदद
को गया राव चांदा के पोते राव

کے اندر کے مورچہ میں چھوڑا اور
آپ قلعہ سے مقابلہ کے واسطے
باہر آکر جہاں راؤ دودا کھڑا تھا
آیا اس اثنا میں رانا اودیپور
کے آدمی بھی کہ جنکو خانخاناں
نے بھوپت کی سرداری میں
خان خانان کی مدد پر بھیجا تھا
آپہونچے غنیم نے راؤ دودا سے
لڑائی شروع کی خان خانان
مقابلہ کو گیا مالوجی پرسوجی راؤ
دودا اور رانا کے آدمی بھی
گئے اور غنیم کو ہٹا دیا اب مبارز
خان پہاڑ سنگھ و جگ راج
بھی پہونچ گئے خانخانان نے
مبارز خان و پہاڑ سنگھ کو
غنیم کے پیچھے بھیجا اور آپ
مراری پنڈت کی حملہ آوری
کا حال سنکر لہراسپ کی مدد
کو معہ جگراج اور رانا کے
آدمیوں کے گیا راؤ چاندا
کے پوتے راؤ دودا

दूदा चंद्रावत के कई भाई बंद लड़ाई में मारे गये उनकी लाशें लाने के वास्ते उसने ख़ान ख़ानां से इजाज़त मांगी ख़ान ख़ानां जानता था कि अभी दुशमन की फ़ौजें जगह २ खड़ी हैं और लड़ाई हर तरफ़ होरही है इसलिये उसने राव को जाने से मना किया मगर उसकी मौत आपहुंची थी इस सबब से उसने सिपेसालार का कहना नहीं माना और मालूजी के साथ अपने आदमियों की लाशें उठाने को गया ज्यों हीं कि ख़ानख़ानां की फ़ौज नज़र से ओझल हुई दुशमन ने मौक़ा पाकर बहुत सी फ़ौज के साथ राव दूदा को आघेरा राव और उसके थोड़े से आदमियों ने जो बचाव का रस्ता बंद देखा तो घोड़ों से उतर कर लड़ाई की और बहादुरी के साथ जान दी ॥

फ़िर याकूत अंबर और खीलूजी ख़ान ख़ानां से लड़ने को आये

چندراوت کے کئی بھائی بند لڑائی مین کام آئے راو دودا نے انکی لاشین لانے کے واسطے خانخانان سے اجازت چاہی خانخانان جانتا تھا کہ ابھی دشمن کی فوجین جگہہ جگہہ قایم ہین اور لڑائی ہورہی ہے اسلیئے اس نے راو کو جانے سے منع کیا مگر اسکی موت آپہنچی تھی اس سبب سے اسنے سپہ سالار کا کہنا نہین مانا اور مالوجی کے ساتھ اپنے آدمیون کی لاشین اٹھانے کو گیا جون ہی کہ خانخانان کی فوج نظر سے غائب ہوئی غنیم قابو پاکر ہر طرف سے راو دودا کے اوپر آگرا راو اور اوسکے تھوڑے سے آدمیون نے جو بچاو کا راستہ بند دیکھا تو گھوڑون سے اترکر لڑے اور بہادری کے ساتھ کام آئے۔

پھر یاقوت عنبر اور کھیلوجی خانخانان کے مقابلہ کو پہونچے۔

मुरारी पंडित भी उनके पीछे था । खान खानां ने राना जी के भतीजे भोपत को तो याक़ूत के मुक़ाबिले पर भेजा और जुगराज से जो पीछे आताया कहलाया कि जलदी आ कर शामिल हो उसने कहा कि नदी उतरने में देर होगी मगर खान खानां ने तो हल्ला करदिया बड़ी सख़्त लड़ाई हुई ग़नीम हारा और याक़ूत हबशी मारा गया ॥

जेठ बदी ११ को ख़ान ख़ानाँ ने मुरारी पंडित के ५ कोस हट जाने की ख़बर सुनकर ख़ान ज़मां को निज़ामपुर की तरफ़ भेजा तब । रणदूला और साहू जी ने मुरारी पंडित के हुकम से उस पहाड़ी परके ख़ान ज़मां का मोरचा क़बज़ा कर लिया ख़ान ख़ानां ने लहरास्प और पहाड़ सिंघ को भेजा और जुगराज बुंदेले को भी कहलाया कि घाटी के रस्ते से कि जो उसके डेरे के पास

مراری پنڈت اُنکے پیچھے تھا خانخانان نے راناجی کے بھتیجے بھوپت کو یاقوت کے مقابلہ پر بھیجا جگ راج پیچھے رہ گیا تھا اُس سے کہلایا کہ جلد آکر شامل ہو اوسنے کہا کہ ندی حایل ہے اُترنے مین دیر ہوگی مگر خانخانان نے حملہ کر دیا بعد ایک سخت لڑائی کے غنیم کی شکست ہوئی اور یاقوت حبشی مارا گیا۔

۲۵-کو خانخانان نے مراری پنڈت کے پانچ کوس ہٹ جانے کی خبر سنکر خانزمان کو نظامپور کیطرف بھیجا تب رندولہ اور ساہو جی نے مراری پنڈت کے حکم سے اُس پہاڑی پر کہ خانزمان کا مورچہ تھا قبضہ کرلیا خانخانان نے لہراسپ اور پہاڑ سنگھ کو روانہ کیا اور جگراج بندیلہ کو کہلایا کہ گھاٹی کے راستے سے کہ اوسکا ڈیرہ پاس ہے

है निकल कर दुशमनों को सज़ा दे
फ़िर नसीरी ख़ां पहाड़ सिंघ और ल
हरास्प ने जा कर ग़नीम को भगा दिया॥

फिर महा कोट की दीवार।
बारूद से उड़ाई गई फ़ौज अंदर घु
सी उसमें संग्राम भी था॥

निज़ाम शाह के एक अमीर म
हल दार ख़ां ने जो क़िल्ले बनाती का
क़िल्लेदार था क़िल्ले कालने में आ
कर ख़ानख़ानां से क़िल्ले बनाती के
सौंप देने को कहलाया ख़ान ख़ानां
ने जवाब दिया कि साहू और रण
दूला की छावनी बेज़ा पुर में है जो
तू उस को लूट ले तो हम को तेरी ख़ै
र ख़्वाही का भरोसा हो सो महल
दार ख़ां ने साहू की छावनी लूट कर
साहू की औरतों और लड़के बालों
को जो उस वक़्त जुनेर से आगये थे
पकड़ लिया ४०० घोड़े डेढ़ लाख
हूण और बहुत सा माल असबाब
तो साहू जी के डेरों से और १२ हज़ार

نکلکر مفسدونکو سزا دی پس
نصیری خان پہاڑ سنگھ اور لہراسپ
نے جاکر غنیم کو بھگا دیا۔

بعد مہاکوٹ کی دیوار بارود
سے اڑائی گئی فوج اندر گھسی
اُسمین سنگرام بھی تھا۔

نظام شاہ کے امیر محلدار خان
نے جو قلعہ نباتی کا قلعدار تھا
قلعہ کالنہ مین آکر خانخانان
سے واسطے سپرد کرنے نباتی
کے کہلایا خانخانان نے
جواب دیا کہ ساہو اور رندولہ
کی بنگاہ بیضاپور مین ہے اگر
تو اسکو لوٹ لے تو تیری دولتخواہی
کا یقین ہو ساہو کی عورتین اور
لڑکے بالے او سیوقت جنیر سے
بیضاپور مین آگئے محلدار خان
نے بنگاہ لوٹ کر انکو گرفتار کرلیا
چار سو گھوڑے اور ڈیڑہ لاکھہ
ہون اور سب سامان اسباب
تو ساہو کی بنگاہ سے اور بارہ ہزار

हुया रणदूला के डेरेसे हाथ लगे ख़ान ख़ानां ने उस को हुक्म लिखा कि साहू जी के कबीलों को क़िलेदार कालने के हवाले कर के हाज़िर होजावे ॥

बैसाख बदी ६ को फ़तह ख़ांने नाज के न मिलने, काल, और मरी, के सबब से जो उस मुल्क में फैली हुई थी दौलताबाद का क़िला ख़ान ख़ानां को सोंप दिया और आप अपने बालबच्चों और हुसैन निज़ाम शाह को लेकर कि जिस की बारबरदारी वग़ैरा के लिये ख़ान ख़ानां ने साढ़े दस लाख रुपे और कई हाथी दिये थे बाहर आगया ॥

बैसाख बदी १३ को बादशाह ने यह ख़बर सुनी तो अमीरों को खिलत और इज़ाफ़े मनसब के फ़रमान भेजे नसीरी ख़ां को ख़ान दौरां का ख़िताब दियाराव दूदा के बेटे देबी सिंघ को जो

ہوں رندولہ کی ڈیرہ سے ہاتھ لگے خانخانان نے اسکو حکم بہیجا کہ ساہو کے عیال کو تو قلعہ دار کالنہ کے سپرد کردے اور آپ حاضر ہووے۔

۱۹ ذی الحجہ کو فتح خان بہ سبب قحط غلہ اور خشک سالی اور وبا کے جو اوس ملک مین پھیلی ہوئی تھی خانخانان کو دولت آباد کا قلعہ سونپ کر معہ اہل و عیال اور نظام شاہ کے کہ جسکی باربرداری کے لئے خانخانان نے ساڑہے دس لاکھ روپیہ اور کئی ہاتھی وغیرہ دیے تھے باہر آگیا۔

۲۶ ذی الحجہ کو بادشاہ نے یہ خوشخبری سنکر امیرون کو خلاع فاخرہ اور ترقی منصب کے فرمان بھیجے اور نصیری خان کو خطاب خاندوران کا دیا راؤ دودا کے بیٹے دیبی سنگھ کو

वतन में था खिलअत राव का खि-
ताब और डेढ़ हज़ारी मनसब का
फ़रमान भेजा ॥

खान खानां ने खान दौरां को
तो दौलताबाद में छोड़ा और आप
निज़ाम और फ़तह खां को लेकर
बुरहान पुर में आगया रस्ते में बीजा
पुर वालों ने जगह २ लड़ाई की ताना
जी डोडिया मारा गया ॥

दौलताबाद जैसे मज़बूत
क़िल्ले के इतने जल्द फ़तह हो
जाने का सबब बीमारी और काल
था बादशाह ने शाह ईरान को ख़त
में लिखा कि इस क़िल्ले से १०००
तोपें हाथ आईं और ढ़ाई करोड़ का
मुलक फ़तह हुआ ॥

## बरस सातवां

आसाढ़ सुदी २ संबत १६९० से ॥
आसाढ़ सुदी २ संबत १६९१ तक
राजा भारत तिलंगा ने की हिफ़ा-

جو وطن مین تہا خلعت راؤ
کا خطاب اور ڈیڑھ ہزاری
منصب ارسال فرمایا +

خانخانان خاندوران کو
دولت آباد مین چھوڑ کر معہ نظام
اور فتح خان کے برہان پور کو
روانہ ہوا راستہ مین بیجاپور والو
نے جگہہ جگہہ لڑائی کی جسمین
تانا جی ڈوڈیہ مارا گیا -

دولت آباد جیسے مضبوط
قلعہ کے اتنے جلدی فتح ہوجانے
کا سبب بیماری اور قحط سالی
تھا بادشاہ نے شاہ ایران کے
خط مین لکھا کہ اس قلعہ سے
ایک ہزار توپین ہاتھ آئین
اور ڈہائی کروڑ روپیہ کا ملک فتح ہوا

## برس ساتوان

سنہ ۱۰۴۳ ہجری
۲۹ جون سنہ ۱۶۳۳ء سے ۱۷ جون سنہ ۱۶۳۴ء تک
راجہ بھارت تلنگانہ کی حراست

ज़त पर तईनात था "बोला" औरसी
दी मुफ़्ताह" को जो वीकलोर के कि
ले में थे भगा कर कबज़ा कर लिया॥

महाराजा के बेटे राय सिंघ को
बादशाह ने हाथी इनायत किया॥

रया दूला और साहू जी वग़ैरा
आदिल शाहियों ने ख़ान ख़ानां का
पीछा छोड़ कर क़िले दौलताबाद
को जा घेरा इस लिये ख़ान ख़ानां
फिर उस तरफ़ गया और आदिल
शाही घेरा उठा कर नासिकत्रिम्बक
की तरफ़ चले गये॥

असाढ़ सुदी १२ को क़ासम
ख़ां का बेटा इनायतुल्ला ख़ां ×फ़रंगि
यों में से ४०० मर्द औरत को बाद
शाह के हज़ूर में लाया बादशाह ने
हुक्म दिया कि जो मुसलमान हों
उनको छोड़दें जो नहों वह क़ैद रहें
सो कुछ तो मुसलमान होगये बा
क़ी क़ैद में मरे॥

भादों बदी ६ को इतवार के

×कैदी

پر تعینات تھا اوسے بولا اور
سیدی مفتاح کو جو قلعہ ویکلور
مین تھے نکالکر قلعہ مین قبضہ کرلیا

مہاراجہ (بھیم سیسودیہ)
کے بیٹے راے سنگھ کو بادشاہ
نے ہاتھی عنایت کیا

رندولہ اور ساہوجی وغیرہ
عادلشاہیون نے خانخانان کا
تعقب چھوڑکر قلعہ دولت آباد
کو جا گھیرا خانخانان پھر اس
طرف گیا اور عادلشاہی محاصرہ
چھوڑکر ناسک اور ترمبک کی
طرف چلے گئے -

۱۱ - محرم کو قاسم خان کا
بیٹا عنایت اللہ قیدی فرنگیون
مین سے چار سو مرد اور عورت
کو بادشاہ کے حضور مین لایا
بادشاہ نے حکم دیا کہ جو مسلمان
ہون رہا ہون اور جو نہون وہ
قید مین رہین چنانچہ کچھ تو مسلمان
ہوگئے اور باقی قید مین مرے -

दिन बादशाह ने खान खानां के
लिखने से शाहज़ादे शुजाअ को १
भारी खिलत और ६ लाख रुपये
इनाम के देकर बज्रत से खज़ाने
तोप खाने और लशकर के साथ द
क्खन को रवाने किया राजा जय
सिंघ राजा बिठ्ठल दास माधो सिं
घ हाडा राव रतन का बेटा चंद्रसन
बुंदेला राजा रोज़ अफ़ज़ूं भीमराठो
ड़ राजा रामदास नरवरी भी शाह
ज़ादे के साथ गये राजा जय सिंघ
और बिठ्ठल दास को बादशाह ने
खासे खिलत और सोने की ज़ीन
के घोड़े खासा तवेले से दिये ॥

भादों बदी ११ को मालवे के
सूबेदार खान दोरां के साथ गुन्नौ
र का राजा संग्राम बादशाह की
खिदमत में हाज़िर ज्रआ ॥

राजाराज सिंघ कछवाहे का
बेटा राजा बख्तावर मुसलमान
होगया था उसको बदशाह ने खि

روز یکشنبہ ۲۲ صفر کو
بادشاہ نے خانخانان کے
لکھنے سے شاہزادہ شجاع کو
خلعت فاخرہ اور ۶ لاکھ روپیہ
انعام دیکر بہت سے خزانہ توپخانہ
اور لشکر کے ساتھ دکہن کو روانہ
کیا راجہ جیسنگھ راجہ بٹھلداس
مادہو سنگھ ولد راؤ رتن ہاڈا
چندرسن بندیلہ راجہ روزافزون
بہیم راٹھوڑ راجہ نرور رام داس
اوسکے ساتھ تعینات ہوئے
راجہ جے سنگھ اور بٹھلداس کو بادشاہ
نے خلعت اور گھوڑے معہ
ساز زرین کے طویلہ خاصہ سے
عنایت فرمائے

۴ ۲ - کو گنور کا راجہ سنگرام
خانزمان کے ہمراہ بادشاہ
کے حضور مین مالوہ سے حاضر ہوا

راجہ راج سنگھ کچھواہہ کا
بیٹا راجہ بختاور مسلمان ہو گیا
تہا اوسکو بادشاہ نے خلعت

| | |
|---|---|
| लत और २००० दिये॥<br>राजा भारत बुंदेला ५०० ज़ात और ५०० सवारों के इज़ाफ़े से चार हज़ारी ज़ात और साडे ३हज़ार सवारों के मनसब पर सरफ़राज़ होकर शाहज़ादे शुजाअ के साथ तईनात हुवा॥<br>राजा राज सिंघ कछवाहे का पोता परशोतम सिंघ जो बादशाह की बंदगी में रहता था मुसल्मान होगया बादशाह ने उसको खिलत घोड़ा और सआदत मंद खिताब दिया॥<br>असोज बदी १० को इसलाम खां निज़ाम शाह फ़तह खां और दौलता बाद की लूट को लेकर हाज़िर हुआ बादशाह नेनिज़ाम को तो जोकम उमर था सईयद ख़ान जहां किलेदार गवालियर के पास भेज दिया कि जैसे बहादुर निज़ाम शाह अहमदनगर | معہ دو ہزار روپیہ کے مرحمت کیا<br>راجہ بھارت بندیلہ پانصدی ذات اور پانسو سوارون کے اضافہ سے چار ہزاری ذات اور ساڑھے تین ہزار سوارون کے منصب کو پہنچکر شاہزادہ شجاع کی ہمراہی مین مامور ہوا<br>راجہ راج سنگھ کچھواہہ کا پوتہ پرشوتم جو بادشاہ کی بندگی مین رہتا تھا مسلمان ہو کر سعادتمند کے خطاب و خلعت و اسپ سے مشرف ہوا۔<br>۲۴ ربیع الاول کو اسلام خان معہ نظام شاہ و فتح خان و اموال غنیمت دولت آباد کے حاضر ہوا بادشاہ نے نظام کو تو جو کم عمر تھا سید خانجہان قلعدار گوالیار کے پاس بھیجدیا کہ جیسے بہادر نظام شاہ احمد نگر کی فتح کے وقت سے اوس قلعہ مین قید ہے۔اسیطرح |

की फ़तह के वक्त से गिरफ़्ता रहोकर अबतक उस किलेमेंही रहै उसी तरह इस को भी क़ैद रक्खे और जो उसका असबाबथा वह सब ज़ब्त करलिया फ़तह खां के क़सूर माफ़ करके २ लाख रुपया सालयाना मुक़र्रर किया और उसका माल भी उसको देदिया निज़ाम शाहियों की सलतनत खतम होगई ॥

शाहज़ादों के वास्ते यह ज़ाबता था कि जबतक किसी ख़िदमत पर मुक़र्रर नहों मनसब न मिले सो शाहज़ादे शुजाअ़को तो दकन जाते वक्त १० हज़ारी मनसब मिल गया था और शाहज़ादे दारा शिकोह जो उससे बड़ा था अभी तक १००० रोज़ पाता था और बादशाह उसके ऊपर सब बेटों से ज़्यादा मेहरबान थे इस लिये आसोज सुदी १३ को उस्से।

اسکو بھی قید رکھا اور جو اُسکا
مال اسباب تھا وہ سب
ضبط کرلیا۔
فتح خان کے قصور معاف
ہوکر دو لاکھ روپیہ سالیانہ
مقرر ہوا اور اُسکا مال بھی
اوسکو دیدیا گیا نظام شاہیون
کی سلطنت ختم ہوگئی۔
شاہزادونکے واسطے
یہ ضابطہ تھا کہ جب تک
کسی خدمت پر تعینات
نہون منصب نہ ملے
چنانچہ شاہزادہ شجاع
کو تو دکھن جاتے وقت
دسہزاری منصب مل گیا
تھا اور شاہزادہ داراشکوہ
جو اوس سے بڑا تھا ابھی
تک ایکہزار روپیہ روزینہ
پاتا تھا اور بادشاہ اوسکے اوپر
سب بیٹون سے زیادہ مہربان
تھے اسلئے ۱۱-ربیع الثانی کو

१२ हज़ारी मनसब बड़ा भारी खिलअत छत्र और लाल डेरा इनायत फ़रमा कर हिसार का ज़िला बख्शा जो बाबर बादशाह के वक़्त से वलीअहदों की जागीर में रहा करता था ॥

पोष सुदी ३ को कल्याण झाला राना जगत सिंघ की तरफ़ से अरज़ी और हाथी लेकर हाज़िर हुआ बादशाह जब कि शाहज़ादे थे और राना अमरसिंघ को सर करने के वास्ते उदयपुर में रहा करते थे उस वक़्त अबदुल्ला खां बहादुर फ़ीरोज़ जंग इस को पकड़ कर हज़ूर में लाया था और आपने जान बख़्शी करके छोड़ दिया था और इस वक़्त राना जगत सिंघ के उमदा राजपूतों में से था ॥

माह बदी १३ को नित्यानंद ने जो राये बनवाली दास

اوسی بارہ ہزاری منصب معہ خلعت فاخرہ اور چتر و خیمہ سرخ کے عنایت کرکے حصار کا ضلع عطا فرمایا جو بابر بادشاہ کے عہد سے ولیعہدون کی جاگیر مین رہا کرتا تھا -

غرۂ رجب کو کلیان جہالا رانا جگت سنگھ کی طرف سے عرضی اور ایک ہاتھی لے کر حاضر درگاہ ہوا بادشاہ جبکہ ایام شاہزادگی مین رانا امرسنگھ کو مطیع کرنیکے واسطے اودےپور مین رہا کرتے تھے عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ اسکو قید کرکے اُنکے پاس لایا تھا مگر اُنہون نے جان بخشی کرکے چھوڑ دیا اب یہ رانا جگت سنگھ کے عمدہ راجپوتون مین سے تہا -

۲۶ - رجب کو راے نبوالیداس کے بیٹے نتیانند نے جو فیلخانہ کا مشرف تہا ایک

का बेटा और फ़ील ख़ाने का मुशरफ़ था १ हाथी नज़र किया॥

माह सुदी १ को शाहज़ादे दाराशिकोह के महल में शाहज़ादे परवेज़ की बेटी से लड़की पैदा हुई ॥

माह सुदी ४ बृहस्पत वार को बादशाह पंजाब की तरफ़ रवाने हुए और हुक्म दिया कि एक तरफ़ तीर अंदाज़ अहदियों का बख़्शी और दूसरी तरफ़ मीर आतिश बरक़नदाज़ों के साथ सफ़र करें और खेती को ख़राब न होने दें और फिर भी जो नुकसान होजावे (क्योंकि लश्कर बहुत था) तो उसके बदले में नक़द रुपया सरकार से रैयत और जागीरदारों को उनके हिस्सों के मुवाफ़िक देदेवें॥

फागुन बदी ६ को मथुरा में मुकाम हुआ यहां से कल्यान

ہاتھی پیشکش کیا-

۲۹- رجب کو شاہزادہ داراشکوہ کے محل مین شاہزادہ پرویز کی بیٹی سے لڑکی پیدا ہوئی-

آخر روز پنجشنبہ ۳ شعبان کو بادشاہ پنجاب کی طرف روانہ ہوئے اور حکم دیا کہ ایک طرف تیر اندازا حدیونکا بخشی اور دوسرے میر آتش برقندازون کے ساتھ سفر کرین اور زراعت کو خراب نہونے دین پھر بھی جو کسی کا نقصان ہوجاوے (کیونکہ لشکر بہت تہا)، تو اوس کے معاوضہ مین نقد روپیہ سرکار سے رعایا اور جاگیردارون کو بقدر اونکے حصون کے دیدین-

۲۰- شعبان کو متھرا مین مقام ہوا یہان سے

भाना को खिलअत और घोड़ा देकर रुख़सत दीगई और राना जगत सिंघ के वास्ते उसके हाथ। क़ीमती खिलअत जड़ाऊ उरबसी १ हाथी और २ ख़ासा घोड़े सोने चांदी की ज़ीन के भेजे गये॥

फागण बदी १० को बादशाह दिल्ली में पहुंचे॥

चैत बदी ९ को एतमादुद्दौला की सराय में जो लाहौर के पास है डेरे हुये राजा बासू का बेटा जगत सिंघ कांगड़े से आकर हाज़िर हुआ॥

चैत सुदी ९ को बादशाह लाहौर में दाख़िल हुए॥

बैसाख बदी ८ को राजा भारत बुंदेले के मरने की ख़बर सुनकर उसके बेटे देबी सिंघ को २ हज़ारी, ^२ ज़ात २ हज़ार सवार का मनसब और राजा का ख़िताब इनायत किया

کلیان جہالا کو خلعت اور گھوڑا
دیکر رخصت کیا گیا اور اوسکے
ہاتھ رانا جگت سنگھ کے واسطے
خلعت فاخرہ اور اُربسی مرصع
مع دو گھوڑوں خاصہ اور
ایک فیل کے بھیجا گیا ایک
گھوڑے کی زین سنہری اور
دوسری روپہری تھی۔

۲۸ کو بادشاہ دہلی میں داخل ہوئے

۲۲ رمضان کو اعتماد الدولہ
کی سرا میں جو لاہور کے پاس ہے
ڈیرے ہوئے راجہ باسو کا بیٹا
راجہ جگت سنگھ کانگڑہ سے آکر حاضر ہوا۔

۱۷ شوال کو بادشاہ لاہور
میں رونق افروز ہوئے۔

۱۲ شوال کو راجہ بھارت
بندیلہ کے مرنے کی خبر پہنچی
بادشاہ نے اوسکے بیٹے دیبی سنگھ
کو دو ہزاری ذات دو ہزار
سوار کا منصب اور راجہ کا خطاب
عنایت کیا۔

۲۴ ذیقعدہ کو بادشاہ

जेठ बदी ११ को बादशाह लाहौर से कशमीर की तरफ़ रवाने हुए॥

कातक बदी १३ को शाहज़ादे शुजाअ ने बुरहानपुर से ख़ान ख़ानां के साथ परेंडे के क़िले को फ़तह करने के वास्ते रवाने हुआ और ख़ान ज़मां को बीजापुर के लूटने और घेरने के वास्ते पहिले से भेज दिया था उसके साथ राजा जयसिंह राव सत्रू साल राजा पहाड़ सिंघ जुगराज बुंदेला राजा रोज़ अफ़ज़ूं और संग्राम राजा जम्बू थे॥

साहू जी ने निज़ाम के ख़ानदान से १ शख़्स को जो क़िले जनेर में क़ैद था साथ लेकर अहमदनगर और दौलताबाद फ़तह करने का इरादा किया इधर से आदिल ख़ां ने किशना जी दतूराय दूला और मुरारी पंडित को ख़ज़ाना

لاہور سے واسطے سیر کشمیر کے روانہ ہوئے۔

۲۴ ربیع الثانی کو شاہزادہ شجاع مع خانخانان کے برہان پور سے قلعہ پرینده کے فتح کرنے کو روانہ ہوا اور خانزمان کو واسطے لوٹنے ملک بیجاپور کے روانہ کیا اور ساتھ اسکے میں سے راجہ جے سنگھ راو ستر سال راجہ پہاڑ سنگھ جگراج بندیلہ راجہ روز افزوں اور سنگرام زمیندار جموں تھے۔

ساہو جی نے نظام کے خاندان میں سے ایک شخص کو جو قلعہ جنیر میں قید تھا ساتھ لے کر احمد نگر اور دولت آباد کے فتح کرنیکا ارادہ کیا اودھر سے عادلخان نے کشنا جی دتو رند دولہ اور مراری پنڈت کو فوج اور خزانہ وغیرہ واسطے مدد اور

और लश्कर देकर उसकी मदद और किले की हिफ़ाज़त पर भेजा ॥

ख़ानज़मां ने रवाने होकर राजा जयसिंघ को रजपूतों समेत अपनी फ़ौज का हिरावल किया और जुगराज को चंदावल करके परेंडे के क़िले को घेर लिया फिर राजा बिट्ठलदास गौड़ भी तईनात होकर ख़ान ज़हां के पास आया ॥

साहू जी और रण दूला मिल कर लड़ने को आये १ दिन ख़ान ख़ानां खुद अपनी वारी में घास व़ग़ैरा की रसद लाने को गया था कि दुशमन की १०००० फ़ौज ने आकर उस को घेर लिया उसवक़्त महेस राठोड़ जो ख़ान ख़ानां के रजपूतों का सरदार और हिरावल था रुघनाथ भाटी और दूसरे राजपूतों समेत पांव जमा कर उस

حفاظت قلعہ کے بھیجا۔

خانزمان نے روانہ ہوکر راجہ جے سنگھ اور راجپوتوں کو اپنے لشکر کا ہراول کیا اور جگ راج کو چنداول بنا کر پرنیدہ کا قلعہ گھیرا پھر راجہ بٹھلداس بھی خانزمان کے پاس مامور ہوکر آیا۔

ساہوجی اور رندولہ وغیرہ متفق ہوکر مقابلہ کو آئے ایکدن خانخانا خود اپنی باری مین گھاس وغیرہ رسد لانے کو گیا تھا کہ دس ہزار غنیمون نے اوسکو آگھیرا اوسوقت مہیش داس راٹھوڑ جو خانخانان کے راجپوتوں کا سرادر اور ہراول تھا اور رگھناتھ بھاٹی اور دوسرے راجپوت قدم جلادت استوار کرکے

फौज से लड़ा और रण में गिरा ख़ान ख़ानां की जान पर आ बनी ज़ख़मियों के उठाने की फ़ुरसत न मिली मगर मालवे का सूबेदार ख़ान दौरां १२५०० सवारों से दौड़ा पहिले महेस रागेड़ और दूसरे राजपूतों को उठा लाया और फिर ख़ान ख़ानां से जा मिला महेस ज़िंदा था मगर ज़ख़मी बहुत होगया था दुशमन ख़ान दौरां के पहुंचते ही भाग गया और ख़ान ख़ानां उसकी फेर से बच कर पीछा आया ॥

फागण सुदी ६ को ५०० आदमी क़िले से निकल कर राजा पहाड़ सिंघ के मोरचे पर जा पड़े उस लड़ाई में कई आदमी राजा के कई असालतख़ां के और कई राजा रोज़ अफ़ज़ूं के काम आये और बहुत से दुशमन मारे भी गये और ज़ख़मी हुए

اوسکے جلو مین لڑے اور میدان جنگ مین گرے خانخانان کی جان پر آبنی زخمیون کے اٹھانے کی بھی فرصت نہ ملی مگر خاندوران صوبہ دار مالوہ نے معہ ساڑہے بارہ ہزار سوارون کے پہونچکر پہلے تو مہیش راٹھوڑ اور دوسرے مقتول و مجروح راجپوتون کو اٹھایا اور پھر خانخانان سے جاملا مہیش داس زندہ تھا مگر زخمی بہت ہوگیا تھا غنیم بروقت پہونچنے خاندوران کے بہاگ گیا اور خانخانان اوسکے پنجہ سے بچکر واپس آیا-

۸ رمضان کو پانسو آدمی قلعہ سے نکل کر راجہ پہاڑ سنگھ کے مورچہ پر جا پڑے اور لڑائی شروع ہوئی جس مین کئی آدمی راجہ پہاڑ سنگھ کے کئی اصالت خان کے اور کئی راجہ روزافزون کے کام آے اور بہت سے

फागुन सुदी १३ को खानखा
ना रसद लाने के वास्ते सवार ऊआ
और उस के साथ सैयद खान जहां
खान ज़मां राव मनू साल पृथ्वीरा
ज राजा जय सिंघ मुर्शिदा खां रा
जा बिठ्ठलदास मालूजी और सैय
द शुजाअत खां वग़ैरा भी अपनी
फौज से चढ़कर ५ कोस चलकर
रसद के पास पऊंचे थे कि ग़नी
म ने आकर खान जहां पर हल्ला
किया खान खानां यह खबर सु
नकर खान जहां की मदद को प
ऊंचा और राजा जय सिंघ भी तमा
म रस्ते दुशमनों से लड़ता ऊआ आ
चलागया रसद शाम को लशक
र में पऊंच गई ॥

चैत बदी ७ को खान जहां
और खान दौरां वग़ैरा घास चारा
लेने को गये ग़नीम ने वहां जाक
र १ बान मारा उससे घास जलक
र जंगल में आग लग उठी जिस में

دشمن مارے بھی گئے اور
زخمی بھی ہوئے
۱۰ ارمضان کو خانخانان
رسد لانے کے واسطے سوار
ہوا اور اوسکے ساتھ سید خانجہاں
خانزمان سترسال پرتھی راج
جیسنگھ مرشد خان بتھلداس
مالوجی اور سید شجاعت خان
وغیرہ بھی اپنی اپنی فوج سے
چڑھکر پانچ چھ کوس چلکر رسد
کے پاس پہنچے تھے کہ غنیمون
نے آکر خانجہان پر حملہ کیا
خانخانان یہ خبر سنکر خانجہان کی
مدد کو پہونچا اور راجہ جےسنگھ
بھی تمام راستہ دشمنون سے
لڑتا ہوا چلا گیا رسد شام کو لشکر مین
پہونچ گئی
۱۸ ارکو خان جہان اور خاندوران
وغیرہ گھاس اور چارہ لینے کو
گئے غنیم نے وہان جاکر ایک
بان مارا اوس سے گھاس جلکر
جنگل مین آگ لگ اوٹھی۔

२ हाथी और बहुत जानवर बार बरदारी के जल गये फ़ौज का इन्तज़ाम बिगड़ गया खान खानां यह खबर पाकर राजा बिट्ठल दास और पृथ्वी राज के साथ उधर गया शाहजादे ने भी तैयारी की मगर ग़नीम भाग गया खान खानां राजा बिट्ठल दास और पृथ्वी राज को उसके पीछे रवाने कर के लौट आया ये दोनों भी खान ज़मां के साथ कुछ दूर ग़नीम का पीछा करके चले आये उस दिन खान जहां खान ज़मां और राजा बिट्ठल दास ने बहुत बहादरी की ।

साहसुदी १६ को जब खानखानां और खान ज़मां घास चारा लाने को गये थे ग़नीम ने पैदल हो कर मोरचों पर हमला किया बादशाही अमीरों ने बाहर निकल कर उन को हराया इस लड़ाई में

جسمین دو ہاتھی اور بہت سے جانور بار برداری کے جل گئے فوج کا انتظام بگڑ گیا خانخانان یہ خبر پاکر معہ راجہ بٹھلداس اور پرتھی راج راٹھوڑ کے اودھر گیا اور شاہزادہ نے بھی تیاری کی مگر غنیم بھاگ گیا خانخانان راجہ بٹھل داس اور پرتھی راج کو اوسکے تعاقب مین روانہ کرکے لوٹ آیا یہ دونون بھی خان زمان کے ساتھ کچھ دور تک غنیم کا پیچھا کرکے واپس چلے آئے اس دن خانجہان خانزمان اور راجہ بٹھل داس نے بہت بہادری کی -

۱۹ - کو جب خانجہان اور خانزمان گھاس چارا لانے کو گئے تھے غنیم نے مورچون پر پیدل ہوکر حملہ کیا مگر بادشاہی امیرون نے باہر نکل کر اس کو شکست دی اس لڑائی مین

| | |
|---|---|
| जुग राज के बहुत रजपूत ज़ख़्मी हुये | جگ راج کے بہت راجپوت زخمی ہوئے تھے۔ |
| माह सुदी १० की रात को शाहज़ादे के हुक्म से बादशाही अफ़सर और मनसबदार ग़नीम के डेरों पर गये उनमें राजा जय सिंघ राजा बिट्ठल दास राव शत्रूसाल राव करण और मालू जी दखनी भी थे मगर ग़नीम हुशयार होगयाथा इस लिये बादशाही लोग वे ऊंट और बैल कि जिनको जंगल जलाने के दिन ग़नीम लेगया था पीछे ले आये मगर राजा जय सिंघ ने घोड़ा दौड़ा कर ग़नीम के बहुत से पैदलों को पकड़ा मुरारी पंडित का भाई माधोजी मुबाज़र ख़ां से लड़ा ख़ान ज़मां सैयद ख़ान जहां को राजा जय सिंघ की मदद पर छोड़कर माधोजी के ऊपर गया और उस को मारकर ग़नीम को भगादिया | شب پنجشنبہ تاریخ ۲۳- کو شاہزادہ کے حکم سے بادشاہی منصب دار اور امیر غنیم کے ڈیرہ پر روانہ ہوئے اُنمیں راجہ جے سنگھ راؤ شترو شال راجہ بٹھل داس راؤ کرن اور مالوجی بھی تھے مگر غنیم ہوشیار ہو گیا تھا اسلئے یہ اونٹ اور بیل جسکو سید جلانے کے دن غنیم لے گیا تھا واپس لے آئے مگر راجہ جیسنگھ نے گھوڑا دوڑا کر غنیم کے بہت سے پیدلوں کو گرفتار کیا مراری پنڈت کا بھائی مادہوجی - مبازرخان سے مقابل ہوا خان زمان سید خانجہان کو راجہ جے سنگھ کی مدد پر چھوڑ کر مادہوجی کے اوپر گیا اور اُس کو مار کر غنیموں کو بھگا آیا - ۱۲- شوال کو خانخانان |

चेत सुदी १४ को ख़ान ख़ानां का नौकर कोका पंडित घासचारा लेने को गया ४००० हबशी उसके ऊपर आपड़े ख़ान ख़ानां शाहज़ादे को साथ लेकर जुगराज और लहरास्प को लशकर की हिफ़ाज़त पर छोड़ कर दुशमन के डेरे लूटने को गया दुशमन ने ख़बर पाकर बांयें हाथ की तरफ से बांण मारने शुरू किये ख़ान ज़मां और ख़ान जहां ने उसपर हमला किया राजा जय सिंघ और बिट्ठल दास ने उनकी मदद पर जाकर दुशमन को भगादिया मुरारी पंडित भागने में घोड़े से गिर पड़ा मगर उसके १ नौकर ने अपने घोड़े पर चढ़ा कर उस को तो निकाल दिया और आप मारा गया ॥

बादशाही अफ़सरों ने कई जगह सुरंगे भी लगाई गईथीं

کا نوکر کوکا پنڈت گھاس چارا لینے کو گیا چار ہزار حبشی اوسکے اوپر آپڑے تب خانخانان شاہزادہ کو ہمراہ لے کر جگ راج اور لہراسپ کو لشکر کی حفاظت پر چھوڑ کر دشمنوں کے ڈیرے لوٹنے کے واسطے گیا دشمنوں نے خبر پاکر بائیں ہاتھ کی طرف سے بان مارنے شروع کئے یہ دیکھکر خانزمان اور خانجہان نے اوسپر حملہ کیا راجہ جے سنگھ اور بٹھلداس نے اونکی مدد پر جاکر دشمنوں کو بھگایا مراری پنڈت بھاگنے میں گھوڑے سے گرپڑا مگر اوسکے ایک نوکر نے اوسکو گھوڑے پر چڑھا کر نکال دیا اور آپ اوس کے بدلے مارا گیا ۔

بادشاہی افسروں نے کئی سرنگیں بھی لگائی تھیں مگر وہ آگے نہیں چلیں اور

मगर वे आगे नहीं चलीं कुछ
को अंदर वालों ने बंद कर दिया
और कई में से पानी निकल आ
या १ सुरंग उड़ाई गई तो जाने के
लायक़ रसता नहुआ बाद
शाही अमीर और मनसबदार
खान खानां की बदसलूकी से ना
राज़ होगये और खान दोरां के
बार २ कहने से कि मैं ने खान
खानां की जान बचाई है खानखा
नां उस से अदावत रखने लगा
घास चारा लाने पर हर रोज़ ग़
नीम से लड़ाई होती थी इसलि
ये खान खानां ने जेठ सुदी ५ को
क़िले का घेरा छोड़ कर शाह
ज़ादे समेत बुरहान पुर की तर
फ कूच कर दिया ॥

जेठ सुदी ६ को जब कि
बादशाही फौज घाटे से उतर
रही थी गनीम ने आकर खांरा
मारना शुरू किया खान खानां

بعض کو اندر والوں نے بند کر دیا
اور کئی میں سے پانی نکل آیا
ایک سرنگ اڑائی گئی
تو جانے کے لائق راستہ
نہوا بادشاہی امیر اور منصب
دار خان خانان کی بدسلوکی
سے ناراض ہوگئے اور
خان دوران کے بار بار کہنے
سے کہ میں نے خان خانان
کی جان بچائی ہے خانخانان
اس سے عداوت رکھنے
لگا گھاس اور چارہ لانے
پر ہر روز غنیم سے لڑائی
ہوتی تھی اسلئے خان خانان
نے تاریخ ۳ - ذی الحجہ کو
قلعہ کا محاصرہ چھوڑ کر معہ شاہزادہ
کے برہان پور کی طرف واپس کوچ کر دیا
۷ - ذی الحجہ کو جب بادشاہی
فوج پر سے ۱۸ کوس پر گھاٹے
سے اتر رہی تھی غنیم نے آکر
بان مارنے شروع کئے

को

का बेटा खान ज़मां शत्रूसाल जुगराज और राव करण व गैरा को लेकर उसके मुकाबिले को गया उधर राजा जयसिंघ जो दाहने हाथ की फ़ौज से उसकी मदद को पहुंचा ग़नीम भाग गया और बादशाही लशकर आसाढ़ बदी १३ को बुरहान पुर में पहुंच गया

## बरस ८

आसाढ़ सुदी २ संबत १६९१ से आसाढ़ सुदी २ संबत १६९२ तक

बादशाह ने क़िला फ़तह किये बग़ैर शाह ज़ादे को पीछा ले आने से खान खानां पर बहुत गुस्सा किया और शाह ज़ादे को उसके तइनाती अमीरों समेत अपने पास हाज़िर होने का हुक्म लिखा॥

भादों बदी ४ को बादशाह

خانخانان کا بیٹا خانزمان معہ شترو سال جگ راج اور راؤ کرن وغیرہ کے اوسکے مقابلہ کو گیا اُدہر سے راجہ جے سنگہ جو داہنے ہاتھ کی فوج مین تہا اوسکی مدد کو پہنچا غنیم بھاگ گیا اور بادشاہی لشکر ۲۶ ماہ ذی الحجہ کو برہان پور مین داخل ہوا۔

## برس آٹھوان

۱۰ جون سنہ ۱۶۳۴ سے ۱۰ جون سنہ ۱۶۳۵ تک

سنہ ۱۰۴۴ ہجری

بادشاہ نے شاہزادہ کو بلا فتح قلعہ واپس لے آنے سے خانخانان کے اوپر بہت عتاب کیا اور شاہزادہ کو معہ اوسکی تعیناتی امیرون کے اپنے پاس حاضر ہونے کا حکم لکھا۔

۱۷ صفر کو بادشاہ نے کشمیر مین پہتی راج راٹہور

ने कशमीर में पृथ्वी राज राठोड़ का मनसब असल और इज़ाफ़े से २ हज़ारी ज़ात और १६०० सवारों का करदिया॥

असोज बदी १० को बादशाह कशमीर से लाहोर को रवाने हुए ॥

कातक बदी ६ को मुकाम भंबर में कि जहां कशमीर के पहाड़ों का सिलसिला ख़तम होताहै जगन्नाथ कलावंत कि जिसकी इज़्ज़त कबिराये के ख़िताब से बढ़ाई गई थी हिन्दुस्तानी शायरी और गान विद्या में उसदिन कोइ उस की बराबर हिनदुस्तान में नहीं था लाहौर से आकर हाज़िर हुआ जहां बादशाह के हुक्म से कुछ नये धुरपदों के बनाने के वास्ते रहगया था और १२ धुरपद मुख़तलिफ़ रागों में जो

کا منصب اصل اور اضافہ سے دو ہزاری ذات اور سولہ سو سواروں کا کر دیا

۲۳- ربیع الاول کو بادشاہ کشمیر سے لاہور کی طرف روانہ ہوئے۔

۲۲- ربیع الثانی کو مقام بھمبر مین جہاں کہ کشمیر کے پہاڑونکا سلسلہ ختم ہوتا ہے جگناتھ کلاونت کہ جسکی عزت کب رائے کے خطاب سے بڑہائی گئی تہی اور جو ہندی شاعری اور نغمات ہندوستانی کی تصنیفات مین اپنا مثل نہین رکہتا تہا لاہور سے آکر حاضر ہوا اور بارہ دہرپد مختلف راگون اور مضامین رنگین کے جو اسنے بادشاہ کے نام پر موزون کئے تھے پڑہ کر سنائے جو بادشاہ کو بہت پسند آئے اور انہون نے

जो उसने बादशाह के नामपर नये बनाये थे और जिनके मज़मून भी नये २ थे पेश किये। बादशाह ने पसंद करके उस को रुपों में तोला ४५०० जो उस के बराबर तुले थे उस को इनायत किये॥

भंबर में हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के साथ रिश्ताकरते थे हिन्दू मुसलमानों की लडकियों को जो उनसे ब्याही जाती थीं जलाते थे और मुसलमान गाडते थे बादशाह ने इसबात को ना पसंद करके हुक्मदिया कि जबतक हिन्दू मुसलमान नहों मुसलमान औरतें उन के घरमें न रहने पावें इसपर जो कूजो वहांका ज़िमींदार था कुटंब समेत मुसलमान होगया बादशाह ने उसके ऊपर महरबानी करके राजा दोलतमंद नाम

خوش ہوکر اوسکو روپیون مین تولنے کا حکم دیا ساڑھے چار ہزار روپیے جو اوسکے برابر وزن ہوئے تھے اُنکو عنایت فرمائے۔

بھمبر مین ہندو مسلمان باہم رشتہ داری کرتے تھے ہندو مسلمانوں کی لڑکیون کو جو اونکے ساتھ بیاہی جاتی تھین جلاتے تھے اور مسلمان گاڑتے تھے بادشاہ نے اس بات کو ناپسند کرکے حکم دیا کہ جب تک ہندو مسلمان نہون مسلمان عورتین اُنکے عقد مین نہ رہنے پاوین اسپر وہان کا زمیندار جوکو معہ اپنے تمام قبیلہ کے مسلمان ہوگیا بادشاہ نے اوس کا نام راجہ دولتمند رکھا اور اُسکے حال پر بہت عنایت اور

र करवा ॥

जब बादशाह गुजरात इलाके पंजाब में पहुंचे तो मुसलमानों ने फ़रयाद कीकि हिन्दुओं ने बहुत सी मुसलमान औरतों को घर में डाललेवाहै और मसजिदें अपने घरों में मिला ली हैं बादशाह ने शेख़ महमूद गुजराती को तहक़ीक़ात का हुक्म दिया उसने सबूत होनेके पीछे ७० मुसलमान औरतें हिन्दुओं से पीछी लीं और मसजिदों की ज़मीन अलहदा करके उनके बनाने के वास्ते जुरमाने में रुपया लिया बादशाह ने यहां भी भंभर के माफ़िक़ हुक्म जारी किया कि मुसलमान औरतें हिन्दुओं के घरमें नर हैं जब तक कि वे हिन्दू मुसलमान न होजावें नहीं तो उन.

مہربانی فرمائی۔

جب بادشاہ گجرات علاقہ پنجاب میں پہونچے تو مسلمانون نے فریاد کی کہ ہندؤن نے بہت سی مسلمان عورتون کو گھر مین ڈال رکھا ہے اور مسجدین بھی اپنے مکانون مین ملالی ہین بادشاہ نے شیخ محمود گجراتی کو تحقیقات کا حکم دیا اوسنے بعد ثبوت ۷۰ مسلمان عورتین ہندؤن سے واپس لین اور مسجدون کی زمین علیحدہ کرکے انکی تعمیر کے واسطے روپیہ بھی بطور جرمانہ کے انسے لیا بادشاہ نے یہان بھی مثل بھمبر کے حکم دیا کہ مسلمان عورتین ہندوں کے عقد مین ہین جب تک کہ وہ مسلمان نہ ہو جاوین ورنہ انکا عقد باطل کردیا جاوے

का नाता मुसलमान औरतों से तुड़ा दिया जावे इस पर बहुत से हिन्दू तो अपनी मुसलमान औरतों के लिये मुसलमान होगये और जो न हुए उनसे वे औरतें छिन गई और यह हुक्म तमाम बादशाही मुलकों में जारी हो कर बहुत सी मुसलमान औरतें हिन्दुओं से छीनी गई और उनका निकाह मुसलमानों से हुआ ॥

मंगसिर बदी ११ को कांगडे के पहाड़ का राजा जगत सिंघ राजा बासू का बेटा अपने मुलक से दरबार में हाज़िर आया ॥

मंगसिर सुदी ७ को बादशाह लाहौर पहुंचे महाबत खां खानखानां बुरहानपुर में मरगया था इसलिये बादशाह ने मालवे का वह हिस्सा कि जो नरबदा के पार था खानदेस के शामिल

اسپر بہت سے ہندو تو اپنی مسلمان عورتوں کے لئے مسلمان ہو گئے اور جو نہوئے اُن سے عورتین چھین لی گئین اور یہ حکم تمام ممالک محروسہ مین جاری ہو کر بہت سی مسلمان عورتین ہندوں سے چھینی گئین اور اُن کا نکاح مسلمانوں کے ساتھ کرا دیا گیا۔

۲۴- جمادی الاول کو دامن کوہ کانگڑہ کا راجہ جگت سنگھ ولد راجہ باسو اپنے ملک سے درگاہ مین حاضر آیا۔

۵ جمادی الثانی کو بادشاہ لاہور مین پہنچے چونکہ مہابت خان[1] خانخانان مرچکا تھا اس لئے بادشاہ نے کچھ حصہ مالوہ کا جو نربدا کے پار تھا خاندیس کے شامل کرکے دکن اور

[1] مہابت خان کے مرنے کی تاریخ معتمد خان نے زمانہ آرام یافت سے نکالی اور چونکہ مہابت خان کا اصلی نام زمانہ بیگ تھا اس لئے اسمین اور بھی لطافت پیدا ہوگئی۔

करके ख़ान देस और दख्खन के २ हिस्से किये एक बाला घाट, और दूसरा पाईं घाट, बाला घाट में कुल दख्खन यानेदौलता बाद अहमद नगर पट्टन बीपर जालना पुर जलेर संगमेर फतहाबाद कुछ बराड़ और तमाम तिलंगाना था जिस की जमा १ अरब और २० करोड़ दाम की थी और पाईं घाट में तमाम ख़ान देस और बहुत सा हिस्सा बराड़ काथा और जमा ९२ किरोड़ दाम थी

बाला घाट का सूबेदारतो ख़ान ख़ानां के बेटे ख़ान ज़मान को और पाईं घाट का सूबेदार ख़ान दौरां को किया और हुक्म दिया कि राजा जयसिंघ ज़ुगराज और राव शत्रु शाल दौलता बाद में रहें और पहाड़सिंघ बुंदेला और माधो सिंघ हाड़ा

خاندیس کے دو حصہ کرے
ایک بالاگہاٹ اور دوسرا
پائین گہاٹ بالاگہاٹ مین
کل دکن یعنے دولت آباد احمدنگر
پٹن بہیر جالناپور جلیر سنگمیر
فتح آباد اور کچھ محال برار کے
اور تمام تلنگانہ شامل تہا
جس کی جمع ایک ارب بیس
کروڑ دام کی تہی -
اور پائین گہاٹ مین
تمام خاندیس اور اکثر حصہ
برار کے تھے اور اوسکی جمع
۹۲ کروڑ دام کی تہی -
بالاگہاٹ کا صوبہ دار تو
خانخانان کے بیٹے خانزمان
کو کیا اور پائین گہاٹ کی صوبہ داری
خان دوران کو عنایت فرمائی
اور حکم دیا کہ راجہ جے سنگھ کچھواہا
جگ راج اور راؤ شترو سال تو
دولت آباد مین رہین اور
راجہ پہاڑ سنگھ بندیلہ اور مادہو سنگھ

बुरहान पुरमें ॥

उदाजी राम का बेटा जगजीवन ३ हज़ारी ज़ात और ३ हज़ार सवारों का मनसबदार ऊआ ॥

पोस बदी २ को राजा जगत सिंघ बंगश की थानेदारी पर ख़टक पठाणों को सज़ा देने के वास्ते जो वहां रहते हैं मुकर्रर ऊआ खिलत जड़ाऊ खंजर और चांदी के साज़ का घोड़ा उसको दिया गया ॥

पोस सुदी ३ को राजा गजसिंघ का बेटा अमरसिंघ पांच सदी ज़ात और २०० सवारों के इज़ाफ़े से ढ़ाई हज़ारी ज़ात और डेड़ हज़ार सवारोंका मनसब दार ऊआ और उसको झंडा घोड़ा और हाथी भी मिला ॥

पोस सुदी ४ को शाहज़ादे औरंगज़ेब को १० हज़ारी मन

ہاڈا برہان پور مین -

اوداجی رام کا بیٹا جگجیون تین ہزاری ذات اور تین ہزار کا منصب‌دار رہوا -

۱۵ - جمادی الثانی کو راجہ جگت سنگھ پائین بنگش کی تہانہ داری اور ختک پٹہانون کی سزادہی پر جواس سرزمین مین رہتے ہین مامور ہوا چلتے وقت خلعت خنجر مرصع اور چاندی کی زین کا گہوڑا اوسکو دیا گیا -

۲۹ جمادی الثانی راجہ گجسنگھ کے بیٹے امرسنگھ کے منصب میں پانصدی ذات اور دو سو سوارون کا اضافہ ہوا جس سے اوسکا منصب ڈہائی ہزاری ذات اور ڈیرہ ہزار سوارون کا ہوگیا اس عنایت کے ساتھ اوسکو علم اسپ اور فیل بہی مرحمت ہوا

۳ رجب کو شاہزادہ اورنگزیب کو دس ہزاری منصب اور سراپردہ

सब और लाल डेरा इनायत हुआ अबतक ५०० रोज़ मिलते थे

महेसदास राठोड़ जो पहिले महाबत खां का नौकर था माह सुदी ५ को बादशाही नौकर हुआ ५ सदी ज़ात और ४०० सवारों का मनसब मिला॥

साहूजी ने निज़ाम शाह के कई नौकरों के साथ महाबत खां के मरे पीछे दौलताबाद के किले पर चढ़ाई की थी कि इतने में ख़ानदौरां मालवे से बुरहानपुर में पहुंचा और वहां माधोसिंघ और मीर फैज़ुल्लाखां को छोड़ कर दौलताबाद को रवाने हुआ मालूजी पर सूजी राजा जय सिंघ और जुगराज बुंदेला उसके साथ थे शिवगांव में जा कर लाम बांधा आप बीच की अनी में रहा जयसिंघ को हिरावल किया साहूजी भाग

سرخ عنایت ہوا ابتک پانسو روپیہ روزینہ ملتا تھا۔

مہیش داس راٹھوڑ جو پہلے مہابت خان کا نوکر تھا ۳۔ شعبان کو بادشاہی نوکر ہوکر پانصدی ذات اور چارسو سوارونکا منصب دار ہوگیا۔

ساہوجی نے بعد انتقال مہابت خان خانخانان کے معہ چند ملتزمان نظام شاہ قلعہ دولت آباد کے اوپر چڑہائی کی مرتضی خان قلعہ مین متحصن ہوا مگر خان دوران نے مالوہ سے برہان پور مین پہنچکر مادہوسنگہہ اور میر فیض اللہ خان کو تو وہان چہوڑا اور خود دولت آباد کی طرف جاکر شیوگاؤن مین لشکر آراستہ کیا آپ قول مین رہا اور جے سنگہہ کو ہراول مین رکہا غنیم بہاگ گیا خان نے تعاقب کرکے اوس کے

गया स्वान दौरां ने पीछा करके उसका डेरा लूट लिया और फिर वहां से चल कर अहमद नगर में दाखिल हुआ ॥

माह सुदी ८ को बादशाह लाहौर से लौटे चंबे के राजा प्रथ्वी चंद को खिलत और घोड़ा देकर निजाबत खां के साथ कांगडे के पहाड़ की फौजदारी पर भेजा

फागण सुदी ३ को शाहाबाद के मुकाम में राजा देवी सिंघ का मन सब इजाफ़ा होकर ढाई हज़ारी ज़ात और २००० सवारों का हो गया ॥

चेत बदी १ को बादशाह दिल्ली में दाखिल हुए

चेत बदी ६ को जमना के किनारे घाट स्वामी में अबदुल्ला खान फ़ीरोज़ जंग सूबेदार बिहार जो रतन पुर के ज़िमींदार को सज़ा देने के वास्ते गया था

ڈیرے لوٹ لئے اور پھر احمد نگر مین جاکر داخل ہوا - اُسکے ساتھ جگراج ماوجی اور پرسوجی دکھنی بھی علاوہ راجہ جیسنگھ کے تھے

۷ر- شعبان کو بادشاہ نے لاہور سے مراجعت کی چنبہ کا زمیندار ر پرتھی چند خلعت اور گھوڑے سے سرفراز ہوکر نجابت خان کے ساتھ دامن کوہ کانگڑہ کی فوجداری پر مامور ہُوا-

۲- رمضان کو مقام شاہ آباد مین راجہ دیبی سنگہ پانصدی ذات کے اضافہ سے ڈہائی ہزاری ذات اور دوہزار سوار کے منصب کو پہنچا-

۱۵ر رمضان کو بادشاہ دلی مین داخل ہُوے -

۲۰ر رمضان کو مقام گہاٹ سوامی کنارہ دریاے جون مین عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ

हाज़िर आया वहां के राजा बाबू लछमन और दूसरे ज़मींदारों को साथ लाया जिन्हों ने बादशाह को नज़रें दीं ॥

## रतन पुर की मुहिम का कुछ हाल

जबकि अब्दुल्ला खां भागा घाटी से ४ कोस इधर पहुंचा जहां से रतन पुर ६० कोस रहता है तो बांधो गढ़ का राजा अमर सिंघ अपने लशकर के साथ उस से आमिला जब उस घाटी में पहुंचे तो वहां के जमींदारों ने तीर और बंदूक की लड़ाई शुरू की मगर खान ने उन को हटा दिया तब वह (तीनों यर) के मज़बूत किले में जो जंगलों के अंदर है जा घुसा लेकिन खान ने वह किला भी फतह कर लिया और किले वाले अपनी औरतों और लड़कों को

صوبہ دار بہار حاضر آیا وہ بموجب حکم بادشاہ کے زمیندار رتن پور کی تادیب کے واسطے گیا تھا اور وہاں کے راجا بابو لچھمن اور دوسرے زمینداروں کو ساتھ لایا جن کی نذر اور پیشکش بادشاہ کے حضور میں گذرانی -

## رتن پور کی مہم کا کچھ حال

جب کہ عبد اللہ خان بہادر فیروز جنگ بھاگی گھاٹی سے چار کوس ادہر پہونچا جہان سے رتن پور ۶۰ کوس رہ جاتا ہے تو باندہون گڈہ کا راجہ امر سنگھ مع اپنی جمعیت کے اس سے آملا جب اس گھاٹی مین پہونچے تو وہاں کی زمینداروں نے تیر اور بندوق کی لڑائی شروع کی مگر خان نے اسکو ہٹا دیا تب وہ تینو تھر کے مضبوط قلعہ مین جو جنگلون کے اندر ہے جا گھسے لیکن خان نے وہ قلعہ بھی فتح کر دیا اور قلعہ والے اپنی عورتون اور لڑکون

आग में जला कर लड़े और
मारे गये फिर खान ने रस्ता
साफ़ करके रतन पुर घरघा
वा किया बाबू लछमन ने राजा
असर सिंघ की मारफ़त सुलह
चाही खान ने सुंदर कबिराय
को जो बादशाह के पास से उस
के पास तईनात हो कर आया था
राजा के आदमियों के साथ बाबू
के पास भेजा और आप भी उस
के पीछे २ रवाने हुआ सुंदर क
बिराय के पहुंचते ही बाबू खा
न के पास हाज़िर आया ३ हाथी
तो उसी वक्त लाया ९ हाथी
और २ लाख रुपै २५ दिन में पे
श करना क़बूल करके खान
के साथ बादशाह के पास हा
ज़िर होने का इक़रार किया॥

चैत बदी १२ को मुकाम सु
लतान पुर परगने पलवल में
शाहज़ादे दारा शिकोह का बेटा



کو آگ مین جلا کر خان سے لڑے
اور مارے گئے پھر خان فیروز جنگ
نے راستہ صاف کرکے رتن پور
کے اوپر دہاوہ کیا بابو لچھمن نے
راجہ امر سنگھ کے معرفت صلح
چاہی خان نے سندر کب رائے
کو جو بادشاہ کی پیشگاہ سے اوسکے
پاس تعینات ہوکر آیا تہا بابو
کے پاس بہیجا اور آپ بہی اسکے
پیچہے روانہ ہوا سندر کب رائے
کے پہنچتے ہی بابو خان فیروز جنگ
کے پاس حاضر آیا تین ہاتھی
تو اوسی وقت لایا تہا ۹ ہاتھی
اور دو لاکھ روپیہ نقد ۲۵ دن
مین پیش کرنا قبول کرکے خان
کے ساتھ بادشاہی درگاہ مین
حاضر ہونے کا بھی وعدہ کرلیا۔

۲۶ رمضان کو مقام
سلطانپور پرگنہ پلول مین شاہزادہ
دارا شکوہ کا بیٹا سلیمان شکوہ
پیدا ہوا۔

सुलैमां शिकोह पैदा हुआ॥

चैत सुदी ३ संबत १६१९ को सोमवार के दिन बादशाह ने घाट स्वामी में मखमली डेरा आम खास खड़ाकर के उस के भीतर तख्त ताऊस पर जलूस किया यह तख्त १ लाख तोले सोने का ८६ लाख के जवाहिरात से २ किरोड़ रुपै की लागत में ७ बरस के अंदर तैयार हुआ था उस पर पन्नों के २ मोर बनाये गये थे और उनके बीच में १ जड़ाऊ पेड़ था बादशाह ने इस तख्त पर बैठ कर खूब २ बख्शिशें कीं शाह ज़ादों और अमीरों ने भी लाखों ही रुपै की पेशकशें दीं जिनकी मालियत २४ लाख रुपै से कम न थी॥

नरवर के राजा रामदास का मनसब पांच सदी ज़ात

روز دوشنبہ یکم شوال کو بادشاہ نے آگرہ کے پاس گہاٹ سوامی مین خیمہ مخملی عام وخاص کہڑا کرا کر اوسکے اندر تخت طاؤس پر جلوس کیا جو ایک لاکہہ تولہ سونے کا ۸۶ لاکہہ کے جواہرات سے مرصع دو کروڑ روپیہ کی لاگت مین سات برسون کے اندر تیار ہوا تہا اوسکے اوپر دو مور زمرد کے بنائے گئے تہے اور اونکے بیچ مین ایک جڑاو درخت تہا بادشاہ نے اس تخت پر بیٹہکر خوب خوب بخششین کی شاہزادون اور امیرون نے بہی بڑی بڑی پیشکشین دین جو کل ۲۴ لاکہہ روپیہ کی مالیت سے کم نہ تہین۔

نرور کے راجہ رام داس کا منصب پانچ صدی ذات

और ३०० सवारों का होकर ढाई हज़ारी ज़ात और डेढ़ हजार सवारों का होगया॥

बैसाख बदी ६ को राजा जयसिंह का मनसब हज़ारी ज़ात इज़ाफ़ा होकर पांचहज़ारी ४००० सवारों का होगया॥

राजा बिठ्ठल दास को हाथी इनायत होकर अजमेर की तरफ़ जाने की रुखसत हुई॥

कांगड़े के फौजदार निजाबत खांने श्रीनगर फ़तह करने का ज़िम्मा किया था और २००० सवार मांगे थे जो बादशाह ने उस को दिये और वह सरमोर के जिमींदार को साथ लेकर उस मुहिम पर गया पहिले शेरगढ़ का किला जो श्रीनगर के जमींदार ने जमना के किनारे पर अपनी सरहद में बनाया था फ़तह किया और कालपी का किला लेकर

اور تین سو سواروں کا اضافہ ہوکر ڈہائی ہزاری ذات اور ڈیڑہ ہزار سواروں کا ہوگیا۔

۱۵-شوال کو شرف آفتاب کے دن راجہ جے سنگہہ ہزاری ذات کے اضافہ سے پنجہزاری ذات اور چار ہزار سوار کا منصبدار ہوگیا

راجہ بٹھل داس کو ہاتھی عنایت ہوکر اجمیر کی طرف جانے کی رخصت ہوئی۔

نجابت خان تہانہ وار دامن کوہ پنجاب نے سری نگر فتح کرنے کا ذمہ کیا تہا اور دو ہزار سوار مانگے تھے جو بادشاہ نے اوسکے پاس تعینات کردئے تھے وہ سرمور کے زمیندار کو ساتھ لے کر گیا پہلے شیر گڈہ کا قلعہ جو سری نگر کے زمیندار نے جمنا کے کنارے پر اپنی سرحد مین بنایا تہا فتح کیا اور کالپی کا قلعہ لے کر سرمور کے زمیندار کو دیدیا کیونکہ وہ دراصل

सरमोर वाले को देदिया क्यों
के वह असल मेंउसी काथाफि
रसरमोर वाले ने कहाकि श्री नग
रके ज़मींदार ने मेरा किलाबैरा
ट का भी दबार रक्खा है जो मेरे साथ
फ़ौज भेजो तो छुड़ालूं निजाबतखां
ने फ़ौज भेजकर वह किला भीउस
को छुडादिया इस केपीछे निजा
बतखां ने कालपी से कूच किया
और सातौर का किला फत्तहक
रके लकवनपुर के ज़मींदार जग
तू को वहां१०० सवार और १०००
प्यादों से रक्खा फिर आगे जाक
र गंगा के किनारे तक क़बज़ा
कर लिया जब हरिद्वार के पास
गंगा जीसे उतरा तो सुना कि दु
शमन ने नलाव के घाटे को रो
क रक्वा है और रस्ता भी पत्थर
और चूने से बंद कर रक्खा है य
ह घाटा श्री नगर के पहाडों में है
(१)
ख़ान गूजर गवालियरी

اوسی کا تہا پہر زمیندار سرمور نے
کہاکہ زمیندار سری نگر نے میرا قلعہ
بیراٹ بھی دبا رکہا ہے اگر میرے
ساتھ کچھ جمعیت کردو تو چہوڑالون
نجابت خان نے کچھ فوج اوسکے
ساتھ تعینات کی اور وہ قلعہ چہوڑاکر
زمیندار سرمور کے حوالہ کیا پہر
نجابت خان نے کالپی سے جاکر
قلعہ ساتنور لیا اور جگتو زمیندار
لکہن پور کو سو سوار اور ہزار
پیادون سے وہان رکہا اور
آگے جاکر دریاے گنگ
تک قبضہ کر لیا اور جب گنگا
سے ہردوار کے قریب اُترا
تو سُنا کہ غنیم نے نلاؤ کے
گہاٹ کو فوج سے روک رکہا
ہے اور راستہ کو چونہ اور
پتھرون سے بند کر دیا ہے
یہ گہاٹ سری نگر کے پہاڑون
مین ہے ۔
لہ
نجابت خان گوجر گوالیاری

(१) सहानाम गुलेरी मालूम होता है।

لہ صحیح گلیری معلوم ہوتا ہے ۱۲

| | |
|---|---|
| और उदयसिंह राठौड़ को लश | اور اودی سنگھ راٹھوڑ کو |
| कर की हिफ़ाज़त पर छोड़ कर | لشکر کی حفاظت پر چھوڑ کر آگے |
| आगे बढ़ा और बड़ी लड़ाई लड़क | بڑھا اور بعد جنگ عظیم اوس |
| र उस घाटे को फ़तह किया और | گھاٹے کو فتح کیا اور گوجر وغیرہ |
| गूजर वग़ैरा को बुलाकर श्रीनग | کو اپنے پاس بلا کر سری نگر |
| र पर रवाने हुआ जब श्री नगर ३० | کے اوپر روانہ ہوا جب وہ |
| कोस रह गया तो वहां के ज़मींदार | مقام ۳۰ کوس پر رہا تو |
| ने वकील भेज कर १० लाख रुपे | وہاں کے زمیندار نے وکیل |
| बादशाह के लिये और १ लाख नि | بھیجکر دس لاکھ روپیہ سرکار والا |
| जाबतखां के लिये देना कबूल कि | کے لئے اور ایک لاکھ خان |
| ये मगर शर्त यह की कि मेरा मुल्क | کے لئے دینا قبول کئے مگر |
| ख़राब न करें ख़ान ने मंज़ूर कि | یہ شرط کی کہ میرا ملک پامال نہ |
| या कुछ दिनों पीछे ज़मींदार का | کریں خان نے یہ قبول کیا تو |
| वकील कुछ चांदी का सामान ले | کچھ روز بعد زمیندار کا وکیل |
| कर आया और बाकी को १५ दिन | کسیقدر سامان چاندی کا پیشکش |
| में भेजने का क़ौल किया मगर | کے طور پر لایا اور باقی کے واسطے |
| राजा ने उसको ज़बानी लशकर की | پندرہ دن مین بھیجنے کا اقرار کیا |
| तंगी का हाल सुनकर कुछ नहीं भेजा औ | مگر راجہ نے اوسکی زبانی لشکر کی تنگی |
| र इक़रार ही इक़रार में डेढ़ महीना नि | کا حال سنکر پھر کچھ نہ بھیجا اور اقرار ہی |
| काल दिया और इस अरसे में | اقرار مین ڈیڑھ مہینہ نکال دیا اور |
| तमाम रस्ते बंध करा दिये जिस | تمام راستہ بند کر دیے جس سے |

सेरसद आना मौकूफ़ होगई और
रु का नाज १ सेर मिलने लगा।
ख़ान ने ग़फ़लत से कुछ बंदोब
स्त न किया और गूजर गवालेरी
को रसद लाने के वास्ते भेजा वह
लशकर से ५ कोस दूर गया
था कि दुशमनों ने उस के ऊपर ह
मला किया और वह बहादुरी से
जंग करके अपने बेटों और साथियों
समेत मारा गया तब दुशमन
ख़ान के लशकर पर धावे कर
के गोफन और बंदूक मारने लगे
निजाबत ख़ां लाचार होकर लौ
टा आगे रस्ते बंद थे इससे लश
करी पैदल ही इधर उधर भागे
जो फिर जीते नहीं आये निजाब
त ख़ां थोड़े से आदमियों से बड़ी
मुशकिलों के साथ जान बचाक
र निकला लेकिन रूपचंद गं
वालेरी वग़ैरा जो ग़ैरत और मरद
मी से इस तरह निकलना नहीं

رسد کا آنا موقوف ہوگیا اور ایک
سیر غلہ ایک روپیہ مین ملنے لگا۔
خان نے غفلت سے خود تو کچھ بندوبست
نہ کیا اور گوجر گوالیاری کو رسد لانے
کے واسطے بہیجا وہ لشکر سے پانچ
کوس دور پہونچا تہا کہ دشمنون
نے اوسکے اوپر حملہ کیا وہ بہادری
سے لڑا اور معہ اپنے بیٹون اور
رشتہ دارون کے مارا گیا بعدہ
یہ لوگ خان کے لشکر پر حملہ آور
ہوکر بندوق اور گوپہن مارنے
لگے نجابت خان مجبور ہوکر لوٹا
آگے رستے بند تھے اس سبب سے
بہت لوگ لشکر بادشاہی کے پیدل
ہی ادہر اودہر بہاگے مگر زندہ
بچکر نہین آئے نجابت خان
البتہ بمشکل تمام چند آدمیون
سے جان بچاکر نکل گیا لیکن۔
روپ چند گوالیاری اور کچھ دوسر
لوگ کہ جن کو غیرت اور مردی
نے اسطرح نکلنے کی رخصت ندی

चाहते थे लड़कर वहीं काम आये लशकर की यह ख़राबी उस नादान सरदार (निजाबत खां) की बेतदबीरी से हुई जिससे ख़फ़ा हो कर बादशाह ने उसका मनसब जागीर समेत उतार लिया और शहनवाज़ख़ां के बेटे अब्दुल रहीम ख़ां ख़ानख़ानां के पोते मिरज़ाखां को ख़िलत देकर उसकी जगह कांगड़े की फ़ौजदारी पर भेजा ॥

## जुझारसिंघ बुंदेले का बाग़ी होना

बादशाह ने जुझारसिंघ के अगले क़सूर सन २ जलूसी में बख़्श दिये थे तब से वह दकदन में तईनात था पिछले दिनों में महाबत ख़ां ख़ान ख़ानां से रुख़सत लेकर वतन में आगया था और अपने बेटे बिकमा जीत को दकवन में छोड़ आया था यहां

وہین لڑکر مارے گئے سردار ناآزمودہ کار کی بے تدبیری سے ایسی شکست بادشاہی لشکر کو پہونچی جس سے بادشاہ نے خفا ہو کر نجابتخان کا منصب معہ جاگیر کے ضبط کرلیا اور مرزا خان کو جو شاہ نواز خان کا بیٹا اور عبدالرحیم خان خانان کا پوتا تھا خلعت دے کر کانگڑہ کی فوجداری پر بہیجا۔

## جوجھار سنگہ بندیلہ کا باغی ہونا

بادشاہ نے جوجہار سنگہ کے اگلے قصور سنہ ۲ جلوسی مین بخش دئے تھے اور اُسکو دکہن مین تعینات کیا تہا مگر وہ مہابت خان خان خانان سے رخصت لیکر وطن مین آگیا تہا اور اپنے بیٹے بکرما جیت کو دکن مین چھوڑ آیا تھا یہان. اُس نے گڈہ کے

उसने गढे के ज़मींदार पेमनरा
यण के ऊपर चढ़ाई की और ध
र्म कर्म देकर पेमनरायण को जो
रागढ के किले से जो उस मुल्क की
पाट जगह है बाहर बुलाया और
फिर सब साथियों समेत जो अक
सर उसके भाई बंध थे मारकर
जोरा गढ के किले और उसमें के
तमाम माल और ख़ज़ानों पर क़
बज़ा कर लिया पेम नरायण का
बेटा जिसको मालवे का सूबेदा
र ख़ान दौरां नज़राने के साथ ला
याथा दरगाह में हाज़िर था उसने
यह सारा हाल बादशाह से अर्ज़
किया बादशाह ने जुझार सिंघ
को सुंदर कबि राय के हाथ फर
मान भेज कर लिखा कि उस ने
जो बग़ैर हुक्म दरगाह के पेमना
रायण और उस के भाई बंदों को
मारा है तो अब कुल मुल्क गढ़ की
बादशाही नौकरों के हवाले करदेवे

زمیندار بیم نارائن کے اوپر
چڑھائی کی اور عہد و پیمان کرکے
بیم نارائن کو قلعہ جوراگڈہ سے
جو حاکم نشین ہے باہر بلایا
اور معہ تمام ہمراہیون کے جو
اکثر اوس کے اہل خاندان تھے
قتل کرکے قلعہ جوراگڈہ اور
وہان کے اموال اور خزاین
پر قبضہ کرلیا بیم نراین کا بیٹا
جسکو خاندوران صوبہ دار مالوہ
معہ پیشکش کے لایا تھا درگاہ
مین حاضر تھا اوس نے یہ
سب حال بادشاہ سے
عرض کیا بادشاہ نے سُندر
کب راے کے ہاتھ جوجہار سنگھ
کو فرمان بھیجکر لکھا کہ اُس نے
بلا حکم درگاہ کے بیم نراین
اور اوسکے متعلقین کو مارا ہے
اب اوس کی خیریت اسی مین
ہے کہ ولایت گڈہ کو بادشاہی
بندون کے حوالے کرے

ओर जो अपनी जागीर में चाहिता होतो उत्तना मुल्क अपने वतन के पास का छोड़दे ओर १० लाख रुपे पेम नारायण के खज़ानों में से भेजदे इस हुक्म कीखबर पहिले ही उसके वकीलों की लिखावट से पड़गई थी इसलिये उसने अपने बेटे बिक्रमाजीत को बुलाया ओर वह बालाघाट से फ़ौरन चलदिया वहां के सूबेदार खान ज़मां ने तो कुछ नहीं किया लेकिन पाईघाट के सूबेदार खान दोरां ने जुझारसिंघ के भाईयों राजा पहाड़ सिंघ ओर चंद्र भाणि बुंदेला माधो सिंघ हाडा राव करण नज़र बहादुर ओर मीर फ़ेज़ुल्ला वग़ैरा तमाम मनसबदारों के साथ पीछा किया ओर ५ दिन में मुकाम आसटा इलाक़े मालवे के पास बिक्रमाजीत को जा लिया लड़ाई

اور جو اپنی جاگیر مین مقرر کرانا چاہتا ہو تو اوسی قدر ملک اپنے وطن کے پاس کا چھوڑ دے اور دس لاکھ روپیہ پیم نراین کے خزانون سے روانہ درگاہ کرے مگر یہ حکم شاہی قبل از جاری ہونے کے اُسکو اسکے وکیلون۔ کے ذریعہ سے معلوم ہو گیا اس لئے اُس نے اپنے بیٹے کو بلایا وہ بالاگھاٹ مین خان زمان کے پاس تھا فوراً وہان سے چلدیا خانزمان نے کچھ تدارک نہین کیا لیکن پائین گھاٹ کے صوبہ دار خاندوران نے معہ مادھو سنگھ ہاڈا راو کرن و نظر بہادر و میر فیض اللہ وغیرہ تمام منصبداران و راجہ پہاڑ سنگھ و چندر من بندیلہ کے جو جوجہار سنگھ کے بھائی تھے تعاقب کر کے بکرماجیت کو پانچ دنمین بمقام آشتہ علاقہ مالوہ جالیا بکرماجیت لڑا اور زخمی ہو کر

ऊई जिसमें बिक्रमाजीत ज़ख़्मीहोकरभागा और जंगल के रस्ते २ धामूनीमें अपने बापसे जा मिला मालवे का सूबेदार अल्लावेरदी ख़ां रस्ते में था तोभी उस का पीछा न कर सका और न ख़ानदौरां के साथ ऊआ॥

बादशाह ने यह ख़बरें सुनकर ३ सरदारों को २० हज़ार फ़ौजसे इस मुहिम पर तईनात किया

१ अबदुल्ला ख़ां फ़ीरोज़ जंग सूबेदार पटना २ सैयद ख़ानजहां ३ ख़ानदौरांजो मालवे में ऊक्म का मुनतज़िर बैठा था॥

गज सिंघ का बेटा अमरसिंघ, किशन सिंघ भदोरिया, रूपा राम गोड़, अनूपसिंघ का बेटा जयराम, राव रतन हाडा का पोता इन्द्रसाल, जगन्नाथ कछवाहे का पोता रूपसिंघ यह सब ख़ान जहां

جنگل کو بھاگا جہان سے دہامونی
مین اپنے باپ کے پاس جا پہنچا
مالوہ کا صوبہ دار الہ ویردی خان
باوجودیکہ راستہ مین تہا
نہ تو خاندوران کے ساتھ ہوا
اور نہ اُس کا تعاقب
کرسکا۔

بادشاہ نے یہ خبرین
سُنکر تین سرداروں کو جوجہار سنگھ
کے اوپر تعینات کیا اور بیس
ہزار فوج اُنکے ہمراہ روانہ کی۔
(۱) عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ
صوبہ دار پٹنہ۔
(۲) سید خانجہان۔
(۳) خاندوران جو مالوہ مین
منتظر حکم تہا۔
خانجہان کے ساتھ راجپوت
سرداروں مین سے امر سنگھ
ولد راجہ گجسنگھ۔ کشن سنگھ بھدوریہ
کرپارام گوڑ جی رام ولد انوپ سنگھ اندر
شال نبیرہ راو رتن ہاڈا اور روپ سنگھ

के साथ दिये गये और अबदुल्ला खां के साथ बांधों को राजा अमर सिंघ चंद्रमणि बुंदेला और राजा सारंगदेव तईनात किये गये अल्ला वेरदी खां को बुरहानपुर जाने का हुक्म पहुंचा मालवे की सूबेदारी खान दौरां को इनायत हुई और हुक्म हुवा कि रावरतन के बेटे माधोसिंघ हाडा भारत बुंदेले के बेटे राजा देवीसिंघ वग़ैरा मनसबदारों के साथ चंदेरी के रास्ते बिझौर को जावे और बरसात के गुज़रने तक वहीं रहे ॥

जुझारसिंघ ने इन फ़ौजों के आने में अपनी खराबी देख कर खान खानां की मारफ़त बादशाह से अरज़ कराई कि जो कोई बादशाही चाकर मेरे पास आवे तो मैं उसके वसीले से अपनी अरज़ मारूज़ करूं बादशाह

نبیرہ جگنا تھ کچھواہہ تعینات کئے گئے اور خان فیروزجنگ کے ساتھ راجہ آمر سنگھ زمیندار باندہون گڈہ چندرمن بندیلہ اور راجہ سارنگ دیو متعین ہوئے اللہ ویردی خان کو برہان پور جانے کا حکم ہوکر خاندوران کو مالوہ کی صوبہ داری عطا ہوئی اور یہ حکم پہونچا کہ معہ مادہو سنگہ ولد راو رتن ہاڈا و راجہ دیبی سنگہ ولد راجہ بہارت بندیلہ وغیرہ کے چندیری کے راستہ سے بجہور کو جاوے اور برسات کے گذرنے تک وہین رہے -

جوجہار سنگہ نے ان فوجون کے آنے میں اپنی خرابی دیکھکر خانخانان کی معرفت بادشاہ سے عرض کرائی کہ اگر کوئی بادشاہی ملازم میرے پاس آوے تو مین اوسکے ذریعہ سے اپنی عرض معروض کراؤن بادشاہ نے

ने सुंदरकबिराय को भेजक
र फ़रमाया कि जो ३० लाख रुपै
नक़द और जो रागढ के बदले बे
तवां का ज़िला नज़र करे तो उस
का कसूर माफ़ किया जावे गा औ
र फ़ौज के सरदारों को हुक्म दि
या कि जब तक सुन्दर कबिरा
य लौट कर न आवे सब अपनी २
जगह पर थमे रहें और जो जुझार
सिंघ की तामील न करे तो ओंड
छा फ़तह करके उस की हकूमत
और कौम बुंदेले की राजगी राजा
देवी सिंघ को देदेवें जिस के बा
प दादे क़दीम से मालिक थे मग
र जहांगीर बादशाह ने अबुल फ़
जल को मार डालने के इनाम में
बरसिंघदेव को इनायत कर
दीथी ॥

सुंदर कबिराय गया और
यह मालूम करके कि जुझार सिं
घ अपने मुल्क माल किलों और

हुक्म

سندر کب راے کو بھیجکر کہلایا
کہ جو ۳۰ لاکھ نقد اور جوراگڈھ کے
عوض بیتوان کا قلعہ نذر کرے
تو اوسکا قصور معاف کیا جاویگا
اور سرداران فوج کو تا واپسی سندر
کب راے کے اپنی اپنے مقام
پر ٹھیرے رہنے کا حکم دیا اور یہ بھی
فرمایا کہ اگر جوجھار سنگھ تعمیل
نہ کرے تو اوندچھہ کو فتح کرکے
اوس ملک کی راجگی اور قوم
بندیلہ کی سرداری راجہ دیبی سنگھ
کو دیدیں جسکے باپ دادے
قدیم سے مالک تھے اور جہانگیر
بادشاہ نے بعد قتل شیخ ابوالفضل
کے اُنسے یہ حکومت اور ریاست
ضبط کرکے جوجھار سنگھ کے باپ
برسنگھ دیو کو عنایت کردی تھی۔

سندر کب راے گیا
اور یہ معلوم کرکے کہ جوجھار سنگھ
اپنے ملک مال قلعوں و
سنگلوں کے بھروسہ پھولا ہوا ہے

जंगलों के भरोसे भूला हुआ है पीछा लौट आया तब बादशाह ने तीनों सरदारों को हल्ला करने का हुक्म लिखवादिया और कुल फ़ौज की अफ़सरी के वास्ते शाहज़ादे औरंगज़ेब को १० हज़ारी ज़ात और १० हज़ार सवारों का मनसब देकर आसोज बदी २ को रवाने किया उसके साथियों में राजा बिठ्ठलदास गौड़ राजा रायसिंघ महाराजा भीम का बेटा गोकलदास सीसोदिया और महेस राठौड़ थे॥

## बरस ९

आसाढ सुदी ३ संबत १६९२ से आसाढ़ सुदी २ संबत १६९३ तक

सावण अव्वल बदी २ को बादशाह ने १ नई किताब बनाने के इनाम में जो पसंद हुई थी जगन्नाथ कलावंत को जिसका ख़िताब कबिराय या हाथी इ

واپس چلا آیا بادشاہ نے تینون سرداروں کو حملہ کرنے کا حکم دیا اور افسری کل کے واسطے شاہزادہ اورنگ زیب کو دس ہزاری ذات اور دس ہزار سوارون کا منصب دے کر تاریخ ۱۵ ربیع الثانی ۱۰۴۵ھ کو روانہ کیا اُسکی رفاقت مین راجپوتون مین سے راجہ بٹھلداس گوڑ راجہ رائے سنگھ ولد مہاراجہ بھیم گوکلداس سیسودیہ اور مہیش داس راٹھوڑ تھے

## برس نوان

۱۰۴۵ہجری
۷ جون ۱۶۳۵ء سے
۲۶ مئی ۱۶۳۶ء تک

۱۶ محرم کو ایک تازہ تصنیف کے صلہ مین جو پسند ہوئی تھی جگناتھ کلاونت مخاطب کب رائے کو ہاتھی عنایت ہوا۔

| | |
|---|---|
| ना यत किया ॥<br>भादों बदी २ को राजादे वीसिंघ को नक़ारा इनाय त हुआ ॥<br>भादों सुदी १० को बाद शाह ने बलख़ के एलची को १ भारी ख़िलत और ५० हज़ार रुपैये दे कर बिदा किया और उस के साथ अपना वकील भी सवा लाख रुपैये की सोग़ातें देकर नज़र मुहम्मद ख़ां के पास रवा ने किया ॥<br>भादों सुदी १५ को राजा जय सिंघ दक्खन से आकर द रबार में हाज़िर हुआ ॥<br>असोज बदी ५ को बादशा ह रथ में बैठ कर दौलता बाद का क़िला देखने को रवाने हुये<br>॥ उरछे की फ़तह<br>जब बरसात हो चुकी तो बादशाही अमीर भांडेर में जमा | ۱۶ - ربیع الاول کو راجہ دیبی سنگھ کو نقارہ مرحمت ہوا -<br>۸ ربیع الثانی کو بادشاہ نے بلخ کے ایلچی کو خلعت فاخرہ اور مبلغ پچاس ہزار روپیہ نقد دے کر رخصت کیا اور اُسکے ساتھ اپنا وکیل بھی معہ تحایف قیمتی ایک لاکھ روپیہ کے نظر محمد خان والی بلخ کے پاس روانہ فرمایا -<br>۱۴ - ربیع الثانی راجہ جے سنگھ کچھواہہ دکہن سے آکر دربار مین حاضر ہوا -<br>۱۸ - ربیع الثانی کو بادشاہ رتھ مین بیٹھ کر قلعہ دولت آباد کے دیکھنے کو دکہن کی طرف روانہ ہوئے -<br>فتح اونڈچھ<br>جب برسات ہو چکی تو بادشاہی امیر بھانڈیر مین جمع |

डुए और वहां से उरछे के ऊपर
चल कर उसके पास पहुंचे तो ३
कोस से जंगल काटने पड़े जुझा
र सिंघ ५ हज़ार सवार और १० ह
ज़ार पैदलों से उरछे में था हररोज़
उसके आदमी जंगल में से तीरओ
र बंदूक छोड़ा करते थे बादशा
ही फ़ौज कातिक सुदी १ को गां
व खमरडानी में पहुंची जहां से
उरछा १ कोस था राजा देवी सिंघ
ने खान दौरां के साथ हमला क
रके वहां की पहाड़ी जुझार सिं
घ के आदमियों से छीन ली तब
तो जुझार सिंघ ने अपने क़बीलों
और खज़ानों को उरछे से धामूनी
के किले में भेज दिया यह बहुत
मज़बूत क़िला उसके बाप का
बनाया हुआ था जिस के ३ तरफ़
दल दलें हैं जिनके मारे सुरंग
और सवाबात कूंचों की कारर
वाई नहीं होसकती पच्छम की

ہوئے اور واسطے فتح اونڈچھ
کے روانہ ہوکر جب اوسکے پاس
پہونچے تو ۳ کوس سے جنگل کاٹنے
پڑے جوجہار سنگہ پانچہزار سوار
اور دس ہزار پیدلون سے
اونڈچھ مین تہا ہر روز اوسکے
آدمی جنگل مین سے تیر اور
بندوق مارا کرتے تھے جن سے
بادشاہی لشکر لڑتا بھڑتا ۲۹ -
ربیع الثانی کو مقام کھمرڈانی
مین جو اونڈچھ سے ایک کوس
تہا پہونچا تب راجہ دیبی سنگہ
نے معہ خاندوران کے حملہ کرکے
کھمرڈانی کی پہاڑی کو جوجہار سنگہ کے
آدمیون سے چھین لیا جوجہار سنگہ
نے اپنے عیال اطفال اور زر
سرخ و سفید کو اونڈچھ سے نکالکر
قلعہ دہامونی مین بہیجدیا یہ قلعہ
اوسکے باپ کا بنایا ہوا تہا اور بہت
مضبوط تہا تین طرف تو دلدلین
تھین جنکے مارے سرنگ اور

तरफ मैदान है सो उधर २० गज़ गहरी खाई खोद कर दलदलों से मिला दी है ॥

फिर कुछ लोगों को उरछे की हिफ़ाज़त पर छोड़ कर खुद भी बिक्रमाजीत समेत भाग गया तब असोज सुदी ३ सोमवार को बादशाही सिपाहियों ने कमंद और नसीनयों से ऊपर चढ कर किला फ़तह कर लिया और १ रोज़ रहकर इलाके समेत राजा देवी सिंघ को बमूजिब हुक्म बादशाह के दे दिया और असोज सुदी ५ को धारा नदी से उतर कर जुझार सिंघ का पीछा किया आसोज सुदी १५ को धामूनी से ३ कोस पर पहुंचे तो मालूम हुआ कि जुझार सिंघ अपने बालबच्चों और खज़ानों को वहां से भी निकाल कर जोरा गढ़ के किले में लेगया है जिसकी मज़

جانب کوچون کی کارروائی
نہین ہوسکتی تھی اور پچھم کی طرف
ہے ان مین ۲۰ گز گہری کہائی کہود
دلدلون سے ملادی تھی-
پہر کچھ لوگون کو اونڈچھ کی
حفاظت پر چہوڑکر خود بھی معہ بکرماجیت
کے بھاگ گیا-
دوشنبہ ۲ جمادی الاول کو بادشاہی
لوگون نے کمند اور زینہ کے ذریعہ
سے چڑھکر قلعہ فتح کرلیا اور ایکروز
رہکر راجہ دیبی سنگہ کو وہان چہوڑا
کیونکہ قلعہ اونڈچھ معہ مضافات کے
اسکو بادشاہ کے حضور سے عنایت
ہوا تہا-
۴ جمادی الاول کو بادشاہی
لشکر دریائے دہارا سے جو اونڈچھ
کے قریب ہے گذرکر جوجہار سنگہ
کے تعاقب مین روانہ ہوئے ۱۴ کو
دہاموُنی سے ۳ کوس ادہر پہونچے
تو معلوم ہوا کہ جوجہار سنگہ اپنے اہل و عیال
کو معہ خزانہ کے وہان سے نکالکر جوراگڈہ

| | |
|---|---|
| बूती का उसको ज़्यादा भरोसा था और धामूनी के कोट को गि राकर रतनां नाम १ शख़्स कुछ भरोसे बंद आदमियों के साथ व हां छोड़ा है बादशाही फ़ौज ने धामूणी को घेरा और किलेवा लों ने आधीरात तक बराबर बा ण और बंदूकों से जंग की मगर फिर ख़ान दोरां के पास आदमी भेजे और लड़ाई बंद करदी फ़ौ ज के अफ़सरों का इरादा सुब ह के वक्त क़िले में जाने का था कि लुटेरों ने अंदर घुस कर लू ट मचादी ख़ान दोरां उनके रोक ने के वास्ते गया इत्तफाक से लु टेरों की मशाल का १ फूल बुरज में गिरा और बारूद जो वहां थी भबक उठी उससे ८० गज़ दी वार जो १० गज़ चौड़ी थी बुरज समेत उड गई उसकी धमक और पत्थरों की चोट से बहुत | تو کر جکی مضبوطی پر اُسکو زیادہ اعتماد تہا نے گیا ہے اور حصار دہاموني کو گرا کر رتنا نام ایک شخص کو معہ اپنے بعض معتمدون کے وہان چہوڑ گیا ہے بادشاہی اُمرا نے دہاموني کو گہیرا قلعہ والون نے آدہی رات تک برابر بان اور تفنگ سے جنگ کی پہر خاندوران کے پاس آدمی بہیجے اور لڑائی بند کردی سرداران لشکر نے صبح کے وقت قلعہ مین جانے کی ٹہرائی تہی مگر لوٹیرون نے اُن سے پہلے قلعہ مین گہسکر لوٹ مار شروع کردی خاندوران اُنکے روکنے کے واسطے گیا اتفاق سے لوٹیرون کی مشعل کا گل ایک برج مین گرا جس سے وہان کی بارود اُڑ گئی اور ۸۰ گز دیوار جسکا عرض ۱۰ گز تہا معہ اُس برج کے گر پڑی جس کے صدمہ اور پتہرون کی ضرب سے بہت سے آدمی |

से सिपाही मारे गये जिन में नियादा आदमी राजा गजसिंघ के बेटे अमरसिंघ के थे खान जहां ने किले के माल और खज़ाने का बंदोबस्त किया दूसरे दिन बाज़े लोगों ने जो घास लकड़ी के वास्ते जंगल में गये थे एक कुंआ रुपयों से भरा पाया और तलाश करने से दो तीन कुएं और भी मिले जिन में से ढाई लाख रुपया हाथ आया इस से मालूम ड़आ कि जुझारसिंघ ने जंगल में कुए खोद कर अपना खज़ाना छुपा दिया था ॥

जुझारसिंघ इस वक्त जोरा गढ से २ कोस शाहपुरे में था उसने अपना आदमी देवगढ में भेजा था कि जो वहां का ज़मींदार उस की बातों में आजावे तो उसके मुल्क में भाग जावे और रहने के वास्ते किले जोरागढ़ को भी सजाता था ॥

مارے گئے انمین زیادہ تر راجہ گج سنگہ کے بیٹے امرسنگہ کے راجپوت تھے پھر خاندوران نے نقد و جنس قلعہ کو ضبط کیا دوسرے دن بعضے لوگون نے جو جنگل مین واسطے لانے گھاس لکڑی کے گئے تھے ایک کنوان روپیون سے بھرا ہوا پایا اور تلاش کرنے پر تین کوئین اور نکلے جنمین سے ڈہائی لاکھ روپیہ ہاتھ آیا اس سے معلوم ہوا کہ جوجہار سنگہ نے جنگل مین کوئین کھودکر اپنا خزانہ پوشیدہ کردیا تھا۔

جوجہار سنگہ اسوقت جوراگڈہ سے دو کوس قصبہ شاہپور مین تہا اور اپنا آدمی زمیندار دیوگڈہ کے پاس بھیجکر اس بات کا منتظر تہا کہ جو وہ اُسکی باتون مین آجاوے تو اوسکے ملک مین چلا جاوے اور اسکے سوائے وہ قلعہ

| | |
|---|---|
| बादशाह का हुक्म आया कि सैयद ख़ान जहां तो मुल्क के बंदोबस्त और ख़ज़ाने की तहक़ीक़ात के लिये वहां रहे अबदुल्ला खां और ख़ानदौरां तमाम अमीरों को ले कर रवाने जोरागढ़ हों सो ये सब कातक बदी ११ को रवाने होगये॥ | کو بھی مضبوط کرنے کی فکر مین تہا بادشاہ کا حکم آیا کہ سید خانجہان تو ضبط ولایت مفتوحہ اور تحقیقات خزاین کے لئے وہان رہے اور عبداللہ خان و خان دوران معہ تمام اُمرا کے روانہ جوراگڈہ ہون چنانچہ ۱۱ کو یہ سب روانہ ہو گئے |
| इतने में जुझारसिंघ ने देवगढ़ के ज़मींदार के मरने की ख़बर सुनी तो जोरागढ़ की तोपों को तोड़ कर यहां जो असबाब था उस को जला दिया और पेम नारायण की इमारतों को जो क़िले में थीं बारूद से उड़ा कर अपने बच्चों और माल असबाब समेत लानजी और क़रोले के रस्ते से जो ज़मींदार देवगढ़ की सरहद में था दक्खन का रस्ता लिया॥ | اُدہر جوجہار سنگہ نے سُنا کہ زمیندار دیوگڈہ مرگیا اس سے وہ جوراگڈہ کے قلعہ کی توپون کو توڑکر اور وہان جو اسباب تہا اوسکو جلا کر اور پیم نراین کی بنائی ہوئی عمارتون کو جو اندر قلعہ کے تھین باروت سے اُڑا کر معہ اہل وعیال و مال و منال کے لانجی و کیرولہ کی راہ سے جو داخل ملک زمیندار دیوگڈہ ہے دکہن کی طرف روانہ ہوا بادشاہی لشکر جب جوراگڈہ کے سواد مین پہونچا تو خاندوران نے اندر جاکر ایک مندر کی چہت پر اذان دی اور کچھ منصبدارون کو |
| बादशाही लश्कर जब | |

जोरागढ़ की तलहटी में पड़ंचा तो
ख़ान दोरां ने अंदर जाकर १ मंदि
र की छत पर बांग दी और कुछ
मनसबदारों को जिन्हें गन्नोर
के ज़िमींदार का टीकाई कंवर
भोया वहां छोड़ कर शाह पुर को
अब्दुल्ला खां की तरफ़ कूंच
किया ॥

क़रेली के चोधरी राघो ने
ख़ान दोरां के पास आकर कहा
कि जुझार सिंघ २००० सवा औ
र ४००० पैदलों से जा रहा है उस
के हाथ ६० हाथी और ४० हथ
नियां हैं जिन में से बाजों के ऊप
र तो रोकड़ रुपैया और चांदी सो
ना लदा हुआ है और कितने के
ऊपर उसके बाल बच्चे हैं और इ
स बोझ भार के सबब से हर रोज़
मुशकिल से वहां ४ कोस चल
ता है जो मामूली ८ कोस के बरा
बर होते हैं यह सुनकर बादशा

جن میں پسر ٹیکہ سنگرام گنور
بہی تہا وہاں چہوڑکر خان فیروزجنگ
کے پاس شاہپور کو مراجعت
کی راگھو چودہری پتہ کریلی
نے خان دوران سے
ملکر کہا کہ جوجہار سنگھ معہ
دو ہزار سوار و چار ہزار
پیدل ساٹھ ہاتھی اور چالیس
ہتھنیون کے کہ جن میں
سے کتنے ایک کے اوپر
زر نقد اور سونے
چاندی کے سامان لدے
ہوئے ہین اور کتنے کے
اوپر اوس کے اہل و عیال
سوار ہین جا رہا ہے اور
بوجھ بہار زیادہ ہونے سے
ہر روز گونڈوانہ کے چار
کوس سے زیادہ کہ جو
رسمی آٹھ کوس ہوتے ہین
نہین چل سکتا ہے یہ سنکر
بادشاہی امرا اوس کے

ही सरदार उसके पीछे रवाने हु
ए उनके पीछे २ शाहज़ादा औ
रंगज़ेब भी कूच करता हुआ
धामूनी में जा पहुंचा अबदुल्ला
खां और ख़ान दौरां गढ़ कुतंगे
की वलायत और लांजी से जोगो
विंद गौड़ के इलाक़े में थी गुज़
रकर चांदा की सरहद में पहुं
चे जुझार सिंघ जो वहां जा रहा
था अब इनके पहुंचने की ख़ब
र सुन कर जल्दी २ चलने लगे
लेकिन अबदुल्ला ख़ां के आगे
चलने वाले सिपाही उस के पा
स जा पहुंचे और अबदुल्ला
ख़ां के हिरावल बहादुर ख़ां
का चचा "नेकनाम" घोड़ा दौड़ा
कर उस्के ऊपर गया तब जु
झार सिंघ और बिक्रमाजीत
कई औरतों को जिनके घोड़े
थक गये थे मारकर नेकनाम
पर टूट पड़े नेकनाम मारा गया

تعاقب میں عجلت سے روانہ ہوئے
پیچھے پیچھے اونکے شاہزادہ اورنگ زیب
بھی کوچ کرتا ہوا دہاموں میں
آپہونچا عبداللہ خان و خان دوران خان
ولایت گڈھ کٹنگہ اور لانجی سے
جو گوبند گونڈ کے متعلق تھی گذر کر
چاندا کی سرحد مین پہونچے تو
ججہار سنگہ بھی جو وہان جا رہا
تھا انکی خبر سنکر تیز روی کے
ساتھ جانے لگا آخر خان فیروز جنگ
کے قراولون نے اُسکو جا لیا -
بہادر خان فیروز جنگ کا ہراول
تھا اوسکا چچا نیکنام گھوڑا دوڑا کر
بہت ہی قریب پہونچگیا تب ججہار سنگہ
اور بکرماجیت کئی عورتون کو
کہ جن کی سواری کے
گھوڑے بہت کمزور تھے
قتل کرکے نیکنام کے اوپر
آگرے نیکنام مارا گیا اس
وقت راو رتن ہاڈا کے
بیٹے مادہو سنگہ نے گھوڑا

यह देख कर राव रतन के बेटे माधा सिंघ ने जो खान दौरां के हिरोल में था घोड़ा दौड़ा कर रुकाई बुंदेलों को मारा और वे लोग उस के सामने से हट कर चले गये अब खान दौरां बहादुर खां से आमिला जुझार सिंघ और बिक्रमा जीत इन फ़ौजों से पलट २ कर लड़ते थे आखिर जब उनके बहुत से साथी मारे गये तो तोस नक्कारा ४ हाथी और ९ ऊंट जिन के ऊपर रुपया लदा हुआ था। छोड़ कर झाड़ी में चले गये आस पास के ज़मींदारों ने बादशाही उमीरों के कहने से पता लगा कर खबर दी कि जुझार सिंघ अपने क़बीलों और खज़ाने के ८ हाथियों को अपने बेटे उदय भान और मुसाहिब श्याम ददा के साथ गोल कुंडे की तरफ़ रवाने करके खुद भी उनके पीछे

ڈال کر بندیلون کو مارنا شروع کیا اور نہ وہ لوگ اوسکے مقابلہ سے ہٹ کر چلدیے پھر خاندوران بہی بہادر خان سے آملا جوجہار سنگہ اور بکرماجیت ان دونون کی یکجائی فوجون سے پلٹ پلٹ کر لڑتے تھے اور اپنا رستہ بہی کاٹتے تھے مگر آخرش بعد مارے جانے اپنے اکثر ہمراہیون کے طوغ نقارہ چار ہاتہی نو اونٹ کہ جنکے اوپر روپیہ لدا ہوا تہا چھوڑ کر جہاڑی مین چلے گئے اُسطرف کے زمینداروں نے بادشاہی اُمرا کی تحریص سے پتہ لگا کر خبر دی کہ جوجہار سنگہ اپنے قبایل کو معہ آٹھ فیل خزانہ کے اپنے بیٹے اودے بہان اور اوسکے چہوٹے بہائی اور شام ددا اپنے معتمد اور دوسرے آدمیون

जारहाहै
इसपर अबदुल्ला खां और खान
दोरां ने उसका पीछा किया जुझा
र सिंघ के साथियों ने हाथियों के
खोज बिगाड़ दिये थे तोभी ये अ
टकल से उसके पीछे होलिये च
लते २ मालूम हुआ कि उदय भा
न ने धोका देने के वास्ते ६ हाथी
गोल कुंडे के रास्ते से चांदा की त
रफ़ रवाने कर दिये हैं और २ हा
थियों से जिनके ऊपर औरतें औ
र बच्चे हैं जलदी २ चला जारहाहै
ये भी उसके पीछे होलिये आ
खिर १ दिन कुछ बुंदेले नज़र आ
ये खान दौरां ने अपने बेटे और
मुकंद सिंघ हाडा को भेजा वे
लोग जोहर किया चाहते थे कि
ये जा पहुंचे तो भी वे राजा बरसिं
घदेव की बड़ी रानी पारबती औ
र दूसरी औरतों और बच्चों को ग
क सक हाथ तलवार और जमधर

کے گول کنڈہ کی طرف روانہ
کرکے آپ بھی اونکے پیچھے روانہ
ہوگیا ہے یہ سنکر خان فیروز جنگ
اور خاندوران نے تعاقب کیا
ہرچند کہ جوجھار سنگھ کے آدمیون
نے ہاتھیوں کے کھوج بگاڑ دیئے
تھے مگر یہ تو قیاس سے چلے گئے
اور معلوم کیا کہ اودے بہان
نے چھ ہاتھی تو بطور مغالطہ دہی
کے گول کنڈہ کے راستہ سے
چاندا کی طرف روانہ کردئے ہین
اور آپ معہ دو ہاتھیون کے
کہ جنکے اوپر عورتین اور بچے ہین
جلد جلد چلا جاتا ہے یہ بھی اوسکے
پیچھے ہولئے آخر ایکدن کچھ فوج
نظر آئی خاندوران نے اپنے
بیٹے سید محمد اور مادہو سنگھ ہاڈا کو
بھیجا آگے بندیلہ جوہر کیا ہی چاہتے
تھے کہ بادشاہی فوج سے ڈر کر راجہ
برسنگدیو کی بڑی رانی پاربتی
اور دوسری عورتوں اور بچون کو

कोमार कर भागने लगे मगर बादशाही आदमियों ने पीछा करके उनको जाघेरा और मार डाला जुझार सिंघ का बेटा दुर्ग भान और बिक्रमाजीत का दुरजन साल पकड़ा गया उदयभान और स्याम दहा जो गोलकुंडे की तरफ़ भाग गये थे कुछ दिनों पीछे वेभी गिरफ़्तार होगये॥

फिर बादशाही आदमी खानदौरां के हुक्म से रानी पारबती और दूसरी ज़ख़मी औरतों को उठाकर ख़ज़ाने के हाथियों समेत अबदुल्लाखां फ़ीरोज़ जंग के पास लेगये॥

जुझार सिंघ और बिक्रमाजीत उसी जगह बादशाह के डरसे जंगल में छुपे हुये थे उधर के गोंडों ने बादशाही लशकर की फ़तह सुनकर उनको बुरीतरह से मार डाला खानदौरां

ایک ایک زخم خنجر اور جمدہر کا مار کر بھاگنے لگے مگر بادشاہی فوج نے پہونچکر اونکو جا گہیرا اور مار ڈالا جوجھار سنگہ کا بیٹا درگ بہان اور بکرماجیت کا بیٹا درجن سال گرفتار ہوا اودے بہان اور شام دوا جو گول کنڈہ کی طرف بہاگ گئے تہے کچھ دنوں کے بعد وہ بہی گرفتار ہو کر آئے۔

بادشاہی سپاہی خان دوران کے حکم سے رانی پاربتی اور دوسری زخمی عورتون کو خاک سے اوٹہا کر معہ خزانہ کے ہاتہیون کے خان فیروز جنگ کے پاس لے گئے۔

جوجھار سنگہ اور بکرماجیت اُسی نواح مین بادشاہی فوج کے خوف سے ایک جنگل کے اندر چھپے ہوئے تھے جہان گونڈون نے بادشاہی لشکر کی فتح سنکر انکو بعقوبت تمام قتل کر ڈالا خاندوران

को जब यह खबर पहुंची तो उन की लाश पर गया और दोनों के सिर काट कर उनकी अंगूठियों और हथियारों के साथ जो उन के मारने वालों के पास थे खान फ़ीरोज़ जंग के पास लाये उसने बादशाह की खिदमत में भेजे बादशाह के डेरे पास सुदी २ को सीहोर में थे जहां यह सिर पहुंचे और सराय के दरवाज़े से लटकाये गये ॥

राजा बरसिंघदेवने बहुत से विकट जंगलों और झाड़ियों में कुएं खोद२ कर इस ग़रज़ से गाड़ा था कि उसकी औलाद के काम आवेगा और इस बात से उसके और उसके दो एक खिदमतगारों के सिवाय और कोई वाकिफ़ न था और जब जुझारसिंघ गद्दी पर बैठा

یہ خبر سنکر اونکی لاش پر گیا اور
دونون کے سر کاٹ کر معہ اونکے
سازو یراق کے جو اونکے قاتلون
کے پاس تھے خان فیروز جنگ کے
پاس لے گیا اور اُس نے روانہ
درگاہ کئے بادشاہ کے ڈیرے
غرہ شعبان کو سہور مین تھے وہان
یہ پہنچے اور سرائے کے دروازے سے
لٹکائے گئے تھے ۔

راجہ برسنگدیو نے بہت
سے دُشوار گذار جنگل اور جہاڑیون
مین کنوئین کھود کھود کر روپیہ
گاڑا تہا تاکہ اوسکی اولاد کے
کام آوے اور اس بات سے
اوسکے اور اوسکے دو خدمتگارون
کے سوائے اور کوئی واقف
نہ تہا اور جب جوجہار سنگہ مسند
نشین ہوا تو اوسنے اُن خزانون
اور دفینون کو اور بڑہایا تہا
اور آخر یہی مال اوسکے زوال
کا باعث ہوا اُنکے مارے جانے

तो उसने उनर खज़ानों को और ब ढ़ाया मगर आ ख़ीर में यही माल उसकी जान का जिन जाल होग या और उसके मारे जाने पर १ कि रोड़ रुपया उसके खज़ानों से का ई दफ़े करके बादशाही खज़ानों में पहुंचा और ५० लाख रुपये का मुल्क फ़त्ह हुआ

बादशाह ने उरछे का रा ज राजा देवी सिंघ बुंदेले को दे दिया जिसके बुज़ुरगों से जहांगी र बादशाह ने ज़ब्र करके राजा ब रसिंघदेव बुंदेले को अबुल फ़ज़ल वज़ीर को मारने के इ नाम में इनायत किया था॥

बादशाही सरदार जो व लायत चांदा तक पहुंच गये थे उन्होंने गुन्नोरके ज़मींदार सं ग्राम को चांदा के ज़मींदार के बां के पास भेजा जो तमाम गोंड वाणों के ज़मींदारों में बड़ा था।

پر ایک کروڑ روپیہ اوسکے خزاین سے کئی دفعہ کرکے داخل خزانہ شاہی ہوا اور پچاس لاکھ روپیہ کا ملک ہاتھ آیا-

بادشاہ نے اونڈچھہ کا راج راجہ دیوی سنگہ کو دیدیا جس کے بزرگون سے جہانگیر بادشاہ نے چھین کر راجہ برسنگ دیو کو ابوالفضل کے قتل کے صلہ مین بخش دیا تھا-

اس عرصہ مین سرداران فوج شاہی نے جو ولایت چاندا تک پہونچ گئے تھے سنگرام زمیندار گنور کو چاندا کے زمیندار کیبا کے پاس بھیجا جو تمام گونڈوانہ کے زمینداروں مین بڑا تھا اُس نے بندیلون کا کچھ

उसने बुंदेलोंका कुछ मालअस बाब जोउसकी विलायत में बिखराहुआथा इकट्ठा करके संगराम के वसीलेसे परटेना नद्दी के किनारे पर बादशाही सर्दारोंसे मुलाक़ातकी ५लाखरुपये बादशाह के और १ लाखलशकर के सरदारोंके वास्ते देनाकरके २ दफ़े मेंपहुंचा दिये और २ नामीहाथी (एक रूपशृंगारऔर दूसराभोजराज) नज़र किये और हरसाल २५हाथी और १५ हथनियां देना क़बूल करके यहइक़रार किया कि जिस साल नदेसके तो ८०००० नक़द पहुंचादेवे और दौलताबाद में हाज़िर होकर बादशाह का मुजरा करे। ख़ान फ़ीरोज़ जंग और ख़ानदौरां उससे इस बात का अह्दनामा लेकररवाने दरगाह हुए॥

बादशाह उसवक्त बाड़ीमें

مال اسباب جو اوسکے ولایت مین بکھرا ہوا تھا جمع کرکے سنگرام کے ذریعہ سے دریائے پرتینہ کے کنارے پر سرداران فوج شاہی سے ملاقات کی اور پانچ لاکھ روپیہ واسطے سرکار والا کے اور ایک لاکھ واسطے سرداران لشکر کے دینا قبول کرکے دو دفعہ مین پہونچا دیئے اور دو نامی ہاتھی بھی ایک روپ سنگار اور دوسرا بہوجراج پیشکش کیئے اور ہرسال ۲۵ ہاتھی اور ۱۵ ہتھنیون کے دینے کا وعدہ کیا اور جس سال نہ دے سکے تو اسّی ہزار روپیہ نقد پہونچا دے اور دولت آباد مین بادشاہ کا مجرا کرے - خان فیروز جنگ اور خان دوران اس بات کا اُس سے عہدنامہ لیکر روانہ درگاہ ہوئے

بادشاہ اُسوقت باڑی مین تھے شاہزادہ اورنگ زیب نے

थे शाहज़ादे औरंगज़ेब ने उस दे
की उमदा आब हवा और मुल्क
की आबादी गुलज़ारी और शि
कार की बहुतायत की ऐसी
तारीफ़ लिखी कि बादशाह व
हां की सैर को जो दक्खन के सी
धे रास्ते से सिर्फ़ २१ कोस के फ़ास
ले पर था कातिक बदी २ को र
वाने हुए और कातिक बदी ८
को झांसी का क़िला फ़तह क
रने के वास्ते जुझार सिंघ के नो
कर बसंत के क़बज़े में था मु
ख़लिस ख़ां और मक्रमत ख़ां
को भेजा ॥

कातिक बदी १३ को आ
दिल ख़ां का एलची शेख़ दबी
र बादशाह के हज़ूर में हाज़िर
हुआ॥

बसंत ने जुझार सिंघ के
नष्ट होजाने से झांसी का क़िला
मक्रमत ख़ां को सौंप दिया।

اوندچھ کی خوبی آب وہوا فراوانی
سیر و شکار اور آبادی و گلزاری
ملک کی اتنی تعریف لکھی کہ بادشاہ
اُس ولایت کی سیر کو جو راہ
راست دکن سے ۲۱ کوس
سے زیادہ فاصلہ پر نہ تھے
۱۵- جمادی الاول کو روانہ
ہوئے اور ۲۱- جمادی الاول
کو واسطے تسخیر قلعہ جہانسی کے
جو جوجہار سنگھ کے ملازم بسنت
کے پاس تھا مخلص خان اور
مکرمت خان کو روانہ کیا

۲۰- جمادی الثانی کو
بیجاپور کے شاہ عادل خان کا
ایلچی شیخ دبیر بادشاہ کے
حضور مین حاضر ہوا-

بسنت نے جوجہار سنگھ
کے مستاصل ہوجانے سے
جہانسی کا قلعہ مکرمت خان کو سونپ

उससेबऊत सी तोपें थीं जिनमें १० बड़ी २ तोपें राजा बरसिंघदेव कीढलवाई थीं और सीसा बारूद भी बऊत था बादशाह नेराजाबिट्ठलदासके भतीजे गिरधरदास को उस किल्ले की किल्लेदारी पर भेजा ॥

बादशाह दत या के पहाड़ में राजा बरसिंघ देव कीबनाई इमारत के देखने को गये जो बऊत उमदा नहरों और हरयालियें में थी और जिस के ७ खंड थे ८२ गज़ लंबी और इतनीही चौड़ी थी ॥

कातिक सुदी १० को नाना जी दखनी का २हज़ारी ज़ात २हज़ार सवार काइनायत ऊआ

मंगसिर बदी १२ कोबादशाह उंछै मेंपऊंचे किले औरकिले की इमारतों को देखकर १ बड़ा मंदिर जोबरसिंघदेव ने

دیا انمین بہت سی توپین تھین ازانجملہ دس توپین کلان راجہ برسنگدیو کی ڈہلوائی ہوئی تہین اور شیشہ باروت بہی بہت تہا بادشاہ نے راجہ بٹھل داس کے بھتیجے گردہرداس کو وہان کی قلعداری پر بہیجا

بادشاہ دتیا کے پہاڑ مین راجہ برسنگدیو کی بنائی ہوئی عمارت کے دیکہنے کو گئے جو بہت عمدہ نہرون اور سبزہ زارون کے کنارون پر تہی وہ لمبی ۸۲ گز اور چوڑی بہی اسیقدر تہی اور سات طبقہ کی تھی۔

۸۔جمادی الثانی کو ناناجی دکہنی کو منصب دوہزاری ذات اور دوہزار سوار کا عطا ہوا

۲۵۔جمادی الثانی کو بادشاہ اونڈچہہ مین پہونچکر قلعہ اور عمارت کی سیر کی اور برسنگدیو کے محلون کے پاس جو ایک بہت اونچا

अपने महलों के पास बहुत ऊं चा और मज़बूत बनाया था गि रादिया राजा देवी सिंघ ने हाज़ि र होकर मुजरा किया और नज़र पेश की ॥

उरछे में बेरसागर तलाव राजा बरसिंघदेव का बनाया हुआ बहुत अच्छा था जिसका गि रदाव ५॥ कोस बादशाही कोसों का था दूसरा तलाव समंदरसाग र परगने छतरे में है इसका गिर दाव ८ कोस का है बरसिंघ देव ने उसके उपर १ मज़बूत पुल और उ मदा पट्टा बनाया है जिसपर से पानी की चादर गिरती है यह त लाव चोड़ाई और गहराई में उस प रगने के छोटे बड़े ३०० तलावों से बढ़ चढ़ कर है और पानी भी इस का बहुत साफ़ और मज़ेदार था बादशाह कुछ दिन वहां रहे पर गने छतरे में ९०० गांव थे और हासि

اور سنگین مندر اُسکا بنایا ہوا تہا اُسکو گروادیا راجہ دیبی سنگہ نے حاضر ہوکر نذر اور پیشکش کی

اُرچھہ مین برساگر تالاب برسنگدیو کا بنایا ہوا بہت اچھا تہا اوسکا دور ساڑہے پانچ کوس کا بادشاہی کوسون کے حساب سے تہا دوسرا تالاب سمندر ساگر پرگنہ چہترہ مین ہے اُسکا دور آٹھ کوس کا ہے برسنگدیو نے اُوسکے اوپر ایک مضبوط پل بنایا تہا جسپر سے ایک پاکیزہ آبشار گرتی تہی یہ تالاب لمبائی چوڑائی اور گہرائی مین اُس پرگنہ کے چہوٹے بڑے ۳۰۰ تالابون سے بڑہ چڑہ کر تہا اور پانی بھی اوسکا بہت صاف اور گوارا تہا بادشاہ کچھ دن وہان رہے پرگنہ چہترہ مین نوسو گانو تھے اور سالانہ حاصل آٹھ لاکھ روپیہ

ल सालाना ८ लाख रुपया था बादशाह ने ज़ब्त करके इसलामाबाद नाम रक्खा ४८ लाख रुपया झांसी के कुओं में से निकला और ३४ लाख रुपया धामूणी के जंगल से आया बादशाह ने यह सब रुपया हाथियों पर लदवा कर आगरे को भेजा ॥

हरी सिंघ राठोड़ का मन सब असल और इजाफ़े से हज़ारी ज़ात और ८०० सवार का हो गया ॥

मंगसिर बदी ५ को शाहज़ादा ओरंगज़ेब धामूणी से परगने कतरे में बादशाह के पास हाज़िर हुआ ॥

मंगसिर सुदी ७ को बादशाह सिरोंज के रास्ते से दक्खन को रवाने हुए

पोस सुदी १२ को जन्मपत्री के हिसाब से बादशाह की सा

تہا یہ پرگنہ خالصہ مین ضبط ہوکر اسلام آباد کے نام سے موسوم ہوا ۴۸ لاکھ روپیہ علاقہ جہانسی مین کوون سے نکلا ۳۴ لاکھ دہاموئی کے جنگل سے آیا بادشاہ نے اس سب روپیہ کو ہاتھیوں پر لدواکر آگرہ بہیجدیا۔

ہری سنگھ راٹھوڑ کا منصب اصل اور اضافہ سے ہزاری ذات اور آٹھ سو سواروں کا ہوگیا۔

۳ رجب کو شاہزادہ اورنگ زیب دہاموئی سے پرگنہ جہترہ مین بادشاہ کے پاس حاضر ہوا۔

۵ رجب کو بادشاہ سرونج کے راستہ سے دکہن کو روانہ ہوے۔

۱۰ شعبان کو جشن وزن شمسی مین راجہ گجسنگہ کے

ल ग्रह का तुलादान था जिसके दरबार में राजा गजसिंघ के बेटे अमरसिंघ के मनसब ५०० सवारों का इज़ाफ़ा हुआ जिससे वह अब तीन हज़ारी ज़ात और १५०० सवारों का मनसबदार होगया॥

बीजापुर के आदिल ख़ां ने तो निज़ाम शाह के अमीरों साहूजी वगैरा को पनाह दी थी कुतुबुल्मुल्क उससे मिला हुआ था। और उसकी अमलदारी में इमामियां मज़हब की रिआयत से ईरान के बादशाह के नाम का ख़ुतबा पढ़ा जाता था इस लिये बादशाह ने दोनों को समझाने के वास्ते एलची भेजना मुनासिब समझ कर मुकर्मत ख़ां को तो बीजापुर भेजा और कुछ सोग़ात आदिल ख़ां के वास्ते उसके साथ भेजकर आदिल ख़ां को कहलाया कि साहू वगैरा को निकालकर अप

بیٹے امر سنگھ کا منصب پانسو سواروں کے اضافہ سے تین ہزاری ذات اور پندرہ سو سواروں کا ہو گیا۔

بیجاپور کے عادل خان نے تو ساہوجی وغیرہ امرائے نظام شاہی کو پناہ دی تھی اور قطب الملک اس سے ملا ہوا تھا، اور علاوہ اس کے قطب الملک کی عملداری میں بہ سبب رعایت مذہب امامیہ کے شاہ ایران کے نام کا خطبہ پڑھا جاتا تھا۔ اس لئے بادشاہ نے دونوں کی فہمایش کے لئے ایلچی بھیجنا مناسب سمجھکر مکرمت خان کو تو بیجاپور بھیجا اور کچھ سوغات عادلخان کے واسطے بھیجکر اس سے کہلایا کہ ساہو وغیرہ کو نکالکر اپنی صفائی کرے ورنہ بادشاہی فوج اس کے اوپر بھیجی جائیگی۔ اور قلعہ

नीस फ़ाईकरले नहीं तो उसके ऊपर फौज भेजी जायेगी शोलापुर का किला और दंकू का इलाक़ा जिसकी जमा ९ लाख हुन थी आदिलखां को देना करके उसके बदले में मामूल से ज्यादा पेशकश मांगी और अबदुल लतीफ़ गुजराती को गोलकुंडे में कुतुबुल्मुल्क के पास भेजा और लिखा कि शाह ईरान के नाम का खुतबा अपने मुल्क में पढावे और पेशकश जो बाक़ी है दीवानों के हिसाब के माफ़िक भेजदे ॥

पोस बदी २ को खानदौरां चांदा के मुल्क से आकर हाज़िर हुआ और ५ लाख रुपया और रूप सिंगार हाथी वहां के ज़िमींदार का भेजा हुआ पेश किया झुझारसिंघ की औरतें और उसके बेटे दुर्गभान और पोते दुर्जनसाल को भी हाज़िर किया बादशाह

شولاپور و ملک دنکو کہ جسکی جمع ۹ لاکھ ہن تھی عادلخان کو دینا کرکے اوسکے عوض زیادہ پیشکش مانگی اور عبداللطیف گجراتی کو گولکنڈہ مین قطب الملک کے پاس بھیجا اور لکھا کہ سب اصحاب پیغمبر جو اُس ملک مین ہوتی ہے اوسکا انسداد کرے اور خطبہ شاہ ایران کے نام کا نہ پڑھا وے باقی پیشکش بموجب حساب دیوانیون کے بھیجدے۔

۱۵- شعبان کو خاندوران چاندا کے ملک سے درگاہ مین حاضر ہوا پانچ لاکھ روپیہ اور روپ سنگھار ہاتھی زمیندار چاندا کا بھیجا ہوا پیش کیا جوجہار سنگہ کی عورتین اور اُسکے بیٹے درگ بہان اور پوتے درجن سال بھی اوسکے ساتھ حاضر آئے بادشاہ نے ہاتھی کا نام توہا سندر رکھا درگ بہان اور درجن سال کو مسلمان کرکے اسلام قلی اور

नेहाथी का नाम तो महासुंदररखा दुर्गभान और दुर्जन साल को मुसलमान करके एक का नाम इसलामकुली और दूसरे का नाम अली कुली रक्खा पारबती रानी तो ज़ियादा ज़खमी होने के सबबसे मरगई थी और दूसरी औरतें मुसलमान करके हरमबनाई गईं

माधोसिंघ भी जो खानदौरां के साथ हाज़िर हुआ था उसके मनसब में ५ सदी ज़ात और १०० सवार का इज़ाफ़ा हुआ जिस से उसका मनसब ३ हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का होगया

जब बादशाह दौलताबाद के क़रीब पहुंचे तो रावरतन का पोता शत्रुसाल पृथ्वी राज राठोड़ रावदूदा का बेटा हरीसिंघ और मालूजी भोंसला और परसूजी खान ज़मां के साथ हाज़िर खिदमत हुए॥

علی قلی نام رکھا پاربتی رانی تو بسبب زخم قوی کے مرگئی تھی اور دوسری عورتین مسلمان کرکے حرم سرا مین داخل کی گئین۔

مادہوسنگہ جو خاندوران کے ساتھ تھا بعد ادراک ملازمت پانصدی ذات اور سو سوار کے اضافہ سے تین ہزاری ذات اور چھ سو سواروں کا منصب دار ہوگیا۔

جب بادشاہ دولت آباد کے قریب پہونچے تو راؤرتن ہاڈا کا پوتہ راؤ شترو سال۔ پرتھی راج راٹھوڑ راؤ دودا کا بیٹا راؤ ہری سنگہ مالوجی بہوسلہ اور پرسوجی یہ سب خانزمان کے ہمراہ بادشاہ کی خدمت مین حاضر ہوئے۔

बादशाह ने फागण बदी ६ को साहू जी के निकालने के वास्ते जो निज़ामुल्मुल्क के खानदान से १ लड़के को निज़ामुल्मुल्क बना कर किसी क़दर मुल्क दबाये हुए था ख़ान दौरां और ख़ान ज़मां को भेजा और हुक्म दिया कि जो आदिलखां लश्कर के शामिल होजावे तो ख़ैर नहीं तो उस का मुल्क भी ख़राब करें ख़ान दौरां की फ़ौज में राजा जय सिंघ, राजा बिट्ठल दास, राव रतन का बेटा माधोसिंघ, राजा गज सिंघ का बेटा अमर सिंघ, गोकल दास सीसोदिया, महेश दास राठोड़, ऊदाजीराम का बेटा जगजीवन, और २० हज़ार सवार थे और हुक्म हुआ कि राजा जयसिंघ, राजा बिट्ठल दास, अमरसिंघ और

۲۰- رمضان کو بادشاہ نے ساہوجی بہوسلہ کے دبانے کے واسطے جس نے نظام الملک کے خاندان سے ایک لڑکے کو نظام شاہ بناکر کچھ ملک دبا رکہا تہا- خاندوران- خان زمان اور شایستہ خان کو بہیجا اور حکم دیا کہ جو عادلخان اس لشکر کے شامل ہوجاوے تو خیر ورنہ اوسکا ملک بہی تباہ کریں

خاندوران کی فوج میں راجہ جے سنگہ- راجہ بٹہل داس گوڑ مادہو سنگہ ولد راؤ رتن ہاڈا امر سنگہ ولد راجہ گج سنگہ- گوکلداس سیسودیہ مہیش داس راٹہوڑ- جگ جیون خلف اودا جی رام اور بیس ہزار سوار تھے بادشاہ کا حکم تہا کہ راجہ جے سنگہ راجہ بٹہل داس امر سنگہ راٹہوڑ اور تمام راجپوت ہراول اور مبارز خان اور -

तमाम राजपूत हिरावल, मुबा
ज़रखां और पठान चंडावल
रहें और खानदौरां को हुक्म था
कि कंधार और नानदेर की तर
फ़ जहां सरहद बीजापुर और गोल
कुंडे की है वहां ठहर कर औड गढ़
और अडसा को फ़तह करले और
२० हज़ार सवार खान ज़मां के सा
थ किये और उसको हुक्म दिया
कि साहू के वतन चमारकूंडे
को जो अहमद नगर के नज़दीक
है फतह करके कोकन भी उस
से छीन ले इस फौज में राव शत्रु
साल, राजा पहाड़ सिंघ बुंदेला,
पृथ्वी राज राठोड़, भगवान दास
बुंदेला राव तिलोक चंद, शाम
सिंघ राठोड़, रावत दयाल दास
झाला, मालू जी पतंगराय (ज़ा
दूराय) बीटू जी बहादुर जी का
बेटा, दत्ता जी, रुस्तमराव, हापा

پٹھان لوگ چنداول رہیں۔
خاندوران کو حکم تہا کہ
قندہار اور ناندیر کی طرف کہ
جہان بیجاپور اور گول کنڈہ کی
سرحد ملتی ہے قیام کرکے
اوگھر اور اڈیسہ کے قلعون
کو فتح کرے۔
خان زمان کی فوج مین
بہی بیس ہزار سوار رکہے اور اسکو
حکم تہا کہ احمدنگر پہونچکر ساہو کے
وطن چار کونڈہ کو مسخر کرے
اور پہر کوکن کی ولایت کو بہی
اسکے قبضہ سے نکالے اس
فوج مین راؤ ششتروسال ہاڈا
راجہ پہاڑ سنگہ بندیلہ۔ پرتھی راج راٹھوڑ
بہگوانداس بندیلہ۔ راؤ تلوک چند
شام سنگہ راٹھوڑ جگناتھ راٹھوڑ۔
راوت دیالداس جہالا۔ مالوجی
تپنگ راے مخاطب بہ جادون رائے
بیٹھوجی دتاجی ولد بہادرجی۔

जी परमल राव, और राया जगत
सिंघ के सवार जो उसके भतीजे
के साथ थे तईनात हुये इस फ़ौ
ज की हिरोली राव शत्रुसाल हा
डा और तमाम राजपूतों को सोंपी
गई और चंदौली बहादुर खां व़
गैरे पठानों के ज़िम्मे हुई और
यह भी हुक्म हुआ कि जो इला
क़ा आदिल खां का उस तरफ़ है
उसको भी ग़ारत करें ८००० सवा
र आसिफ़ खां के बेटे शायस्ते
खां के साथ जुनेर संगमेर नासि
क त्रिम्बक के क़िल्ले फ़तह क
रने के वास्ते भेजे राजा संग्राम
रावत राव और मेदनी राव इस
फ़ौज में थे ॥

भीम राठोड़ का मनसब बडे
ढ़ हज़ारी ८०० सवार का होगया

गुन्नोर के ज़मींदार संग्रा
म का मनसब हजारी ज़ात और

رستم راؤ ہاپاچی - پرمل راؤ اور
رانا جگت سنگہ کے سوار جو اوسکے
بھتیجے کے ساتھ تھے شامل تھے
اس فوج کی ہراولی راؤ شترو سال
اور تمام راجپوتون کو اور چند اولی
بہادر خان وغیرہ افغانون کو سپرد
ہوئی تھی اس فوج کو عادلخان
کے علاقہ کی لوٹ کا بھی حکم ہوا تھا
جو اسطرف واقع تھا۔

شایستہ خان خلف -
آصف خان خانخانان سپہ سالار
کے ساتھ آٹھ ہزار سوار تعینات
ہوئے تھے اُسکو جُنیر سنگمیر ناسک
اور ترسبک کے قلعوں کے فتح
کرنے کا حکم تھا راجہ سنگرام اور
میدنی راؤ اُس فوج کے ساتھ تھے

بھیم راٹھوڑ کا منصب
ڈیڑہ ہزاری ذات اور پانسو
سوارون کا ہوگیا۔

گنور کے زمیندار سنگرام کا

९०० सवारोंका होगया ॥

फ़ागुण बदी १० को बादशाह दौलताबाद में दाख़िल हुए शायस्ते ख़ां ने रामसेज का क़िला साहूजी के आदमियों से ले लिया ॥

फागण सुदी ६ को कुतुबुल्मुल्क ने जुझारसिंघ के बेटे ऊदयभान उस के छोटे भाई और स्यामददा को क़ैद करके भेजा बादशाह ने उदय भान के छोटे भाई और बिक्रमाजीत के बेटे को तो मुसलमान करने के लिये फ़ीरोज़ख़ां नाज़िर को सौंपा ऊदय भान और स्याम ददा को मुसलमान होने के वास्ते कहा और जब उन्होंने इनकार किया तो मरवा डाला ॥

फागण सुदी १० को बगलाने का ज़मींदार भूरजी अपने वतन से आकर बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ ॥

منصب ہزاری ذات اور چھہ سو سوارون کا ہوگیا -

۲۴ - رمضان کو بادشاہ دولت آباد مین داخل ہوئے شایستہ خان نے رام سیج کا قلعہ ساہوجی کے آدمیون سے فتح کرلیا -

۷ - شوال کو قطب الملک نے جوجہار سنگہ کے بیٹے اودے بہان اور اسکے چہوٹے بہائی کو معہ شام ددا کے قید کرکے بہیجا بادشاہ نے اودے بہان کے چہوٹے بہائی اور بکرماجیت کے بیٹے کو تو مسلمان کرنے کے لئی فیروزخان ناظر کے حوالہ کیا اور اودے بہان وشام ددا کو مسلمان ہوجانے کی لئی کہا اور جب انہون نے انکار کیا تو مروا ڈالا -

۸ - شوال بہورجی بگلانہ کا زمیندار اپنے وطن سے آکر بادشاہ کی خدمت میں حاضر ہوا -

आदिल ख़ांने उदय गढ़औ
र अडसेके क़िलेदारों को पोशीदा
मदद दी औरसाहू की सहायता
के लिये रणदूला को भेजा इससे
बादशाह ने फागण सुदी १० को
सैयद ख़ान जहां को भीर ख़ानेकि
या और हुक्म दिया कि ख़ान ज
हां ख़ान दौरां औरख़ान ज़मां ती
नों ३ तरफ़ से आदिलख़ांकी विला
यत पर हमला करें राव करन हरी
सिंघ राठोड़ राजा बहरोज़ राजा रोज़
अफ़ज़ूं का बेटा जयराम राजा अनू
पसिंघ का बेटा इनद्रसाल राव
रतन का पोता मंकूजी मिरज़ा
रायकृष्णाजी जसवंत राव ख़ान
जहां के साथ तईनात हुये॥

सालहबेग निज़ामुल्मुल्की
क़िलेदार खेतरदुर्गने साहू जी
के आदमियों को क़ैद करके वह
किला परगने समेत शायस्तेखां

عادلخان نے اُودگر اور
اڈسہ کے قلعداروں کو پوشیدہ
مدد پہونچائی اور ساہوجی کی اعانت
پر رندولہ کو بھیجا بادشاہ نے یہ
سُنکر خانجہان کو بھی روانہ کیا
اور حکم دیا کہ خانجہان خاندوران
اور خان زمان تینوں تین طرف
سے عادلخان کی ولایت پر
حملہ کریں راؤ کرن۔ ہری سنگھ
راٹھوڑ۔ راجہ بہروز ولد راجہ
روز افزون ۔ جے رام ولد
راجہ انوپ سنگ ۔ اندرسال
نبیرہ راؤ رتن ہاڈا۔ منکوجی
مرزہ راؤ۔ کرشناجی اور جسونت راؤ
خانجہان کے ساتھ تعینات
ہوئے ✣

صالح بیگ نظام الملکی
قلعہ دار کہتردرگ نے ساہوجی
کے آدمیوں کو قید کرکے وہ قلعہ
معہ پرگنہ جات متعلقہ کے شایستہ خان

कोसोंप दिया ॥

फागणसुदी १४ को नोरोज़का दरबार था उसमें कुतुबुल्मुल्क की पेशकश १ लाख २० हज़ार रुपैकी बादशाह के मुलाहेज़े सेगुज़री ॥

इसीदिन राजा गजसिंघको खासातवेले से घोड़ा सोने कीज़ीनका इनायत ऊआ ॥

चेत सुदी २ को राजा रायसिंघ कामनसब असल औरइज़ाफ़े से ३हज़ारी ज़ात औरडेढ़ हजार सवारों का होगया ॥

चांदाके ज़मींदारकेबांनेहाज़िरहोकर ३हाथी नज़र किये बादशाह नेखिलत जड़ाऊ सरपेंच और घोड़ा इनायतकिया ॥

चेतसुदी ५ को आदिल खांकी अरज़ी और पेशकश मीर

کے سپرد کردیا۔

۱۲ شوال کو نوروز کے جشن مین قطب الملک کی پیشکش ایک لاکھ بیس ہزار کی بادشاہ کی نظر سے گزری

اوسی دن راجہ گج سنگہ کو ایک گھوڑا سنہری زین کا طویلہ خاصہ سے عنایت ہوا۔

غرہ ذیقعدہ کو شرف آفتاب کے دن راجہ راے سنگہ کا منصب اصل اور اضافہ سے تین ہزاری ذات اور ڈیڑہ ہزار سوارونکا ہوگیا۔

چاندا کے زمیندار کیبا نے حاضر ہوکر تین ہاتھی نذر کیئے بادشاہ نے خلعت جڑاؤ سرپیچ اور گھوڑا عنایت کیا۔

۴۔ ذیقعدہ کو عادلخان کی عرضی اور پیشکش مصحوب۔ میر ابوالحسن اور قاضی ابوسعید کے

अबुल्हसन और क़ाज़ी अबूसईद ने हाज़िर होकर पेश की आदिलखां ५ कोस तक पेशवाई करके बादशाह के फरमान को लेगया था मगर मक्रमतखां ने उस की चाल ढाल से मालूम करके कि दिल से ताबेदार नहीं है और मोक़ा देख रहा है बादशाह को अरज़ी लिखी और बादशाह ने अपने अमीरों को बीजापुर का मुल्क ख़राब करने के वास्ते ताकीद की मगर क़ुतुबुल्मुल्क ने ख़ुतबा और सिक्का बादशाह के नाम का जारी करके कई सिक्के नज़र के वास्ते भेजे ॥

चैत सुदी ६ को बादशाह ने बगलाये के ज़मींदार भूरजी को ख़िलत देकर अल्लावरदी ख़ां के पास घोप वग़ैरा क़िलों के फ़तह करने में मदद देने के वास्ते भेजा ॥

بادشاہ کی نظر سے گزری عادلخان پانچ کوس تک استقبال کر کے بادشاہی فرمان کو لے گیا تھا - مگر مکرمت خان نے اوسکے اوضاع اور اطوار سے درپردہ نافرمانی کا منشا اور انتظار موقع وقت کا خیال معلوم کر کے بادشاہ کو عرضی لکھی اور بادشاہ نے اپنے امیرون کو بیجاپور کا ملک خراب کرنے کیواسطے تاکید فرمائی - لیکن قطب الملک نے خطبہ اور سکہ بادشاہ کے نام کا جاری کر کے چند روپیہ اور اشرفی اس سکہ کے بطور نذر بھیجے اور خطبہ مین خلفائے راشدین کے نام بھی داخل کیے

۷ - ذیقعدہ کو بادشاہ نے بگلانہ کے زمیندار بھورجی کو خلعت دیکر الہ ویردی خان کی مدد پر بھیجا جو واسطے فتح کرنے قلعہ دہوپ وغیرہ کے مامور ہوا تھا

राजा देवी सिंघ उरछे में अपना अमल जमा कर हाज़िर आया बादशाह ने उसको खिल्लत जड़ाऊ खपवा और घोड़ा देकर सैयद खान जहां के पास भेजा

बिक्रमा जीत बुंदेले के बड़े बेटे नर सिंघदेव को बहादुर पठाण जो सौदागरी करता था बहलोल के पास लिये जाता था अल्लावे रदीखां के बेटे जाफ़र ने पकड़ कर बादशाह के हज़ूर में हाज़िर किया बादशाह ने उसको मुसलमान करके हुसैन कुली नाम रक्वा और बहादुर को मरवा डाला ॥

चैत सुदी १२ को चांदा के ज़मींदार केबां को बादशाह ने खिलअत जड़ाऊ खपवा और कुछ दूसरी ज़ड़ाऊ रक़में देकर वतन जाने की रुखसत दी ॥

راجہ دیوی سنگہ اونڈچہ کے نظم ونسق سے جو اوسکی جاگیر مین دیا گیا تہا خاطر جمع کرکے درگاہ مین حاضر ہوا بادشاہ نے اُسکو خلعت جڑاؤ کہپوہ اور گہوڑا دیکر سید خانجہان کے پاس روانہ کیا۔

بکرماجیت کے بڑے بیٹے نرسنگدیو کو بہادر نام ایک افغان سوداگر بہلول کے پاس لئے جاتا تہا۔ الہ ویردی خان کے بیٹے جعفر نے خبر پاکر اُسکو پکڑا اور بادشاہ کے حضور مین حاضر کیا۔ بادشاہ نے نرسنگدیو کو تو مسلمان کرکے حسین قلی نام رکہا اور اُس سوداگر کو مروا ڈالا۔

۱۲ ذیقعدہ۔ چاندا کے زمیندار کیبا کو بادشاہ نے خلعت جڑاؤ کہپوہ اور کچھ دوسری جڑاؤ چیزین دیکر وطن جانے کی رخصت عطا فرمائی۔

अलह वेरदीखां ने चैतबदी ३
को चांदोर के क़िले में लड़ाई से
और चैतबदी ६ को क़िले अंज
रोही में गंभीर राव क़िलेदार के
हाज़िर होजाने से कबजा किया
फ़िर कांज ने और मांजने के कि
ले घेरे क़िले वाले गंभीर राव के
वसीले से हाज़िर होगये और
उन क़िलों में भी कबज़ा होग
या इसी तरह रोला जोला, अहवं
त कोल पूसला, और अचल गढ़
के क़िले भी हाथ आये मगर रा
जा बीर के क़िले में कि जहां कु
छ रिशतेदार निज़ामुल्मुल्क के
थे किले वाले २ महीने तक लड़े॥

उधर शायस्तेखां ने संग
मेर के परगने साहू जी के आद
मियों से फ़तह करलिये तब वे
लोग नासिक को और नासिक
से कोकन की तरफ़ चले गये

الہ ویردی خان نے
۱۶ شوال کو قلعہ چاندور بعد
جنگ کے فتح کیا اور
۱۹ شوال کو قلعہ انجراہی
گنبھیر راؤ قلعدار کے حاضر
ہوجانے سے لیا بعدہ
کانجنہ اور مانجنہ کے قلعون
کو گھیرا اُن قلعون کے قلعدار
بھی گنبھیر راؤ کے ذریعہ سے
حاضر ہوگئے اور اُنمین بھی
بادشاہی عمل دخل ہوگیا اسیطرح
رولا جولا اہونت کول پوسلہ
اور اچل گڈہ کے قلعہ بھی ہاتھ آئے
مگر راج بیر کے قلعہ مین کہ جہان
کچھ رشتہ دار نظام الملک کے
تھے قلعہ والے دو مہینے تک
لڑتے رہے
اُدہر شایستہ خان نے سنگمیر کے
ضلعے ساہوجی کے آدمیون سے
۱۰ ماہ شوال کو فتح کئے بعدہ

शायस्ताखां बाक़िर को उनके पीछ रवाने करके आप बादशाह के हुकम से अहमद नगर को गया और अली अकबर को जुनेर के ऊपर भेजा उसने वह किला साहू जी के नोकरों से फतह कर लिया साहू जी उस वक्त चमारकुंडे में था उस का बेटा उसके पास जाकर कुछ फ़ौज अपने क़बीलों को जुनेर से लाने के वास्ते लेगया उस से और बादशाही लोगों से लड़ाई हुई शायस्ताखां ने ७०० सवार मदद के वास्ते भेजे उन्हों ने जुनेर में पहुंच कर ग़नीम का मुकाबिला किया लेकिन ग़नीम ने उन को शहर में घेर लिया शायस्ताखां यह सुन कर खुद आया और ग़नीम को भगा कर भीमड़ा नदी तक उस के पीछे गया और जुनेर के किले को मज़बूत देख कर बाक़र

وہ لوگ ناسک کو اور ناسک سے کوکن کو چلے گئے شایستہ خان باقر کو اُنکے تعاقب میں روانہ کرکے خود بادشاہ کے حکم سے احمدنگر کو روانہ ہوا اور علی اکبر کو واسطے فتح جُنیر کے رخصت کیا اوسنے وہ قلعہ ساہوجی کے نوکرونسے فتح کرلیا ساہوجی اُسوقت چمارکونڈہ مین تہا جہان اُسکا بیٹا آکر اوسکے پاس سے کچھ فوج اپنے اہل وعیال کو جنیر سے لانے کے لئے لیگیا وہان بادشاہی آدمیون سے اوس سے لڑائی ہوئی شایستہ خان نے ۷۰۰ سوار بادشاہی ملازمون کی مدد کو بہیجے انہون نے باوجود مقابلہ اور مدافعہ غنیم کے شہر مین پہنچکر جنگ کی لیکن غنیم نے اُنکو گہیرلیا تب شایستہ خان نے اوسکو بہگایا اور بہیمرہ ندی تک پیچہا کیا اور پہر قلعہ جُنیر کی مضبوطی دیکھ کر

को कोकण से पीछा बुला लिया
कुछ दिनों में संगमेर और जुनेर
कि दोनों किले और १७ परगने
जिन की जमा २ किरोड़ ६० लाख
दाम थी बादशाही अमलदारी में
शामिल हुए ॥

खानदौरां ने बीजापुर
के इलाके में पहुंच कर लूटमार
की विंजरा नदी पर बहलोल
और रणदूला उससे लड़ने को
आये राजा जय सिंघ ने हिरो
ल की फ़ौज के साथ हमला कर
के उनको भगा दिया दूसरी ल
ड़ाई फिर आगे चल कर हीरा
पुर के पास भीमड़ा नदी के कि
नारे पर हुई कुछ बादशाही आद
मी लड़ने को आगे बढ़ गये थे रा
जा जय सिंघ ने उनकी मदद की
यह लड़ाई भी फ़तह हुई जिसके
पीछे यह बादशाही लश्कर फ़ी

باقر کو بھی کوکن سے واپس بلالیا
آخر کو دونون قلعہ سنگمیر اور جُنیر کے
معہ ۱۷ پرگنون جمعی دو کروڑ ساٹھ لاکھ
دام کی بادشاہی ممالک مین
داخل ہوئے -

خان دوران نے بیجاپور
کے علاقہ مین پہونچکر لوٹ مار شروع
کی ونجرہ ندی پر رندولہ اور بہلول
وغیرہ اُس سے لڑنے کو آئے
راجہ جے سنگہ نے معہ فوج
ہراول کے حملہ کرکے اُونکو
بھگا دیا دوسری لڑائی پھر آگے
چلکر ہیراپور کے پاس بہونرہ ندی
کے کنارے پر ہوئی کچھ لوگ
جو لڑنے کو آگے بڑہ گئے تھے
راجہ جے سنگہہ نے اونکی مدد کی
یہ لڑائی بھی فتح ہوئی اب یہ
بادشاہی لشکر فیروز آباد مین
جہان سے بیجاپور صرف ۲ اکوس
رہ جاتا ہے جا پہنچا مگر مکرمت خان

रोज़ाबाद में जहां से बीजा पुर ३२
कोस रह जाता है जा पहुंचा मग
र मअमत खां के लिखने से कि
बीजा पुर वालों ने आगे अपना इ
लाक़ा उजाड़ दिया है दूसरी तर
फ़ से क़ुतुबुल्मुल्क की सरहद
तक लूट मार करके हीरा पुर में
लौट आया वहां बादशाह का हु
क्म लूट मार बंद रखने और कि
ले उदय गढ़ और अडसा को फ़
तह करने का पहुंचा और वह
उस तरफ़ को रवाना हुआ ॥

खानजहां ने शाह गढ़
और बीर में लशकर छोड़ कर
मुकाम धारवार से किशनाजी
स्यामाजी और शिरज़ेराव को
सरा धनू का किला फ़तह कर
ने के वास्ते चैत बदी १३ को र
वाने किया ये अचानक व
हां जा पहुंचे अंबर किलेदार

سے لکھنے سے کہ آگے بیجاپور والون
نے اپنا علاقہ ویران کر دیا ہے
دوسری طرف کو مڑا اور قطب الملک
کی حد تک تاخت اور تاراج
کر کے ہیراپور مین لوٹ آیا وہان
بادشاہ کا حکم واسطے بند
رکھنے غارت گری اور فتح
کرنے قلعہ اُودگڑھ اور اڈیسہ
کے پہونچا وہ اُسطرف کو روانہ
ہو گیا۔

خان جہان نے اپنی
بنگاہ توشاہ گڑھ اور بیر مین
چھوڑی اور کشناجی ساماجی اور
شرزہ راو کو مقام دہارور سے
قلعہ سرادھنون کے فتح کرنے
کے واسطے ۲۶ شوال کو روانہ
کیا یہ دفعۃً وہان جا پہونچے
عنبر قلعدار اوسوقت قلعہ کے
باہر اک باغ انبہ مین بیٹھا
تھا سرِدست کچھ مقابلہ کر کے

जो क़िले के बाहर आमों के बा
ग़ में बैठा हुआ था थोड़ा सा मुक़ा
बिला करके किले में जा घुसा
इन्होंने घेरा देकर तीसरे दिन
उस क़िले को फ़तह कर लिया
और अंबर को ख़ान जहां के पा
स भेज कर शिरज़े राव को सरा
धनूं के किले में थाने पर रक्खा
और चेत बदी १५ को लूट मार
करके धारास्योन के किले में
अमल कर लिया जिसको कि
लेदार वग़ैरा रसद समेत छोड़
गयेथे दूसरे दिन ख़ान जहां ने
कानती के क़िले को जो शोला
पुर से ६ कोस है घेरा देकर फ़
तह करके देवगांव को लूटा
यहां रण दूला लड़ने को आया
ख़ान जहां ने चेत सुदी ७ को
जंग करके उस को भगा दिया
रणदूल्हा ज़ख़मी हो गया था

قلعہ کے اندر چلا گیا انہوں نے
محاصرہ کرکے تیسرے دن تاریخ ۲۸
کو قلعہ فتح کرلیا اور عنبر کو
خانجہان کے پاس بھیجکر شرزہ راو
کو سرادہنون کے قلعہ مین
تہانہ دار کے طور پر رکہا اور
۲۹ شوال کو بعد کچھ لوٹ مار
کے قلعہ دہاراسیون مین
بھی قبضہ کرلیا جسکو قلعدار
وغیرہ معہ غلہ کے چھوڑ گئے
تھے دوسرے دن خانجہان
نے قلعہ کانتی کو جو شولاپور
سے دس کوس ہے گھیر کر
فتح کیا اور دیوگانو کو لوٹا
یہان رندولہ لڑنے کو آیا
خان جہان نے ۵ ذیقعدہ
کو جنگ کرکے اسکو شکست
دی رن دولہ زخمی ہوگیا تہا
تو بھی ۱۴ ذی قعدہ کو پہر
لُجاپور مین لڑا اور خوب لڑا

तो भी बैसाख बदी १ को गांवतु
लंजापुर में फिर लड़ा और खूब
लड़ा खान जहां फिर उस को भगा
कर मुलक लूटने के वास्ते गुल
बरगे की तरफ़ रवाने हुआ और
फिर १ और लड़ाई दुशमनों से
बैसाख सुदी १२ को लड़कर धारू
र में लौट आया क्योंकि आगे का
इलाक़ा दुशमनों ने उजाड़ रक्खा
था ॥

बैसाख सुदी २ को बीजापुर
वाले लशकर के ऊपर आकर
सिपेदार खां और राजा देवी सिंघ
से लड़े और भाग गये खीलूजी
भोंसला भी उनके साथ था और
बादशाही लशकर से लड़ा था॥

खान ज़मां अहमद नगर
में अपना सामान छोड़ कर सजी
हुई फौज के साथ जुनेर की तरफ
रवाने हुआ रावशत्रुसाल हाडा

خانجہان پہر اسکو بہگا کر ملک
لوٹنے کے واسطے گلبرگہ کی طرف
روانہ ہوا تاریخ ۱۱- ذی الحجہ
کو پہر ایک اور لڑائی دشمنون
سے لڑکر دہارور کو لوٹ
آیا کیونکہ آگے ملک
ویران کیا ہوا تہا-

یکم ذی الحجہ کو بیجاپور
والے اردو پر حملہ کرکے
سپہدار خان اور راجہ
دیبی سنگہ سے لڑے
اور بہاگ گئے کہیلوجی
بہوسلہ بہی بیجاپور والون
کے ساتھ تہا اور بادشاہی
امرا سے لڑا تہا-

خان زمان نے احمدنگر
مین احمال و اثقال چہوڑکر
بعد آراستگی سپاہ کے
جنیر کو کوچ کیا شترو سال
ہاڈا جنیداول تہا موضع -

चंदौल था जब ६ कोस पर गांव अंकू नेरमें पहुंचा तो सुना कि साहू जी ने माहोली का क़िला वहां के क़िलेदार मेना जी को जु नेर में लाकर परेंडे जाने का इ रादा कर रक्खा है ख़ान ज़मां ने उस का पीछा किया तब वह जंगल और पहाड़ों के रस्ते से भीमड़ा नदी को उतरकर परग ने पूना इलाक़े आदिल ख़ां में चला गया ख़ान ज़मां ने बादशा ह के हुक्म से भीमड़ा के कि नारे पर डेरा करके बादशाह को अरज़ी लिखी और शाहबेग ख़ां को चमारकुंडा फ़तह करने के वास्ते भेजा उसने ३ पहर तक लड़ाई करके किले वालों को अ मन दी और वह किला फ़तह कर लिया ॥

बादशाह ने अरज़ी के ज

انکو نیر مین جو ۶ کوس احمد نگر سے تہا پہونچکر سنا کہ ساہوجی نے ماہولی کا قلعہ وہان کے قلعدار میناجی بہوسلہ سے لے لیا ہے اور میناجی کو جنیر مین لاکر پرینده جانے کا اراده کر رکہا ہے خانزمان نے یہ سنکر اسکا تعاقب کیا اسپر وه پہاڑ اور جنگل کے راستہ سے بہونزه ندی کو عبور کرکے پرگنہ پونہ علاقہ عادلخان مین چلا گیا خان نے بموجب حکم بادشاہ کے دریائے مذکور کے کنارہ پر ڈیرہ کرکے بادشاہ کو عرضی لکہی اور شاہ بیگ خان کو چمار کونڈہ کا قلعہ فتح کرنے کے واسطے بہیجا اُسنے بعد جنگ تین پہر کے قلعہ والون کو امن دیکر وہ قلعہ فتح کرلیا۔

بادشاہ کا حکم پہر عادلخان

वाबमें आदिल खां के मुल्क लूट
ने का हुक्म लिखा तब खानज़
मां चेत बदी ५ को उस मुल्क में
दाखिल हुआ ॥

चेत बदी १३ को जब कि
यह लशकर उदाबाई के घाटे
से उतर चुका था ग़नीम की १ बड़ी
फ़ौज राव शत्रु साल के ऊपर जो
खान ज़मां के पीछे २ आता था आ
पड़ी राव उसके बहुत से आदमि
यों को मार कर बादशाही लश
कर से जा मिला इस झगड़े में कुछ
राज पूत उसके भी काम आये दू
सरे दिन खानज़मां ने कोलापु
र का क़िला फतह कर लिया सा
हु जी बीजा पुर की फौज के साथ
में किशन गंगा के ऊपर ३ रोज़ त
क खानज़मां से लड़ा आखिर खा
न ज़मां ने उसको भगा कर मिर
च और राय बाग़ को लूटा ॥

کا ملک لوٹنے کے واسطے
آگیا تب خان زمان ۸ شوال
کو اس ملک مین داخل ہوا
۲۶ - کو جبکہ لشکر گہاٹ
اودابائی سے زیر اہتمام
خان زمان کے گذر چکا تہا
غنیم کی ایک بڑی فوج راو
ستر وسال کے اوپر جو
خان زمان کے بعد آتا تھا
آپڑی مگر راو اپنی ہمت اور
بہادری سے بہت سے
آدمیون کو مار کر بادشاہی
لشکر سے جا ملا اس دار وگیر مین
کچھ راجپوت بہی اُسکے مارے
گئے دوسرے دن خانزمان نے قلعہ
کولاپور کو فتح کرلیا ساہوجی نے
کشن گنگا کے اوپر تین روز تک
معہ فوج بیجاپور کے خان زمان کا
مقابلہ کیا آخر خان زمان نے اُسکو
بہگا کر مرچ اور رای باغ کو لوٹا -

आदिलखां ने उतरफ़ के हमलों से तंग होकर बादशाह का हुक्म मान लिया और २० लाख रुपै की पेशकश मक्रमत खां के हाथ भेजी और साहू के वास्ते कहा कि जो वह जनेर व ग़ैरा निज़ामुल्मुल्क के किले छोड़ दे तो उस्को नोकर रख लूंगा नहीं तो बादशाही लशकर के साथ हो कर उन किलों के छुड़ाने की कोशिश करूंगा ॥

बादशाह ने अपनी तसवीर और अहदनामा जिस पर हाथ के पंजे का छापा था आदिलखां के पास भेजा खुल्लासा उस का यह था कि जो मुल्क तुम्हारे बाप से तुम को पहुंचा है वह बदस्तूर तुम को इनायत करते हैं और निज़ामुल्मुल्क के मुल्क से परगना,,दन को,, किला शोला

عادلخان نے اس تین طرف کے حملات سے تنگ آکر بادشاہ کا حکم مان لیا اور ۲۰ لاکھ روپیہ کی پیشکش مکرمت خان کے ہاتھ بھیجی ساہوجی کی نسبت یہ ٹھیرایا کہ جو جنیر کا قلعہ معہ دیگر قلاع نظام کے چھوڑ دے گا جب تو اسکو نوکر رکھ لیا جاویگا ورنہ بادشاہی لشکر کے اتفاق سے ان قلعون کے فتح کرنے کی کوشش کیجاوے گی۔

بادشاہ نے اپنی تصویر معہ عہدنامہ نشان پنجہ کے عادلخان کے لئے بھیجی جس کے مضمون کا خلاصہ یہ ہے کہ جو ملک عادلخان مرحوم سے تمکو پہنچا ہے وہ ہم بدستور عنایت کرتے ہین اور نظام الملک کے ملک سے محال دنکو قلعہ شولاپور قلعہ پرینده معہ پرگنات متعلقہ

पुर किला परेंडा इलाके समेत
ओर कोकण देस से २० लाख
हुन का वह हिस्सा कि जो नि
जामुल्मुल्क के कबज़े में था
तुम को देते हैं तुम जब तक क़
बूल इक्ली न करोगे कुछ नुक़
सान तुम को हम से और हमारी
औलाद से नहीं पहुंचेगा और न
कोई निज़ामुल्मुल्क हमारे औ
र तुम्हारे बीच में होगा कुतुबुल्मु
ल्क ने हमारे और खलीफों के
नाम का खुतबा और सिक्का
जारी कर दिया है और ५० लाख
की पेश कश भेज दी है इस लि
ये हम ने भी ४ लाख हुन में से
जो वह बरसा बरस निज़ामुल्मु
ल्क को दिया करता था २ लाख
हुन उस को माफ़ कर दी हैं तुम
भी किसी तरह का नुकसान
उसके मुल्क में मत करना और

اور ولایت کوکن سے ۲۰ لاکھ
ہون کا وہ حصہ جو نظام الملک
کے متعلق تہا تمکو مرحمت ہوتا
ہے تم جب تک عدول حکمی
نکروگے کچھ ضرر ہم سے اور
ہماری اولاد سے تمہارے
ملک مین نہین پہونچیگا
کوئی نظام الملک ہمارے اور
تمہارے درمیان ہوگا قطب الملک
نے ہمارے اور خلفاے راشدین
کے نام کا سکہ اور خطبہ جاری
کردیا ہے اور پچاس لاکھ روپیہ
کی پیشکش بہیجدی ہے اسواسطے
ہم نے بہی چار لاکھ ہون مین
سے جو وہ سال بسال نظام الملک
کو دیا کرتا تہا دو لاکھ اسکو معاف
کردی ہے تم بہی کسیطرح کا
ضرر اُسکے ملک مین نہ پہونچانا
اور سواے اُس داد وستد
کے جو قدیم سے تمہارے اور

सिवाये उस लेने और देने के जो
कदीम से तुम्हारे और उस्के बु
ज़ुर्गों में जारी रहा हो और कुछ ज़्या
दा उस्से मत मांगना हमारा को
ई नोकर भाग कर जावे तो उस
को अपने पास मत रखना ओ
र ऐसे ही हम भी तुम्हारे नोक
रों को न बचन देंगे और न बुल्ला
येंगे ॥

साहू को हम तो नोकर न
हीं रखेंगे वह अब तुम्हारा ही
होगा उस से कह देना कि जुनेर
त्रिम्बक, राजदेवेर, त्रिनक
लवाड़ी, और भीमगढ़ के क़ि
लों को जल्दी हमारे नोकरों को
हवाले कर देवें हमारे आद
मी तोपों के सिवाये और सब
सामान उसके आदमियों को ले
जाने देंगे और जो साहू तुम्हारा
नोकर न हो तो उसको अपने

اسکے بزرگون مین جاری رہی
ہو اور کچھ زیادہ طلبی نہ کرنا
ہمارا کوئی نوکر بہاگ کر جاوے
تو اُسکو پناہ نہ دینا اور ایسے ہی
ہم بہی تمہارے نوکرون کو نہ بچن
دینگے اور نہ بلائینگے ساہو کو
ہم تو نوکر نہ رکہینگے وہ اب
تمہارا ہی ہوگا اُس سے کہدینا
کہ جنیر قلعہ ترمبک قلعہ راجدویر
قلعہ ترنکلواڑی اور قلعہ بہیم گڈہ
کو جلد ہمارے نوکرون کے
حوالہ کردے ہمارے آدمی
بہی سوائے توپ کے اور سب
سامان اُسکے آدمیون کا لیجانے
دینگے اور اگر ساہو تمہارا نوکر نہی
تو اُسکو اپنے ملک مین نہ آنے
دینا آوے تو پکڑ لینا یا نکال
دینا اور ایساہی سلوک
اڈیسہ اور اودگر نظام الملکی
قلعدارون سے بہی کرنا

मुल्क में न आने देना आवे तो
पकड़ लेना या निकाल देना
और एसा ही सलूक अड़सा और
उदगिरि के निज़ामुल्मुल्की
क़िले वालों से भी करना अखीर
में लिखा था कि हम इस फरमा
न को अपने पंजे के निशान और
अपने ख़ास दस्त ख़तों से सुशो
भित करते हैं ख़ुदा और रसूल
को बीच में देते हैं और ख़ुलासा
इसका सोने के पत्तरों पर ख़ुद
वाकर भेज दिया जावेगा

यह फरमान ज़ेवबदी १०
को मुहम्मद आदिल ख़ां इब
राहीम आदिलशाह के बेटे
के पास पहुंचा और उसने भी ऊ
पर लिखे माफ़िक़ मज़मून का
अहद नामा लिखकर २० ला
ख रुपये की पेशकश के साथ
मक्रमत ख़ां के हाथ भेज दिया॥

اخیر مین لکھا تہا کہ ہم اس
فرمان کو معہ نشان پنجہ کے
اپنے دستخط خاص سے
مزین کرتے ہین اور
خدا اور رسول کو بیچ
مین دیتے ہین اور خلاصہ
اسکا سونے کی تختی پر
کہدوا کر بہیجدیا جاوے گا
یہ فرمان ۲۴- ذی الحجہ
کو محمد بن ابراہیم عادل شاہ
کے پاس پہونچا اور اُسنے
بہی حسب مضمون صدر
عہدنامہ لکھہ کر معہ پیشکش
قیمتی بیس لاکھہ روپیہ کے
مکرمت خان کے ہمراہ
بہیجدیا عادلخان جو بادشاہ
کو عرضی لکھتا تھا اُس کے
دور پر حافظ کی یہ غزل آب زر
سے لکھا کرتا تہا -

आदिलखां बादशाह को जो अरजी लिखता था तो उसके किनारे पर सोने के हर्फ़ों से १ ग़ज़ल हाफ़िज़ की लिखा करता था ॥

## बरस दसवां

जेठ सुदी ३ शुकरवार संबत १६९३ से जेठ सुदी २ मंगलवार संबत १६९४ तक

अल्लावेरदी ख़ां ने बीयर का क़िला फतह करके निजामुल्मुल्क के कुटंबियों को क़ैद करलिया और बैसाख बदी ११ को धरप का क़िला मौजबलकिलेदार से १ लाख रुपये नक़द और डेढ़ हज़ारी ८०० सवार का मनसब देना करके लेलिया ॥

शायस्ताखां खान जहां और खान ज़मां वग़ैरा आदिलखां के मुल्क से पीछे आगये अब बादशाह

جو زاسحر نہاد حمایل برابرم ✤
یعنی غلام شاہم و سوگند میخورم ✤
گر دید نام شاہ جہان حرز جان من
وزاین خجستہ نام براعدا مظفرم ✤

اور خاتمہ عرضی پر یہ مصرعہ قلمبند کرتا تھا۔

مصرعہ

بادشاہا جہان بکام تو باد

## برس دسوان

سنہ ۱۰۴۶ ہجری

۲۰ مئی سنہ ۱۶۳۶ع سے ۱۰ مئی سنہ ۱۶۳۷ع تک

ماہ محرم مین الہ ویردی خان نے قلعہ بیر فتح کرکے نظام کے رشتہ دارون کو قید کر لیا اور ۲۵ محرم کو قلعہ دھرپ بجوجرل حارس قلعہ مذکور سے عوض ایک لاکھ روپیہ نقد اور منصب دو ہزاری آٹھ سو سوارون کے حاصل کیا

नेसाहूजी को ज़ेर करने के वास्ते ख़ानज़मां को बहादुर का ख़िताब देकर भेजा ॥

असाढ सुदी ३ कुतुबुल्मुल्क की पेशकश जिस्में ४० लाख रुपये नक़द १०० हाथी ५० घोड़े बहुत से जवाहरात और दूसरे उमदा तुहफ़े थे अबदुल लतीफ़ की मारफ़त बादशाह की नज़र से गुज़रे और कुतुबुल्मुल्क ने जो अहदनामा लिख कर भेजा था उस का मज़मून यह था कि हमेशा खुतबा "चारयार" और बादशाह के नाम का और सिक्का भेजा हुआ सोने और चांदी पर जारी रहैगा और खुतबा जो पहिले पढ़ा जाता था वह अब नहीं पढ़ा जावेगा निज़ामुल्मुल्क जो ४ लाख हून लेता था उनमें २ लाख हून जिन्के ८ लाख रुपये होते हैं

شائستہ خان خانزمان
اور خانجہان وغیرہ عادلخان
کے ملک سے واپس آگئے اب
بادشاہ نے خان زمان کو
بہادر کا خطاب دیکر واسطے
استیصال ساہوجی کے بہیجا
غرّہ صفر کو قطب الملک
کی پیشکش جس مین ۴۰ لاکہہ روپیہ
نقد ایک سو ہاتہی پچاس گہوڑے
بہت سے جواہرات اور دوسری
اشیا نفیس سے تہے شیخ عبداللطیف
کی معرفت بادشاہ کی نظر سے
گذری اور قطب الملک نے جو
عہدنامہ لکھ کر بہیجا تہا اوسکا یہ
مضمون تہا کہ خطبہ ہمیشہ چار یار
اور بادشاہ کے نام کا اور سکہ
عطیہ بادشاہ زرسرخ و سفید پہ
جاری رہیگا اور خطبہ مثل
سابق کے نہ پڑہا جاویگا
دو لاکہہ ہن جسکے آٹھ لاکہہ روپیہ

| | |
|---|---|
| बरसाबरस भेजता रहूंगा आपके | ہوتے ہین منجملہ چار لاکھ ہن |
| सन ८ जलूसी तक ३२ लाख रु | مقررہ نظام الملک کے |
| पये में से जो दर्ज़ बाक़ी हैं वे भी इसी | سال بسال ادا کرتا رہون گا |
| २ लाख इनके साथ भेज दूंगा औ | سن ۸ جلوس والا تک |
| र जो तफ़ावत हाथियों और जवा | کے بقایا آٹھ لاکھ روپیہ |
| हरात की क़ीमत का गोलकुंडे | منجملہ ۳۲ لاکھ مقررہ کے بھی |
| के भाव से होगा वह भी बिना कि | اس سنہ مین ہمراہ دو لاکھ |
| सी उज़र के दिया करूं गा हमेशा | ہون کے بھیجدون گا اور جو |
| ख़ैर ख़्वाह रहूंगा और जो बादशा | تفاوت قیمت ہاتھیون اور |
| ह के दुशमन होंगे उनसे कुछ वा | جواہرات کا گول کنڈہ کے |
| स्ता नहीं रक्खूंगा मैं यह अहद ना | نرخ سے ہوگا وہ بھی دیا کرونگا |
| मा मौलाना अबदुल लतीफ़ के | ہمیشہ خیر خواہ رہونگا اور دشمنان |
| रूबरू क़ुरान के ऊपर हाथ र | بادشاہی سے کچھ تعلق نرکھونگا |
| खकर करता हूं जो इसके ख़ि | یہ عہد مین مولانا عبداللطیف |
| लाफ़ करूं तो हज़ूर को मेरे मु | کے روبرو قران کے اوپر ہاتھ رکرتا |
| ल्क छीन लेने का अख़्तियार | ہون اگر اسکے خلاف کرون تو |
| है मगर जो कभी आदिल ख़ांया | حضور کو میرا ملک چھین لینے کا |
| और कोई गनीम मेरे ऊपर च | حق حاصل ہوگا مگر جو کبھی عادلخان |
| ढाई करे तो दक्खन के सूबेदा | یا اور کوئی غنیم میرے اوپر |
| र को मेरी मदद करनी होगी और | چڑھائی کرے تو صوبہ دار دکن کو |

जो वह मेरी दरख़्वास्त करने पर भी मदद न करेगा और आदिल ख़ां ज़बरदस्ती मुझ से कुछ रुपया ले लेगा तो मैं उतना ही रुपया इस ८ लाख मैं से काट लिया करूंगा ॥

बादशाह ने इस फ़तह और कामयाबी के पीछे सावन बदी ४ को दौलता बाद से मांडू की तरफ़ कूच किया ॥

इस सफ़र में २ किरोड़ रुपया नक़द १ किरोड़ का मुल्क और बड़े बड़े ४० क़िले हाथ आये॥

मक्रमत ख़ां आदिलख़ां की पेशकश लेकर बीजापुर से हाज़िर आया बादशाह ने परेंडे का किला और आधा मुल्क को कण का जो निज़ाम का था उस को बख़्श दिया और सोने की तख़्ती जिसके ऊपर अहदनामा खोदा गया था उस्के पास भेज

میری مدد کرنا واجب ہوگا اور اگر وہ باوجود میری درخواست کے مدد نہ کریگا تو عادلخان مجھسے جسقدر روپیہ جبر لیگا اوسی قدر مین اس آٹھ لاکھ روپیہ مین سے مجرا کر لونگا۔

بادشاہ بعد اس فتح وکامیابی کے ۱۷ ماہ صفر کو دولت آباد سے منڈو کی طرف نہضت فرما ہوئے

اس سفر مین دو کروڑ روپیہ نقد اور ایک کروڑ کا ملک معہ چالیس بڑے بڑے قلعون کے ہاتھ آیا +

مکرمت خان بیجاپور سے عادلخان کی پیشکش لیکر پہونچا بادشاہ نے قلعہ پرینڈہ اور آدہا ملک کوکن کا جو نظام کے متعلق تھا اُسکو بخشدیا اور لوح زرین جسکے اوپر عہدنامہ کندہ تھا اوسکے پاس روانہ کی اُوسکی

| | |
|---|---|
| दी इसके अखीर में लिखवाया कि यह कौल क़रार सिकंदर की दिवार" की तरह मज़बूत रहेगा तारीख २३ ज़िलहिज सन १०५५ हिजरी ॥ | آخر عبارت یہ تھی کہ این قول قرار نسلاً بعد نسلاً بعد بچو سد سکندر استوار خواہد بود فی التاریخ بست و سوم شہر ذی الحجہ سنہ ہزار چہل و پنج ہجری |
| फिर बादशाह ने दकवन का कुल मुल्क कि जिसमें ४ सूबे अहमद नगर, तिलंगाना, खान देस, और बराड़, ५ लाख रुपये की जमा के थे और दौलताबाद व आसेर जैसे बड़े बड़े ६४ किले थे शाहज़ादे औरंगज़ेब के हवाले किया और उसको नये फ़तह किये हुये ४० किलों में से उन १० क़िलों के फ़तह करने का हुक्म दिया जो साहू जी वग़ैरे के नीचे दबे हुये थे ॥ | مطابق نہم ماہ خرداد و سنہ نہم جلوس مقدس بعدہٗ بادشاہ نے کل ملک دکہن کا جسمین چار صوبہ ۔ احمد نگر تلنگانہ ۔ خاندیس ۔ اور براڑ پانچ کروڑ روپیہ کی جمع کے تھے اور ۶۴ بڑے بڑے سنگین قلعہ مثل دولت آباد اور آسیر کے تھے بادشاہزادہ اورنگ زیب کے حوالہ کیا اور ممالک مفتوحہ جدید کے چالیس قلعون مین سے اُن دس قلعون کے فتح کرنیکا حکم دیا کہ جو ساہوجی وغیرہ کے قبضہ مین تھے |
| असाढ बदी १५ को शत्रुसाल का मनसब एक हज़ारी सवारों के इज़ाफ़े से ३ हज़ारी ज़ात और ३ हज़ार सवार का हो गया ॥ | ۲۵ محرم کو راؤ شترو سال کا منصب ایکہزار سوارون کے اضافہ سے تین ہزاری تین ہزار سوار کا ہوگیا۔ |

भादों सुदी १ को बादशाह मं
डू में पहुंचे और कुतुबुल्मुल्क को
भी अपनी तसवीर और अहदनामे
की सुनहरी तख़ती भेजी जिस
के अंत भी सिकंदर की दीवारवा
ली बात और तारीख़ ७ रबीउस्सा
नी सन १०४६ हिजरी खुदे थे ॥

भादों सुदी ८ को मंडू में दत्ता
जी का मनसब हज़ारी ज़ात के इ
ज़ाफ़े से ३ हज़ारी ज़ात और हज़ार
सवार का होगया ॥

कल्यान झाला जिसको
राणा जगतसिंघ ने इन फतहों की
मुबारिकबाद देने के वास्ते भेजा
था हाज़िर हुआ। और पेशकश जो
लाया था वह नज़र की ॥

आसोज सुदी ८ को बादशा
ह ने तरबियत ख़ां को ज़मींदार
जैतपुर के ऊपर भेजा जो लूटमार
किया करता था तरबियत ख़ां उसे

۲۹ - ربیع الاول کو بادشاہ
منڈو مین پہونچے اور قطب الملک
کو بھی اپنی تصویر اور عہدنامہ کی
سنہری تختی بہیجی اسکے آخیر مین
بھی وہی سد سکندر والی عبارت
اور تاریخ ۷ - ربیع الثانی ۱۰۴۶
ہجری مطابق ۱۰ ماہ شہریور ۹ سنہ
جلوس کندہ تھی -

۶ ربیع الثانی کو منڈو مین دتاجی
کا منصب ہزاری ذات کے
اضافہ سے تین ہزاری ذات اور
ایک ہزار سوار کا ہوگیا -

کلیان جہالا جسکو رانا جگت سنگہ
نے فتوحات تازہ کی تہنیت کے
واسطے بہیجا تہا بادشاہ کے حضور
مین حاضر ہوا اور پیشکش گذرانی

۱۶ جمادی الاول کو بادشاہ نے
تربیت خان کو مرزبان جیت پور
کی سزادہی کیواسطے بہیجا جو راہزنی کیا کرتا
تہا ۱۲ جمادی الاول کو تربیت خان

ले कर सातवें दिन हाज़िर होगया

असोज सुदी १० वृहस्पतवार को खानदौरां बहादुर ने उदगिर का क़िला सीदी मुशताई से फ़तह किया जिसको उसने असाढ बदी १२ इतवार के दिन से घेर रक्खा था ॥

कातिक बदी ३ को बादशाह मंडू से घाटे चांदा और उज्जेन के रस्ते से आगरे को रवाने हुये

कातिक बदी ११ को बादशाह ने राना जगत सिंघ के वास्ते जड़ाऊ सरपेंच और जड़ाऊ तलवार कल्यान झाला के हाथ भेजी

कातक सुदी १ को खानदौरां बहादुर ने अडसे का क़िला भी ३ महीने के घेर में किलेदार भोजराज से लेलिया

कातक सुदी १३ को बादशाह के डेरे गांव खजूरी परगने रामपुर

زمیندار مذکور کو لے کر حاضر ہو گیا۔

۸- جمادی الاول روز پنجشنبہ کو خان دوران بہادر نے قلعہ اودگیر کو فتح کیا جسکا محاصرہ یکشنبہ ۲۵- محرم سے کر رکھا تھا۔

۱۶- جمادی الاول کو بادشاہ منڈو سے آگرہ کی طرف براہ گھاٹی چاندا و اُجین روانہ ہوئے۔

۲۴- جمادی الاول کو بادشاہ نے رانا جگت سنگھ کے واسطے جڑاو سرپیچ اور جڑاو تلوار کلیان جہالا کے ہاتھ بھیجی۔

۲۹- جمادی الاول کو خاندوران بہادر نے اڈسہ کا قلعہ بعد محاصرہ ۳ ماہ کے بہوجراج قلعدار سے لے لیا

۱۲- جمادی الثانی کو بادشاہ کے ڈیرے موضع کھجوری پرگنہ رام پور کے مضافات مین ہوئے یہان راو ہتی سنگھ کا وطن

के पास ऊये यहां रावहरीसिंघ
कावतनथा इसलिये उसने १ हा
थी नज़र किया और बादशाह
ने उस को खिल्लत बख्शा ॥

मंगसिर बदी १ को खैराबादमें
डेरे ऊये और लशकर पलायतेके
परगनेमें होकर गुज़रा जोमाधो
सिंघ हाडा की जागीरमें था उसके
बेटे मोहनसिंघ और जुझारसिं
घ ने हाज़िर होकर १ हाथी नज़र
किया बादशाह ने उन को खिल्ल
अत और घोड़े दिये ॥

मंगसिर बदी ७ को बड़ोदेके
गांव मंडावर मे मुकाम ऊआ जिस
के पास राव शत्रुसाल हाडा काव
तनथा इस लिये उसके बेटे भाव
सिंघ ने हाज़िर होकर १ हाथी नज़
र किया बादशाह ने उस को भी
घोड़ा और सिरोपाव बख्शा ॥
बादशाह ने धंधेडेका सु

تھا اسلیے اس نے ایک ہاتھی
نذر کیا اور بادشاہ نے اسکو
خلعت عنایت فرمایا۔

۱۶- جمادی الثانی کو پرگنہ
خیرآباد کی نواحی مین ڈیرے
ہوئے اور لشکر پلایتہ مین ہوکر
گذرا جو مادہو سنگہ ہاڈا کے
جاگیر مین تہا اس لیے موہن سنگہ
اور جوجہار سنگہ اوسکے بیٹے حاضر
درگاہ ہوئے اور ایک ہاتھی
نذر کیا بادشاہ نے دونون کو
خلعت اور گہوڑے عنایت فرمائے

۲۱- کو بادشاہ کا مقام
موضع منڈاور پرگنہ بڑودہ مین
ہوا جسکے پاس راو شترو سال کا
وطن تہا اوسکے بیٹے بہاو سنگہ
نے حاضر ہوکر ایک ہاتھی
پیشکش کیا بادشاہ نے اسکو
بھی گہوڑا اور خلعت بخشا
بادشاہ نے وندہیڑے

| | |
|---|---|
| ल्क सेवाराम गोड़ को इनायत किया था जो बलराम का बेटा और राजा गोपालदास का पोता था वह वहां गया और इन्द्रमणि को निकालकर राज करने लगा कुछ दिन पीछे इन्द्रमणि कुछ आदमी इकट्ठे करके उससे लड़ने को आया और फिर अपने मुल्क का मालिक होगया बादशाह ने राजा बिट्ठलदास गोड़ को उसके ऊपर भेजा और उसके अरज़ करने से उसके भतीजे सेवाराम गोड़, मोतमद खां, सैयद अबदुल माजिद जयराम, अनूपसिंघ, के बेटे, राजा बहरोज़, राजा रोज़ अफ़ज़ूं के बेटे, ख्वाजे अब्बुल बक़ा, अबदुल्ला खान बहादुर फ़ीरोज़ जंग के भतीजे, सैयद चावन, हरीसिंघ, रायरतन सिंघ के बेटे, शिताबखां, अमीरबेग, दिलदारबेग, सैयद | کا ملک سیوارام گوڑ کو عنایت کیا تہا جو بلرام کا بیٹا اور راجہ گوپالداس کا پوتہ تہا وہ وہان گیا اور اندرمن زمیندار سابق کو نکال کر قابض ہوا چند روز بعد اندرمن سے کسیقدر جمعیت کے اُس سے لڑنے کو آیا اور پھر اپنے ملک کا مالک ہو گیا بادشاہ نے راجہ بٹھل داس گوڑ کو اوسکے اوپر بھیجا اور اسکی عرض کرنے سے اوُسکے بھتیجے سیوارام گوڑ معتمد خان سید عبدالماجد جے رام ولد انوپ سنگھ راجہ بہروز ولد راجہ روز افزون وخواجہ ابوالبقا برادر زادہ عبداللہ خان بہادر فیروز جنگ سید چاون ہری سنگھ ولد راو رتن ہاڈا۔ شتاب خان پسر ملک علی و امیر بیگ ولد شاہ بیگ خان کابلی و دلدار بیگ قدیمی |

| | |
|---|---|
| सआदतुल्लाखांको भी ६०० तीरअंदाज़ और खरक़ंदाज़ अहदी सवारों के साथ भेजा ॥ | و سید سعادت الله حاجی پوری کو بھی بمعہ ۶۰۰ سوار احدی کماندار و برقنداز کے اوسکے ساتھ تعینات کو |
| मंगसिर बदी ११ को बादशाह ने राजा बिट्ठल दास और मोतमद ख़ां वग़ैरा मनसबदारों को घोड़ा और खिलअत इनायत करके रुख़सत किया ॥ | ۲۵ - کو بادشاہ نے راجہ بٹھل داس اور معتمد خان وغیرہ امیرون کو علی قدر مراتب گھوڑے اور خلعت وغیرہ دیکر رخصت کیا |
| मंगसिर सुदी ६ को बादशाह अजमेर में पहुंचे और आनासागर तलाव के ऊपर दौलत ख़ाने में उतरे जहांगीर बादशाह ने इस तलाव के पट्टे पर संगमरमर की १ इमारत बनाई थी उस्में बादशाह के हुक्म से झरोखा आम और ख़ास दौलत ख़ानां तैयार हुआ इस इमारत में ३ लाख रुपये की लागत बैठी जिसमें डेढ लाख से कुछ कम जहांगीर बादशाह के राज में लगे थे ॥ | ۷ - رجب کو بادشاہ اجمیر مین داخل ہوکر آناساگر تالاب کے اوپر دولت خانہ مین فروکش ہوئے جہانگیر بادشاہ نے اس تالاب کے بند پر ایک عمدہ عمارت سنگ مرمر کی بنائی تھی بادشاہ نے اوسمین جھروکہ دولت خانہ خاص وعام بہت فراخ و دلکشا تیار کروایا جسمین ۳ لاکھہ روپیہ خرچ ہوئے ڈیڑھ لاکھہ سے کم تو جہانگیر بادشاہ کے عہد مین اور ڈیرہ لاکھہ سے |

बादशाह दौलतख़ानेसे दरगाह तक पैदल ज़ियारत करने को गये और १०००० चढ़ावे और ख़ैरात में दे कर उस मसजिद में पधारे कि जिस के बनाने का हुक्म जुनेर से आने के पीछे हुआ था और जो तख़्त नशीनी के पीछे ४०००० रुपये के ख़र्च से तैयार होगई थी और वहां शाम की नमाज़ पढ़कर दौलतख़ाने में आगये ॥

मंगसिर सुदी १३ को राणा जगतसिंघ के टिकाई बेटे राज कंवर ने हाज़िर होकर ९ घोड़े नज़र किये बादशाह ने उसको ख़िलअत ज़ड़ाऊ सरपेंच और मोतियों की माला इनायत की ॥

ख़ानज़मां बहादुर जब बादशाह के पास से रुख़सत होकर अपने तईनातियों से मिला तो मालूम हुआ कि साहूजी आदिल ख़ां की

زیادہ بادشاہ کے زمانہ مین لگے تھے۔

بادشاہ دولت خانہ سے درگاہ خواجہ معین الدین تک پیدل واسطے زیارت کے گئے دس ہزار روپیہ چڑھائے پھر اُس مسجد مین تشریف لیگئے کہ جسکی تیاری کا حکم جُنیر سے واپس آنے کے بعد ہوا تھا اور جو بعد از جلوس چالیس ہزار روپیہ کے خرچ سے اتمام کو پہونچا تھی نماز شام کے بعد دولتخانہ مین واپس آئے بے بدل خان گیلانی نے اُسکی تاریخ مین لکھا ہے۔

قبلہ اہل زمان شد مسجد شاہ جہان

۱۲ کو رانا جگت سنگہ کا ٹیکائی کا کنور راج سنگہ حاضر آیا اور ۹ گھوڑے نذر کے بادشاہ نے اُسکو خلعت سرپیچ مرصع اور موتیون کی مالا عنایت فرمائی

नौकरी क़बूल न करके जुनेर
वग़ैरा किले के सोंपने में राज़ी न
हीं है और आदिलखां ने रणदूला
को साहू जी के ज़ेर करने और उ
सके पास से क़िले लेने के वास्ते
भेजा कि बादशाही अमीरों से मि
लकर यह मुहिम सर करे इधर
खान ज़मां ने बहादुर खां, कार
तलब खां, और राव हटी सिंघ
को १००० सवार राया के और २०००
पैदल बरकंदाज़ के साथ जुनेर
का किला फ़तह करने के वास्ते
भेजा और आप साहूजी के मुक़ा
बिले के वास्ते पूने को रवाने हु
आ जब किस्वोर नदी से उतरक
र लोहगांव में पहुंचा तो साहूजी
वहां से १७ कोस पर था भागकर
कोंधाने और नोरंदे के पहाड़ों में
चला गया खान ज़मां रणदूला
से सलाह करने के वास्ते कुछ

خان زمان بہادر جب بادشاہ
کے پاس سے رخصت ہوکر اپنی
تعیناتیوں سے ملا تو معلوم ہوا کہ
ساہوجی عادلخان کی نوکری قبول
نہ کرکے جنیر وغیرہ قلعوں کی سپردگی
پر راضی نہیں ہے اور عادلخان نے
رندولہ کو واسطے مدافعہ ساہوجی
اور فتح قلاع کے بھیجا کہ امرائے
بادشاہی کی موافقت سے اس کام
کو انجام دے خانزمان نے
بہادر خان کو معہ کار طلب خان
وراو ہٹی سنگہ دو ہزار سوار رانا
جگت سنگہ دو ہزار پیادہ برقنداز
کے قلعہ جنیر کے محاصرہ پر مامور
کیا اور آپ واسطے مقابلہ ساہو
کے پونہ کی طرف سے روانہ ہوا
جب یہ لشکر کہور ندی سے اُتر کر
لوہ گانو میں پہونچا تو ساہوجی جو
وہاں سے ۱۷ کوس پر تھا بھاگ
کر کوندہانہ اور نورندہ کے پہاڑوں

रोज़ तक ऐंदा नदी के किनारे
पर ठहरा और उससे सलाह क
रके नदी के पार उतरा और ती
न फौजें बनाकर घाटे के रस्ते से
चला ॥ फौज का तो खुद अफ़स
र रहा दूसरी का राव शत्रुसाल
को और तीसरी का पृथ्वीराव
राठौड़ को सरदार बनाया साहू
जी कुंभा घाटी से उतर कर को
कन में पहुंचा जहां उसको थाने
दार अनंदाराजपुरी वगैरा से प
नाह मिलने की उम्मेद थी ले
किन उन्होंने उसको वहां से
निकाल दिया तब वह उसी घा
टी से उतर आया बादशाही ल
शकर इस अरसे में उस घाटी
से उतर कर कोकन में दाखि
ल हुआ और रणदूला भी उस
घाटी में आ पहुंचा साहू भा
ग कर माहोली की तरफ गया

مین چلا گیا خان زمان چند دون
تک واسطے استصواب رندولہ
کے ایندان ندی کے کنارے
پر رہا اور بعد صلاح رندولہ کے
ندی سے اُترا اور اپنی فوج کے
تین دستہ کرکے گہاٹ کے راستہ
سے روانہ ہوا پہلے دستہ کا افسر
تو خود رہا دوسرے اور تیسرے
کا سردار راو شتروسال ہاڈا اور
پرتھی راج راٹھوڑ کو بنایا ساہوجی
کونبہا گہاٹی سے اُتر کر کوکن دیس
مین چلا گیا تاکہ وہان تہانہ داران
اندراجپوری وغیرہ سے پناہ
حاصل کرے مگر اُنہون نے اسکو
نکال دیا تب وہ اوسی گہاٹی
سے اُتر کر واپس چلا آیا بادشاہی
لشکر اس عرصہ مین اُس گہاٹی سے
کوکن مین داخل ہوا اور رندولہ
بہی گہاٹی مذکور تک آ پہونچا ساہوجی
پہر بہاگا اور ماہولی کی طرف گیا

ख़ान ज़मां लशकर को छोड़क
र उसके पीछे रवाने हुआ रस्ते में
सुना कि साहू „ मोरंजन के कि
ले में पहुंच गया है ख़ान ज़मां धा
वा करके किले से ३ कोस परजा
पहुंचा सो साहू ने जल्दी में जित
ना असबाब आगे को रवाना क
र सका करके आप भी पीछे से
चल दिया और बाक़ी असबा
ब क़िल्ले में ही छोड़ गया रस्ते
में कीचर काचा बहुत था और
जाड़ा भी शिद्दत से पड़ता था तो
भी ख़ान ज़मां ने १२ कोस तक
उसका पीछा किया मगर वह तो
हाथ नहीं आया साफ़ निकल ग
या बादशाही अमीर उसके डेरे
ख़ेमे ऊंट घोड़े और निज़ामु
ल्मुल्क के दामाद के कि जिस
को वह निज़ामुल्मुल्क नाम र
ख कर अपने साथ लिये फिरता

خان زمان بہی لشکر کو پیچہے
چہوڑ کر اوسکے تعاقب مین
روانہ ہوا راستہ مین سُنا کہ ساہو
مورنجن کے قلعہ مین پہونچگیا ہے
خانزمان یلغار کرکے قلعہ سے
تین کوس اور پہنچا تہا کہ ساہو
جلدی مین جسقدر اسباب
روانہ کرسکا آئندہ کو روانہ کرکے
پیچہے سے خود بہی چلدیا اور باقی
سامان قلعہ مین ہی چہوڑ گیا خانزمان
نے باوجود کیچڑ اور سردی کے
بارہ کوس تک اُسکا تعاقب کیا
مگر وہ تو ہاتھ نہین آیا صاف
نکل گیا بادشاہی امیر اُسکا
ڈیرہ گہوڑا - اونٹ - نقارہ
چہتری پالکی اور نظام الملک
کے نشان لے کر لوٹ آئے
یہ نظام الملک جو اصل مین
نظام الملک کا داماد تہا اُسکو
ساہو جی نظام الملک بنا کر

रहताथा नक्कारे छत्तरीया ल
की औरनिशान लेकर लौट आये
साहूजी एक रात दिनच
लकर किले माहोली मेंजावत
राव हांजोलोग साथ चलने को
राजी हुए उनको लेकर और
बाक़ी को सीख देकर अपने बे
टे समेत लड़ने के इरादे से उस
किले में ठहरगया दूसरे दिन
खान ज़मांने पहुंचकर घेरा दि
या और बड़े दरवाजे के आगे के
मोरचे राजा पहाड़ सिंघ बुंदे
ले को सौंपे फिर रयदूल्ला भी आया
और उसने दूसरी तरफ़ से कि
ले को घेरा आख़िर साहूने तंग
होकर बार२ कहलाया कि मु
झ को बादशाही अमीरों में दा
ख़िल करलेवें किन ख़ान ज़
मांने येही जवाब दिया कि आ
दिलखां की नोकरी कबूल

لیے پھرتا ہے۔
ساہوجی ایک رات
دن برابر قطع مسافت کرکے
قلعہ ماہولی مین جا اُترا اُوسوقت
جو لوگ اُوسکے ساتھ رہنے کو
راضی ہوئے انکو رکھہ کر اور
باقی کو رخصت کرکے مع اپنے
بیٹے کے لڑائی کے ارادہ سے
اُس قلعہ مین ٹھہر گیا خان زمان
نے دوسرے دن پہونچکر محاصرہ
کیا بڑے دروازے کے روبرو
مورچہ لگائے وہ راجہ پہاڑ سنگھ
کے سپرد کئے پھر رندولہ
بہی آکر دوسری طرف سے
گہیر دیا آخر ساہو نے تنگ آکر
بہت سا چاہا کہ مجھکو اُمرائے
شاہی مین داخل کرلو لیکن
خانزمان نے کہا کہ انہو عادلخان
کی اطاعت قبول کرو ورنہ
تمہاری مخلصی مشکل ہے ساہوجی

करोनहींतो तुम्हारा बचना
मुशकिल है तब उसने आदिल
खांसे अहद नामा मांगा और ज
ब अहद नामा आया तो कई दर
ख़्वास्तें और की और अपने इक़
रार से फिर गया लेकिन जब
देखा कि अब किले का रहना
मुशकिल है तो बाहर निकल
कर रन्दूला से मिला और नि
ज़ामुल्मुल्क के दामाद को उस
के हवाले करके आदिल ख़ां की
नोकरी क़बूल करली और जुने
र वग़ैरा किलों को बादशाही
नोकरों के हवाले करदेने का इ
क़रार किया दूसरे दिन १ बड़ा तू
मार अपनी अरज़ों का अपने व
की ल और क़ाज़ी अबू सईद के
हाथ जो आदिल ख़ां का अहद
नामा लाया था ख़ान ज़मां के पा
स भेजा ख़ान ज़मां ने उसकी

نے عادلخان کا عہدنامہ مانگا
جب وہ آگیا تو پھر چند خواہشین
اور کین اور اپنے عہد سے
پھر گیا لیکن جب دیکھا کہ اب
قلعہ کا رہنا مشکل ہے تو نکل کر
رندولہ سے ملا اور نظام الملک
کے داماد کو اُسکے حوالہ کرکے
عادلخان کی نوکری قبول کرلی
بادشاہی ملازمون کو جنیر وغیرہ
قلاع کے سپرد کردینے کا
وعدہ کرلیا دوسرے
دن ایک طویل الذیل طومار
اپنی معروضات کا اپنے وکیل
اور قاضی ابو سعید کے ہاتھ
جو عادلخان کا عہدنامہ لایا تھا
خانزمان کے پاس بھیجا
خانزمان نے اوسکی نقل مع
اپنی عرضی کے بادشاہ کی
خدمت مین روانہ کی جب
بادشاہ نے وہ معروضات

नक़ल अपनी अरज़ी के साथ बादशाह की ख़िदमत में भेजीं बादशाह ने वे अरज़ें उसकी क़बूल करलीं तब साहू ने अपने आदमियों को काज़ी अबूसईद के पास क़िले जुनेर त्रिम्बक त्रिंकल वाड़ी, हरीस, जोधन, जूंद हरसरा, के सोंपदेने की तहरीरें देकर ख़ानजमां के पास भेजा ख़ान ने उनके साथ अपने आदमी उन क़िलों में अमल करने के वास्ते भेजे और आदिल ख़ां ने रयादूला को लिखा कि निज़ामुल्मुल्क के जंमाई को ख़ानज़मां के हवाले करदो इसपर रयादूला उसे ख़ानज़मां को सोंप कर साहू के साथ बीजापुर को चला गया और ख़ानज़मां दोलताबाद में शाहज़ादे औरंगज़ेब के पास हाज़िर हुआ

قبول کرلین تو ساہوجی نے اپنے معتمدون کو قاضی ابوسعید کے ہمراہ معہ تحریرات سپردگی قلاع جنیر - ترمبک - ترنکلواڑی ہریس - جودھن - جوند اور ہرسرا کے خانزمان کے پاس بھیجا خانزمان نے اپنے آدمی اُنکے ہمراہ ان قلعون مین عمل کرنے کو بھیجے اور عادلخان نے رندولہ کو لکھ بھیجا کہ نظام کے داماد کو خانزمان کے سپرد کردے چنانچہ وہ سپرد کرکے معہ ساہو کے بیجاپور کو چلا گیا اور خان زمان دولت آباد مین شاہزادہ اورنگ زیب کے پاس پہنچا اور دکھن کی مہم ختم ہوگئی

فتوحات گونڈوانہ

दक्खन का मुहिम ख़तम हो गई ॥

ख़ान दोरां उदगिर और उड़ीसा फ़तह करने के पीछे मुकाम कुंभगिर इलाक़े कुतुबुल्मुल्क में ठहरा हुआ था जहां से उसने देवगढ़ के इलाक़े में जाकर ,, कतलस्कर और आष्टा के क़िले जो बराड़ के ज़िले में थे और जहां के गोंड सूबेदार के हुक्मों को नहीं मानते थे फ़तह किये और कनकसिंघ बेश को देवगढ़ के ज़मींदार कोकियां के पेशकश लेने के वास्ते भेजा और फिर ख़ुद भी रवाने हुआ जब नागपुर के पास पहुंचा तो कनक सिंघ कोकियां के वकील को लेकर आया और कहा कि कोकियां तो पेशकश देना क़बूल नहीं करता ख़ान ने यह

17

पास

خاندوران نے جو بعد فتح اودگرا وراڈیسہ کے مقام کونبھگر متصل قطب الملک مین ٹھہرا ہوا تھا وہان سے دیوگڈہ کے علاقہ مین آکر کتلنجھر اور آشٹہ کے قلعے جو پرگنہ کہ رباندگانون ضلع براڑ مین تھے اور جہان کے گونڈ صوبہ دار کے حکمون کو نہین مانتے تھے فتح کیے اور کنک سنگہ بیش کو دیوگڈہ کے مرزبان کوکیان کے پاس بھیجکر پیشکش طلب کی جو کوکیان کے وکیل کو لیکر خاندوران کے پاس آیا خاندوران اُسوقت ناگپور سے ایک منزل ادہر پہونچگیا تھا اور کہا کہ کوکیان نے پیغام قبول نہ کیا خان نے یہ سُنکر ناگپور کو جو مضبوطی

सुन कर नागपुर को घेरा जो मज़
बूती में दूसरे किलों से बढ़कर था
जब मोरचे खाई तक जा पहुंचे
तो चांदे का ज़मींदार "केबां"
ख़ान का बुलाया हुआ १५०० स
वार और ३००० पैदलों से आया
और ७०००० मिजमानी के लाया
इसी तरह गुन्नौर का ज़मींदार
संग्राम भी २००० सवार ५०००
पैदल सिपाही लुटेरे और बहु
तसा माल असबाब कौ कियां
के आदमियों का जो भागकर
पहाड़ों और जंगलों में जा छुपे
थे लेकर हाज़िर हुआ उसने अप
नां और केबां का वकील फिर
१ बार कौ किया के समझाने के
वास्ते भेजा उसने १५० हथियों
की फ़र्द भेज कर कहलाया कि
जो घेरा उठालो तो ये हाथी नज़
र कर दूंगा ख़ान ने कहा कि क़िला

مین دوسرے قلعون سے
ممتاز تہا جا گہیرا جب مورچہ
خندق تک پہونچ گئے تو
چاندا کا زمیندار کیبا حسب الطلب
خاندوران کے معہ ڈیڑہ ہزار
سوار اور تین ہزار پیادون
کے آحاضر ہوا اور ستر ہزار روپیہ
مہمانی کے نام سے لایا اسیطرح
سنگرام زمیندار گنور بہی بادشاہ
کے حکم سے معہ دو ہزار سوار
اور پانچہزار پیادہ سپاہی اور
لوٹیرون کے لشکر مین پہنچا
اور بہت سا مال کوکیان کی
رعایا کا جو بہاگ کر پہاڑون
اور جنگلون مین چہپی ہوئی تہی چہین کر
لے آیا سنگرام نے اپنا اور کیبا
کا وکیل پہر ایکبار کوکیان کے
سمجہانے کو بہیجا اُسنے ڈیڑہ سو
ہاتہیون کی فہرست بہیجکر کہلایا
کہ جو محاصرہ اُٹہالو تو یہ سب ہاتہی

भी खाली करना होगा कोंकि
यों कोयह मंजूर नहुआ तब ३
तरफ़ से सुरंगों में आग लगाईग
ई १ सुरंग राजा जयसिंघ ने भी ब
नाई थी सुरंगों के उड़ने से १ बड़ा
रस्ता खुल गया और राजा जय
सिंघ ने बहादुरी से किले में घुस
कर सब आदमियों को मार डा
ला और देवजी किलेदार को प
कड़ लिया आखिर कोकियां
ने देवगढ़ से १५ कोस चलकर
खान से मुलाक़ात की डेढ़ लाख
रुपया १७० हाथी और हथनियां
हाज़िर करके बरसाबरस ६ ला
ख रुपया खज़ाने में दाखिल
करने का इक़रार किया खान
दौरां ने नागपुर का क़िला उस
को पीकादे दिया और कालीभें
ट में आकर वहांके ज़मींदार
भी भसेन से १ हाथी हथनी समेत

نذر کرو دونگا خان سے کہلا یا
کہ قلعہ بھی خالی کرو مگر یہ اُس نے
منظور نہ کیا تب تین طرف سے
نقب مین آگ لگائی گئی ایک
نقب راجہ جے سنگھ نے بھی
بنائی تھی نقب کے اُڑنے
سے ایک بڑا راستہ کہل گیا
سپہ دار خان اور راجہ جے سنگھ
نے بہادری سے قلعہ مین داخل
ہوکر تمام آدمیونکو مارڈالا اور
دیوجی قلعدار کو گرفتار کرلیا
آخر کو کیا نے ۲۹ - شعبان کو
دیوگڈہ سے پندرہ کوس پر آکر
خان کے ساتھ ملاقات کی
ایک لاکہہ پچاس ہزار روپیہ
نقد اور ایک سو ستر ہاتھی نر
و مادہ پیشکش ودیگر سال بسال
چار لاکہہ روپیہ خزانہ بادشاہی
مین داخل کرنیکا وعدہ کیا
خاندوران نے ناگپور کا قلعہ

लिया और फिर दरगाह को रवा
नेहुआ ॥

पोस बदी १ को बादशाह ने
अजमेरसे कूच करके जोगीतला
व पर डेरा किया राजा गजसिंघ
को खिलत खासा, खासा घोड़ा
सुनेहरी ज़ीनका और हाथी इना
यत फ़रमाया ॥

राणा जगतसिंघके बेटे राजकुं
वर को खिलअत जड़ाऊ खपवा मी
नाके काम की तलवार हाथी और
घोड़ा इनायत हुआ और उसके सा
थके सरदारों में से रावबलू चोहा
न-रावत मानसिंघ चंडावत वगै
रा को खिलअत और घोड़े मिले और
सीख दी गई ॥

बादशाह ने राणा जगतसिं
घ के वास्ते भी १ हाथी कंवर को दिया

पोस बदी ४ को "मुअज़्ज़ाबाद
के पास डेरे हुए यह कसबा राजा ज
यसिंघ की जागीर में था इसलिये रा

اوسکو واپس دیدیا - اور کالی پہنچتے
ہین آکر وہان کے زمیندار
بہیم سین سے ایک ہاتھی معہ
ہتہنی کے لیا اور درگاہ کو روانہ ہُوا
۱۵ - رجب کو بادشاہ اجمیر سے
روانہ ہوا اور جوگی تالاب پر ڈیرہ
کیا وہان راجہ گجسنگہ کو خلعت خاصہ
گہوڑا طویلہ خاصہ سے معہ سنہری
زین کے عنایت فرمایا -
رانا جگت سنگہ کے بیٹے
راج کنور کو خلعت کہپوہ مرصع
شمشیر یا یراق طلائی میناکار
ہاتھی اور گہوڑا عنایت ہُوا اور
اُسکے ساتھ کے سردارون مین
سے بلوچوہان راوت مان سنگہ
چونڈاوت وغیرہ کو بہی خلعت اور
گہوڑے ملے اور رخصت دیگئی -
رانا جگت سنگہ کے واسطے
بہی ایک ہاتھی کنور کے حوالہ کیا گیا
۱۸ کو معزآباد کے پاس ڈیرے

जा की तरफ़ से कई घोड़े १ हाथी और ६०००० नक़द नज़र हुये बादशाह ने हाथी और घोड़े तो रख लिये और रुपये फेर दिये ॥

पौस सुदी १० को बाड़ी के तलाव पर बादशाह के डेरे हुये वहां जो १ महल्ल १ साल में १४०००० के खरच से तैयार हुआ था बादशाह उसमें ठहरे ॥

माह बदी ५ को बादशाह आगरे में दाखिल हुए और अपनी साल गिरह का दरबार आम खास दौलत खाने में करके ज़मीं चूम कर आदाब बजा लाने का क़ायदा भी मौकूफ़ कर दिया यह आदाब सिजदे (ढोक देने) से मिलता हुआ था और उसकी जगह चौथी सलाम बहाल रक्खी दौलत खाना दरशनका झरोका खास दौलत खाना और ज़नाने महल, यह सब लाल और सफेद पत्थर के नये बने थे.

आम

بادشاہ کے ہوئے یہ قصبہ راجہ جے سنگہ کی جاگیر مین دیا ہوا تھا اس لئے راجہ کی طرف سے کئی گھوڑے معہ ایک ہاتھی اور ساٹھہ ہزار روپیہ نقد کے پیش ہوئے بادشاہ نے ہاتھی گھوڑے تو رکھ لئے اور روپیہ واپس کر دیئے

۸ شعبان کو باڑی کے تالاب پر ڈیرے ہوئے بادشاہ محلات کنارے تالاب پر جو دو سال مین ایک لاکھہ چالیس ہزار روپیہ کے صرف سے تیار ہوئی تھی فروکش ہوئے

۱۸ شعبان کو بادشاہ نے آگرہ مین داخل ہو کر اپنی شمسی سالگرہ کے دن عمارت دولتخانہ خاص و عام مین جشن معہ جھروکہ درشن دولتخانہ خاص اور مشکوی معلی کے بہت عمدہ اور تحفہ سنگ مرمر و سنگ سرخ وغیرہ سے تعمیر ہوئی تھی جلوس کر کے آداب زمین بوس کو بھی جو سجدے سے مشابہ

राजा बिठ्ठल दास और मोतमिद ख़ां जोधंधेड़े के ज़मींदार के ऊपर गये थे उन्हों ने उस क़िले को घेरा, किलेवालों ने कुछ दिनों बाद किल्ला सोंप दिया और ज़िमींदार भी हाज़िर होगया मोतमिद ख़ां उसको बादशाह के पास लाया उसने मुजरे के वक़्त १ हाथी नज़र किया बादशाह ने जांबख़शी करके जुनेर के किले में कैद करदिया

पोस बदी ६ को राजा बिठ्ठल दासका मनसब हज़ारी ज़ात और हज़ार सवारों के इज़ाफ़े से ४ हज़ारी ३०० सवारों का होगया और धन्धेड़ा उसको वतन बनाने के वास्ते दिया गया

नीचे के बंगश(१) की थानेदारी राजा जगत सिंघ से उतरकर पुरदिलख़ां को मिली ॥

(१) बंगश के २ हिस्से हैं १ ऊपर का बंगश कहलाता है दूसरा नीचे का ॥



تھا موقوف کردیا اور بجائے اس کے تسلیم چہارم کو بجا لا رکھا

راجہ بٹھلداس اور معتمد خان جو زمیندار دھندہیڑہ کے اوپر گئے تھے انہوں نے اُس مضبوط قلعہ کو گھیرا جو اہل قلعہ کے تنگ ہونے پر زمیندار مذکور نے سونپ دیا معتمد خان اُسکو بادشاہ کے حضور مین لایا اُس نے بروقت مجرا ایک ہاتھی نذر کیا بادشاہ نے جان بخشی کرکے جُنیر کے قلعہ مین قید رکھنے کے واسطے بھیجا۔

۱۹ شعبان کو راجہ بٹھلداس کا منصب ہزاری ذات اور ہزار سوار کے اضافہ سے چار ہزاری ذات اور تین ہزار سوار کا ہوگیا اُسکو دھندہیڑہ وطن بنانیکے واسطے ملا۔

بنگش[1] پائین کی تہانہ داری راجہ جگت سنگہ سے تغیر ہوکر پردلخان کو عنایت ہوئی۔

(۱) بنگش کے دو حصہ بالا و پائین ہین ۱۲

चेत बदी १४ को खान दौरां बहादुर बादशाह के हजूर में हाज़िर आया राजा जयसिंघ, राजा गजसिंघ का बेटा अमर सिंघ, राव रतन का बेटा माधोसिंघ जो इस्के साथ थे दरगाह में हाज़िर हुये ॥

खान दौरां को ६ हज़ारी ज़ात और ६००० सवार दुअस्पा और सह अस्पा का मनसब मिला ॥

राजा जयसिंघ को खिलअत खासा जड़ाऊ खपवा फूलकटारा क़ुब चाक़ घोड़ा खासे तवेले से सोने की ज़ीन समेत इनायत हुआ और परगना चाटसू जो उसके वतन के पास बादशाही खालसे में था उसकी जागीर में दिया गया अमरसिंघ और माधोसिंघ दोनो असल्ल और इज़ाफ़े से तीन तीन हज़ारी ज़ात और दो दो हज़ार सवारों के मनसबदार हुये और दोनों को खिलअत और चांदी की ज़ीन

۲۵ شوال کو خاندوران بہادر بادشاہ کے حضور مین حاضر ہوا راجہ جے سنگہ - امر سنگہ خلف راجہ گجسنگہ - مادہو سنگہ ولد راو رتن ہاڑہ جو اوسکے ہمرکاب تھے باریاب ملازمت ہوے خاندوران کو چہ ہزاری ذات اور چہ ہزار سوار دو اسپہ سہ اسپہ کا منصب اصل و اضافہ سے ہوا-

راجہ جے سنگہ کو خلعت خاصہ کہپوہ مرصع معہ پہول کٹارہ کے عنایت ہو کر پانچہزاری ذات اور پانچہزار سوار کا منصب اصل و اضافہ سے ہوا پرگنہ چاٹسو واقع صوبہ اجمیر جو اوسکے وطن کے پاس تھا خالصہ شریفہ سے اور قبچاق گہوڑا معہ زین مطلا طویلہ خاصہ سے دیا گیا-

امر سنگہ اور مادہو سنگہ دونون اصل و اضافہ سے تین ہزاری ذات اور دو ہزار سوار ان کے منصب

के घोड़े इनायत हुए ॥

चेत बदी १३ को खान दौरां बहादुर की अरज़ी से राजा देवी सिंह को झंडा और नक्कारा मिला ॥

चेत सुदी २ को मेख संक्रांत के उच्छव में राजा बिट्ठलदास को खिलअत और सुनहरी ज़ीन का घोड़ा खासे तवेले से इनायत होकर घंघेड़े जाने की रुख़सत हुई ॥

जम्मूं के ज़मींदार संग्राम का बेटा भोपत बादशाही नौकर होकर फौजदार कांगड़े के पास तईनात था और जब उस के पास आता तो बहुत से आदमी लेकर आया करता था शाहकुली थानेदार ने एक दिन उसके मारने का इरादा करके बहुत से आदमी अपने पास जमा करके उसको बुलाया वह यह भीड़ देखकर लड़ा और अपने राजपूतों समेत मारा गया ॥

बैसाख सुदी १ को शाहज़ादा औ

کے گھوڑے عنایت ہوئے
۱۳ شوال کو خاں دوراں بہادر کی عرضی سے نقارہ اور علم راجہ دیبی سنگھ کو ملا

۱۲ ذیقعدہ مطابق ۱۹ فروردین اشرف آفتاب - بادشاہ نے راجہ بیٹھلداس کو خلعت اور گھوڑا خاصہ طویلہ سے معہ زین طلا کے عنایت کرکے دھنڈھیرہ جانیکی رخصت دی -

جموں کے زمیندار سنگرام کا بیٹا بھوپت بادشاہی ملازمان میں داخل ہوکر فوجدار کانگڑہ کے پاس متعین رہا کرتا تھا اور جب اسکے پاس آتا تھا تو بہت سے آدمی اوسکے مارنیکے واسطے جمع کرکے اسکو بلایا وہ آیا اور یہ ہجوم دیکھکر لڑا اور معہ اپنے راجپوتوں کے مارا گیا -

یکم ذی الحجہ کو شاہزادہ

रंगज़ेब दक्खन से आया ॥
बैसाख सुदी ६ को बादशाह ने राजा जयसिंघ को कि जिसने दक्खन की मुहिम में अच्छे २ काम किये थे ख़ास खिलत और हाथी दे कर हुक्म फ़रमाया कि अपने वतन आमेर में जाकर सफ़र की मेहनत से कुछ दिन आराम करे और २० घोड़ियां नसल बढ़ाने के वास्ते उसको दी गईं क्योंकि उस के इलाक़े में घरजाम घोड़े की क़ीमत १०००) तक पहुंच गई थी
गुन्नोर के ज़िमींदार संग्राम का मनसब पांच सदी ज़ात इज़ाफ़ा हो कर डेढ़ हज़ारी ज़ात और ६०० सवारों का होगया ॥
जेठबदी १ को बादशाह ने अपना वकील कुछ उमदा सोग़ात और खलीता देकर ईरान के बादशाह शाहसफ़ी के पास रवाने किया जिस में दक्खन की फ़तह

اورنگ زیب دکہن سے آیا
۶ ذی الحجہ کو بادشاہ نے راجہ جیسنگ کے کارہاے نمایان مہم دکہن کی قدر کرکے خلعت خاصہ اور ہاتھی عنایت فرمایا اور حکم دیا کہ اپنے وطن آنبیر مین جاکر کچھ دنون آرام کرے اور محنت سے آسودہ ہو اور بیس گہوڑیان بھی ترقی نسل اسپان کے واسطے مرحمت کین کیونکہ اوسکے علاقہ مین خانہ زاد گہوڑے کی قیمت ایکہزار روپیہ تک پہونچ گئی تہی
گنور کے زمیندار سنگرام کا منصب پانصدی ذات کے اضافہ سے ڈیڑہ ہزاری ذات اور چھ سو سوارونکا ہوگیا۔
۱۶ ذی الحجہ کو بادشاہ نے اپنا وکیل معہ تحایف وخریطہ کے شاہ صفی داراے ایران کے پاس روانہ کیا جسمین فتح دکہن اور قتل

और राजा जुझार सिंघ के क़तल का हाल लिखा था ॥

जेठ बदी १२ को रात को शाहज़ादे ओरंगज़ेब की शादी मिरज़ा शाह नवाज़ बेग ख़ां सफ़वी की लड़की से हुई ॥

बुंदेलों ने जुझार सिंघ के ख़ानदान से प्रथ्वीराज नाम १ लड़के की जो जिंदा बच गया था अपना राजा बना कर कई परगनों में फ़साद खड़ा किया इसलिये बादशाह ने जेठ सुदी १ को मालवे के सूबेदार ख़ानदौरां को ख़ंजर इनायत करके उनके ऊपर भेजा ॥

प्रताप उज्जैनिया का मारा जाना

प्रताप ने बादशाह की बंदगी करने से अपने मुल्क की हकूमत पाई थी जिसकी आरज़ू बहुत दिनों से रखता था मगर फिर हुक्म अदूली और नाफ़रमानी

راجہ جوجہار سنگھ کا حال درج تھا

شب سہ شنبہ ۲۶ ذی الحجہ کو شاہزادہ اورنگ زیب کی شادی مرزا شاہ نواز خان صفوی کی لڑکی سے ہوئی۔

بندیلوں نے جوجہار سنگھ کے خاندان سے پرتھی راج نام ایک لڑکے کو جو زندہ بچ گیا تھا رئیس بنا کر کئی گانو اور پرگنوں میں فساد کیا اسلئے بادشاہ نے خاندوران صوبہ دار مالوہ کو خلعت عنایت کرکے ۲۹ ذی الحجہ کو اسطرف مرخص فرمایا

پرتاب اوجینیہ کا مارا جانا

اسنے بوجہ بندگی درگاہ کے حکومت اپنے ملک کی پائی تھی جسکی آرزو بہت مدت سے رکھتا تھا مگر پھر حکم عدولی اور نافرمانی کرنے لگا

करने लगा तब बादशाह के हु
क्म से बिहार का सूबेदार अब्दु
ल्ला खां फ़ीरोज़ जंग उस्के ऊप
र गया और भोजपुर के किले को
जो नदी के ऊपर तिखूंटी शकल
में बना है घेरा वह क़िला मज़
बूत था उस्के अंदर बंदूक़ची औ
र तीरअंदाज़ बहुत थे और
जंगल भी क़रीब था इस सबब
से ६ महीने तक लड़ाई होती र
ही अखीर में खान ने वह किला
और उस्के सिवाये ११ किले औ
र फ़तह कर लिये प्रताप अपने
बाल बच्चों को लेकर १ बाग़ में
चला गया जो भोजपुर के कि
ले में था वहां ज़बरदस्त खां के
२ बेटे मुजफ्फर बेग और फ़रै
दूं बेग पहिले से दाखिल हो ग
ये थे उनको मारडाला बादशा
ही फौज ने उ[illegible]ग़ को भी घेर
लिया प्रत[illegible] हमले

حکم سے عبد اللہ خان بہادر فیروز
جنگ اوسکے اوپر گیا اور قلعہ
بہوجپور کو گہیرا اگرچونکہ قلعہ مضبوط
تہا اور اوسکے اندر تفنگچی اور
کماندار بہت تھے اور جنگل قریب
تہا اسلئے محاصرہ چھ مہینے تک
قایم رہا آخر عبد اللہ خان نے قلعہ
بہوجپور جو بہوجپورہ ندی کے
اوپر بشکل مثلث بنا ہوا
تہا معہ گیارہ قلاع دیگر
کے فتح کرلیا پرتاپ معہ
عیال و اطفال کے ایک
باغ مین چلا گیا جو قلعہ بہوجپور
مین تہا اور وہان جو مظفر بیگ
اور فریدون بیگ دونون فرزند
زبردست خان کے پہلے سے
داخل ہو گئے تہے اونکو مار ڈالا
فوج نے اس باغ کو بہی گہیر لیا
پرتاپ نے بہت حملہ کئے دوشنبہ
۸- ذی الحجہ کو ایک پہرون سے

किये ॥

बैसाख सुदी १० को पहर भर दिन चढ़े से दूसरी सुबेह तक बराबर लड़ाई हुई मगर पानी न मिलने से और प्यास के मारे बुरा हाल होजाने से उस ने अबदुल्ला खां को कहला या कि अब मैं तुम्हारे सरने हूं और सरना लेने वालों के माफ़िक हथियार और पोशाक खोलकर धोती बांधे और अपनी औरत का हाथ पकड़े हुये उस के पास चला आया अबदुल्ला खां ने उस्को कैद करके उस्के साथियों को मारडाला और उस का माल असबाब और हाथी घोड़े सब ज़ब्त कर लिये ॥

## ११ वां बरस

### जेठ सुदी ३ संबत १६८७ से प्रथम जेठ सुदी २ तक

دوسری صبح تک جنگ قایم رہی مگر پھر بسبب نہ ملنے پانی اور تشنگی کے عبداللہ خان کو کہلا یا کہ اب مین تمہاری پناہ مین ہون اور مثل پناہ مانگنے والون کے ہتھیار اور پوشاک اوتار کرایک لنگی باندھی اور اپنی عورت کا ہاتھ پکڑ کر عبداللہ خان کے پاس چلا آیا عبداللہ خان نے اُسکو قید کرکے اُسکے ہمراہیون کو مرواڈالا اور اوسکا تمام مال اسباب معہ ہاتھی گھوڑون کے ضبط کر لیا۔

## گیارہوان برس

### سنہ ۱۰۴۷ ہجری

تاریخ ۱۶ ماہ مئی سنہ ۱۶۳۷ ع سے

जेठ सुदी ३ को प्रताप उज्जैनिये के पकड़े जाने की खबर बादशाह को पहुंची तो उन्हों ने हुक्म लिखा कि अबदुल्लाखां उस को मारकर उस का माल भी ले ले और उस्की औरत पर भी क़बज़ा करे अबदुल्लाखां ने प्रताप को क़तल कराकर कुछ लूटतो अपने साथियों को दी बाक़ी खुद लेली और औरत को मुसलमान करके अपने पोते से उसका निकाह पढ़ादिया ॥

असाढ सुदी ३ को पृथ्वीराज राठौड़ का मनसब २ हज़ारी ज़ात और ७०० सवारों का असल और इज़ाफ़े से होगया

भादों बदी ३ को खबर पहुंची कि समंदर के बढ़ जाने से ठट्ठे की तरफ़ अकसर गावों में जान और माल का नुक़सान हुआ

۲۵ - مئی سنہ ۱۶۳۸ عیسوی تک غرہ محرم کو پرتاب اُجینیہ کے گرفتار ہونے کی خبر بادشاہ کو پہونچی بادشاہ نے حکم دیا کہ - عبداللہ خان اُسکو مارکر اوسکی عورت و مال اسباب پر قبضہ کرے تب عبداللہ خان نے پرتاب کو قتل کرکے کچھہ لوٹ تو اپنے ہمراہیونکو دی باقی خود لے لی اور اوسکی عورت کو مسلمان کرکے اوسکا نکاح اپنے پوتے سے کردیا -

۱۱ - صفر کو پرتھی راج راٹھوڑ کا منصب اصل اور اضافت دو ہزاری ذات اور سات سو سوار دونکا ہوگیا -

۲۳ - ربیع الاول کو خبر پہونچی کہ سمندر کی طغیانی سے ٹھٹھہ کی طرف بہت سے مواضعات مین جو ساحل پر واقع تھے

| | |
|---|---|
| औरज़मीनपरजहां२समंदर कापानीफिरावहभीखारी होगईऔरखेतीबाड़ीकेक़ा बिलनहींरही॥ | جان اور مال کا نقصان ہوا اور زمین پر جہان جہان سمندر کا پانی پہرا وہ بہی کہاری ہوگئی اور قابل زراعت نہین رہی |
| आसोजबदी६कोबा दशाहज़ादेऔरंगज़ेबकोजो शादीकेवास्तेआयाथादक्खि नजानेकीरुख़सतहुईऔरउ सकीअरज़सेबंगालाकीवि लायतभीजोबहुतआबादहै औरजहांकीआबहवाअच्छीहै उसकोइनायतहुईऔरहुक्म आकिदौलताबादमेंपहुंचकर उसपरक़बज़ाकरनेकेलिये फ़ौजभेजे यहमुल्कबापदादों सेभरजीकेक़बज़ेमेंथा२हद्द इस्कीखानदेसदक्खनसेदू सरीसूरतऔरगुजरातसेमि लीहुईथी॥ | ۲۳ - ربیع الثانی کو بادشاہ نے شاہزادہ اورنگ زیب کو جو شادی کے واسطے آیا تہا دکہن جانے کی رخصت دی اور اسکی عرض سے بنگالہ کی ولایت بہی جو بہت آباد اور اعتدال آب وہوا مین مشہور تہی اُسکو عنایت کی اور حکم دیا کہ دولت آباد مین پہنچکر اوسکے فتح کرنے کو فوج بہیجے — اس ملک کا موروثی مالک بہرجی نام ایک ہندو کافر تہا ایک حد اُسکی خاندیس دکہن سے دوسری صورت گجرات سے ملی ہوئی تہی اور یہ علاقہ |

कशमीरकेसूबेदारज़फ़रखां

ने किस्तवार के राजा कंवरसे
न की मदद से तिब्बत का मुल
क अलीराये के बेटे अबदाल
से फतह किया ॥

## नोट

यहां तक शाहजहां बा
दशाह के राज की १० बरस
की तवारीख खतम होती
है और यही पहिला हिस्सा
बादशाहनामे का है इसलि
ये हम भी यहां ठहर जाते हैं
॥ ॥

بادشاہی ملک کے درمیان
میں واقع تھا
کشمیر کے صوبہ دار ظفر خان نے
بمدد راجہ کنورسین والی کشتوار
کے تبت کا ملک علی رائے کے بیٹے
ابدال سے چھین لیا

## نوٹ

یہاں آکر جلد اول بادشاہ نامہ
یعنی دہ سالہ احوال شاہجہان
بادشاہ کی ختم ہوتی ہے۔
جو نہایت ماہ جمادی الاول
[illegible] سنہ ہے اسلئے ہم بھی یہاں
ٹھہر جاتے ہیں۔ فقط